चतुर्दश माला, खंड 35, अंक 1

सोमवार, 21 जुलाई, 2008
30 आषाढ़, 1930 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

चौदहवां सत्र

(चौदहवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

Gazettes & Debates Unit
Parliament Library Building
Room No. FB-025
Block 'G'
Acc. No. 75
Dated 18 Mar 2009

(खण्ड 35 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : अस्सी रुपये

सम्पादक मण्डल

पी.डी.टी. आचारी
महासचिव
लोक सभा

रविन्द्र कुमार चड्डा
संयुक्त सचिव

प्रतिमा श्रीवास्तव
निदेशक

कमला शर्मा
संयुक्त निदेशक-I

सरिता नागपाल
संयुक्त निदेशक-II

अरुणा वशिष्ठ
सम्पादक

सुनीता थपलियाल
सहायक सम्पादक

प्रतिभा कश्यप
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा।)

विषय-सूची

[चतुर्दश माला, खंड 35, चौदहवां सत्र, 2008/1930 (शक)]

अंक 1, सोमवार, 21 जुलाई, 2008/30 आषाढ़, 1930 (शक)

विषय	कॉलम
चौदहवीं लोक सभा के सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची	(i-x)
लोक सभा के पदाधिकारी	(xi)
मंत्रिपरिषद	(xii-xv)
राष्ट्रगान	1
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1-2
निधन संबंधी उल्लेख	2-7
सभा पटल पर रखे गए पत्र	7-8
सदस्य द्वारा त्यागपत्र	8
सभा की बैठकों से सदस्यों की अनुपस्थिति संबंधी समिति	
10वां प्रतिवेदन	8
मंत्रिपरिषद में विश्वास प्रस्ताव	8-224
डा. मनमोहन सिंह	9-11
श्री लाल कृष्ण आडवाणी	11-35
मोहम्मद सलीम	35-53
श्री प्रणब मुखर्जी	53-68
प्रो. राम गोपाल यादव	69-80
श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव	80-92
श्री ब्रजेश पाठक	92-101
श्री टी.आर. बालू	102-110
श्री अनंत गंगाराम गीते	110-128
श्री भर्तृहरि महताब	128-133
श्री आनन्द शर्मा	133-147
श्री गुरुदास दासगुप्त	148-156
श्री सैयद शाहनवाज हुसैन	156-175
श्री प्रफुल पटेल	176-185
श्री सुखदेव सिंह ढींडसा	185-194
श्री प्रभुनाथ सिंह	194-211
श्री खारबेल स्वाईं	211-224

चौदहवीं लोक सभा के सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची

अंगड़ि, श्री सुरेश (बेलगाम)

अंतुले, श्री ए.आर. (कुलाबा)

अंसारी, श्री अफ़ज़ाल (गाजीपुर)

अंसारी, श्री फुरकान (गोड्डा)

अग्रवाल, डा. धीरेंद्र (चतरा)

अजगल्ले, श्री गुहाराम (सारंगढ)

अजनाला, डा. रतन सिंह (तरनतारन)

अजय कुमार, श्री एस. (ओट्टापलम)

अटवाल, श्री चरणजीत सिंह (फिल्लौर)

अडसूल, श्री आनंदराव विठोबा (बुलढाना)

अतिथन, श्री धनुषकोडी आर. (तिरूनेलवेली)

अनंत कुमार, श्री (बंगलौर दक्षिण)

अप्पादुरई, श्री एम. (तेनकासी)

अब्दुल्लाकुट्टी श्री (कन्नानौर)

अब्दुल्ला, श्री उमर (श्रीनगर)

अम्बरीश, श्री एम.एच. (मांडया)

अय्यर, श्री मणिशंकर (मयिलादुतुरई)

अर्गल, श्री अशोक (मुरैना)

अहमद, डा. शकील (मधुबनी)

अहमद, श्री अतीक (फूलपुर)

अहमद, श्री ई. (पोन्नानी)

अहीर, श्री हंसराज ग. (चन्द्रपुर)

आचार्य, श्री प्रसन्न (सम्बलपुर)

आचार्य, श्री बसुदेव (बांकुरा)

आजमी, श्री इलियास (शाहाबाद)

आठवले, श्री रामदास (पंढरपुर)

आडवाणी, श्री लाल कृष्ण (गांधीनगर)

आदिकेसवुलु, श्री डी.के. (चित्तूर)

आदित्यनाथ, योगी (गोरखपुर)

आरुन रशीद, श्री जे.एम. (पेरियाकुलम)

इंग्ती, श्री बिरेन सिंह (स्वशासी जिला-असम)

इलेंगोवन, श्री ई.वी.के.एस. (गोबिचेट्टिपालयम)

उरांव, डा. रामेश्वर (लोहरदगा)

ओराम, श्री जुएल (सुन्दरगढ़)

ओला, श्री शीश राम (झुंझुनू)

ओवेसी, श्री असादूद्दीन (हैदराबाद)

ओसमानी, श्री ए.एफ.जी. (बारपेटा)

कटारा, श्री बाबूभाई के. (दोहद)

कथीरिया, डा. वल्लभभाई (राजकोट)

कनोडीया, श्री महेश (पाटन)

कमलनाथ, श्री (छिंदवाड़ा)

करूणाकरन, श्री पी. (कासरगोड)

कलमाडी, श्री सुरेश (पुणे)

कश्यप, श्री बलीराम (बस्तर)

कस्वां, श्री राम सिंह (चुरू)

कादर मोहिदीन, प्रो. के.एम. (वेल्लौर)

कामत, श्री गुरूदास (मुम्बई उत्तर-पूर्व)

किन्डिया, श्री पी.आर. (शिलांग)

कुन्नुर, श्री मंजुनाथ (धारवाड़ दक्षिण)

कुप्पुसामी, श्री सी. (मद्रास उत्तर)

कुमार, श्रीमती मीरा (सासाराम)

कुमारी सैलजा (अम्बाला)

कुरूप, एडवोकेट सुरेश (कोट्टायम)

कुलस्ते, श्री फग्गन सिंह (मण्डला)

कुसमरिया, डा. रामकृष्ण (खजुराहो)

कृपलानी, श्री श्रीचन्द (चित्तौड़गढ़)

कृष्ण, श्री विजय (बाढ़)

कृष्णदास, श्री एन.एन. (पालघाट)

कृष्णन, डा. सी. (पोल्लाची)

कृष्णास्वामी, श्री ए. (श्रीपेरूम्बुदूर)

केरकेटा, श्रीमती सुशीला (खूंटी)

कोन्यक, श्री डब्ल्यू वांग्यू (नागालैण्ड)

कोया, डा. पी.पी. (लक्षद्वीप)

कोरी, श्री राधेश्याम (घाटमपुर)

कोली, श्री रामस्वरूप (बयाना)

कौर, श्रीमती परनीत (पटियाला)

कौशल, श्री रघुवीर सिंह (कोटा)

खंडेलवाल, श्री हेमन्त (बेतूल)

खन्ना, श्री अविनाश राय (होशियारपुर)

खन्ना, श्री विनोद (गुरदासपुर)

खां, श्री सुनील (दुर्गापुर)

खारवेनथन, श्री एस.के. (पलानी)

खैरे, श्री चंद्रकांत (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

गंगवार, श्री संतोष (बरेली)

गढ़वी, श्री पी.एस. (कच्छ)

गणेशन, श्री एल. (तिरुचिरापल्ली)

गदाख, श्री तुकाराम गंगाधर (अहमदनगर)

गद्दीगउडर, श्री पी.सी. (बागलकोट)

गमांग, श्री गिरिधर (कोरापुट)

गवली, श्रीमती भावना पुंडलिकराव (वाशिम)

गांधी, श्री राहुल (अमेठी)

गांधी, श्रीमती मेनका (पीलीभीत)

गांधी, श्रीमती सोनिया (रायबरेली)

गायकवाड, श्री एकनाथ महादेव (मुम्बई उत्तर-मध्य)

गाव, श्री तापिर (अरुणाचल पूर्व)

गावित, श्री माणिकराव होडल्या (नन्दुरबार)

गिल, श्री आत्मा सिंह (सिरसा)

गीते, श्री अनंत गंगाराम (रत्नागिरि)

गुढ़े, श्री अनंत (अमरावती)

गुप्त, श्री श्यामा चरण (बांदा)

गुलशन, श्रीमती परमजीत कौर (भटिंडा)

गेहलोत, श्री थावरचन्द (शाजापुर)

गोगोई, श्री दीप (कलियाबोर)

गोयल, श्री सुरेन्द्र प्रकाश (हापुड़)

गोविन्दा, श्री (मुम्बई उत्तर)

गोहेन, श्री राजेन (नौगांव)

गौडा, श्री डी.वी. सदानन्द (मंगलोर)

गौडा, श्रीमती तेजस्विनी (कनकपुरा)

घुरन राम, श्री (पलामू)

चक्रवर्ती, डा. सुजान (जादवपुर)

चक्रवर्ती, श्री अजय (बसीरहाट)

चक्रवर्ती, श्री स्वदेश (हावड़ा)

चटर्जी, श्री सांताश्री (सेरमपुर)

चटर्जी, श्री सोमनाथ (बोलपुर)

चन्द्र कुमार, प्रो. (कांगड़ा)

चन्द्रप्पन, श्री सी.के. (त्रिचूर)

चव्हाण, श्री हरिश्चंद्र (मालेगांव)

चारेनामै, श्री मणि (बाहरी मणिपुर)

चालिहा, श्री किरिप (गुवाहाटी)

चावड़ा, श्री हरिसिंह (बनासकांठा)

चित्तन, श्री एन.एस.वी. (डिंडीगुल)

चिदम्बरम, श्री पी. (शिवगंगा)

चिन्ता मोहन, डा. (तिरूपति)

चौधरी, श्री अबू हशीम खां (मालदा)

चौधरी, डा. तुषार अमर सिंह (मांडवी)

चौधरी, श्री अधीर (बरहामपुर, पश्चिम बंगाल)

चौधरी, श्री निखिल कुमार (कटिहार)

चौधरी, श्री पंकज (महाराजगंज, उत्तर प्रदेश)

चौधरी, श्री बंसगोपल (आसनसोल)

चौधरी, श्रीमती अनुराधा (कैराना)

चौधरी, श्रीमती रेनुका (खम्माम)

चौबे, श्री लाल मुनी (बक्सर)

चौरे, श्री बापू हरी (धुले)

चौहान, श्री नंद कुमार सिंह (खंडवा)

जगदीशन, श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी (तिरूचेन्गोड़े)

जगन्नाथ, डा. एम. (नगरकुरनूल)

जटिया, डा. सत्यनारायण (उज्जैन)

जय प्रकाश, श्री (मोहनलाल गंज)

जय प्रकाश, श्री (हिसार)

जयाप्रदा, श्रीमती. (रामपुर)

जाधव, श्री प्रकाश बी. (रामटेक)

जायसवाल, श्री श्रीप्रकाश (कानपुर)

जार्ज, श्री के. फ्रांसिस (इदुक्की)

जालप्पा, श्री आर.एल. (चिकबलपुर)

जावमा, श्री वनलाल (मिजोरम)

जावले, श्री हरिभाऊ (जलगांव)

जिन्दल, श्री नवीन (कुरूक्षेत्र)

जीगजीणगी, श्री रमेश चंदप्पा (चिक्कोडी)

जेना, श्री मोहन (जाजपुर)

जैन, श्री पुष्प (पाली)

जोगी, श्री अजीत (महासमुन्द)

जोगैया, श्री हरि राम (नरसापुर)

जोशी, श्री कैलाश (भोपाल)

जोशी, श्री प्रहलाद (धारवाड़ उत्तर)

झा, श्री रघुनाथ (बेतिया)

टाइटलर, श्री जगदीश (दिल्ली सदर)

ठक्कर, श्रीमती जयाबहन बी. (वडोदरा)

ठाकुर, श्री अनुराग सिंह (हमीरपुर)

ठुम्मर, श्री वी.के. (अमरेली)

डम्पी, श्री अकबर अहमद (आजमगढ़)

डांगावास, श्री भंवर सिंह (नागौर)

डेलकर, श्री मोहन एस. (दादरा और नागर हवेली)

डोम, डा. रामचन्द्र (बीरभूम)

ढिल्लों, श्री शरनजीत सिंह (लुधियाना)

ढींडसा, श्री सुखदेव सिंह (संगरूर)

तंगबालु, श्री के.वी. (सेलम)

तस्लीमुद्दीन, श्री (किशनगंज)

तीरथ, श्रीमती कृष्णा (करोलबाग)

तोपदार, श्री तरित बरण (बैरकपुर)

त्रिपाठी, श्री चन्द्र मणि (रीवा)

त्रिपाठी, श्री बृज किशोर (पुरी)

थामस, श्री पी.सी. (मुवत्तुपुजा)

थुपस्तन, श्री छेवांग (लद्दाख)

दत्त, श्रीमती प्रिया (मुम्बई उत्तर-पश्चिम)

दरबार, श्री छत्तर सिंह (धार)

दास, डा. अलकेष (नवद्वीप)

दास, श्री खगेन (त्रिपुरा पश्चिम)

दासगुप्त, श्री गुरूदास (पंसुकरा)

दासमुंशी, श्री प्रियरंजन (रायगंज)

दिलेर, श्री किशन लाल (हाथरस)

दीक्षित, श्री सन्दीप (पूर्वी दिल्ली)

दुबे, श्री चन्द्र शेखर (धनबाद)

दूबे, श्री रमेश (मिर्जापुर)

देव, श्री बिक्रम केशरी (कालाहांडी)

देव, श्री वी. किशोर चन्द्र एस. (पार्वतीपुरम)

देव, श्री संतोष मोहन (सिल्चर)

देवरा, श्री मिलिन्द (मुंबई-दक्षिण)

देवेगौडा, श्री एच.डी. (हसन)

देशमुख, श्री सुभाष सुरेशचंद्र (शोलापुर)

धनराजू, डा. के. (टिंडिवनाम)

धर्मेन्द्र, श्री (बीकानेर)

धोत्रे, श्री संजय (अकोला)

नन्दी, श्री अमिताभ (दमदम)

नम्बाडन, श्री लोनाप्पन (मुकुन्दपुरम)

नरबुला, श्री डी. (दार्जिलिंग)

नरहिरे, श्रीमती कल्पना रमेश (उस्मानाबाद)

नरेन्द्र, श्री ए. (मेडक)

नाईक, श्री श्रीपाद येसो (पणजी)

नागपाल, श्री हरीश (अमरोहा)

नायक, श्री अनन्त (क्योंझर)

नायक, श्री ए. वेंकटेश (रायचूर)

नायक, श्रीमती अर्चना (केन्द्रपाड़ा)

निखिल कुमार, श्री (औरंगाबाद, बिहार)

निजामुद्दीन, श्री गुंडलूर (हिन्दुपुर)

निषाद, श्री महेन्द्र प्रसाद (फतेहपुर)

निहाल चन्द, श्री (श्रीगंगानगर)

पंडा, श्री ब्रह्मानन्द (जगतसिंहपुर)

पटेल, श्री किसनभाई वी. (बलसाड़)

पटेल, श्री जीवाभाई ए. (मेहसाना)

पटेल, श्री दाह्याभाई वल्लभभाई (दमण और दीव)

पटेल, श्री दिनशा (कैरा)

पटेल, श्री सोमाभाई जी. (सुरेन्द्र नगर)

पटेल, श्री हरिलाल माधवजी भाई (पोरबंदर)

पटैरिया, श्रीमती नीता (सिवनी)

पानाबाका, श्रीमती लक्ष्मी (नेल्लौर)

परस्ते, श्री दलपत सिंह (शहडोल)

परांजपे, श्री आनंद (ठाणे)

पल्लानी शानी, श्री के.सी. (करूर)

पलानीमनिक्कम, श्री एस.एस. (तंजावूर)

पवार, श्री शरद (बारामती)

पटले, श्री शिशुपाल एन. (भन्डारा)

पाटसाणी, डा. प्रसन्न कुमार (भुवनेश्वर)

पाटिल (यत्नाल), श्री बसनगौडा आर. (बीजापुर)

पाटिल, श्री डी.बी. (नांदेड़)

पाटील, श्री जयसिंगराव गायकवाड़ (बीड)

पाटील, श्री दानवे रावसाहेब (जालना)

पाटील, श्री प्रतीक पी. (सांगली)

पाटील, श्री बालासाहिब विखे (कोपरगांव)

पाटील, श्री लक्ष्मणराव (सतारा)

पाटील, श्री श्रीनिवास दादासाहेब (कराड़)

पाटील, श्रीमती रूपाताई डी. (लातूर)

पाटील, श्रीमती सूर्यकांता (हिंगोली)

पाठक, श्री ब्रजेश (उन्नाव)

पाठक, श्री हरिन (अहमदाबाद)

पाण्डा, श्री प्रबोध (मिदनापुर)

पाण्डेय, डा. लक्ष्मीनारायण (मंदसौर)

पायलट, श्री सचिन (दौसा)

पॉल, डा. सिबैस्टियन (एर्णाकुलम)

पाल, श्री रूपचंद (हुगली)

पासवान, श्री रामचन्द्र (रोसड़ा)

पासवान, श्री रामविलास (हाजीपुर)

पासवान, श्री वीरचन्द्र (नवादा)

पासवान, श्री सुकदेव (अररिया)

पिंगले, श्री देविदास (नासिक)

पुरन्देश्वरी, श्रीमती डी. (बापतला)

पोटाई, श्री सोहन (कांकेर)

पोन्नुस्वामी, श्री ई. (चिदंबरम)

प्रधान, श्री अशोक (खुर्जा)

प्रधान, श्री धर्मेन्द्र (देवगढ़)

प्रधान, श्री प्रशान्त (कोंटई)

प्रभु, श्री आर. (नीलगिरि)

प्रभु, श्री सुरेश प्रभाकर (राजापुर)

प्रसाद, कुंवर जितिन (शाहजहांपुर)

प्रसाद, श्री रामस्वरूप (नालंदा)

प्रसाद, श्री लालमणि (बस्ती)

प्रसाद, श्री हरिकेवल (सलेमपुर)

फर्नान्डीज, श्री जार्ज (मुजफ्फरपुर)

फातमी, श्री मोहम्मद अली अशरफ (दरभंगा)

फैन्थम, श्री फ्रांसिस (नामनिर्दिष्ट)

बंगरप्पा, श्री एस. (शिमोगा)

बंसल, श्री पवन कुमार (चण्डीगढ़)

बखला, श्री जोवाकिम (अलीपुरद्वार)

बघेल, प्रो. एस.पी. सिंह (जलेसर)

'बचदा', श्री बची सिंह रावत (अल्मोड़ा)

बब्बर, श्री राज (आगरा)

बर्क, डा. शफीकुर्रहमान (मुरादाबाद)

बर्मन, प्रो. बसुदेव (मथुरापुर)

बर्मन, श्री रनेन (बलूरघाट)

बर्मन, श्री हितेन (कूच बिहार)

बसु, श्री अनिल (आरामबाग)

बहुगुणा, श्री विजय (टिहरी गढ़वाल)

बाउरी, श्रीमती सुस्मिता (विष्णुपुर)

बादल, श्री सुखबीर सिंह (फरीदकोट)

"बाबा", श्री के.सी. सिंह (नैनीताल)

बारकू, श्री शिंगाडा दामोदर (दहानु)

बारड़, श्री जसुभाई दानाभाई (जूनागढ़)

बालू, श्री टी.आर. (मद्रास दक्षिण)

बिश्नोई, श्री कुलदीप (भिवानी)

बिश्नोई, श्री जसवंत सिंह (जोधपुर)

बिसेन, श्री गौरीशंकर चतुर्भुज (बालाघाट)

बुधौलिया, श्री राजनरायन (हमीरपुर, उत्तर प्रदेश)

बेल्लारमिन, श्री ए.वी. (नागरकोइल)

बैठा, श्री कैलाश (बगहा)

बैनर्जी, कुमारी ममता (कलकत्ता दक्षिण)

बैस, श्री रमेश (रायपुर)

बैसीमुथियारी, श्री सानछुमा खुंगुर (कोकराझार)

बोचा, श्रीमती झांसी लक्ष्मी (बोब्बिली)

बोस, श्री सुब्रत (बारासाट)

भक्त, श्री मनोरंजन (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह)

भगोरा, श्री महावीर (सलूम्बर)

भडाना, श्री अवतार सिंह (फरीदाबाद)

भाईलाल, श्री (राबर्टसगंज)

भार्गव, श्री गिरधारी लाल (जयपुर)

भूरिया, श्री कांति लाल (झाबुआ)

मंडल, श्री अबु अयीश (कटवा)

मंडल, श्री सनत कुमार (जयनगर)

मंडलिक, श्री सदाशिवराव दादोबा (कोल्हापुर)

मनोज, डा. के.एस. (अलेप्पी)

मरन्डी, श्री सुदाम (मयूरभंज)

मरांडी, श्री बाबू लाल (कोडरमा)

मल्लिकार्जुनैया, श्री एस. (तुमकुर)

मल्होत्रा, प्रो. विजय कुमार (दक्षिण दिल्ली)

मसूद, श्री रशीद (सहारनपुर)

महताब, श्री भर्तृहरि (कटक)

महतो, श्री टेक लाल (गिरिडीह)

महतो, श्री नरहरि (पुरूलिया)

महतो, श्रीमती सुमन (जमशेदपुर)

महरिया, श्री सुभाष (सीकर)

महाजन, श्रीमती सुमित्रा (इन्दौर)

महावीर प्रसाद, श्री (बांसगांव)

मांझी, श्री राजेश कुमार (गया)

माकन, श्री अजय (नई दिल्ली)

माझी, श्री परसुराम (नवरंगपुर)

माझी, श्री शंखलाल (अकबरपुर)

माडम, श्री विक्रमभाई अर्जनभाई (जामनगर)

माधवराज, श्रीमती मनोरमा (उडुपी)

मान, श्री जोरा सिंह (फिरोजपुर)

माने, श्रीमती निवेदिता (इचलकरांजी)

मारन, श्री दयानिधि (मद्रास मध्य)

माहेश्वरी, श्रीमती किरण (उदयपुर)

मिडियम, डा. बाबू राव (भद्राचलम)

मिस्त्री, श्री मधुसूदन (साबरकंठा)

मिश्रा, डा. राजेश (वाराणसी)

मीना, श्री नमोनारायण (सवाई माधोपुर)

मुंशी राम, श्री (बिजनौर)

मुकीम, मो. (डुमरियागंज)

मुखर्जी, श्री प्रणब (जंगीपुर)

मुत्तेमवार, श्री विलास (नागपुर)

मुनियप्पा, श्री के.एच. (कोलार)

मुफ्ती, सुश्री महबूबा (अनंतनाग)

मुर्मु, श्री रूपचन्द (झाड़ग्राम)

मुर्मु, श्री हेमलाल (राजमहल)

मूर्ति, श्री ए.के. (चेंगलपट्टू)

मेघवाल, श्री कैलाश (टोंक)

मेहता, श्री आलोक कुमार (समस्तीपुर)

मेहता, श्री भुवनेश्वर प्रसाद (हजारीबाग)

मैन्या,. डा, टोकचोम (आतंरिक मणिपुर)

मैक्लोड, सुश्री इन्ग्रिड (नामनिर्दिष्ट)

मोरे, श्री वसंतराव (इरन्दोल)

मो. ताहिर, श्री (सुल्तानपुर)

मोल्लाह, श्री हन्नान (उलूबेरिया)

मोहन, श्री पी. (मदुरै)

मोहले, श्री पुन्नूलाल (बिलासपुर)

यादव, कुंवर देवेन्द सिंह (एटा)

यादव, डा. करण सिंह (अलवर)

यादव, प्रो. राम गोपाल (संभल)

यादव, श्री अखिलेश (कन्नौज)

यादव, श्री अनिरूद्ध प्रसाद उर्फ साधु (गोपालगंज)

यादव, श्री अरूण (खरगौन)

यादव, श्री उमाकान्त (मछलीशहर)

यादव, श्री एम. अंजनकुमार (सिकन्दराबाद)

यादव, श्री कैलाश नाथ सिंह (चन्दौली)

यादव, श्री गिरिधारी (बांका)

यादव श्री चन्द्रपाल सिंह (झांसी)

यादव, श्री जय प्रकाश नारायण (मुंगेर)

यादव, श्री देवेन्द्र प्रसाद (झंझारपुर)

यादव, श्री धर्मेन्द (मैनपुरी)

यादव, श्री पारसनाथ (जौनपुर)

यादव, श्री बालेश्वर (पडरौना)

यादव, श्री भाल चन्द्र (खलीलाबाद)

यादव, श्री मित्रसेन (फैजाबाद)

यादव, श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू (मधेपुरा)

यादव, श्री राम कृपाल (पटना)

यादव, श्री सीता राम (सीतामढ़ी)

यास्खी, श्री मधु गौड (निजामाबाद)

येरननायडु, श्री किन्जरपु (श्रीकाकुलम)

रंजन, श्रीमती रंजीत (सहरसा)

रघुपति, श्री एस. (पुदुकोट्टई)

रठवा, श्री नारनभाई (छोटा उदयपुर)

रवीन्द्रन, श्री पन्नियन (तिरूवनन्तपुरम)

राई, श्री नकुल दास (सिक्किम)

राजगोपाल, श्री एल. (विजयवाड़ा)

राजभर, श्री चन्द्रदेव प्रसाद (घोसी)

राजा, श्री ए. (पैरम्बलूर)

राजू, श्री एम.एम. पल्लम (काकीनाड़ा)

राजेन्तीरन, श्रीमती एम.एस.के. भवानी (रामनाथपुरम)

राजेन्द्र कुमार, श्री (हरिद्वार)

राजेन्द्रन, श्री पी. (क्विलोन)

राठौड़, श्री हरिभाऊ (यवतमाल)

राणा, श्री काशीराम (सूरत)

राणा, श्री गुरजीत सिंह (जालंधर)

राणा, श्री रबिन्दर कुमार (खगड़िया)

राणा, श्री राजू (भावनगर)

राधाकृष्णन, श्री वरकला (चिरायिंकिल)

रानी, श्रीमती के. (रासीपुरम)

रामकृष्णा, श्री बाडिगा (मछलीपत्तनम)

रामचन्द्रन, श्री जिन्जी एन. (वन्डावासी)

रामदास, प्रो. एम. (पांडिचेरी)

राव, श्री ई. दयाकर (वारंगल)

राव, श्री के.एस. (एलूरू)

राव, श्री के. चन्द्रशेखर (करीमनगर)

राव, श्री डी. विट्टल (महबूब नगर)

राव, श्री पी. चलपति (अनकापल्ली)

राव, श्री रायापति सांबासिवा, (गुंटूर)

रावत, लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) तेजपाल सिंह (गढ़वाल)

रावत, प्रो. रासा सिंह (अजमेर)

रावत, श्री अशोक कुमार (मिसरिख)

रावत, श्री कमला प्रसाद (बाराबंकी)

रावत, श्री धनसिंह (बांसवाड़ा)

रावले, श्री मोहन (मुम्बई दक्षिण-मध्य)

रिजीजू, श्री कीरेन (अरुणाचल पश्चिम)

रियान, श्री बाजू बन (त्रिपुरा पूर्व)

रेंगे पाटील, श्री तुकाराम गणपतराव (परभनी)

रेड्डी, श्री अनन्त वेंकटरामी (अनन्तपुर)

रेड्डी, श्री ए. इंद्र करण (आदिलाबाद)

रेड्डी, श्री एन. जनार्दन (विशाखापतनम)

रेड्डी, श्री एम. राजा मोहन (नरसारावपेट)

रेड्डी, श्री एम. श्रीनिवासुलु (ओंगोले)

रेड्डी, श्री एस. जयपाल (मिरयालगुडा)

रेड्डी, श्री एस.पी.वाई. (नांदयाल)

रेड्डी, श्री के.जे.एस.पी. (कुरनूल)

रेड्डी, श्री वाई.एस. विवेकानन्द (कुडप्पा)

रेड्डी, श्री सुरवरम सुधाकर (नालगौंडा)

लक्ष्मण, श्रीमती सुशीला बंगारु (जालौर)

'ललन' श्री राजीव रंजन सिंह (बेगूसराय)

लालू प्रसाद, श्री (छपरा)

लाहिरी, श्री समिक (डायमंड हार्बर)

लिब्रा, सरदार सुखदेव सिंह (रोपड़)

वरकटकी, श्री नारायण चन्द्र (मंगलदोई)

वर्मा, श्री बेनी प्रसाद (कैसरगंज)

वर्मा, श्री भानु प्रताप सिंह (जालौन)

वर्मा, श्री रतिलाल कालीदास (धन्धुका)

वर्मा, श्री रवि प्रकाश (खीरी)

वर्मा, श्री राजेश (सीतापुर)

वर्मा, श्रीमती ऊषा (हरदोई)

वल्लभनेनी, श्री बालासोवरी (तेनाली)

वसावा, श्री मनसुखभाई डी. (भरूच)

वाघमारे, श्री सुरेश (वर्धा)

वाघेला, श्री शंकर सिंह (कपड़वंज)

वाजपेयी, श्री अटल बिहारी (लखनऊ)

वारसी, श्री अनिल शुक्ल (बिल्हौर)

विजयन, श्री ए.के.एस. (नागापट्टिनम)

विजयशंकर, श्री सी.एच. (मैसूर)

विनोद कुमार, श्री बी. (हनमकोंडा)

विरूपाक्षप्पा, श्री के. (कोप्पल)

वीरेन्द्र कुमार, श्री (सागर)

वीरेन्द्र कुमार, श्री एम.पी. (कालीकट)

वुन्डावल्ली, श्री अरूण कुमार (राजामुंदरी)

वेंकटपति, श्री के. (कुड्डालोर)

वेंकटस्वामी, श्री जी. (पेद्दापल्ली)

वेणुगोपाल, श्री डी. (तिरूपत्तूर)

वेलु, श्री आर. (अर्कोनम)

शंकर, श्री भीष्म उर्फ कुशल तिवारी (खलीलाबाद)

शर्मा, डा. अरविन्द (करनाल)

शर्मा, डा. अरूण कुमार (लखीमपुर)

शर्मा, श्री मदन लाल (जम्मू)

शहाबुद्दीन, डा. मोहम्मद (सीवान)

शांडिल्य, डा. कर्नल (सेवानिवृत्त) धनीराम (शिमला)

शाक्य, श्री रघुराज सिंह (इटावा)

शाहीन, श्री अब्दुल रशीद (बारामूला)

शिवनकर, प्रो. महादेवराव (चिमूर)

शिवन्ना, श्री एम. (चामराजनगर)

शिवाजीराव, श्री अधलराव पाटील (खेड़)

शुक्लवैद्य, श्री ललित मोहन (करीमगंज)

शुक्ला, श्रीमती करूणा (जाँजगीर)

शेखर, श्री नीरज (बलिया)

शेरवानी, श्री सलीम (बदायूं)

शैलेन्द्र कुमार, श्री (चायल)

श्रीकांतप्पा, श्री डी.सी. (चिकमगलूर)

संगमा, कुमारी अगाथा के. (तुरा)

संगलिअना, डा. एच.टी. (बंगलौर उत्तर)

सईदा, श्रीमती रूबाब (बहराइच)

सज्जन कुमार, श्री (बाहरी दिल्ली)

सतीदेवी, श्रीमती पी. (बडागरा)

सर, श्री निखिलानन्द (बर्दवान)

सरडगी, श्री इकबाल अहमद (गुलबर्गा)

सरोज, श्री तूफानी (सैदपुर)

सरोज, श्री दरोगा प्रसाद (लालगंज)

सत्पथी, श्री तथागत (ढेंकानाल)

सत्यनारायण, श्री सर्वे (सिद्दीपेट)

सलीम, मोहम्मद (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)

सहाय, श्री सुबोध कांत (रांची)

सांगवान, श्री किशन सिंह (सोनीपत)

साई प्रताप, श्री ए. (राजमपेट)

साय, श्री नन्द कुमार (सरगुजा)

साय, श्री विष्णु देव (रायगढ़)

सारदीना, श्री फ्रांसिस्को कोज्मी (मरमुगावो)

साहु, श्री चंद्रशेखर (बरहामपुर, उड़ीसा)

साहू, श्री ताराचंद (दुर्ग)

सिंधिया, श्री ज्योतिरादित्य माधवराव (गुना)

सिंधिया, श्रीमती यशोधरा राजे (ग्वालियर)

सिंह, कुंवर मानवेन्द्र (मथुरा)

सिंह, कुंवर सर्व राज (आंवला)

सिंह, चौधरी लाल (उधमपुर)

सिंह, चौधरी विजेन्द्र (अलीगढ़)

सिंह, डा. रघुवंश प्रसाद (वैशाली)

सिंह, डा. राम लखन (भिण्ड)

सिंह, राव इन्द्रजीत (महेन्द्रगढ़)

सिंह, श्री अक्षय प्रताप (प्रतापगढ़)

सिंह, श्री अखिलेश प्रसाद (मोतिहारी)

सिंह, श्री अजित (बागपत)

सिंह, श्री उदय (पूर्णिया)

सिंह, श्री कल्याण (बुलन्दशहर)

सिंह, श्री कीर्ति वर्धन (गोंडा)

सिंह, श्री गणेश (सतना)

सिंह, श्री गणेश प्रसाद (जहानाबाद)

सिंह, श्री चन्द्रभान (दमोह)

सिंह, श्री चन्द्रभूषण (फरुखाबाद)

सिंह, श्री दुष्यंत (झालावाड़)

सिंह, श्री देवव्रत (राजनन्दगांव)

सिंह, श्री प्रभुनाथ (महाराजगंज, बिहार)

सिंह, बृजभूषण शरण (बलरामपुर)

सिंह, श्री मानवेन्द्र (बाड़मेर)

सिंह, श्री मानिक (सीधी)

सिंह, श्री मोहन (देवरिया)

सिंह, श्री राकेश (जबलपुर)

सिंह, श्री रामपाल (विदिशा)

सिंह, श्री रेवती रमन (इलाहाबाद)

सिंह, श्री लक्ष्मण (राजगढ़)

सिंह, श्री विजयेन्द्र पाल (भीलवाड़ा)

सिंह, श्री विश्वेन्द्र (भरतपुर)

सिंह, श्री सरताज (होशंगाबाद)

सिंह, श्री सीताराम (शिवहर)

सिंह, श्री सुग्रीव (फूलबनी)

सिंह, श्री सूरज (बलिया, बिहार)

सिंह, श्रीमती कान्ति (आरा)

सिंह, श्रीमती प्रतिभा (मंडी)

सिंह, श्रीमती मीना (बिक्रमगंज)

सिंह देव, श्रीमती संगीता कुमारी (बोलनगीर)

सिकदर, श्रीमती ज्योतिर्मयी (कृष्नगर)

सिद्दीश्वर, श्री जी.एम. (दावणगेरे)

सिद्धू, श्री नवजोत सिंह (अमृतसर)

सिप्पीपारई, श्री रविचन्द्रन (शिवकाशी)

सिब्बल, श्री कपिल (चांदनी चौक)

सील, श्री सुधांशु (कलकत्ता उत्तर-पश्चिम)

सुगावनम, श्री ई.जी. (कृष्णागिरि)

सुजाता, श्रीमती सी.एस. (मवेलीकारा)

सुब्बा, श्री मणी कुमार (तेजपुर)

सुब्बारायण, श्री के. (कोयम्बटूर)

सुमन, श्री रामजीलाल (फिरोजाबाद)

सुम्ब्रूई, श्री बागुन (सिंहभूम)

सुरेन्द्रन, श्री चेंगरा (अडूर)

सूर्यवंशी, श्री नरसिंहराव एच. (बीदर)

सेठ, श्री लक्ष्मण (तामलुक)

सेठी, श्री अर्जुन (भद्रक)

सेनथिल, डा.आर. (धर्मपुरी)

सेन, श्रीमती मिनाती (जलपाईगुड़ी)

सेलवी, श्रीमती वी, राधिका (तिरूचेन्दूर)

सोनोवाल, श्री सर्वानन्द (डिब्रुगढ़)

सोरेन, श्री शिबु (दुमका)

सोलंकी, श्री भरतसिंह माधवसिंह (आनन्द)

सोलंकी, श्री भूपेन्द्रसिंह (गोधरा)

स्वाईं, श्री खारबेल (बालासोर)

स्वाईं, श्री हरिहर (आस्का)

हनुमनथप्पा, श्री एन.वाई. (चित्रदुर्ग)

हमज़ा, श्री टी.के. (मंजेरी)

हर्ष कुमार, श्री जी.वी. (अमलापुरम)

हसन, चौ. मुनव्वर (मुजफ्फरनगर)

हान्डिक, श्री विजय (जोरहाट)

हुड्डा, श्री दीपेन्द्र सिंह (रोहतक)

हुसैन, श्री अनवर (धूबरी)

हुसैन, श्री अब्दुल मन्नान (मुर्शिदाबाद)

हुसैन, श्री सैयद शाहनवाज (भागलपुर)

हेगड़े, श्री अनंत कुमार (कनारा)

30 आषाढ़, 1930 (शक)

लोक सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष

श्री सोमनाथ चटर्जी

उपाध्यक्ष

श्री चरणजीत सिंह अटवाल

सभापति तालिका

श्री गिरिधर गमांग

डा. सत्यनारायण जटिया

श्रीमती सुमित्रा महाजन

डा. लक्ष्मीनारायण पाण्डेय

श्री बालासाहिब विखे पाटील

श्री वरकला राधाकृष्णन

श्री अर्जुन सेठी

श्री मोहन सिंह

श्रीमती कृष्णा तीरथ

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव

महासचिव

श्री पी.डी.टी. आचारी

21 जुलाई, 2008

मंत्रिपरिषद्

कैबिनेट मंत्री

डॉ. मनमोहन सिंह	प्रधानमंत्री तथा उन मंत्रालयों/विभागों के भी प्रभारी जो विशेष रूप से किसी अन्य मंत्री को आबंटित नहीं किये गये हैं, जैसे: 1. कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय; 2. योजना मंत्रालय; 3. परमाणु ऊर्जा विभाग; 4. अंतरिक्ष विभाग; 5. कोयला मंत्रालय; और 6. पर्यावरण और वन मंत्रालय
श्री प्रणब मुखर्जी	विदेशी मंत्री
श्री अर्जुन सिंह	मानव संसाधन विकास मंत्री
श्री शरद पवार	कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
श्री लालू प्रसाद	रेल मंत्री
श्री ए.के. एंटनी	रक्षा मंत्री
श्री शिवाजी वि. पाटील	गृह मंत्री
श्री ए.आर. अंतुले	अल्पसंख्यक मामले मंत्री
श्री सुशील कुमार शिंदे	विद्युत मंत्री
श्री राम विलास पासवान	रसायन और उर्वरक मंत्री तथा इस्पात मंत्री
श्री एस. जयपाल रेड्डी	शहरी विकास मंत्री
श्री शीश राम ओला	खान मंत्री
श्री पी. चिदम्बरम	वित्त मंत्री
श्री महावीर प्रसाद	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री
श्री पी.आर. किन्डिया	जनजातीय कार्य मंत्री
श्री टी.आर. बालू	पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री
श्री शंकरसिंह वाघेला	वस्त्र मंत्री
श्री वायालार रवि	प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री

श्री कमल नाथ	वाणिज्य और उद्योग मंत्री
श्री हंस राज भारद्वाज	विधि और न्याय मंत्री
श्री संतोष मोहन देव	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री
प्रो. सैफुद्दीन सोज़	जल संसाधन मंत्री
डा. रघुवंश प्रसाद सिंह	ग्रामीण विकास मंत्री
श्री प्रियरंजन दासमुंशी	सूचना और प्रसारण मंत्री
श्री मणि शंकर अय्यर	पंचायती राज मंत्री तथा उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्री
श्रीमती मीरा कुमार	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
श्री मुरली देवरा	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री
श्रीमती अम्बिका सोनी	पर्यटन मंत्री और संस्कृति मंत्री
श्री ए. राजा	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
डा. अंबुमणि रामदास	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री
श्री कपिल सिब्बल	विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
श्री प्रेमचंद गुप्ता	कॉर्पोरेट कार्य मंत्री

राज्य मंत्री

श्री ऑस्कर फर्नांडीस	श्रम और रोजगार मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्रीमती रेनुका चौधरी	महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री सुबोध कांत सहाय	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री विलास मुत्तेमवार	नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के राज्य मंत्री
कुमारी सैलजा	आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री प्रफुल पटेल	नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री जी.के. वासन	सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री
डा. एम.एस. गिल	युवक कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री ई. अहमद	विदेश मंत्रालय से राज्य मंत्री
श्री विजय हान्डिक	रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा खान मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती पानाबाका लक्ष्मी	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

डा. शकील अहमद	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
राव इन्द्रजीत सिंह	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री नारनभाई रठवा	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के.एच. मुनियप्पा	पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री कांतिलाल भूरिया	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री श्रीप्रकाश जायसवाल	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री पृथ्वीराज चव्हाण	प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री तस्लीमुद्दीन	कृष मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती सूर्यकान्ता पाटील	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री आर. वेलु	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एस.एस. पलानीमनिक्कम	वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एस. रघुपति	पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के. वेंकटपति	विधि और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी जगदीशन	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ई.वी.के.एस. इलेंगोवन	वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती कान्ति सिंह	पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री नमोनारायन मीना	पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री जय प्रकाश नारायण यादव	जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. अखिलेश प्रसाद सिंह	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री पवन कुमार बंसल	वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री आनन्द शर्मा	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अजय माकन	शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री दिनशा पटेल	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्री एम.एम. पल्लम राजू	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अश्विनी कुमार	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग में राज्य मंत्री
श्री जयराम रमेश	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग में राज्य मंत्री तथा विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री चंद्रशेखर साहू	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती डी. पुरन्देश्वरी	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एम.एच. अम्बरीश	सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती वी. राधिका सेल्वी	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री वी. नारायणसामी	संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री संतोष बागड़ोदिया	कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री रघुनाथ झा	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. रामेश्वर उरांव	जनजातीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
कुंवर जितिन प्रसाद	इस्पात मंत्रालय में राज्य मंत्री

चौदहवीं लोक सभा के 14वें सत्र का प्रथम दिन

लोक सभा

सोमवार, 21 जुलाई, 2008/30 आषाढ़, 1930 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11 बजे समवेत हुई

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*]

राष्ट्रगान

(राष्ट्रगान की धुन बजाई गई)

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मैं सभा के सभी सदस्यों से सहयोग करने का अनुरोध करता हूं। यह एक महत्वपूर्ण सत्र हैं। सभा में कुछ नए सदस्य आए हैं। मुझे उनका स्वागत करते हुए बहुत खुशी हो रही हैं। आज अधिकतर सदस्य सभा में उपस्थित है यह देखकर मैं बहुत खुश हूं।

पूर्वाह्न 11.01 बजे

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब महासचिव शपथ अथवा प्रतिज्ञान के लिए नए सदस्यों को आमंत्रित करेंगे।

श्री इन्द्रकरण रेड्डी (आदिलाबाद)

श्री के. चन्द्रशेखर राव (करीमनगर)

श्री बी. विनोद कुमार (हनमकोंडा)

श्री इरा बेल्ली दयाकर राव (वारंगल)

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप ऐसा न करें, आप नए सदस्य हैं! नारेबाजी की अनुमति नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हमें इनकी बात सुननी चाहिए। एक युवा सदस्य का स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर)

श्री आनन्द परांजपे (ठाणे)

कुमारी अगाथा के. संगमा (तुरा)

अध्यक्ष महोदय : आज मुझे सभा में तीन युवा सांसदों का स्वागत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे साथ-साथ सभा को भी बहुत खुशी हो रही होगी। अब हमारी सभा में 35 वर्ष से कम आयु के 38 युवा सांसद है! निःसन्देह कुमारी अगाथा के. संगमा इस सूची में सबसे ऊपर हैं।

पूर्वाह्न 11.08 बजे

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे सभा को अपने पूर्व सहयोगियों श्री मोहम्मद मकबूल डार, श्री चिमन भाई शुक्ला, श्री गोपेश्वर, श्री राम प्रकाश त्रिपाठी और श्री जी.एम. बनातवाला के दुखद निधन की सूचना देनी है।

श्री मोहम्मद मकबूल डार वर्ष 1996 से 1997 तक ग्यारहवीं लोक सभा के सदस्य रहे तथा उन्होंने जम्मू और कश्मीर के अनन्तनाग संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

इससे पहले, श्री डार वर्ष 1983 से 1986 तक जम्मू और कश्मीर विधान सभा के सदस्य रहे।

एक कुशल प्रशासक, श्री डार वर्ष 1996 से 1998 तक गृह मंत्रालय में केन्द्रीय मंत्री रहे। वर्ष 1992 में उन्होंने जम्मू और कश्मीर राज्य की सलाहकार परिषद् के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

व्यवसाय से अधिवक्ता, श्री डार एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे।

श्री डार ने कई देशों की यात्रा की। उन्होंने वर्ष 1997 में मीना और मक्का में हज़ तीर्थयात्रियों के लिए राहत उपाय संबंधी ''हज़ गुडविल डेलीगेशन'' का नेतृत्व किया।

श्री मोहम्मद मकबूल डार का निधन 65 वर्ष की आयु में 17 अप्रैल, 2008 को अनन्तनाग, जम्मू-कश्मीर में हुआ।

श्री चिमन भाई शुक्ला वर्ष 1977 से 1979 तक छठी लोक सभा के सदस्य रहे तथा उन्होंने गुजरात के राजकोट संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

इससे पहले, श्री शुक्ला वर्ष 1967 से 1970 तक गुजरात विधान सभा के सदस्य रहे। श्री शुक्ला वर्ष 1993 से 1999 तक गुजरात राज्य से राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जब मैं निधन संबंधी उल्लेख कर रहा हूं, उस दौरान तो मैं आपसे शांति की अपेक्षा करता हूं। कम से कम दिवंगत संसद सदस्यों के प्रति तो कुछ आदर दिखाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : पेशे से अधिवक्ता, श्री शुक्ला ने कई वर्षों तक गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, राजकोट में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।

सामाजिक न्याय के पक्षधर श्री शुक्ला ने एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में सामाजिक रूप से उपेक्षित और दीन-हीन लोगों के उत्थान के लिए कार्य किया। श्री शुक्ला ने गोवा के मुक्ति आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

श्री चिमन भाई शुक्ला का निधन 80 वर्ष की आयु में 21 अप्रैल, 2008 को राजकोट, गुजरात में हुआ।

श्री गोपेश्वर वर्ष 1984 से 1989 तक आठवीं लोक सभा के सदस्य रहे तथा उन्होंने बिहार के जमशेदपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र, (अब झारखंड में) का प्रतिनिधित्व किया।

एक समर्पित राष्ट्रवादी श्री गोपेश्वर ने छात्र नेता के रूप में भारत के स्वतंत्रता संग्राम और भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वतंत्रता हासिल होने के बाद उन्होंने अपनी समस्त ऊर्जा को श्रम आन्दोलन में लगाया।

श्री गोपेश्वर भारतीय मजदूर संघ आन्दोलन के अग्रगण्य नेता थे। वर्ष 1987 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संघ कांग्रेस का महासचिव चुना गया।

श्री गोपेश्वर ने कई मजदूर संघों का नेतृत्व किया। गांधी जी की "ट्रस्टीशिप सिद्धान्त" में दृढ़ आस्था रखने वाले श्री गोपेश्वर ने अपना सारा जीवन, प्रबंधन में मजदूरों की भागीदारी दिलाने का लक्ष्य हासिल करने में लगा दिया। वह "आजाद हिन्द" और "लोक सेवक" पत्रिकाओं के संपादक थे।

उन्होंने कामकाजी वर्ग का पक्ष रखते हुए कई लेख लिखे। कई देशों की यात्रा करने वाले श्री गोपेश्वर ने वर्ष 1967, 1981, 1983 और 1984 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय कामकाजी वर्ग के लिए आवाज उठायी। वह, पूर्व सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया और विभिन्न यूरोपीय देशों की यात्रा पर गए भारतीय मजदूर शिष्टमंडल के सदस्य भी थे। वह इंटरनेशनल कन्फडरेशन ऑफ फ्री ट्रेड यूनियन्स तथा एशियन एंड पेसिफिक रीजनल आर्गेनाइजेशन्स के वाइस-प्रेजीडेंट भी रहे।

श्री गोपेश्वर को श्रम आन्दोलन हेतु समर्पित सेवाओं के लिए वर्ष 1985 में "सर जहांगीर गांधी मेडल फॉर इंडस्ट्रियल पीस" पुरस्कार से नवाजा गया।

श्री गोपेश्वर का निधन 87 वर्ष की आयु में 23 मई, 2008 को जमशेदपुर, झारखंड में हुआ।

श्री राम प्रकाश त्रिपाठी वर्ष 1977 से 1979 तक छठी लोक सभा के सदस्य रहे तथा उन्होंने उत्तर प्रदेश के कन्नौज संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

इससे पूर्व, श्री त्रिपाठी वर्ष 1967 और 1974 में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गए। वर्ष 2002 में, वह पुन: उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गए। एक कुशल प्रशासक, श्री त्रिपाठी ने वर्ष 2002-03 के दौरान उत्तर प्रदेश सरकार में सहकारिता कार्य मंत्री के रूप में कार्य किया।

एक समर्पित सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता श्री त्रिपाठी, समाज के निर्धन, और उपेक्षित दीन-हीन वर्ग के लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहे।

श्री राम प्रकाश त्रिपाठी का निधन 70 वर्ष की आयु में 24 जून, 2008 को फररुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ।

श्री जी.एम. बनातवाला वर्ष 1977 से 1991 तक छठी, सातवीं, आठवीं और नौवीं लोक सभा तथा वर्ष 1996 से 2004 तक ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं लोक सभा के सदस्य रहे। उन्होंने केरल के पोन्नानी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

इससे पूर्व, श्री बनातवाला वर्ष 1967 से 1977 तक महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य रहे।

कई दशकों से भी अधिक समय के अपनी दीर्घ और शानदार कार्यकाल के दौरान श्री बनातवाला ने विभिन्न संसदीय समितियों के सदस्य के रूप में कार्य किया।

एक सक्रिय सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता, श्री बनातवाला वर्ष 1954 से 1956 तक कुच्ची मेमोन स्टुडेंट्स सर्कल, मुम्बई तथा वर्ष 1965 से 1967 तक कुच्ची मेमोन जमात, मुम्बई के प्रेजीडेंट रहे। वह वर्ष 1954 से 1956 तक अंजुमन-ए-इस्लाम बोर्ड फॉर कॉमर्शियल एजुकेशन, मुम्बई; वर्ष 1967 से 1977 तक और 1999 में अलीगढ़

मुस्लिम युनिवर्सिटी, कोर्ट; वर्ष 1967 से 1977 तक महाराष्ट्र स्टेट इंटीग्रेशन कमेटी के सदस्य रहे। वह ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरत के सदस्य भी रहे। श्री बनातवाला ने वर्ष 1967 से 1977 के दौरान स्पेशल एग्जीक्यूटिव मैजिस्ट्रेट, मुम्बई के रूप में अपना विशिष्ट योग्दान दिया।

शैक्षणिक रूझान वाले व्यक्ति के रूप में श्री बनातवाला को अंग्रेजी में प्रकाशित "रीलिजन एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया" और "मुस्लिम लीग" नामक दो पुस्तकें लिखने और उर्दू में "आजादी के बाद" एक पुस्तक लिखने तथा जानी-मानी पत्रिकाओं में कई लेख लिखने का श्रेय प्राप्त है।

श्री बनातवाला का निधन 75 वर्ष की आयु में 25 जून, 2008 को मुम्बई में हुआ।

हम इन मित्रों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं तथा मुझे विश्वास है कि यह सभा शोक संतप्त परिवारों को संवेदनाएं प्रेषित करने में मेरा साथ देगी।

माननीय सदस्यों, आप सभी एक अनुभवी योद्धा और 1971 के युद्ध के हीरो, फील्ड मार्शल एस.एच.एफ.जे. मानेकशॉ के दुखद निधन से अवगत हैं। "सैम बहादुर" के नाम से लोकप्रिय फील्ड मार्शल मानेकशॉ इंडियन कमीशन आफिसर्स के प्रथम बैच के अधिकारी थे। उन्होंने वर्ष 1934 में इंडियन मिलिट्री अकादमी, देहरादून से यह पदवी पाई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने बर्मा मोर्चे पर लड़ाई लड़ी और इस युद्ध मोर्चे पर उनकी वीरता के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

फील्ड मार्शल मानेकशॉ ने सहज नेतृत्व वाले गुणों को प्रदर्शित करते हुए वर्ष 1947-48 के दौरान जम्मू और कश्मीर ऑपरेशन में अपने युद्ध कौशल का परिचय दिया। बाद में वे 8 गोरखा राइफल्स और 61 केवेलरी के कर्नल बने। पूर्वी कमान के जी.ओ.सी. के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने सफलतापूर्वक नागालैंड की कमान संभाली और उनके इस योगदान के लिए उन्हें पदम भूषण से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1969 में वे चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ बने। वर्ष 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उनकी कुशल रणनीति, रहस्यमय सैन्य दूरदर्शिता और प्रेरणापरक उपस्थिति के बल पर ही भारतीय सेना को विजयश्री मिली और इसी के परिणामस्वरूप तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेनाओं ने भारी संख्या में आत्म-समर्पण किया और इस प्रकार बांग्लादेश का जन्म हुआ। उन्हें वर्ष 1972 में पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया और उनके उत्कृष्ट नेतृत्व और कौशल के लिए उन्हें फील्ड मार्शल के रैंक से नवाजा गया। अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी वह सैनिकों और भूतपूर्व सैनिकों की विभिन्न कल्याणकारी परियोजनाओं से सम्बद्ध रहे।

उनके निधन से देश ने एक महान योद्धा, एक विरल सैन्य प्रतिभा, एक देशभक्त और एक हीरो खो दिया, जिसने हमारे देश की जनता को अभिप्रेरित किया।

फील्ड मार्शल एस.एच.एफ.जे. मानेकशॉ का निधन 94 वर्ष की आयु में 27 जून, 2008 को वेलिंग्टन, तमिलनाडु में हुआ।

माननीय सदस्यों, 29 जून, 2008 को आंध्र प्रदेश और उड़ीसा पुलिस की एंटी-नक्सल फोर्स के 50 से अधिक सुरक्षा कर्मी उड़ीसा के मल्कानगिरी जिले में बालीमेला तालाब में उस समय डूब गए जब उनकी नाव पर नक्सलियों ने हमला कर दिया।

माननीय सदस्यों, आपको 19 जुलाई, 2008 को हुई दूसरी घटना की भी जानकारी होगी जिसमें कम से कम 10 सैनिक मारे गए और लगभग 14 घायल हो गए। यह दुर्घटना सैनिकों से भरी एक आर्मी बस श्रीनगर-बारामूला हाईवे पर नरबाल से गुजरते समय हिजबुल-मुजाहिदीन आतंकवादियों द्वारा बिछायी गयी बारूदी सुरंग के फलस्वरूप हुई।

यह सभा, शूरवीर सैनिकों के निधन पर संवेदना व्यक्त करती है और घायल तथा शोकसंतप्त परिवारों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करती है। यह सभा नक्सलवादियों और आतंकवादियों के इन कृत्यों की घोर भर्त्सना करती है और इनके कुचक्रों को दृढ़ता से कुचलने का संकल्प लेती है।

माननीय सदस्यों, 7 जुलाई, 2008 को काबुल में भारतीय दूतावास के परिसर में हुए आतंकवादी हमले की घटना में पांच दूतावास कार्मिकों-ब्रिगेडियर आर.डी. मेहता, डिफेंस अर्टेशे, श्री वी.वी. राव, काउंसलर, आई.टी.बी.पी. कंटींजेंट से कांस्टेबल अजय सिंह पठानिया, कांस्टेबल रूप सिंह और एक अफगानी स्टाफ सदस्य श्री नियामुतुल्ला की जान चली गयी।

इस मामले में 60 से अधिक अफगान राष्ट्रिक भी मारे गए। इनमें दूतावास के बाहर तैनात अफगान सुरक्षाकर्मी, बच्चे और वहां से गुजर रहे अन्य निर्दोष व्यक्ति शामिल थे। यह सभा, उन व्यक्तियों के परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करती है, जिन्होंने अपनी जान गवां दी और उन कई अन्य लोगों के प्रति भी जो इसमें घायल हुए।

यह सभा अपने सरकारी कर्मियों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, टेक्नीशियनों, सुरक्षाकर्मियों, और उन अन्य राष्ट्रिकों की प्रतिबद्धता एवं समर्पण के लिए उनकी प्रशंसा करती है जो अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के कार्य से जुड़े हुए हैं।

अब सभा दिवंगत आत्माओं के सम्मान में थोड़ी देर मौन खड़ी रहेगी।

पूर्वाह्न 11.19 बजे

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

पूर्वाह्न 11.20 बजे

सभा पटल पर रखे गए पत्र

[अनुवाद]

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा. शकील अहमद) : महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं:—

(1) संविधान के अनुच्छेद 356(3) के अंतर्गत संविधान के अनुच्छेद 356 के खंड(2) के अधीन राष्ट्रपति द्वारा 30 मई, 2008 को जारी उद्घोषणा, जिसके द्वारा कर्नाटक राज्य के संबंध में उनके द्वारा 20 नवम्बर, 2007 को जारी की गई पूर्व उद्घोषणा का प्रतिसंहरण किया गया है, जो 30 मई, 2008 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 415(अ) में प्रकाशित हुई थी, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

[ग्रंथालय में रखी गयी, *देखिए* संख्या एल.टी.-8912/2008]

(2) राज्यपाल (उपलब्धियां, भत्ते और विशेषाधिकार) अधिनियम, 1982 की धारा 13 की उपधारा (3) के अंतर्गत राज्यपाल (भत्ते और विशेषाधिकार) संशोधन नियम, 2008 जो 8 जुलाई, 2008 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 506(अ) में प्रकाशित हुए थे, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

[ग्रंथालय में रखी गई, *देखिए* संख्या एल.टी.-8913/2008]

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री श्रीप्रकाश जायसवाल) : महोदय, मैं जम्मू-कश्मीर राज्य के संबंध में जम्मू-कश्मीर के संविधान की धारा 92 के अंतर्गत जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल द्वारा 10 जुलाई, 2008 को जारी उद्घोषणा, जो 10 जुलाई, 2008 के जम्मू-कश्मीर सरकार के राजपत्र में प्रकाशित हुई थी, की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

[ग्रंथालय में रखी गई, *देखिए* संख्या एल.टी.-8914/2008]

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल) : महोदय, मैं, संविधान के अनुच्छेद 123(2)(क) के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा (संशोधन) अध्यादेश, 2008 (2008 का संख्यांक 7) की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

[ग्रंथालय में रखी गई, *देखिए* संख्या एल.टी.-8915/2008]

पूर्वाह्न 11.21 बजे

सदस्य द्वारा त्यागपत्र

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मैं सभा को सूचित करता हूं कि मुझे 3 जून, 2008 को कर्नाटक के बेल्लारी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के निर्वाचित सदस्य श्री जी. करूणाकर रेड्डी का तत्काल प्रभाव से लोक सभा की सदस्यता से त्यागपत्र प्राप्त हुआ है। मैंने, 3 जून 2008 से उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया है।

पूर्वाह्न 11.21½ बजे

सभा की बैठकों से सदस्यों की अनुपस्थिति संबंधी समिति

10वां प्रतिवेदन

[हिन्दी]

श्री राजेश वर्मा (सीतापुर) : महोदय, मैं सभा की बैठकों से सदस्यों की अनुपस्थिति संबंधी समिति का दसवां प्रतिवेदन (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) प्रस्तुत करता हूं।

पूर्वाह्न 11.22 बजे

मंत्रिपरिषद में विश्वास प्रस्ताव

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, अब हम उस विषय पर आते हैं, जिसके लिए माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा इस विशेष सत्र को बुलाने का निदेश दिया गया था।

मैंने, आज प्रातः माननीय नेताओं के साथ बैठक की थी, और हम इस बात पर सहमत हुए कि इस चर्चा के लिए कम से कम 12 घंटे का समय दिया जाए। यदि सभा चाहे तो हम आज रात 10 बजे तक यह चर्चा जारी रख सकती है और इसके अतिरिक्त हम कल भी इस वाद-विवाद को जारी रख सकते हैं क्योंकि कल प्रश्नकाल नहीं होगा। हम अंदाजा लगा रहे हैं कि यदि माननीय प्रधान मंत्री महोदय चाहें तो शाय 5 बजे अथवा 6 बजे उत्तर दे सकते हैं।

इस मामले को आरम्भ करने से पहले मुझे सभी माननीय सदस्यों को इसके बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप सभी को इस वाद-विवाद के महत्व के बारे में पता है। पूरे देश की निगाहें इसपर लगी हैं। माननीय नेताओं ने उन्हें तथा सदस्यों को दिए गए समय के महत्व पर ठीक ही बल दिया था, क्योंकि इसके द्वारा ही वे अपने विचार रख सकते हैं। जहां तक अध्यक्षपीठ का संबंध है, निश्चित रूप से पूरा अवसर दिया जाएगा। सभा के सभी दलों से मेरी सविनय अपील है कि चर्चा इस तरीके से होनी चाहिए, जिससे कि संसद की गरिमा बढ़े। महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए जाएंगे और कुछ टोका-टाकी भी होगी, परन्तु कृपया यह ध्यान रखिए कि सभा पूरे गरिमामय तरीके से उस प्रयोजनार्थ चले, जिसके लिए वह बुलाई गई है। देश की निगाहें हम पर हैं। इसलिए, कृपया सहयोग कीजिए। अध्यक्षपीठ का यह देखने के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं है कि सभा उचित रूप से चले।

विपक्ष के माननीय नेता मुझे खेद है, मुझे बताया गया है कि माननीय प्रधानमंत्री महोदय बोलेंगे।

(व्यवधान)

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव करता हूं:—

"कि यह सभा मंत्रि परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है"

अध्यक्ष महोदय, आज हमारी सरकार अपने कार्यकाल के चार वर्ष और दो माह का समय पूरा कर चुकी है। पिछले कई दशकों से हम अपने कार्यकाल के प्रारंभ होने के कुछेक महीनों में ही विश्वास मत सिद्ध करने के लिए बाध्य किए जाने के अभ्यस्त हो चुके हैं। यहां पर यदि हम चार वर्ष से ज्यादा समय से टिके हुए हैं तो इस सबका श्रेय, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) के सभी नेताओं, यूपीए अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी के नेतृत्व, श्री ज्योति बसु, श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत और डा. एम. करूणानिधि के समझबूझ और दूरदर्शी नेतृत्व को ही जाता है। ये सभी हमारी गठबंधन सरकार के वास्तुकार हैं, यह तो उनकी समझदारी और दूरदर्शिता ही है जिससे हमारी सरकार को इन चार वर्षों तक सुचारू रूप से चलाने में मुझे सहायता मिली है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहें। आपको पूरा अवसर मिलेगा।

डा. मनमोहन सिंह : अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है कि संसद का यह सत्र ऐसे समय पर बुलाया गया है जब सरकार का ध्यान अर्थव्यवस्था विशेषकर मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और हमारे लोगों विशेषकर हमारे कृषकों के कल्याण के कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने पर केन्द्रित है। मेरा कहना है कि महोदय इस प्रथा से बचना चाहिए। मैंने वाम दलों सहित सभी राजनीतिक दलों को बार-बार यह आश्वासन दिया था कि यदि सरकार को अपने सुरक्षोपाय करार पर अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आई.ए.ई.ए.) के साथ वार्ता पूरी करने की अनुमति दी जाती तो परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह (एन.एस.जी.) का निर्णय होने के बाद मैं स्वयं संसद में आता और नागरिक परमाणु ऊर्जा निगम करार जो कि हम करना चाहते हैं, से पहले संसद का मार्गदर्शन मांगता। यह मेरा सत्यनिष्ठ आश्वासन था।

अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य इस बात से अवगत हैं कि वे विशिष्ट कारण जिनके चलते इस विश्वास मत की आवश्यकता पड़ी वह सिविल परमाणु ऊर्जा के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग मांगने संबंधी हमारी पहल के मुद्दे पर वाम दलों के समर्थन वापस लेने से उत्पन्न हुए है। समर्थन वापस लेने की सूचना मुझे उस समय मिली जब मैं जापान में जी-आठ की बैठक में शिरकत कर रहा था। मैं जैसे ही वापस आया मैंने महामहिम प्रधानमंत्री से मुलाकात की और मैंने स्वयं यथाशीघ्र संसद में अपना विश्वास मत प्रस्तुत करने का प्रस्ताव किया। यह सत्र उसी दायित्व को पूरा करने के लिए बुलाया गया है।

महोदय, मैं विगत चार वर्षों में इस सरकार के पूरे रिकार्ड के आधार पर आज यहां इस सभा का समर्थन मांगता हूं। जब मैंने प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया था तो मुझे यह दायित्व सौंपा गया था कि मैं हर समय और हर ममाले पर राष्ट्र हित में कार्य करूं। मैं इस सम्मानीय सभा को इस सभा के माध्यम से भारत के लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमने प्रत्येक निर्णय, प्रत्येक नीति पूरी तरह से इस विश्वास से बनाई है कि ऐसा हमने हमारे लोगों और राष्ट्र के हित में किया है।

हमने जो कुछ भी किया है उसकी प्रेरणा हमें अपने गौरवमयी स्वतंत्रता संग्राम और राजीव गांधी की उस शपथ से मिली है जिसमें कहा गया है कि हमारा मिशन राष्ट्र को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने का है।

अध्यक्ष महोदय, मैं सभा को हमारे कार्यों की समीक्षा करने हेतु अवसर देने का स्वागत करता हूं। मुझे इस बात में कोई शक नहीं है कि भारत के लोग जब इस बात पर ध्यान देंगे कि हमने क्या-क्या

[डा. मनमोहन सिंह]

कार्य किए हैं तो वे हमारी सरकार और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो कि सबसे पुरानी और अनुभवी पार्टी है, से अपनी आस्था जताएंगे। मेरा मानना है कि हमारी पार्टी इस महान राष्ट्र की सर्वाधिक देशभक्त राजनीतिक पार्टी है।

अध्यक्ष महोदय, यह हमारे स्वतंत्रता संग्राम की विरासत ही है जिसने इस सरकार को बनाए रखा हुआ है। प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करते हुए मैं महान गुरू गोविन्द सिंह की प्रसिद्ध उक्ति से प्रेरित हुआ हूं और मैं उन शब्दों को दोहरा रहा हूं जो गुरू गोविन्द सिंह जी ने कहे थे जिससे हमें अपने कार्यों के निष्पादन में आनन्द आता है।

"देहु शिवा वर मोहे, शुभ करमन तें कबहुं न टरूं।
न डरूं अरसौं जब जाए लड़ूं, निश्चय कर अपनी जीत करूं।।
अर सिख हूं, अपने ही मन सौं, इहि लालच हौं, गुन तौं उचरौं।
जब आव की औंध निधान बनै, अत हि रन में तब जूझ मरूं।।"

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

"कि यह सभा मंत्रिपरिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती हैं। माननीय प्रधानमंत्री ने प्रस्ताव पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। अब विपक्ष के माननीय नेता बोलेंगें।"

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधानमंत्री द्वारा लाए गए प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हूं। इसके बावजूद कि उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान इस सरकार ने कार्यनिष्पादन की पूर्णता के आधार पर विचार करने का अवसर प्रदान करेगा, न केवल इस आधार पर कि सरकार अल्पमत में आ गई है बल्कि इस सरकार के कार्यनिष्पादन की पूर्णता पर आज तथा कल वाद-विवाद होगा।

अध्यक्ष महोदय : यह एक महत्वपूर्ण वाद-विवाद है तथा विपक्ष के नेता बोल रहे हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुझे पुराने सभी मामले याद हैं जहां विश्वास प्रस्ताव लाए गए तथा लगभग निरपवाद रूप से प्रधानमंत्री ने वाद-विवाद की शुरूआत कार्यनिष्पादन का सारांश प्रस्तुत कर की। निश्चित रूप से प्रधानमंत्री वाद-विवाद का उत्तर देने के लिए स्वतंत्र है तथा प्रारंभ में संक्षिप्त टिप्पणी कर सकते हैं जैसा कि उन्होंने किया।

प्रारंभ में मुझे यह कहने दें कि सभा में केन्द्रबिन्दु यह होना चाहिए कि यह बहस क्यों आवश्यक हुई। सामान्यतया, परमाणु समझौते का मामला दो वर्षों से चल रहा था। गत अगस्त, 2007 में पहली बार मुझे यह प्रतीत हुआ कि इस सरकार ने वामपक्ष के साथ नाता तोड़ने का मन बना लिया है जब कोलकाता दैनिक के एक संवाददाता को मुखपृष्ठ पर प्रमुख रूप से यह छापने को कहा गया कि जहां तक अमेरिका-भारत परमाणु सौदे का संबंध है, सरकार ने एक निर्णय लिया है जिसपर कोई बातचीत नहीं हो सकती है तथा यदि वामपक्ष इसका अनुमोदन नहीं करता है तो वे जो भी करना चाहें इसके लिए वे स्वतंत्र हैं। उस समय मैंने महसूस किया कि जो कुछ भी हुआ वह अचानक हुआ। लेकिन वह चरण अगस्त से लेकर आजतक जारी रहा जिसके परिणामस्वरूप मुझे बार-बार कहना पड़ा कि मुझे लगता है कि इस सरकार को पक्षाघात हो गया है और परमाणु समझोते के अलावा कोई भी बात नहीं की जा रही है।

जब प्रधानमंत्री ने कहा कि यह वह समय था जब हम मुद्रास्फीति, मूल्य, जो आम आदमी को प्रभावित करते हैं, की समस्याओं को दूर करने पर ध्यान देना चाहिए था, इसकी बजाए, मुझे इस पर आश्चर्य होता है कि लगभग एक वर्ष से परमाणु समझौते पर सरकार तथा वामदलों के बीच विवाद चला आ रहा है। स्पष्ट रूप से, प्रारंभ में मुझे कहने दें कि मैं वामपक्ष से सहमत नहीं हूं, कई मामलों में हममें व्यापक मतभेद हैं लेकिन इस विशेष मामले में, मैं कहूंगा कि यदि सरकार आज अस्थिर हुई है तथा ससंद के कार्यभार संभालने के चार वर्ष तथा दो माह पश्चात् जबकि 22 मई, 2004 को इस सरकार को शपथ दिलाई गई है, इस प्रकार के विश्वास प्रस्ताव की मांग की गई है – तो इस सरकार की मतदान में हारने की संभावना है... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वे विपक्ष के नेता हैं। कृपया व्यवधान न डालें।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने कहा है, "मतदान से हारने की संभावना है", तथा किसी को इसपर आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आखिरकार, ऐसे लोग हैं जो यह कह रहे हैं कि ऐसा होने जा रहा है; इतने सारे मत इस तरह या उस तरह डाले जाएंगे। मैंने ऐसा नहीं कहा है। मतों में हारे जाने की संभावना से कोई इंकार नहीं कर सकता है। यह ऐसा कहने जैसा है, जैसा कि मैंने बार-बार कहा कि संप्रग सरकार की स्थिति आज आई.सी.यू. में भर्त्ती मरीज जैसी है। यदि कोई मरीज के बारे में बात करता है तो स्वाभाविक रूप से पहला प्रश्न पूछा जाता है "कि वे बचेंगे या नहीं?"...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले, मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा। कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। इस प्रकार के व्यवधान की अनुमति नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं भरसक कोशिश कर रहा है।

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : हमने प्रधानमंत्री के भाषण में बाधा नहीं पहुंचाई है।

अध्यक्ष महोदय : मैं सभी वर्गों से पुनः अपील करता हूं। जब विपक्ष के नेता बोल रहे हैं तब सभा में कोई बाधा उत्पन्न नहीं की जानी चाहिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं उनसे पूछ रहा हूं। मैंने उनको कहा है। आप क्या कर रहे हैं? मैं कठोरता से पालन करवाऊंगा। यह एक पवित्र वाद-विवाद है। विपक्ष के माननीय नेता बोल रहे हैं। मैं सभी माननीय सदस्यों से सभा तथा विपक्ष के माननीय नेता के प्रति शिष्टाचार बरतने की अपील करता हूं। यह उचित नहीं है। यदि आप सुनने की कला विकसित नहीं करेंगे तो आप उत्तर कैसे देंगे? आपको दूसरे की बात अवश्य सुननी चाहिए तथा तब अपना उत्तर देना चाहिए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अतएव, महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह परिस्थिति विपक्ष, राजग या वामपंथियों द्वारा भी नहीं लाई गई है जिनके साथ हम अन्यथा असहमत हैं। आज इस विशेष विश्वास प्रस्ताव पर आम चुनाव के कुछ माह पहले चर्चा हो रही है, जिस चुनाव में लोग यह निर्णय लेंगे कि इस सरकार को रहना चाहिए या नहीं। अगर यह सरकार कल बच जाती है तब भी...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत हो जाइए। यह क्या हो रहा है मैं नहीं जानता। इतना धैर्य नहीं है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : कारण यह है कि परिस्थिति सरकार द्वारा स्वयं आमंत्रित की गई है। प्रधानमंत्री महोदय, मुझे आपसे व्यक्तिगत रूप से यह कहते दुख हो रहा है कि गत वर्ष 'द टेलीग्राफ' को जब साक्षात्कार दिया, तब आपने यह शुरू किया। यह शुरू करने के बाद, ऐसा क्यों कहना कि केवल इस विशेष विचलन के कारण, जैसाकि — मैंने आपका एक वक्तव्य देखा जिसमें आपने इसे 'विशेष विचलन' कहा — आप मूल्य, आम आदमी के मामलों से नहीं निपट पा रहे हैं? कृपया ऐसा नहीं कहें।

हमने सरकार को अस्थिर नहीं किया है। यहां तक कि कम्युनिस्ट भी मामले को लंबा खींच रहे थे ताकि कोई हल निकल सके। आपने सं.प्र.ग. वाम संयुक्त समिति की स्थापना की तथा आपके वरिष्ठतम मंत्री प्रणव मुखर्जी ने इसकी अध्यक्षता की। वरिष्ठतम मंत्री ने समिति को आश्वासन दिया कि आप अपने सुरक्षोपाय के साथ यानि ए.ई.ए. में तभी जाएंगे जब उनकी सहमति आपको मिल जायेगी। आज हमें बताया गया कि आपने कहा कि आप वहां जाएंगे तथा आप एन.एस.जी. जाएंगे तथा तब वापस उनके पास आएंगे। मैं नहीं जानता हूं। वे ऐसा कह सकते हैं। मैंने ऐसे कितने ही वक्तव्य देखे हैं जिनमें उन्हें तथा देश को स्पष्टरूप से यह आश्वासन दिया गया है कि हमें वहां नहीं जाना चाहिए जब तक कि यह नहीं हो जाए। यहां तक कि श्री प्रणव मुखर्जी ने स्वयं सार्वजनिक रूप से इस विश्वास प्रस्ताव के बारे में कहा कि सभा से विश्वास मत प्राप्त किए बिना सरकार आई.ए.ई.ए. में नहीं जाएगी तथा वे ऐसा प्रधानमंत्री के साथ फोन पर बात करने के बाद कह रहे थे। ऐसा उन्होंने कहा तथा अचानक हमने पाया कि प्रारूप वहां भेज दिया गया है।

जब इस समति तथा वामपक्ष ने प्रारूप दिखाने को कहा तो उन्होंने कहा, "यह वर्गीकृत है। आप इसे नहीं देख सकते हैं?" विश्व के दूसरे देशों के आई.ए.ई.ए. के सदस्य इसे देख सकते हैं लेकिन भारत की संसद नहीं। अतएव किसी ने पूछा, "किसने इसे वर्गीकृत किया? भारत सरकार ने? आई.ए.ई.ए. ने? वाशिंगटन ने? किसने इसे वर्गीकृत किया? हम जानना चाहते हैं?" ऐसे तमाम प्रश्न यहां मौजूद हैं।

अतएव, मैं कह रहा हूं कि कृपया इस प्रकार के सत्र के लिए किसी और को दोष नहीं दें। कम से कम मेरी स्मृति में, ऐसा सत्र कभी नहीं हुआ। भारत के संसदीय इतिहास में पहली बार दो दिन का यह विशेष सत्र हो रहा है कि इस अल्पमत की सरकार को चलने देना चाहिए या नहीं। अतएव किसी और को दोष नहीं दें। यदि किसी को दोष देना है तो वह आपकी सरकार है। एक तरह से आप व्यक्तिगत रूप से तथा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष, बिना उनकी अनुमति के, आप एक कदम भी नहीं उठा सकते थे...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं?

[हिन्दी]

आप बोलिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइए। क्या बात है?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : यह सच है कि हम विपक्ष में हैं, और सभा में इस सरकार को हराना चाहते हैं। किन्तु मैं हराने और अस्थिर करने में फर्क मानता हूं। किसी चुनी हुई सरकार को अस्थिर करना हमारे स्वभाव में नहीं है। यह हमारे स्वभाव में नहीं है, आप ऐसा करते होंगे, आपने चन्द्रशेखर, देवगौड़ा और आई.के. गुजराल के साथ ऐसा किया; और आपने 1999 में वाजपेयी जी के साथ भी

[श्री लाल कृष्ण आडवाणी]

ऐसा ही किया जब हम केवल एक वोट से हारे और वह वोट भी ऐसे व्यक्ति का था जिसकी संसद सदस्यता समाप्त हो चुकी थी और वह एक राज्य का मुख्यमंत्री बन गया था। इसलिए, मैं सरकार को हराने और उसे अस्थिर करने में भेद कर रहा हूं।

[हिन्दी]

हम इस सरकार को हराना जरूर चाहेंगे, लेकिन अस्थिर नहीं करता, अस्थिर करना और हराना...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, यदि आप अपने वक्ताओं की बात नहीं सुनोगे तो वे परेशान हो जाएंगे।

(व्यवधान)

शहरी विकास मंत्री (श्री एस. जयपाल रेड्डी) : आडवाणी जी, क्या आपने अपनी बात समाप्त कर ली है?...*(व्यवधान)*

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : नहीं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब तक वे अपनी बात समाप्त नहीं कर लेते हैं।

(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अन्यथा, आपके किसी भी वक्ता को बोलने नहीं दिया जाएगा...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : विपक्ष के नेता के वक्तव्य के अतिरिक्त किसी भी बात को कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए। कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मैं यह कर रहा हूं मैं चुपचाप नहीं बैठा हूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं बार-बार सभा के सभी पक्षों से अनुरोध कर रहा हूं कि कृपया सही प्रकार से चर्चा करें। आपको माननीय सदस्यों के किसी भी भाषण का उत्तर देने का अधिकार है। मैं किसी भी पक्ष के किसी भी सदस्य को तब तक नहीं रोक रहा हूं जब तक कि वह संसदीय बात कर रहे हैं। उन्होंने अभी तक कुछ भी असंसदीय नहीं कहा है। आप उन्हें कैसे परेशान कर सकते हैं? आप उनकी सहमति हेतु एक या दो बार पूछ सकते हैं। यदि वे अनुमति दें तो आप प्रश्न पूछें। अन्यथा नहीं। यह सुस्थापित संसदीय मानक है। मैं आप सबसे यह अनुरोध करता हूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री जी.वी. हर्ष कुमार, ऐसा मत करिए। मैं आपको बाहर जाने के लिए कह दूंगा। आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : क्या बात है? आपको भी बोलना है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप सभा में मनमानी कैसे कर सकते हैं?

(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : माननीय अध्यक्ष महोदय, वास्तव में मैं यह दावा कर सकता हूं कि मैंने आजादी के बाद अर्थात् 1947 या यह कहें कि 1950, जब भारत का संविधान बना था, से लेकर अब तक लगभग सभी सरकारों के प्रधानमंत्रियों को देखा है — पहले प्रेस दीर्घा से एक पत्रकार और वाद में एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता और लगभग 4 दशकों से एक संसद सदस्य के रूप में।

मैं यह कह सकता हूं कि मैंने अल्पकालीन सरकारों को देखा है; अस्थिर सरकारों को देखा है; किन्तु मैंने इतने लंबे समय तक पंगु रही सरकार को पहले कभी नहीं देखा है। करार के अलावा और कोई बात नहीं हो रही है; वाम दलों और सरकार के बीच लगातार बैठकों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो रहा है और हरेक यह सोच रहा है — क्या यह सरकार बचेगी अथवा जाएगी। आजकल यह कहा जा रहा है कि परमाणु करार देश हित में है और मुझसे तथा मेरी पार्टी से बार-बार यह अनुरोध कर रहे हैं कि हम राष्ट्र हित की बात करे और हम इस करार का समर्थन क्यों नहीं कर रहे हैं। मेरा उत्तर यह है कि यदि सरकार वास्तव में यह सोचती है कि यह करार काफी महत्वपूर्ण है तो फिर उन्होंने अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम में और यहां तक कि कांग्रेस पार्टी ने अपने चुनावी घोषणापत्र में भी इसका उल्लेख क्यों नहीं किया? ऐसा क्या हुआ? क्या यह अचानक बहुत महत्वपूर्ण हो गया है?

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

प्रधानमंत्री जी, कई बार मैं यह सोचता हूं कि यह करार दो सार्वभौमिक देशों के बीच करार नहीं है, मुझे ऐसा लगता है कि यह दो व्यक्तियों के बीच समझौता है और यदि उनमें से एक व्यक्ति हमारे देश का प्रधानमंत्री हो तो वह यह समझता है कि इस समझौते को मूर्त रूप देने से अधिक और कोई चीज महत्वपूर्ण नहीं है। प्रधानमंत्री जी, मैं यह जानकर दुखी हूं कि यह करार इस प्रकार किया जा रहा है जिससे भारत इस करार में छोटा साझेदार (जूनियर पार्टनर) बन गया है।

मैं नहीं चाहता कि यह संसार एक धुव्रीय संसार बन जाए जैसा कि यह अब बन गया है। ऐसा नहीं होना चाहिए। संसार बहुध्रुवीय होना चाहिए और इसमें मैं भारत को एक प्रमुख ध्रुव के रूप में देखना चाहता हूं: और एक प्रमुख ध्रुव बनने के लिए, आप यह बात नहीं मानेंगे कि ये देश परमाणु हथियार सम्पन्न देश हैं जबकि भारत स्थायी रूप से एक गैर-परमाणु हथियार सम्पन्न देश है; और करार में यह दिया हुआ है। यह न केवल करार में है अपितु आई.ए.ई.ए. को भेजे गए प्रारूप मसौदे में भी दिया हुआ है; ऐसा एक अध्याय के आधार पर है जो गैर-परमाणु हथियार सम्पन्न देशों से संबंधित है।

मेरे सहयोगी श्री अरूण शोरी ने राज्य सभा में इसपर विस्तार से चर्चा की है और उन्होंने इसपर काफी कुछ लिखा भी है; मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि आज चर्चा का मुद्दा परमाणु करार न होकर यह है कि यह सरकार अल्पमत में क्यों आ गई और क्या इस सरकार द्वारा आज वोट जुटाकर अपने को बहुमत में लाना सही है या नहीं — और इसी आधार पर सभा को प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत किए गए विश्वास मत पर निर्णय लेना चाहिए।

मेरी यह शिकायत है कि यू.पी.ए. सरकार, वर्तमान प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष तथा कथित गठबंधन 'धर्म' में विश्वास नहीं रखते हैं। वाजपेयी जी राजग के प्रमुख थे। मैं नहीं जानता हूं कि आपमें से कितने लोग यह जानते हैं कि इस देश में राजनैतिक दलों में से शायद भाजपा, जो पहले जनसंघ था, ही ऐसा दल है जो 1960 से, जब चीन परमाणु ताकत बन चुका था और लोप नुर में पहला परमाणु परीक्षण कर चुका था, लगातार यह कह रहा है कि हमें भी भारत को एक परमाणु हथियार सम्पन्न देश बनाने का निर्णय लेना चाहिए ऐसा 1964 से चल रहा है।

इसलिए, जब 1998 में एन.डी.ए. का गठन किया गया था, उस समय हमारे अधिकांश सहयोगी तथा एन.डी.ए. के अधिकांश साझेदारों के विचार समान नहीं थे। उनमें से किसी भी दल के घोषणापत्र में यह मुद्दा नहीं था। लेकिन हमने उनके साथ इसकी चर्चा की थी। उन्होंने कहा था कि वे भारतीय जनता पार्टी के घोषणापत्र के हमारे कुछ अन्य बिंदुओं से सहमत नहीं थे, लेकिन जहां तक भारत को परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्र बनाने का संबंध है, वे इस पर सहमत थे। इसलिए, उन्हें इसे न्यूनतम साझा कार्यक्रम में शामिल करने में कोई आपत्ति नहीं थी, जिसे हमने शासन के लिए राष्ट्रीय कार्यसूची का नाम दिया था। उनकी सहमति मिलने के पश्चात् ही हम आगे बढ़े। इसी को हमने 'गठबंधन धर्म का पालन' कहा था।

ऐसा करने के पश्चात् श्री वाजपेयी, जिन्हें 19 मार्च, 1998 को शपथ दिलाई गई थी, ने इस कार्य को पूरा करने में दो महीने से भी कम समय लिया तथा 11 मई को हमने पोखरण II के परीक्षण किए थे।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : ये सभी वे तथ्य हैं जिन्हें समझना आवश्यक है। मैं इस पर जोर देना चाहता हूं कि अगर गठबंधन धर्म का पालन किया गया होता तो इस प्रस्ताव को लाये जाने की आवश्यकता नहीं होती। वे चुनाव तक जड़ता की स्थिति में बने रहते। कठिनाई क्या थी।

महोदय, उनकी अपनी समस्याएं हैं। वे चुनाव का सामना करने के लिए बहुत उत्सुक नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने आपको अस्थिर नहीं किया। वे आपको सत्ता में बनाए रखना चाहते थे, लेकिन आपने स्वयं यह मुसीबत मोल ली और इसके बाद कृपया इसे बाधा का नाम न दें। यह संवैधानिक संसदीय प्रणाली का हिस्सा है। प्रत्येक सरकार को लोक सभा में अपना बहुमत सिद्ध करने की स्थिति में होना चाहिए। निश्चित रूप से यह एक विडम्बना है कि पहली बार प्रधानमंत्री स्वयं अपने प्रस्ताव पर मतदान नहीं कर सकेंगे।

विदेशी मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : क्या श्री आई.के. गुजराल ने विश्वास प्रस्ताव पर मतदान किया था? क्या श्री देवेगौड़ा ने विश्वास प्रस्ताव पर मतदान किया था?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं श्री गुजराल अथवा श्री देवेगौड़ा के बारे में बात नहीं कर रहा हूं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने नेता के भाषण में व्यवधान न डालें। वे एक महत्वपूर्ण बहस में बोल रहे हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : प्रधानमंत्री महोदय, आपको इस तरीके से चुपके से आई.ए.ई.ए. के पास नहीं जाना चाहिए था। यह कहा

[श्री लाल कृष्ण आडवाणी]

जा रहा है कि अपनी मरजी से ऐसा किया जा रहा है। औपचारिक रूप से सरकारी पक्ष की ओर से किसी समाचारपत्र में यह समाचार प्रकाशित कराया गया है कि चाहे उनकी सरकार रहे या जाए, समझौता होगा। यह समाचारपत्र में प्रकाशित समाचार है। मैं नहीं जानता। इस अवसर पर मैं सरकार से यह आशा करता हूं कि वह हमें यह बताएं कि क्या यह सच है कि अब संसद अप्रासंगिक हो गयी है; चाहे भारत की संसद सरकार को विश्वास मत दे अथवा नहीं...*(व्यवधान)* हम इस पर चर्चा कर रहे हैं लेकिन चर्चा आरम्भ होने से पहले ही समाचारपत्र में समाचार प्रकाशित हो गया। क्या मैं समाचार को यथा रूप में उद्धृत करूं? मुझे लगता है कि सभी इसके बारे में जानते हैं। सरकार की ओर से प्रामाणिक स्रोतों ने 'द टेलीग्राफ' को बताया – एक बार पुनः 'द टेलीग्राफ' को चुना गया – कि चाहे सरकार रहे अथवा जाए, समझौता होगा। यह बताया गया कि चाहे यह सरकार विश्वास मत प्राप्त करे अथवा नहीं समझौता होगा। यह अपनी मरजी से कार्य करेगी। मेरा अपना मानना है कि यह सच नहीं है। मैं यह मानता हूं कि अमेरिकी सरकार, विशेषकर अमेरिकी कांग्रेस, इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करेगी कि यू.पी.ए. सरकार, जो इस समझौते का पक्षकार है, सत्ता में है, उसे संसद का विश्वास प्राप्त है या नहीं। यह अमेरिका के लिए महत्वपूर्ण होगा क्योंकि वहां भी लोकतंत्र है।

इस समय मैं यह कहना चाहूंगा कि हम परमाणु ऊर्जा के खिलाफ नहीं है। अक्सर यह बताया जा रहा है अगर हम परमाणु समझौते के खिलाफ हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम परमाणु ऊर्जा के खिलाफ हैं। नहीं, हम परमाणु ऊर्जा के खिलाफ नहीं हैं। हम अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध के खिलाफ नहीं हैं। इस मुद्दे पर कम्युनिस्ट पार्टियों से मेरी राय अलग हो सकती है। अमेरिका, रूस अथवा जापान के साथ रणनीतिक संबंध रखने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर मेरा मानना है कि भारत जैसे दुनिया के विशालतम लोकतांत्रिक देश का दुनिया के सबसे सुदृढ़ लोकतंत्र अमेरिका के साथ काफी घनिष्ठ संबंध होना चाहिए। जहां तक भारतीय जानता पार्टी तथा एन.डी.ए. (राजग) का संबंध है, हम अमेरिका के साथ संबंध रखने के खिलाफ बिल्कुल नहीं हैं। लेकिन दूसरा देश चाहे कितना भी सुदृढ़ तथा शाक्तिशाली हो, हम यह कभी नहीं चाहेंगे कि भारत किसी असमान समझौते का पक्षकार हो। मेरा आरोप यह है कि यह समझौता हमें वशवर्ती भागीदार बनाता है। सरकारी प्रवक्ता अक्सर यह कहते रहे हैं कि हाइड एक्ट भारत पर लागू नहीं होता है और इसके तत्काल बाद अमेरिकी प्रवक्ता का यह बयान आता है कि यह पूरी तरह लागू होता है। अगर आप चाहते हैं तो मैं पढ़ सकता हूं कि हाइड एक्ट में क्या कहा गया है। हाइड एक्ट न केवल हमारे परमाणु विकल्पों और परमाणु स्वायत्तता पर प्रतिबंध लगाता है, बल्कि यह हमारी विदेश नीति पर भी प्रतिबंध लगाता है। हमारी ईरान नीति कैसी होनी चाहिए, यह भी हाइड एक्ट द्वारा निदेशित होता है। मैं इसके विस्तार में नहीं जा रहा। सरकार का पक्ष यह है कि हाइड एक्ट हम पर लागू नहीं होता। मैं इससे सहमत नहीं हूं। अगर संसद के दोनों सदनों में तीन बार की चर्चा कोई सूचक है, तो इस सभा के अधिकांश सदस्य परमाणु समझौते के बारे में सरकार की व्याख्या से सहमत नहीं हैं। ऐसे मौके भी आए हैं जबकि सम्पूर्ण विपक्ष के विरोध में बहिर्गमन किया है। ऐसा हुआ है।

इसलिए, आज वह अवसर नहीं है कि हम समझौते पर ही चर्चा कर रहे हैं। वास्तव में, मैंने पहले मौके पर ही कहा था कि जैसा कि कई देशों में परम्परा है, भारत के संविधान में ऐसा उपबंध नहीं किया गया है किसी अंतर्राष्ट्रीय समझौते का अनुमोदन संसद द्वारा किया जाना चाहिए। अमेरिका में भी इसे अमेरिकी कांग्रेस द्वारा पारित कराया होता है। हमारे यहां ऐसा प्रावधान नहीं है। लेकिन परमाणु समझौते के इस अनुभव के पश्चात् मेरी यह राय है कि अगर सरकार सहमत हो तो संविधान में संशोधन किया जाना चाहिए ताकि देश की सुरक्षा से संबंधित कतिपय मामलों में तथा देश की अखंडता से संबंधित कतिपय मामलों में समझौता करने से पहले संसद की स्वीकृति प्राप्त किया जाना आवश्यक है।

मुझे कभी-कभी चिंता होती है जब हमारे पड़ोसी यह कहते हैं कि अरूणाचल प्रदेश उनका है, हमारे कुछ पड़ोसी कहते हैं कि कश्मीर का यह भाग उनका है, आदि। कौन जानता है कि किसी दिन एक अंतराष्ट्रीय समझौते पर हस्ताक्षर किए जाएं जिसमें हमारी सहमति को उसी प्रकार से निश्चित माना जाए जिस तरह आज सभी व्यवहारिक प्रयोजनों के लिए परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने का प्रस्ताव है, का अर्थ यह है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने पोखरण-I किया तथा वाजपेयी जी ने पोखरण-II किया हो लेकिन इसके बाद कोई पोखरण-III तथा पोखरण-IV नहीं होगा...*(व्यवधान)।*

अध्यक्ष महोदय : कृपया इसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं करें। मेरी अनुमति के बिना कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : आप जो कह रहे हैं उस कृपया यह कहकर न्यायसंगत न ठहराएं कि वाजपेयीजी ने स्वयं कहा था कि वे स्वेच्छा से दूसरा परमाणु परीक्षण करने के अधिकार का त्याग कर रहे हैं। मैं यह कहना चाहूंगा कि पंडित नेहरू भारत को कभी भी परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने के पक्ष में नहीं थे। मोरारजी

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

देसाई भारत को कभी भी परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन दोनों कभी भी परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए सहमत नहीं हुए क्योंकि यह भेदभावपूर्ण तथा असमान था तथा इससे हमारे ऊपर केवल प्रतिबंध लग रहा था। श्रीमती इंदिरा गांधी कांग्रेस की प्रथम प्रधानमंत्री थीं और 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान बंगाल की खाड़ी में अमेरिका द्वारा परमाणु बेड़ा भेजे जाने के शीघ्र बाद उन्होंने 1974 में सफलतापूर्वक पोखरण-I परीक्षण किया था।

ये सभी विदित तथ्य हैं। अत:, हमने इस पर आपत्ति की थी। इसीलिए, इस संबंध में हमें इस पर आपत्ति थी। इसलिए, हमने यह कहा है कि अगर एन.डी.ए. पुन: निर्वाचित होकर सत्ता में आती है, तो हम समझौते पर पुन: वार्ता करेंगे। हमने यह नहीं कहा है कि हम इसे रद्द कर देंगे। हमने कहा है कि हम इस समझौते पर पुन: वार्ता करेंगे ताकि इसे समानता के आधार पर लाया जा सके तथा हमारे सामरिक विकल्पों तथा हमारी सामरिक स्वायत्तता पर कोई जोर जबरदस्ती न रहे।

मध्याह्न 12.00 बजे

प्रधानमंत्री महोदय, मैं याद दिलाना चाहता हूं कि राष्ट्रपति बुश के साथ अपने संयुक्त वक्तव्य के तुरन्त पश्चात् दो दिन बाद 20 जुलाई 2005 को आपने वाशिंगटन में एक प्रेस कॉन्फ्रेन्स की थी तथा उसमें आपसे एक पत्रकार ने पूछा था, जिसकी प्रतिलिपि मेरे पास है, कि प्रधानमंत्री महोदय क्या आपको नई भारत-अमरीका नीति को लागू करने में अपने सहयोगियों एवं विपक्ष के प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है तथा क्या आपने विदेश नीति जिसे आप नई दिशा में ले जा रहे हैं के लिए संसद में आम राय बनाएंगे या संसद की अनुमति लेंगे? इस प्रश्न के उत्तर में 20 जुलाई को डा. मनमोहन सिंह ने जो कहा था मैं उसे उद्धृत करता हूं:—

"हमारे देश में संसद संप्रभु है और हम एक व्यापक राष्ट्रीय सहमति के आधार पर ही इस मुद्दे पर आगे बढ़ सकते हैं।"

यह उत्तर डा. मनमोहन सिंह ने वाशिंगटन में दिया था।...*(व्यवधान)* लेकिन प्रश्न यह है कि क्या कोई व्यापक सहमति बनी है। कल होने वाला मतदान व्यापक सहमति नहीं होने का संकेत है। यदि मतदान होता है तो वह इसलिए होगा कि सरकार बनी रहेगी या गिर जाएगी। मैं कह रहा हूं कि मैं जानता हूं कि दो से तीन महीने बाद क्या होने जा रहा है।...*(व्यवधान)*

दूसरी सभा में कई बार मांग की गई है कि क्यों न इस मुद्दे पर सभा की भावना से अवगत हुआ जाए। यह मांग कई बार की गई है। लेकिन सरकार ने यह कहते हुए सदैव ही इस बात से मना किया कि कोई भी अंतर्राष्ट्रीय करार संसद के समक्ष पेश नहीं किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय समझौते के बारे में संसद कोई दबाव नहीं डाल सकती है। लेकिन मैं माननीय प्रधानमंत्री की बात ही उद्धृत कर रहा हूं। माननीय प्रधान मंत्री ने यह कहा है। ऐसा कहने पर ही मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या आप सन्तुष्ट है कि परमाणु समझौते पर संसद में आम सहमति है? आम सहमति नहीं है। कम से कम मेरे विचार से एक बार भी माननीय प्रधानमंत्री ने सर्वदलीय बैठक नहीं बुलाई है। अन्य सभी मुद्दों पर उन्होंने सर्वदलीय बैठक बुलाई हैं केवल इसी मुद्दे पर उन्होंने सर्वदलीय बैठक नहीं बुलाई है। मेरी पार्टी का यह मानना था कि उन्होंने दोनों सभाओं में आश्वासन दिया है तथा संयुक्त संसदीय समिति को यह देखना चाहिए कि 123 समझौते पर सहमति देते समय विशेषकर वे आश्वासन पूरे कर लिए गए हैं। अत: एक संयुक्त संसदीय समिति का गठन किया जाए लेकिन सरकार ने इससे मना कर दिया। सरकार ने ऐसा नहीं किया तथा इसकी जगह संप्रग-वाम समिति का गठन किया गया और संप्रग-वाम समन्वय समिति ने निश्चित रूप से इस प्रकार के आश्वासनों की भी मांग की थी तथा जब इन आश्वासनों को नहीं माना गया तो वाम दलों ने समर्थन वापस ले लिया। हमने कहा कि यदि उन्होंने समर्थन वापस ले लिया है तो सरकार के पास बहुमत नहीं है क्योंकि वाम दलों के 61-62 सदस्यों के बिना संप्रग के पास बहुमत नहीं होगा। इस सरकार का गठन वाम दलों द्वारा बाहर से दिए गए समर्थन के आधार पर ही हुआ है। लेकिन जिस क्षण उन्होंने समर्थन वापस लिया तो यह सरकार अल्पमत में आ गई और किसी भी अल्पमत सरकार को अपना बहुमत सिद्ध करने से पहले किसी अंतर्राष्ट्रीय करार पर आगे बढ़ने का कोई अधिकार नहीं होता है।...*(व्यवधान)*

अमेरिका के प्रत्येक प्रवक्ता ने इस विशेष अधिनियम की व्याख्या करते हुए इस बात पर जोर देकर कहा कि इस सन्धि के जरिए अमेरिका को सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि भारत परमाणु अप्रसार संधि का एक हिस्सा बन जाएगा और संभवत: डा. मनमोहन सिंह को परमाणु अप्रसार सन्धि का हिस्सा बनने पर कोई आपत्ति नहीं है। वाजपेयी सरकार ने जब पोखरण-2 परीक्षण किया था तो डा. मनमोहन सिंह, जब राज्यसभा में विपक्ष के नेता थे तो उस समय उन्होंने हमारी सबसे बड़ी निन्दा की थी। उन्होंने हमारी आलोचना की थी। उस दिन मैंने राज्यसभा की कार्यवाही देखी थी तथा राज्यसभा में मेरे पूर्व साथी स्वर्गीय श्री के.आर. मल्कानी तथा डा. मनमोहन सिंह के बीच तीखा वाद-प्रतिवाद हुआ था। सम्भवत: उन्हें लगता है कि परमाणु हथियार सम्पन्न देश होना हमारे राष्ट्रहित में नहीं है। यह उनका दृष्टिकोण हो सकता है।

डा. मनमोहन सिंह : महोदय, मैं समझता हूं कि माननीय नेता प्रतिपक्ष ने बार-बार आरोप लगाए हैं कि 1998 के पोखरण परीक्षण

[डा. मनमोहन सिंह]

के बारे में जब मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से बोला था तो मैंने इस परीक्षण का विरोध किया था तथा मैंने परमाणु अप्रसार परीक्षण के लिए वाद-विवाद किया था। कोई भी तथ्यपरक सोच वाला व्यक्ति उस भाषण को पढ़े तथा यदि वह यह साबित कर दे कि जो श्री आडवाणी कह रहे हैं वह सही है, मैं इसका निर्णय सभा के विवेक पर छोड़ता हूं।

अध्यक्ष महोदय : सामान्यत: हम दूसरी सभा में हुई घटनाओं का उल्लेख नहीं करते हैं। मैं श्री आडवाणी से अनुरोध करता हूं कि वे उसका उल्लेख न करें।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं अपने साथियों से भी कहूंगा कि इसका उल्लेख करें।

अध्यक्ष महोदय : सामान्यत: हम दूसरी सभा में हुई चर्चा का उल्लेख नहीं करते हैं और आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : लेकिन प्रधानमंत्री जी ने इससे मना किया है।

अध्यक्ष महोदय : आप केवल इसका सारांश दे सकते हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने इसका सारांश ही दिया है। मैंने इसका सारांश ही नहीं दिया है बल्कि मैंने यह भी कहा है कि मेरे साथी स्वर्गीय श्री के.आर. मल्कानी तथा उनके बीच तीखा वाद-प्रतिवाद हुआ था।

डा. मनमोहन सिंह : यह तीखा वाद-प्रतिवाद यह था कि क्या हमें प्रतिबंधों के बारे में चिन्तित होना चाहिए या नहीं। मैंने कहा था कि हम सभी लोग प्रतिबंधों के खिलाफ हैं तथा हमें अपने देश को चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना चाहिए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : और जहां तक प्रतिबंधों का संबंध है हम सबका एक ही विचार था।

अध्यक्ष महोदय : अत: इस बात पर कोई दो राय नहीं है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हां, इस पर कोई दो राय नहीं है।

आज इस सरकार का कार्यनिष्पादन आम आदमी से जुड़ी-समस्याओं जैसे कीमतें (मूल्यावृद्धि), बिजली, सड़क तथा पानी जैसे मुद्दों पर बहुत ही निराशाजनक है। उन्होंने सोचा था कि परमाणु सन्धि के नाम पर वे लोगों को यह बता पाएंगे कि यदि सन्धि हो जाती है तो प्रत्येक घर को बिजली मिलेगी। इस सन्धि का विरोध करने से उन्हें बिजली नहीं मिलेगी तथा चारों तरफ अन्धेरा होगा। मैंने ऐसे वक्तव्य पढ़े हैं कि यदि यह सन्धि नहीं हुई तो भारत में अन्धेरा छा जाएगा। कृपया इस प्रकार का वक्तव्य मत दीजिए। आप हमें ये आंकड़े दीजिए कि यदि यह सन्धि हो जाती है तो हमें परमाणु ऊर्जा कब तक मिलेगी, कितने वर्षों बाद हमें बिजली मिलेगी, इसकी कीमत क्या होगी तथा हमें कितनी बिजली मिलेगी आदि।

क्या यह सत्य नहीं है कि आज केवल तीन प्रतिशत ही परमाणु उर्जा मिलती है तथा इस सन्धि के हो जाने एवं लागू हो जाने के बाद भी केवल 6 प्रतिशत ही परमाणु ऊर्जा मिलेगी तथा शेष 94 प्रतिशत ऊर्जा अन्य संसाधनों से प्राप्त होगी? इसलिए, हम यह कहकर भारतीय लोगों को भ्रमित करने का प्रयास न करें कि हम इस समझौते के माध्यम से देश को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार जहां तक परमाणु विस्फोटों का संबंध है, यदि किसी हद तक हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा किसी सीमा तक उस दिशा में निहित है। तो इसे स्वीकार किया जाना चाहिए। हम इससे सहमत नहीं हैं। हम सोचते हैं कि यह लोगों को धोखा देने का प्रयास है। कृपया ऐसा न करें। इसके विपरीत विद्युत के क्षेत्र में इस सरकार का निष्पादन बहुत ही निराशाजनक रहा है यदि मैं आंकड़ों पर जाऊं, तो वह न्यूनतम साझा कार्यक्रम, जिन पर वाम दलों को ध्यान देना चाहिए, में कहा गया है कि वे पांच वर्षों के भीतर सभी लोगों को बिजली उपलब्ध कराएंगे। चार वर्ष और दो महीने पूरे हो गए हैं। "सभी" का अर्थ है कि देश में छ: लाख गांव हैं, जिनमें से 2,30,000 गांवों में बिजली नहीं है और जहां तक परिवारों का संबंध है, देश में 7.8 करोड़ परिवारों को बिजली उपलब्ध नहीं है।

हमने (सरकार ने) उन्हें पांच वर्ष में बिजली उपलब्ध कराने का वायदा किया था। निष्पादन के बारे में सबको पता है। यह बहुत ही निराशाजनक और खराब है। सड़क के क्षेत्र में, पानी के क्षेत्र में और अन्य सभी क्षेत्रों में निष्पादन बहुत ही खराब रहा है। यदि कोई मुझसे पूछता है कि एन.डी.ए. सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है, तो मैं वास्तव में कहूंगा कि वह उपलब्धि सड़क थी। राजमार्ग ग्राम सड़क योजना और स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना हमारी सरकार की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियां थीं। इन्हीं राजमार्गों के कारण हमारे खण्डूडी जी ने ऐसी प्रतिष्ठा हासिल की, जिसने उनको जीवनभर लाभ पहुंचाया है। बिजली, सड़क और पानी के क्षेत्रों में इस सरकार का निष्पादन दयनीय है। यह कहकर इस पर पर्दा डालने का प्रयास न करें कि परमाणु समझौता प्रत्येक परिवार को बिजली उपलब्ध कराएगा। यह सरकार आम आदमी की समस्याओं का समाधान नहीं कर पाई है।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद) : आप किसके समर्थन में बोल रहे हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री लालू प्रसाद, अपना आसन ग्रहण करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री हरिन पाठक : इनका तो नाम ही नहीं दिया गया है। ...*(व्यवधान)*

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : ये तो रोज हमारा नाम लेते हैं।

श्री लालू प्रसाद : आप वोट ऑफ कांफीडेंस के समर्थन में बोल रहे हैं, मायावती जी का डील सी.पी.आई. (एम) से हो गया। आपका क्या होगा...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री जगदीश टाइटलर (दिल्ली सदर) : मैं उन्हें चुनौती देना चाहता हूं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब तक वे बोलना समाप्त नहीं करते, मैं आपको अनुमति नहीं दे सकता।

(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : केवल कुछ महीने पहले, अपना बजट प्रस्तुत करते समय, माननीय वित्त मंत्री एक प्रस्ताव लेकर आए जिसमें किसानों की मुसीबतें समाप्त करने की बात कही गई थीं। ऋण माफी और ऋण राहत की योजनाएं घोषित की गई थी। बजट में ही कोई प्रावधान नहीं किया गया, किन्तु ऋण माफी और ऋण राहत योजनाओं की घोषणा की गई। जिन किसानों ने बैंकों से ऋण लिए हैं, उन्हें राहत दिए जाने की बात कही गई। मुझे कई जगहों का दौरा करने, कई किसान रैलियों को संबोधित करने और किसानों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। कुछ समय पहले ही मैं बांद्रा के निकट विदर्भ में अर्थात, सकोली में एक विशाल रैली में शामिल हुआ। मैं कहना चाहता हूं कि वे इतने असंतुष्ट और इतने अप्रसन्न थे कि अभी भी आत्महत्याएं जारी हैं क्योंकि लाभार्थी केवल वे किसान हैं, जिन्होंने बैंकों से ऋण लिए हैं। बड़ी संख्या में किसान, विशेषकर जो आत्महत्याएं कर रहे हैं, ऐसे किसान हैं जिन्हें लाभ नहीं मिल रहा है। इसलिए, यह उपयुक्त होगा, यदि इस अवसर पर लोगों को सभा को और देश को यह बताया जाए कि उस व्यापक घोषणा के फलस्वरूप क्या सहायता उपलब्ध कराई गई है, जिसने सत्ता दल में हर्षोल्लास की यह भावना पैदा कर दी कि बहुत कुछ किया गया है।

इन दिनों जी.डी.पी. विकास दर में वृद्धि के बारे में काफी चर्चा हो रही है। यह तथ्य परक है कि हमारे वरिष्ठतम अर्थशास्त्री ने कहा है कि आज देश में अनेक अरबपति हैं। बीस अरबपति एक वर्ष में इतना अर्जित करते हैं जितना कि तीन करोड़ गरीब लोग। मैं निश्चित रूप से यह सुझाव देना चाहता हूं कि अब जी.डी.पी. की अलग तरीके से व्याख्या की जाए। "जी" को वृद्धि के संदर्भ में उतना अधिक न मानें। बल्कि "सुशासन" के संदर्भ में लें "डी" को "सभी के लिए विकास" के रूप में ले और; "पी" को "सभी नागरिकों की रक्षा" के तौर पर लें; अर्थात् सभी नागरिकों की सुरक्षा।

मैं अपनी बात समाप्त करने से पहले एक अन्य बात का उल्लेख करना चाहता हूं। यह एक ऐसा मुद्दा है, जिस के संबंध में हम पर हमेशा ही हमला साधा गया है। वर्ष 1947 में भारत का आजादी के साथ बंटवारा हो गया। इस आधार पर बंटवारा हुआ कि देश के कौन से हिस्से में हिन्दुओं की बहुलता थी और किस क्षेत्र में गैर-हिन्दुओं की बहुलता थी अर्थात् मुस्लिम बहुसंख्यक पाकिस्तान बनाया गया और वह एक इस्लामी राज्य बन गया। भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ।

लेकिन यदि उसने 1950 में एक संविधान अपनाया, तो उसने धर्मतंत्र को स्वीकार नहीं किया। धर्म तंत्र भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रतिकूल है। इसलिए भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बन गया। लेकिन क्या "धर्मनिरपेक्ष" का यह अर्थ है कि आप हमेशा ही हिन्दुओं के प्रति एक प्रकार की एलर्जी रखें?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप इसका उत्तर क्यों दे रहे हैं?

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह उनके दल का दृष्टिकोण है।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, आप रोकते रहते हो और ये लोग खड़े होकर बीच में टोकते रहते हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। यह क्या हो रहा है? यह उनके दल का दृष्टिकोण है।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री लालमुनी चौबे (बक्सर) : अध्यक्ष जी, हमारे माननीय सदस्य के बोलने के साथ ही ये टोका-टाकी करने लगते हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हम तो बीच में टोकने पर इन्हें रोकने की कोशिश करते हैं।

[अनुवाद]

मैं बार-बार अपील कर रहा हूं। उनका सम्मान करें। आप भले ही उससे सहमत न हों, जो वे कह रहे हैं। किन्तु उन्हें कहने का अधिकार है, जैसे कि आपको कहने का अधिकार है, भले ही आप सहमत न हों। कृपया अपनी बात जारी रखिए।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री लालू प्रसाद : कंधार कौन लोग गए थे?

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री लाल कृष्ण आडवाणी के भाषण के अलावा कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

...*(व्यवधान)**

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि पिछले चार वर्षों के दौरान यह सरकार देश में लगातार हो रहे आतंकवादी हमलों के प्रति उदासीन क्यों बनी रही और सरकार ने इसकी अनदेखी क्यों की है। इस सरकार के पिछले चार वर्षों के कार्यकाल के दौरान हमने आतंकवादी गतिविधियों का लंबा और खूनी खेल देखा है... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुंबई, मालेगांव, हैदराबाद तथा जयपुर में सीरियल ब्लास्ट हुए और फिर अयोध्या, वाराणसी, जम्मू और बंगलूरू में आतंकवादी हमले हुए। समझौता एक्सप्रेस पर भी आतंकवादी हमला हुआ था...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है? मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा। जब प्रतिपक्ष के नेता भाषण दे रहे हो तो आप बीच में हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं। तत्पश्चात् जब आपके नेता बोल रहे होंगे तो वे आपको बोलने नहीं देंगे। मैं क्या कर सकता हूं?

...*(व्यवधान)*

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं चाहूंगा कि माननीय प्रधानमंत्री अथवा गृह मंत्री यह बताएं कि इन सब मामलों में जांच की क्या प्रगति रही है। क्या किसी को सजा मिली है, क्या किसी पर मुकदमा चलाया गया है और क्या किसी की दोष सिद्धि हुई है? जहां तक मुझे पता है कि इस विषय पर कार्यवाही इतनी निराशापूर्ण है... *(व्यवधान)* मुझे वोट बैंक के अलावा कोई कारण नजर नहीं आता। यह गलत है तथा मुस्लिम समुदाय के प्रति अनुचित है। आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है न ही वे किसी धार्मिक सम्प्रदाय से संबंध रखते हैं। इसलिए, आतंकवाद के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही किसी समुदाय को नाराज़ नहीं करेगी। ऐसा नहीं होगा। परंतु आप हमेशा चिंतित रहते हैं तथा इसके आधार पर आप अफजल जैसे मामलों को खींचते रहते हैं। यह समझ में नहीं आता। उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा प्रत्येक न्यायालय यह कहता है कि वह व्यक्ति जिसने भारत की संसद पर हमले की योजना बनाई थी उसे मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए और फिर भी सरकार निर्णय न लेकर मामले को लगातार खींचती जा रही है। यह ऐसे मुद्दे है जोकि वास्तविक धर्मनिपेक्षता के सबूत नहीं हैं।

इसी प्रकार, अमरनाथ यात्रा तथा अमरनाथ श्राइन बोर्ड के मामले में क्या हुआ और सेतु समुद्रम के मामले में क्या हुआ? ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनके बारे में मेरी मांग है कि अमरनाथ धार्मिक यात्रा के लिए ली गई भूमि को श्राइन बोर्ड को वापिस किया जाना चाहिए तथा यात्रा आयोजन संबंधी व्यवस्था को भी वापिस श्राइन बोर्ड को सौंपा जाना चाहिए न की सरकार को।

आपमें से अधिकतर लोग जानते हैं कि पहले की सरकारों की सत्ता के दौरान जब श्री जगमोहन जी वहां राज्यपाल थे — यह हमारी सरकार नहीं थी परंतु श्री जगमोहन जी वहां राज्यपाल थे — उन्होंने इस प्रकार वैष्णों देवी के लिए व्यवस्था की तथा श्राइन बोर्ड का इस प्रकार गठन किया ताकि प्रत्येक तीर्थ यात्री वैष्णों देवी से सुरक्षित लौट आए। हम प्रत्येक तीर्थ स्थल पर ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं कर सकते हैं? जब राज्य सरकार पर पी.डी.पी. मंत्री या जिसने वह आदेश दिया था — और जब उसने इसी प्रकार का श्राइन बोर्ड अमरनाथ में स्थापित करने तथा तीर्थ यात्रियों के अस्थायी उपयोग के लिए भूमि उपलब्ध कराने का निर्णय लिया, तो इसके पीछे इतनी हाय-तौबा मच गई कि मुझे संदेह है कि इसके पीछे आई.एस.आई. हो सकती है।

मैं नहीं जानता। आरोप ऐसे थे कि यह आई.एस.आई. ने किया है। परन्तु स्थिति ऐसी थी कि कांग्रेस — पी.डी.पी. सरकार ने घुटने टेक दिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मैंने उसे हटा दिया है।

(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हमें आतंरिक सुरक्षा को खतरें में नहीं डालना चाहिए। हमें वोट बैंक के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में नहीं डालना चाहिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती महबूबा जी, जब आपका अवसर आए तब आप बोलिए। आप अपने समय पर बोल सकती हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अब मैं सेतुसमुद्रम परियोजना पर आता हूं। सेतुसमुद्रम ऐसा मामला है जिसमें सबसे बड़ा झटका लगा है। देश के हजारों संगठनों ने मांग की कि सेतुसमुद्रम पुल को तोड़ा नहीं जाना चाहिए और इसे संरक्षित रखना चाहिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप भाषण देने के लिए अपने मौके का उपयोग कर सकते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं उन्हें नियंत्रित कर रहा हूं। कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : श्री आडवाणी जी के भाषण के अलावा कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा। आपके आने की आवश्यकता नहीं है। आपके खड़े होने की आवश्यकता नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने नेता को बोलने दें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लोग क्यों उठकर बोल रहे हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने नेता को बोलने दें। यह महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। वे जिन्हें महत्वपूर्ण मुद्दे समझते हैं, वे उन मुद्दों को उठा रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री आडवाणी जी के भाषण के अलावा, कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप इसका उल्लेख बाद में कर सकते हैं। मैं विपक्ष के नेता से अपने सदस्यों को नियंत्रित करने के लिए अपील करूंगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यदि आप ऐसा करते हैं तो मैं उन्हें किस प्रकार नियंत्रित कर सकता हूं? मैं इसे नियंत्रित कर रहा हूं। सम्मान करें। अध्यक्षपीठ अपने स्तर पर हरसंभव कोशिश कर रही है। अध्यक्षपीठ का सम्मान करें। मैंने इसे बाहर कर दिया है। एक भी शब्द कार्यवाही वृत्तांत में शामिल नहीं किया जा रहा है। मैं उनकी भर्त्सना कर रहा हूं। इससे ज्यादा और मैं क्या कर सकता हूं?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, कभी लालूजी बोलते हैं, कभी बालू जी बोलते हैं...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : मैंने उन्हें मना किया है। आप बैठ जाइए और अपने लीडर को बोलने दीजिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने उनसे बैठ जाने के लिए कहा है। आप भी यह कर रहे हैं। मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा। आप भी बिना अनुमति के खड़े हो रहे हैं। उनकी आलोचना नहीं कीजिए यदि आप इसे स्वयं कर रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने उन्हें बोलने से मना किया है। मैंने उनसे बैठ जाने के लिए कहा है। क्या मैं उन्हें निकाल दूं?

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : कल...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप उनके भाषण के प्रवाह में व्यवधान डाल रहे हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : महोदय, मैं देश के सेतुसमुद्रम मामले के संबंध में स्तब्ध रह गया जब सरकार ने उच्चतम न्यायालय को यह कहते हुए एक हलफनामा दाखिल किया कि राम जैसे व्यक्ति या रामायण के किसी अन्य चरित्र के ऐतिहासिक पुष्टि होने का मामला संदिग्ध है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मेरा विश्वास है कि यह मामला न्यायालय के विचाराधीन है। क्या मैं सही हूं?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : नहीं। यह न्यायालय के विचाराधीन नहीं है। देश भर में इसका विरोध हुआ जिसके चलते सरकार को हलफनामा वापस लेने पर विवश होना पड़ा।...*(व्यवधान)* मुझे खुशी है कि उन्होंने इसे वापस ले लिया...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप तब बोल सकते हैं, जब आपकी बारी आए। मैं आपको इसपर उत्तर देने की अनुमति दूंगा, जब आपको बोलने का अवसर दिया जाएगा। मैं आपको बोलने का अवसर दूंगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप यह चर्चा नहीं चाहते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बोल सकते हैं श्री बालू, जब मैं आपको बोलने की अनुमति दूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री बालू, मैं आपको नियत समय पर बोलने की अनुमति दूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : मेहरबानी करके बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : समूचा देश हमें देख रहा है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : पहले अपने बारे में सोचें, यदि आप अन्य के विषय में सोच रहे हैं। अध्यक्षपीठ को थोड़ा सम्मान दिया जाना चाहिए। मेरे पास ऐसी सूचना थी, जो गलत हो सकती है कि उच्चतम न्यायालय में कुछ कार्यवाही लंबित है। मैंने विपक्ष के माननीय नेता से पूछा तथा उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि यह वह नहीं है। यदि मैं पाऊंगा कि यह वास्तव में स्थापित प्रक्रियाओं के द्वारा न्यायाधीन है तो मैं उस अंश को बाहर कर दूंगा। जहां तक माननीय मंत्री का संबंध है, आपको इन सबसे उत्तेजना में आने की आवश्यकता नहीं है। मैं इस पीठ से कह रहा हूं कि यदि आपके पास व्यक्त करने के लिए दृष्टिकोण है तो आपको इसे प्रकट करने के लिए वह अवसर मिलेगा। इसे अभी नहीं करें। मेरी तहे दिल से यह अपील है। आखिरकार आप यहां एक माननीय मंत्री हैं। आपको दूसरों को अनुपालन करने के लिए मानक स्थापित करने चाहिए। अतएव, मेरा अनुरोध है कि आपको आवेशित होने के लिए पर्याप्त कारण हों, तो इसे उचित समय पर, जब बोलने का समय मिले, तब प्रकट करें। मैं सभी वर्गों से अपील कर रहा हूं कि इससे क्या लाभ निकल रहा है। मैं किसी को दोषमुक्त नहीं कर रहा हूं। आप सभी लोग खड़े हैं। मैं नियंत्रित करने की अपनी हर संभव कोशिश कर रहा हूं। मैं उनकी भर्त्सना कर रहा हूं। मैं उनकी किसी व्यवधान को कार्यवाही वृत्तांत में शामिल नहीं कर रहा हूं। तब भी, आप खुश नहीं हैं। मैं क्या कर सकता हूं?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कोई अनपेक्षित भाषण 'व्यवधान' है। आडवाणी जी, कृपया बोलें।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : धन्यवाद, महोदय।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप उधर भी बोलिए और मेरी थोड़ी मदद करिए। जब 50-100 लोग खड़े हो जाते हैं तो मेरे लिए मुश्किल हो जाती है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आडवाणी जी विपक्ष के नेता हैं। वे अपनी पार्टी का दृष्टिकोण बता रहे हैं। आपको आवश्य ही सुनने का धैर्य होना चाहिए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : महोदय, चूंकि मैंने अमरनाथ का उल्लेख किया इसलिए मैं इस पर जोर देना चाहूंगा कि देश के कई राज्यों में विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थल हैं। हमारा देश बहु धर्म वाला है। हमारा राजस्थान है, जहां पूरे विश्व से कितने ही लोग अजमेर दरगाह शरीफ में आते हैं तथा मुझे याद है कि एकबार स्वर्गीय श्रीमती बेनजीर भुट्टो अजमेर का दौरा करना चाहती थी, उन्होंने मुझे फोन किया तथा कहा: ''मैं अजमेर दरगाह शरीफ जाना चाहती हूं, क्या आप अपने मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे से कहेंगे कि वे मेरी यात्रा की व्यवस्था कर दें,'' मैंने वैसा ही किया। अतएव, मैं सोचता हूं कि ये सभी स्थान विभिन्न वर्गों के तीर्थ स्थल हैं। लेकिन अमरनाथ में जो कुछ हुआ उससे मैं स्तब्ध हूं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में शामिल नहीं करें।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : महोदय, मैं केवल एक और अन्तिम बात कहूंगा। जब तक मैं इस तथ्य का हवाला न दे दूं कि किस प्रकार योजनाबद्ध तरीके से सरकार के विभिन्न लोकतांत्रिक संस्थानों का राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है और यह पहले से ही चल रहा है तब तक इस सरकार के पतन के कारणों की समीक्षा नहीं हो पाएगी। भ्रष्टाचार के मामलों को सी.बी.आई. द्वारा इस प्रकार निबटाया गया कि श्री ओटावियो क्वात्रोयी देश से भाग निकले और उन्हें एक विदेशी बैंक से 20 करोड़ रु. ले जाने की अनुमति भी मिल गयी।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : क्या बात है?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आडवाणी जी जो कह रहे हैं उसके अलावा एक भी टिप्पणी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं की जाएगी।

*(व्यवधान)**

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं 1999 की घटना याद करता हूं जब दो विरोधी दलों में बहुत कम अन्तर था और जिस प्रकार आज डा. मनमोहन सिंह विश्वास मत प्राप्त करने को बाध्य हैं उसी प्रकार वाजपेयी जी पर विश्वास मत प्राप्त करने का दबाव डाला गया था और हमें पता था कि परिणाम बहुत कम अंतर वाला होगा फिर भी मुझे याद नहीं आता कि राजग सरकार के विरूद्ध एक भी आरोप लगा हो कि आपने ऐसा किया था वैसा किया अथवा आपने पद का दुरूपयोग किया। इस प्रकार की कोई बात नहीं हुई किन्तु गत पंद्रह दिनों में जिस प्रकार की खबरें आ रही हैं उन्हें देखिए कि क्या हो रहा है। वस्तुत: मैंने 'द हिन्दू' में एक कार्टून देखा जिसमें कहा गया है कि लगता है परमाणु ऊर्जा के लिए हॉसपावर की आवश्यकता है अर्थात् खरीद फरोख्त चल रही है।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री लाल कृष्ण आडवाणी]

महोदय, सी.बी.आई. का दुरूपयोग किया गया है। मैं यह कहूंगा कि केवल आम आदमी ही नहीं है जो महंगाई की मार झेल रहा है बल्कि परिस्थितियों के कारण बाध्य होकर किसान भी लगातार आत्महत्या कर रहे हैं। वस्तुतः मैं चाहूंगा कि सरकार की ओर से कोई हमें बताए कि गत चार वर्षों में कृषि, सिंचाई के संदर्भ में क्या कदम उठाए गए हैं और देश में किसानों के हित में क्या किया गया है।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपके विरुद्ध कार्रवाई करूंगा। आप पांचवीं बार खड़े हुए हैं।

(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : यह केवल इस सरकार या उस सरकार की बात नहीं है, यह केवल एक पार्टी या दूसरी पार्टी की बात नहीं है जो विगत पखवाड़े की घटनाओं के कारण बदनाम हुई है। भारतीय लोकतंत्र मलिन हुआ है और अतएव यदि आप पिछले चार वर्षों में इस सरकार के कार्यनिष्पादन पर ध्यान दें और गत पखवाड़े में इस अल्पमत सरकार को बहुमत सरकार में बदलने के घटनाक्रम पर भी ध्यान दें तो भी यह कदाचित सफल नहीं होगी। किन्तु इन चीजों को हमें अपने दिमाग में रखना चाहिए जब हम कल शाम मतदान करेंगे यह सब कुछ सत्ता से अगले 100 दिनों तक चिपके रहने के लिए किया जा रहा है।

वाम दलों जिनके समर्थन से यह सरकार चल रही थी, द्वारा समर्थन वापस लेने पर यदि यह सरकार कहती कि ठीक है हम जनता के पास जाएंगे और हम तय करेंगे तब क्या होता। वे ऐसा कर सकते थे। किन्तु उसके बजाए उन्होंने इस प्रकार का शक्ति परीक्षण करवाया। इस सरकार द्वारा चार वर्षों का कुशासन तथा इस अल्पमत को बहुमत में बदलने के लिए सरकारी संस्थानों का दुरूपयोग इन सभी कारकों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि आप इन सब कारकों को दिमाग में रखेंगे तो मुझे विश्वास है कि...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांति बनाए रखिए। वह समाप्त कर रहे हैं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं समाप्त कर रहा हूं क्योंकि आज या कल चाहे कुछ भी हो हमें जनता के पास जाना होगा और वह जनादेश बहुत स्पष्ट होगा।

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता-उत्तर पूर्व) : अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री जी इस सदन में ऐसा प्रस्ताव लेकर आए हैं कि इस सदन की आस्था उनके साथ है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री गिरिधर गमांग (कोरापुट) : महोदय, मैंने बोलने के लिए आपकी अनुमति मांगी है।

अध्यक्ष महोदय : बाद में।

(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, कृपया सभा में व्यवस्था बहाल की जाए।

अध्यक्ष महोदय : कैसे करें। क्या आप सहायता करेंगे? मैं आपसे कहूंगा कि आप अध्यक्ष के आसन पर बैठें और ऐसा करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांति बनाए रखें। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है; आपके नेता के बोल लेने के बाद आप दूसरों को बोलने नहीं दे रहे हैं।

मोहम्मद सलीम : प्रश्न यह है कि क्या प्रधानमंत्री इस सभा में इस सम्माननीय सभा से यह पूछने आए हैं कि वे उनपर विश्वास व्यक्त करें अथवा उस धोखे के लिए समर्थन दें जो उन्होंने उन पार्टियों को ही नहीं दिया है जिन्होंने पिछले चार वर्ष दो माह से उन्हें समर्थन दिया है।

[हिन्दी]

बल्कि सवाल आस्था का नहीं है, सवाल विश्वास तोड़ने का है। सवाल सिर्फ विश्वास तोड़ने का नहीं, सवाल विश्वसनीयता का है, ट्रस्ट और वर्थीनेस का है। मैं प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद करता हूं और यूपीए की चेयर पर्सन श्रीमती सोनिया गांधी का भी धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने वामपंथियों ने जो चार साल से अधिक समर्थन किया और यू.पी.ए. सरकार को बनाने में दूसरों के साथ कामरेड हरकिशन सिंह सुरजीत और ज्योति बसु ने आर्किटेक्ट की भूमिका निभाई, इन सबका धन्यवाद किया। हमें धन्यवाद ग्रहण करना चाहिए लेकिन हमने एप्रिसिएशन के लिए समर्थन नहीं किया था कि चार साल के बाद यह सर्टिफिकेट मिलेगा। हमें प्रधानमंत्री जी ने कहा था जब वे हवाईजहाज में जापान जा रहे थे कि वामपंथी बहुत पेट्रियाट हैं।

हमने कांग्रेस के नेतृत्वाधीन प्रगतिशील गठबंधन सरकार को समर्थन इसलिए नहीं दिया था कि हमें चार साल के बाद पैट्रोटियज्म का

सर्टिफिकेट चाहिए।...*(व्यवधान)* हमने समर्थन इसलिए किया था और उन्होंने भी कहा, जो आर्किटैक्ट का काम, जो भूमिका हमने की, उसकी जो आधारशिला थी, बुनियाद थी, वह न्यूनतम साझा कार्यक्रम, कॉमन मिनिमम प्रोग्राम था। मैं उसे कोट करूंगा। चार साल से हमारा नेतृत्व सदन के अंदर और बाहर बार-बार इन्हें कह रहे थे कि यह पटरी है, आप गाड़ी चलाइये, लेकिन संभलकर चलाइये, पटरी से गाड़ी उतरनी नहीं चाहिए। लेकिन हमने वे ट्रैक्स नहीं बनाये। कांग्रेस के नेतृत्व में प्रगतिशील गठबंधन के साथ जितनी पार्टियां थीं, साझा कार्यक्रम का मतलब है सब मिलकर बनायें और हमने उसे इंडोर्स किया। उसका क्या आधार था। मैंने विश्वास भंग की बात क्यों बोली? न्यूक्लिर डील, आई.ए.ई.ए. सेफगार्ड एग्रीमैंट, स्ट्रेटेजिक रिलेशन, सामरिक समझौता, विदेश नीति में अमरीका का पिछलग्गू होना, कौन सी धारा उस कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में थीं। हमने आपको एक डेबिट कार्ड दिया। आप भूतपूर्व बैंकर हैं, आपको मालूम है कि अगर कोई भी डेबिट कार्ड होता है तो उसकी कैश विदड्राल की एक लिमिट होती है कि आपको कितना उठाना है और यही नहीं, हम आपको वार्निंग देते गये कि आप ज्यादा कर्जदार होते जा रहे हो। जितनी आपकी कैश लिमिट है, आप उससे ज्यादा बढ़ रहे हो। आपने कहा कि हमें प्रेसीडैन्ट बुश ने कह दिया हे कि जितना चाहे लेते जाओ। हमारा कॉमन मिनिमम प्रोग्राम प्रेसीडैन्ट बुश के साथ नहीं हुआ था। यह सरकार वर्ष 2004 के मई महीने में आई थी। वामपंथियों के साथ आपका न्यूनतम साझा कार्यक्रम तय हुआ था। यूपीए गठबंधन के जितने राजनीतिक सदस्य हैं, हम उन्हें धन्यवाद करते हैं। उनका भी वही साझा कार्यक्रम था। साझा कार्यक्रम यह नहीं था कि अमरीका के साथ साझेदारी होगी।...*(व्यवधान)* सिर्फ मौखिक अहसानमंद होने से कुछ नहीं होगा।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कुंवर मानवेन्द्र सिंह जी, कृपया बाधा नहीं पहुंचाएं। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि बाधा न पहुंचाएं बल्कि सुनें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : हमने क्या पूछा। इनमें इतना गुस्सा होने की क्या बात है। जो नाव में सवार हैं, वे माझी से सवाल तो पूछते हैं कि किधर जा रहे हो, हमें मझधार में छोड़ तो नहीं जाओगे। क्या यह पूछना गलती है।

"तूफां से क्या बातें हुईं, प्यारे माझी जल्द बतलाना,
दरिया को गिरवी रखा है या साहिल को भी बेच दिया।"

क्या इतना पूछना भी गवारा नहीं है। यह तो आपको भी पूछना चाहिए। हमने यह कहा कि साम्प्रदायिक तत्व बी.जे.पी., आर.एस.एस. गठबंधन ने इस देश में छः साल तक सरकार चलाई, लोग यह देखें, हमें यह गवारा नहीं है। सिर्फ हमें ही नहीं, वर्ष 2004 के चुनाव में जो मैनडेट हुआ, लोगों ने बी.जे.पी. के नेतृत्वाधीन एन.डी.ए. की सरकार को हरा दिया। लेकिन कांग्रेस के ऊपर भरोसा नहीं किया, वरना दो-तिहाई बहुमत देते। आपका मेनिफेस्टो था, आपका नेतृत्व था। देश की जनता ने यह कहा कि जिस नीति से एन.डी.ए. चल रहा है, यह हमें गवारा नहीं है। लेकिन एक जायेंगे, दूसरे आयेंगे, यह भी हमें गवारा नहीं है। आज कांग्रेस के साथ चाहे डी.एम.के. हो, एन.सी.पी. हो, आर.डे.जी. हो, लोक जनशक्ति पार्टी हो या और भी बहुत सी पार्टियां यू.पी.ए. में आई, लेकिन उन सबको मिलाकर भी मैज्योरिटी नहीं है। हमने कहा कि हम बाहर से समर्थन करेंगे, लेकिन किस आधार पर करेंगे। अगर कोई राजनीतिक समझौता हो, अगर एक सरकार बने तो फिर नीति के आधार पर होना चाहिए। कुछ लोग ऐसा कह सकते हैं कि यह एक कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में लगा रहे हो, यह क्या समझदारी की बात कर रहे हो, यह क्या समझौते की बात कर रहे हो, क्या नीति की बात कर रहे हो? लेकिन हम कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के बारे में कांग्रेस से क्यों कह रहे हैं, क्योंकि कांग्रेस का एक इतिहास है। जिसकी बात आज प्रधान मंत्री जी ने कही। गांधी, नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक डिसआर्मामैन्ट की बात कही, स्वाधीन विदेश नीति की बात कही, कांग्रेस पार्टी के नेता महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई में नेतृत्व किया। हमें यह पूरा भरोसा है और हम जानते हैं, कांग्रेस के साथ बहुत सी नीतियों में वामपंथियों का छत्तीस का आंकड़ा है — आर्थिक नीति, डिसइंवेस्टमेंट, जो अमीरों को और भी अमीर करे और गरीबों को और भी गरीब करे,...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है? मुझे लगता है कि धैर्य की बहुत कमी है। सभी अधीर हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : आप इतने अधीर हो रहे हैं कि जब हम आपकी तारीफ भी कर रहे हैं तो भी आप...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यदि आपको यह पसंद है तो आगे से मैं सभा को व्यवस्थित करने का प्रयास नहीं करूंगा। सबको खुली छूट मिलेगी।

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : आप थोड़ा धीरज रखिए। हम जानते हैं कि कांग्रेस के अंदर नेतृत्व का एक हिस्सा ऐसा है जिनको अपना पुराना इतिहास गवारा नहीं है लेकिन हमारा समर्थन का आधार था, पूरा देश समझ रहा था, पत्रकार समझ रहे थे कि वामपंथियों से कभी न कभी विरोध होगा चाहे वह आर्थिक नीति पर हो जाएगा या डिसइंवेस्टमेंट के सवाल पर हो जाएगा चाहे महंगाई के सवाल पर हो जाएगा। चूंकि जहां तक विदेश नीति का मामला था, वह हमारी एक सांझा धरोहर है। वर्ष 1857 से लेकर आज हमने 250 साल मनाए हैं और डेढ़ सौ साल आजादी के मनाए हैं और इसके बाद लगातार हमारे देश में सौ साल की आजादी की लड़ाई के लिए संघर्ष हुआ है जिसमें आदिवासियों ने, किसानों ने, मध्यम् वर्ग ने भी एक रोल प्ले किया, हर हिस्से ने किया-हिन्दू मुस्लिम सभी के जांत-पांत से और धर्म से ऊपर उठकर किया। कोई हिन्दू-मुसलमान का सवाल नहीं था। वर्ष 1857 में क्या था?

वादियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तख्त-ए लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।

यह तो नहीं कहा कि यह मुसलमानों की तेग थी या यह हिन्दुओं की थी, हरिजनों की थी, ब्राहमणों की थी, यह हिन्दुस्तान की थी और कांग्रेस पार्टी के पास इस नेशन को बनाने के लिए एक रोल था, उसका एक आधार था कि हमारी एक अपनी सम्पूर्णता होगी, हमारी एक अपनी आजादी होगी, हम नेशंस में इंडिपेंडेंट होंगे, जगत सेवा में हमारा एक अलग रोल होगा और यही वजह है कि आजादी के बाद जब गुट-निरपेक्षता बढ़ी, मैं नेहरू जी का भाषण और राजीव गांधी जी का भाषण जो उन्होंने हरारे में 1986 में प्रधान मंत्री के रूप में दिया और जब गुटनिरपेक्षता की बात कही, सिल्वर जुबली हुई तो उन्होंने हरारे में कहा कि हमारी आजादी की लड़ाई का इतिहास अगर हम देखें तो हमें पता चलेगा कि वह इस बात के लिए गवारा नहीं करता कि हम किसी एक खेमें में या दूसरे खेमें में चले जाएं। मैं पढ़कर कोट करके सुना देता हूं। आज क्या किया जा रहा है, प्रदीप्त राष्ट्रीय हित। हम राष्ट्रीय हित समझ रहे हैं लेकिन जो रोशनी फेंककर देखना चाहिए, वह नहीं समझ रहे हैं। दिक्कत यह है कि कोई भी चीज को अगर आप ऑप्टीकल साइंस के हिसाब से देखते हैं तो वह रोशनी किस तरफ से आ रही है, उसके ऊपर निर्णय करता है कि किस तरफ उजाला होगा ओर किस तरफ अंधेरा होगा। इसका रंगभेद भी होता है। हमें क्यों मजबूर किया जा रहा है कि हमारे राष्ट्रीय हित को वाशिंगटन की तरफ से जो रोशनी फैंकी जाए, उसके आधार पर देखें, हम कह रहे हैं कि आप हमारे देश के 112 करोड़ लोग हैं, प्रधान मंत्री ने कहा कि उनकी वचनबद्धता यह है कि इस देश के, इस राष्ट्र के लोगों के हित के लिए, इस देश के हित के लिए काम किया जाए। इसलिए हमने कॉमन मिनिमम प्रोग्राम बनाया था, उसमें पांच आधारशिला रखी गई थीं, जिनके आर्कीटेक्ट ज्योति बसु, हरकिशन सिंह सुरजीत रहे हैं। उसमें शरद पवार जी, करुणानिधि जी और लालू यादव जी भी थे, बहुत बातें हुई। वाम दलों द्वारा समर्थित संप्रग सरकार के शासन के छह मुख्य सिद्धांत होंगे। हमारे यहां ऐसा होता है, गौतम बुद्ध जी के जमाने, महावीर जैन के जमाने से, अशोक के जमाने से, अकबर के जमाने से कुछ बेसिक प्रिंसिपल्स होते हैं। वे सिकस बेसिक्स क्या थे, हमें याद दिलाना पड़ेगा।

[अनुवाद]

इसमें कहा गया है:

"सामाजिक सौहार्द को संरक्षण और संवर्धन तथा सामाजिक समर सत्ता और शांति को भंग करने वाले सभी रूढ़िवादियों और कटरपंथियों से निर्भय होकर अथवा उनका साथ दिए बिना उनसे निपटने के लिए कानून को लागू करना।"

[हिन्दी]

वामपंथियों के साथ समझौता करने में कोई दिक्कत नहीं है। जात-पांत, धर्म-मज़हब और जो अमर नाथ वगैरह सब बोल रहे हैं, इंदौर में जो फिरकापरस्ती के खिलाफ फसाद हुए क्योंकि लोगों ने गुजरात में देखा,

[अनुवाद]

(2) "यह सुनिश्चित करना कि अर्थव्यवस्था सतत रूप से एक दशक तक कम से कम सात से आठ प्रतिशत की दर से बढ़े..."

[हिन्दी]

अब कहा जा रहा है कि वामपंथी ग्रोथ नहीं चाहते हैं। हमने समर्थन किया कि ठीक है।

[अनुवाद]

"और अधिक तथा अधिक एवं इस प्रकार जिससे रोजगार सृजन हो..."

चूंकि रोजगार पैदा किये जाएं।

"ताकि प्रत्येक परिवार को सुरक्षित तथा व्यवहार्य आजीविका का आश्वासन मिले"

हम बार-बार यह याद दिलाना चाहते हैं कि—

(3) "किसानों, कृषि मजदूरों तथा कामगारों का कल्याण तथा भलाई सुनिश्चित करना"

[हिन्दी]

जब किसान आत्महत्या कर रहे थे, कर्जदार हो रहे थे, आज भी हो रहे हैं, कहीं बाढ़ आ रही है, बार-बार याद दिला रहे हैं कि आप इधर देखिए।

[अनुवाद]

"विशेषत: जो असंगठित क्षेत्र में हैं और उनके परिवारों के लिए हर दृष्टिकोण से एक सुरक्षित भविष्य का आश्वासन देना..."

[हिन्दी]

कोई आपत्ति नहीं है, कोई बाधा नहीं है, करना चाहिए। चौथा—

[अनुवाद]

(4) "महिलाओं को राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक और विधिक रूप से पूर्णत: सशक्त बनाना"

[हिन्दी]

कोई दिक्कत नहीं है, कोई बाधा नहीं है, वामपंथियों की तरफ से बाधा क्या हो सकती है, विरोधी पक्ष की तरफ से भी बाधा नहीं है, अगर आप महिलाओं को एमपॉवर करेंगे। लेकिन

[अनुवाद]

(5) "अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अपिव तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों को विशेषत: शिक्षा और रोजगार के समान अवसर प्रदान करना।"

[हिन्दी]

सरकार विचार कर रही है, करती जाएगी। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट आई, कमेटी के बाद कमेटी बनी, स्पेशल कमेटी बनी, एमपॉवर कमेटी बनी, रिपोर्ट आ रही है,

[अनुवाद]

(6) "हमारे उद्यमियों, व्यवसायियों, वैज्ञानिकों, अभियंताओं तथा सभी अन्य पेशेवर लोगों और समाज के उत्पादकों की रचनात्मक क्षमताओं का उपयोग करना"

[हिन्दी]

जो पैट्रीटिज्म की बात कर रहे हैं, राष्ट्र हित की बात कर रहे हैं, ये ऐसे 6 बेसिक प्रिंसिपल्स हैं जिनके आधार पर हमने समर्थन किया। कोई बिगाड़ नहीं है। चार साल हमने समर्थन किया और कहते आ रहे हैं कि इस पर तवज्जोह दीजिए। सरकार ने क्या कहा, प्रधान मंत्री जी ने क्या कहा कि यह क्राइसिस क्यों हो गया। प्रधान मंत्री जी ने परसों रीजनल लैंग्वेज के न्यूज पेपर्स के समाने कहा और वहां सवाल उठा कि महंगाई बेतहाशा बढ़ रही है, हम सब कह रहे हैं कि 123 लेकर इतना आप परेशान है और इंफ्लेशन रेट 4.3 प्रतिशत हुए जा रहा है। वहां भी 123 हो रहा है। अब तक नहीं हुआ तो 12 प्रतिशत हुआ है लेकिन 12.3 प्रतिशत हो जाएगा। उन्होंने खुद कहा कि सिक्योरिटी, एग्रीमेंट, सेफगार्ड इत्यादि यह डील लेकर सरकार इतना ज्यादा परेशान थी कि इस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे पाई।

[अनुवाद]

अत: साझा कार्यक्रम के आधार पर सरकार बनायी गयी थी। प्रधानमंत्री आपको 'गैर साझा' कार्यक्रम की ओर खींच रहे हैं। न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर सरकार चार से अधिक वर्षों तक चली थी। प्रधानमंत्री आपको 'अधिकतम' कार्यक्रम की ओर ले जा रहे हैं। मैं उससे आबद्ध नहीं हूं; सी.पी.आई. (एम) उससे बंधी नहीं है; वाम दल उससे आबद्ध नहीं है; सभा उससे बंधी नहीं है; और यह देश उससे बंधा नहीं है।

[हिन्दी]

सबसे पहला सवाल यह है कि राजनीति के आधार पर कोई नीति होगी, तो यह कॉमन मिनिमम प्रोग्राम आपने बनाया। आपने सोचा कि हमें इनकी इच्छी मिल गई है तो अब यह कॉमन मिनिमम प्रोग्राम भाड़ में जाए, हम कॉमन नेशनल प्रोग्राम में जा रहे हैं। अभी का तो आधार यही है। आप हमें कह रहे हैं कि हम वफादार नहीं हैं। आप अपने वचन के प्रति कितने वचनबद्ध हो? प्रधान मंत्री जी ने क्या कहा कि क्राइसिस क्यों आ गया है। उन्होंने कहा कि सी.पी. आई.एम. ने सपोर्ट विदड्रा कर लिया। प्लेन में जा रहे थे और इनको अचानक खलबली हुई कि सपोर्ट विदड्रा कर लो।

सदन के नेता श्री प्रणब मुखर्जी ने वामपंथियों से कहा कि कॉमन मिनिमम प्रोग्राम को छोड़ दो। यह सवाल डील को लेकर आये हैं। तब यह बात आयी कि हमें यह डील गवारा नहीं है। हम सब जानते हैं कि जुलाई, 2005 को एक स्टेटमेंट में कहा था और बार-बार यह कहा गया। उसके बाद दिसम्बर, 2007 में सदन के दोनों सदनों में बहुमत से लोगों ने कहा था कि हम लोग इस डील के पक्ष में नहीं हैं। सरकार ने अपनी वचनबद्धता दोहरायी कि जो शंकायें हैं, उन्हें हम दूर करेंगे। हमने कहा कि आप एक कांसेंसेज़ तैयार करो, राष्ट्रीय

[मोहम्मद सलीम]

सहमति बनाओ। हमारी विदेश नीति 100 साल पुरानी धरोहर है, उसे बिगाड़ा नहीं जा सकता है। आपको सब को साथ लेकर चलने की एक कोशिश करनी पड़ेगी। मैं श्री शरद पवार जी से आई.पी.एल. टूर्नामैंट के बारे में कहना चाहूंगा कि वे सब मैच हो गये लेकिन बाद में जनेवा में डोप टैस्टिंग में पता चला कि कौन प्लेयर अच्छा खेल रहा है। आपके वियना में जाने से पहले सरकार को डोप टैस्टिंग कराना चाहिये, तब अचानक पता चलता है कि उनका परफार्मेंस क्यों तेज़ हो जाता है?

जहां तक महंगाई की बात है, हमने कहा कि फारवर्ड ट्रेडिंग को रोक दो, यह सट्टेबाजी नहीं चलेगी। ये लोग विचार कर रहे हैं कि एक कमेटी बनेगी, उसमें फैसला लिया जायेगा, यह बार-बार कहा गया है। हमने कहा कि सच्चर कमेटी की सिफारिशें लागू करो तो कहा कि गौर करेंगे। इसके लिये एक इंटरमीनिस्ट्रीयल कमेटी बनाई है, सैक्रेटरी की एक कमेटी बनाई, फिर देखेंगे और देखा जायेगा। हमने कहा कि कुछ काम करो, कहा गया कि कोशिश कर रहे हैं। कई ऐसे सवाल जो कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के हैं, प्राइम मिनिस्टर ने जाते जाते फ्लाईट में भी कहा

[अनुवाद]

"हम जल्द ही आई.ए.ई.ए. जाएंगे"

[हिन्दी]

16 नवम्बर को श्री प्रणब मुखर्जी ने भी कहा था कि हम आगे नहीं बढ़ेंगे।

[अनुवाद]

"सरकार वार्ता के माध्यम से आगे बढ़ेगी तथा निर्णय को समिति के विचारार्थ प्रस्तुत किया जाएगा ताकि वह अपने निष्कर्षों को अंतिम रूप दे सके।" अभी तक वार्ता के निर्णय अर्थात आई.ए.ई.ए. सचिवालय के साथ किए गए रक्षोपाय समझौते को समिति को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

[हिन्दी]

हम इंतजार कर रहे हैं। हमारे पास 10 तारीख को दावतनामा आया क्योंकि 4 तारीख को वामपंथियों को लैटर दिया गया। तब छोटा मंत्री, मझौला मंत्री, आधा मंत्री या नये एम.पी. टी.वी. पर रोज़ बोलते जा रहे हैं कि हम ऐसे जा रहे हैं, हम वैसे जा रहे हैं। इस तरह माइक्रोफोन पर तरह-तरह के विचार आ रहे हैं, सरकार की क्या राय है, हमें बताईये।

[अनुवाद]

भारत-अमरीका असैनिक परमाणु समझौते के बारे में यू.पी.ए. वाम समिति की अगली बैठक 10 जुलाई 2008 को सायं 4 बजे 13, तालकटोरा रोड़ में होगी।

[हिन्दी]

सरकार का एक हाथ क्या कर रहा है, दूसरे हाथ को मालूम नहीं है। जापान जाते समय प्राइम मिनिस्टर ने कहा कि हम जल्द जायेंगे, कब जायेंगे, यह नहीं बताया लेकिन कहा कि टाइम पर जायेंगे। इधर सुनने में आ रहा है कि आई.ए.ई.ए. की वैबसाइट है, सारी दुनिया जानती है कि दुनिया मुट्ठी में आ गई कि, लो सरकार अब, गई, गई और गई। हमें बताने से क्या लाभ है? हमारा यह सवाल था और हमारा खत प्रधानमंत्री जी और श्री मुखर्जी को गया। कहा गया कि हम आपसे मीटिंग करेंगे, फैसला करेंगे लेकिन फाईनल होने से पहले हमें आई.ए.ई.ए. के डाकूमेंट्स तो चाहिये। फिर कहा गया कि यह क्लासिफाईड है, टैक्नीकल है, यह टॉप सीक्रेट है, इसके अलावा हम ज्यादा कुछ नहीं दे सकते हैं। जब एक गलत कदम होता है तो सीक्रेसी का मतलब क्या होता है? एक गलत कदम को सही ठहराने के लिये सैंकड़ों गलत इकदामात लेने पड़ते हैं। अगर बाहर फिसलना होता है तो एक कदम से ही फिसल जाते हैं। फिर सही कदम का कोई मतलब नहीं रह जाता है। कई लोग इस बात को जानते हैं और हम देख रहे हैं जो हमारे सामने आ रहा है। चूंकि वामदलों से बात करनी पड़ रही थी, फिर हाईड एक्ट का इंपलीमैंटेशन क्या है? आई.ए.ई.ए. के सेफगार्ड्स होने का क्या मतलब है? हाईड एक्ट के इंपलीकेशन्स क्या हैं? हमें कहां सिक्यूरिटी कहां मिलेगी, एनर्जी सिक्यूरिटी का क्या हो रहा है?

अपराह्न 1.00 बजे

बिजली की कीमत कितनी होगी, न्युक्लियर एनर्जी कितनी मिलेगी, यह कोई नेल्लूर में जाकर भाषण देने की बात नहीं है कि हम घर-घर में बिजली जला देंगे, कल आप चुनाव में वोट दो। यहां बोलना पड़ता है कि हमें न्युक्लियर एनर्जी का कितना हिस्सा मिलेगा, उसके लिए पर-युनिट कितने पैसे खर्च होंगे, तब हमें मिलेगी। उसकी कीमत, लागत क्या होगी, फ्युअल मिलेगा या नहीं, बीच रास्ते में रुक जाएंगे या नहीं, हम इनवेस्ट कर देंगे, वे उठा कर ले जाएंगे या रख देंगे। इतनी डील, बातचीत करने से क्या फायदा है? सीधी-सीधी छलांग लगाओं, किसी से एक और डील कर लो। बोले, पैराशूट मिल गया, हम

एयर इंडिया के प्लेन से छलांग लगा देते हैं। फिर बाद में पता चला कि पैराशूट में भी एक बहुत बड़ा छेद है। होल सेल डील हो रही थी। आज पूरा देश देख रहा है, इनडिविजुअल डील रिटेल में हो रही है, पहले बंडल में हो रही थी। जब डिसइनवेस्टमेंट हो रहा था, नरसिम्हा राव जी की जमाने में मनमोहन सिंह जी वित्त मंत्री थे, पब्लिक सैक्टर के डिसइनवेस्टर होंगे, तो वे बोले कि बंडल करके होगा। उस समय हमने कहा था कि बंदल मत करो, चूंकि प्रोफिट मेकिंग नॉट प्रोफिट मेंशन होगा तो उन्होंने कहा कि नहीं-नहीं, बंडल करके होगा, बाद में अनबंडल किया गया एग्रीमेंट डील बंडल करके हो रहे थे। यहां क्वालिटी का सवाल था, जो राष्ट्रहित की बात कर रहे हैं तो वह कहां, कितना और कैसे है, वहां क्या हो गया। पहले कहा गया कि यह डील, चूंकि प्रधानमंत्री जी प्रेसीडेंट बुश के साथ वचनबद्ध हैं, यह अंतर्राष्ट्रीय मर्यादा का सवाल है, इंटरनेशनल एग्रीमेंट है, देश का इंटरनेशनल प्रेस्टिज़ है, मान लो, जो भी है। फिर बाद में कहा गया कि यह राष्ट्रहित का मामला है, आप राष्ट्रहित भी नहीं समझते हो। फिर कहा गया कि अलग-अलग राज्य की राजनीतिक स्थिति ऐसी है कि कौन किधर जाएगा, वह देखेंगे। अब कह रहे हैं कि किस को कौन-सा दफ्तर मिलेगा, मंत्रिमंडल क्या होगा, कैसा होगा, कौन आगे जाएंगे, सी.बी.आई. के कौन डायरेक्टर होंगे।...*(व्यवधान)* सैक्रेट्री कौन होंगे, ये सब अंतर्राष्ट्रीय मर्यादा एवं राष्ट्रहित के लिए हो रहा है, एनलाइटेंड नेशनल इंटरस्ट।

[अनुवाद]

क्षमा कीजिए वाम दल इस धारणा को नहीं मानते।

[हिन्दी]

यह सब राष्ट्रीय हित के लिए हो रहा है। आज पूरा देश देख रहा है, सब को दिखाई दे रहा है कि यह किस के हित के लिए हो रहा है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री सलीम, आपकी पार्टी के पास 56 मिनट हैं। आप 26 मिनट ले चुके हैं। दो अन्य माननीय सदस्यों को भी बोलना है। इसलिए यदि आप पूरा समय लेना चाहते हैं तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

मोहम्मद सलीम : नहीं महोदय, मैं ऐसा नहीं करूंगा।

[हिन्दी]

मैं जल्दी-जल्दी सभी प्वाइंट्स को टच करूंगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : तो फिर कृपया समाप्त कीजिए। अन्यथा आपकी पार्टी के अन्य माननीय सदस्य और अधिक समय की मांग करेंगे।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि सिक्रेसी क्यों हो रही है।...*(व्यवधान)* यह मैं नहीं, जो अमेरिकन सिनेट में, उनकी पार्लियामेंट में जो एक्सटर्नल अफेयर्स कमेटी है, वहां भी इसका एग्ज़ामिन किया जा रहा था कि हमारे लिए इतना फायदा हो रहा है, उनके लिए क्या हो रहा है। यहां जो कहने की स्थिति है, शायद डाकुमेंट्स दिखाए नहीं जाते, सेफगार्ड एग्रीमेंट, वहां सी.ए.जी. में जो सही किया गया था, उस वक्त भी सरकार के बाहर के समर्थन को छोड़ दो, पार्लियामेंट को छोड़ दो, जो समर्थन करते हुए सरकार में हैं, वे भी पहले केबिनेट में नहीं आए, पहले वहां डील हुआ। वहां जुलाई में, उसके बाद चार अगस्त को यहां पता चला। 17 जुलाई को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और जो चंद आफिसर थे, उन्होंने बताया कि डील में क्या है। गेग आर्डर, वहां की पार्लियामेंट में जब इस पर चर्चा शुरू हुई तो यह कहा गया—

[अनुवाद]

डायरेक्टर ऑफ द आर्म्स कंट्रोल एसोसिएशन डैरिल किम्बाल ने कहा कि "अपने उत्तरों को विस्तृत रूप से उपलब्ध कराने की प्रशासन की इच्छा से लगता है कि वह अमरीका अथवा भारतीय सांसदों से कुछ छिपाना चाहते हैं।"

हम संसद सदस्य हैं...*(व्यवधान)* यद्यपि उत्तर गुप्त नहीं हैं परन्तु अधिकारियों को लगता है कि सार्वजनिक रूप से इसे प्रकट करने से समझौता मुश्किल में पड़ सकता है, इसीलिए इसे गुप्त रखा गया है...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

वहां 50 सवाल इस डील के बारे में बोले जा रहे हैं और सरकार उसे पहले कहेगी, जो उनके नियम में नहीं है। इस डील का नेचर ऐसा खुफिया है कि ये अब बाहर नहीं जा सकते और उसे कंसेशन दिया गया। आज भी इन पच्चास सवालों का जवाब क्या है, क्योंकि इतना सेंसटिव नेचर है, जिसके बारे में हिन्दुस्तान की पार्लियामेंट को भी नहीं मालूम, हमारे मेम्बर्स को भी नहीं मालूम एवं पूरे विश्व को भी नहीं मालूम, उन्हें एगजम्पशन देना पड़ेगा — क्यों।

[मोहम्मद सलीम]

[अनुवाद]

"हमने कांग्रेस संबंधी चिंताओं से संबंधित संवेदनशील प्रश्नों के उत्तर उचित तरीके से दिए हैं।"

समिति की एक प्रवक्ता लीन वेल ने बताया कि विदेश विभाग ने काफी जानकारी उपलबध कराई है परन्तु समिति उत्तरों को उजागर न करने पर सहमत हुई क्योंकि "कुछ आंकड़ों को राजनयिक रूप से संवेदनशील हो सकते हैं।"

[हिन्दी]

अभी तक नहीं बताया। हमसे कह रहे हैं कि आपको नहीं बता सकते, लेकिन आप सिगनेचर कर दो। हमने कहा क्यों? सर, जिस स्ट्रैटैजिक रिलेशन के बारे में ये कह रहे हैं, हम जानते हैं। बी.जे.पी. कहती है कि नहीं-नहीं, स्ट्रैटेजिक रिलेशन तो होना चाहिए। उनसे हमारा मतभेद है, अन्तर है। यह जो बेबी आप डिलीवर कर रहे हैं, इसे उन्होंने कंसीव किया था। आर.एस.एस. और बी.जे.पी. की जो सोच है और पूरे विश्व में वॉर ऑफ टैररिज्म के नाम पर आज युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका की जो सोच है, उसे देखकर एन.डी.ए. ने सोचा कि यह मौका बड़ा अच्छा है। उनके साथ एक लम्बे अर्से के लिए राजनैतिक गठबंधन कर सकते हैं। यह उन्हें सूट करता है, लेकिन राम विलास पासवान जी, जब आप सरकार में आए, आप पहले भी उनके साथ थे, आप उन्हें छोड़कर आए, आपको उनकी नीतियां तो साथ नहीं लानी चाहिए थीं। नीतियां भी छोड़ कर आनी चाहिए थीं। आप उनकी नीतियां क्यों लागू करेंगे? अगर बी.जे.पी. की नीति लागू करेंगे, तो फिर हमारे समर्थन की क्या जरूरत है? हम उस नीत के विरोध में हैं।...*(व्यवधान)* नए मंत्री बने हैं। इसलिए ज्यादा बोल रहे हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान मत डालिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अच्छा होगा कि अब आप अपना भाषण समाप्त करें।

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : सर, सवाल यह है कि हम साम्प्रदायिका को इस देश में नहीं चाहते हैं। हम यह भी समझते हैं कि अमरीका की गोद में बैठकर विश्व में कहीं भी साम्प्रदायिकता को नहीं रोका जा सकता है, फिर चाहे वे हों और चाहे ये हों। इसलिए तीसरा रास्ता चाहिए, जो साम्प्रदायिकता के विरोध में हो, जो साम्राज्यवाद की साजिश के भी विरोध में हो और जो ऐसी गलत नीतियों के विरोध में हो, उन्हें मिलाकर हम एक रास्ता तलाश कर रहे हैं। आप समझें कि यह हमारी मजबूरी है कि बी.जे.पी. को रोकने के लिए हमें आपको समर्थन देते रहना पड़ेगा, चाहे महंगाई जितनी बढ़ती जाए, चाहे लोगों की परेशानी जितनी बढ़ती जाए। साम्प्रदायिकता के खिलाफ आपने एक भी कदम नहीं उठाए। जब बाबरी मस्जिद को गिराया गया, तो लिब्राहन कमीशन बना और उसकी रिपोर्ट आने तक उसे 46 बार एक्सटेंशन दिया गया। श्री शिवराज वी. पाटील जी यहां मौजूद हैं। उन्होंने मेरे प्रश्न के उत्तर में इसी सदन में वायदा किया था कि यह एक्सटेंशन आखिरी है, लेकिन उसके बाद भी एक्सटेंशन दी गई। गुजरात के दंगों के बाद, मोदी सरकार के खिलाफ एक्शन लेने हेतु पूरे देश के लोगों ने आपको राय दी, लेकिन आपने एक भी कदम नहीं उठाया। सी.बी.आई. का इस्तेमाल राजनीतिक विरोध को ठीक करने के लिए करते हैं। ह्यूमन राइट्स कमीशन और अन्य गैर-सरकारी कमीशन्स बनाए गए। पूरे फसादशुदा लोग कहते हैं कि सी.बी.आई. को केस तो करने दो। सुप्रीम कोर्ट कहती है, लेकिन आपने मोदी के खिलाफ, गुजरात सरकार के खिलाफ एक कदम नहीं उठताया। आप साम्प्रदायिकता से लड़ाई कैसे लड़ेंगे पंजाब में, हिमाचल प्रदेश में, कर्नाटक में, उत्तरांचल में आप साम्प्रदायिकता के खिलाफ कैसे लड़ाई लड़ेंगे महाराष्ट्र में फसादात के बाद बने श्री कृष्णा कमीशन की रिपोर्ट ठंडे बस्ते में रखी है। वहां आज कांग्रेस और एन.सी.पी. की सरकार है। मैं कहता हूं कि आपकी सरकार चाहे केन्द्र में हो या राज्य में, आप साम्प्रदायिकता से कैसे लड़ेंगे? कम्युनलिज्म के खिलाफ लड़ने के लिए सॉफ्ट कम्युनलिज्म कोई रास्ता नहीं है। उससे आइडियोलौजीकली लड़ना पड़ता है। जब हम आइडियोलौजी की बात करते हैं तो ये कहते हैं कि ये वामपंथी पुराने जमाने के हैं। ये आइडियौलौजी में पड़े हुए हैं। अब आइडियोलौजी की क्या जरूरत है, तोलो और मोलो। इस प्रकार से तोल और मोल से साम्प्रदायिकता को नहीं रोका जा सकता। हमने यह चीज कई प्रान्तों में बहुत देखी है। एम.एल.एज. की खरीद-फरोख्त कर के, सरकार तो बन गई, दो-चार दिन टिक गई, लेकिन वह देश के और प्रदेश के ज्यादा फायदे के लिए नहीं होती है। इसलिए सर, मैं आपके माध्यम से पूरे देश को बताना चाहता हूं कि जब ये कहते हैं कि हम यह न्यूक्लीयर डील एनर्जी के लिए, बिजली प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं, यह बिल्कुल गलत है। हमारे देश के वैज्ञानिक, जो भाभा एटौमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के डायरैक्टर थे, जो एटौमिक रिसर्च कमीशन के चेयरमैन थे, जिन्होंने हमें अपने तरीके से, विदेशी मदद के बगैर, एटौमिक एनर्जी की हमारी जो आज ताकत बनी है, उस तक पहुंचाया, वे सरकार से कह रहे हैं, वे प्रधान मंत्री से कह रहे हैं कि आगे मत बढ़ो। इसमें बहुत से सवाल है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : फिर मैं आपकी पार्टी के अन्य सदस्यों को बोलने की अनुमति नहीं दूंगा। आप पूरे समय बोल सकते हैं। आप पूरा समय लें तो मुझे बुरा नहीं लगेगा।

(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : परन्तु इन सभी बिन्दुओं को कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : हां, आप पूरा समय लेते हैं तो मुझे बुरा नहीं लगेगा।

[हिन्दी]

हम आपको पूरा टाइम दे रहे हैं। आप सुनाइए। मैं केवल इतना कह रहा हूं कि इसे विभाजित किया जाना चाहिए।

[अनुवाद]

श्री किन्जरपु येरननायडु (श्रीकाकुलम) : महोदय, हमें सभा की अवधि और एक दिन के लिए बढ़ा देनी चाहिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह मेरे बस में नहीं है और न ही यह आपके बस में है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : अध्यक्ष महोदय, ये लोग देश को चालीस साल की बंदिश में ले जाना चाहते हैं कि क्या हम 40 घण्टे ज्यादा नहीं बैठ सकते हैं? जब हम एक रेल बजट के लिए रातभर बैठ सकते हैं, उसकी चर्चा के लिए रातभर जाग सकते हैं, तब मुल्क को मालूम होना चाहिए कि इसके अंदर क्या है?...*(व्यवधान)* परमाणु वैज्ञानिक अयंगर जी, प्रसाद जी और गोपालाकृष्णन जी ने खत लिखा है, जिसमें लिखा है कि क्या-क्या सवाल हैं, आई.ए.ई.ए. सेफगार्ड में। इसके अलावा उन्होंने लिखा है – आगे मत बढ़िए – ये लोग प्रधानमंत्री जी से जाकर मिले, लेकिन उन्होंने कहा कि हम प्रेज़ीडेंट बुश के प्रति वचनबद्ध हैं। एक तो सीक्रेसी, दूसरा जल्दबाज़ी – ऐसा क्यों कर रहे हैं क्योंकि प्रेज़ीडेंट बुश के जाने से पहले मामला तय करना होगा।

महोदय, यह एग्रीमेंट दो व्यक्तियों के बीच में नहीं है, दो मुल्कों के बीच में है। अब वहां चाहे जो भी आए, लेकिन जो आएगा, उससे हमें हर साल ऊर्जा के लिए सर्टिफिकेट लेना होगा। लेकिन हम कह रहे हैं कि नहीं, दूसरे राष्ट्रपति के आने से पहले कर लेते हैं। चूंकि हम 40 साल की बंदिश में जा रहे हैं, क्योंकि सेफगार्ड एग्रीमेंट के तहत 40 साल के लिए हम अपने रिएक्टर उनके निरक्षण में दे देंगे, इससे हमें ऊर्जा नहीं मिलेगी, लेकिन टेक्नोलॉजी मिलेगी।

अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं एक तथ्य रखना चाहता हूं जो कि हमारी तरफ से नहीं है, अमरीकी संस्था की तरफ से है जिसका नाम इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एथॉरिटी है। एनर्जी के बारे में एक गलत प्रचार चलाया जा रहा है। एनुअल एनर्जी आउटलुक 2008 की करंट रिपोर्ट है। यह हमारी नहीं है। इसमें वर्ष 2030 तक ऊर्जा की क्या स्थिति होगी, यह दिया गया है।

[अनुवाद]

द इनर्जी इनफारमेशन एडमिनिस्ट्रेशन, ऑफिस ऑफ द इन्टीग्रेटेड एनालिसिस एंड फॉरकास्टिंग, यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ इनर्जी

[हिन्दी]

उसके तथ्य कहते हैं कि वर्ष 2005 में पूरे विश्व में एटॉमिक ऊर्जा 9.6 प्रतिशत है। वर्ष 2030 में पूरे विश्व में यह 7.8 प्रतिशत होगी। यह दो प्रतिशत घट जाएगी। कुछ बाबा लोग कह रहे हैं कि यह 70 प्रतिशत तक हो जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं है। आप हमारी बात नहीं मानते हैं, लेकिन कम से कम इनकी मान लीजिए, यह तो अमरीकी है। इंटरनेशनल एटॉमिक एर्जी की रिपोर्ट है, वर्ष 2007 की, इसको आप पढ़ लीजिए। इनकी रिपोर्ट नेशन से संबंधित होती है और एक इंटरनेशनल होती है। उसमें यह कह रहे हैं कि अमरीका में परमाणु ऊर्जा पर निर्भरता कितनी घटेगी। आप चाहें तो मैं यह रिपोर्ट लै कर सकता हूं। यह रिपोर्ट इंटरनेट पर भी उपलब्ध है। इंटरनेशनल एनर्जी आउटलुक कॉस्ट के बारे में, डिमाण्ड के बारे में वर्ष 2030 तक का प्रोजेकशन है। पूरे विश्व को वह चाहिए या नहीं चाहिए, लेकिन वह आप हमें करने के लिए बाध्य कर रहे हैं कि एक महीने के अंदर करना होगा, यही तो गलती है।

अध्यक्ष महोदय, न्यूक्लियर पॉवर एण्ड सस्टेनबल डेवलपमेंट की रिपोर्ट है, जिसे पूरे विश्व में क्लीन एनर्जी के लिए जाना जाता है, उसकी रिपोर्ट है कि गैस सबसे सस्ती ऊर्जा है। उसके बाद कोयला और उसके बाद न्यूक्लियर सस्ता है। वर्ष 2015 और 2030 के बाद गैस की कीमत बढ़ेगी, लेकिन कोयला सस्ता होगा, उसके बाद न्यक्लियर आता है। इस तरह से वर्ष 2030 तक ऐसा ही होगा। ग्रीन तकनीक करनी है तो कोयले की करनी चाहिए।

महोदय, श्री पचौरी ने कहा था कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए न्यूक्लियर एनर्जी कोई ऑप्शन नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि

[मोहम्मद सलीम]

हम न्यूक्लियर एनर्जी के खिलाफ हैं। यह हमारे बासकिट में एक हिस्सा होगा, वह तीन प्रतिशत होगा। लेकिन उसके लिए कितनी कीमत होगी? हर डील में एक सॉफ्ट बेनिफिट एनालीसिस होता है, जिसमें कॉस्ट और बेनीफिट को देखा जाता है। किसी ने कॉस्ट कहा, किसी ने बेनीफिट, हमने कहा ठीक है। आइए, सामने बैठकर बात करते हैं। यह एक बुक है, जो हाइड एक्ट, फोरेस पॉलिसी, एनर्जी सिक्योरिटी और कीमत के बारे में है। कॉमन मिनीमम प्रोग्राम में सरकार ने कहा था, जिसे मैं कोट करना चाहता हूं — यदि हम अमरीका के साथ दोस्ती बढ़ाएंगे...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आनंद शर्मा) : महोदय, क्या वह पुस्तक अथवा दस्तावेजों के लेखक का नाम बता सकते हैं? पुस्तक का लेखक कौन है?

मोहम्मद सलीम : मैं आपको बता रहा हूं कि इसका कोई लेखक नहीं है। तय यह था कि...*(व्यवधान)*

श्री आनंद शर्मा : उसमें क्या लिखा है? कृपया उसे पढ़िए।

मोहम्मद सलीम : मैं आपको बता रहा हूं। परमाणु समझौते पर वाम दलों का दृष्टिकोण...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वाम दल भी इसके हकदार हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वाम दलों को भी अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का अधिकार है और उन्होंने ऐसा ही किया है।

[हिन्दी]

मोहम्मद सलीम : यह इस सरकार की स्थिति है कि एक मंत्री क्या कह रहा है, दूसरा मंत्री नहीं जानता। प्रधानमंत्री क्या बोल रहे हैं, विदेशी मंत्री नहीं जानते। अब यह देखने को मिला कि विदेश मंत्री ने क्या नोट लिखा है, क्या नोट का जवाब दिया, वह विदेश राज्य मंत्री को मालूम नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री आनंद शर्मा : सभा को गुमराह मत कीजिए। आप अपने प्रकाशन का हवाला दे रहे हो। यह आपकी पार्टी का प्रकाशन है। यहां परमाणु विशेषज्ञों की राय नहीं है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मुझे खेद है। आपकी पार्टी का समय लगभग समाप्त हो चुका है; यह निर्णय आप ही को करना है क्योंकि आपके और साथी भी बोलना चाहते हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। हो गया।

मोहम्मद सलीम : यह पूरे देश को मालूम होना चाहिए कि क्या मकैनिज्म चला और क्यों मकैनिजम का फैसला नहीं किया। ये क्यों जल्दबाजी कर रहे हैं? उसमें कांग्रेस की तरफ से, यू.पी.ए. की तरफ से जो दिया गया और वामपंथियों का जो रिवर्सल है, सब कुछ इसमें है और मैं राज्य मंत्री को भी कहूंगा कि थोड़ा पढ़ लो।

हमारा यही चार्ज है और आखिरी बात है कि बी.पी.ओ. जैसे हम करते हैं, विदेशी कम्पनियों का यहां कम्प्यूटर से काम करते हैं, आज हमारे देश में डिप्लोमैटिक प्रोसेस आउटसोर्सिंग अमेरिका को दिया जा रहा है। आई.ए.ई.ए. में हमारी जो डिप्लोमेसी होनी चाहिए, विदेश मंत्री को नहीं मालूम, विदेश राज्य मंत्री को नहीं मालूम, वहां सिर्फ नेशनल सिक्योरिटी सलाहकार राजनीति करेंगे। हमें कांग्रेस पार्टी से यह उम्मीद नहीं थी और न है। कांग्रेस पार्टी ने इस देश की राजनीति को साम्राज्यवाद के विरोध में लड़ाई करने के लिए, देश को चलाने के लिए, आदर्श स्थिति बनाने के लिए एक समझ दी है। आज कांग्रेस पार्टी की नीति क्या होगी, वह राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तय करेंगे। वे तो अपाइंटिड होते हैं। उन्होंने बृजेश मिश्रा को अपाइंट किया था, आपने मि. नारायणन को किया है। कल वे कहीं और जाएंगे, लेकिन इस देश की राजनीति क्या होगी। एक डीलर सिर्फ डील को देखता है, एक लीडर डील का इतिहास क्या है, भविष्य क्या है, उसकी राजनैतिक स्थिति क्या होगी, सामाजिक स्थिति क्या होगी, वह सब देखना पड़ता है और इसलिए हम कह रहे हैं, हमने सी.एम.पी. के आधार पर इस सरकार को समर्थन दिया था।

[अनुवाद]

इस देश का नेतृत्व करने के लिए, ये समझौते करने के लिए नहीं। यदि आप इनमें से कोई समझौता करते हो, तो इसके समर्थन में आपको बहुत से गलत समझौते करने पड़ेंगे।

[हिन्दी]

और इस देश को उस डील से बचना है, डीलरों से बचना है। लीड करने के लिए हमें लीडर्स चाहिए, अपनी पोलिटिकल आउटसोर्सिंग हम अमेरिका को नहीं दे सकते। एशिया में क्या परिस्थिति होगी, हमें

समझना पड़ेगा। हमारा लीडरों के साथ क्या सम्पर्क होगा, हमें समझना पड़ेगा। कॉमन मिनिमम प्रोग्राम में यह लिखा है और फॉरेन पालिसी के बारे में मैं कोट कर सकता हूं, इसलिए हमने कहा है कि इसकी 50 रुपये कीमत है, पढ़ लो। निकोलस बर्न्स उनके सीनटर बोल रहे हैं, कोंडालीसा राइस बोल रही हैं, उनका सीनेटर एकरमैन आता है तो प्रधानमंत्री के पैर कांप जाते हैं कि उसे जल्दी करना पड़ेगा, नहीं तो खत्म हो जायेगा। यही तो गलत है।

मैं अपील करूंगा, यह लोकतंत्र का मंदिर है, यहां लोग चुनकर आते हैं, सब की अपनी-अपनी नीति है, लेकन एक रास्ता चाहिए। वह रास्ता न तो वाशिंगटन से निकलता है, न वाशिंगटन में खत्म होता है। वह रास्ता इस देश के गरीब की कुटिया से निकलता है और इस देश को आसमान तक पहुंचा सकता है। अपनी सम्पदा के ऊपर, अपनी मानव सम्पदा के ऊपर, अपने वैज्ञानिकों के ऊपर, अपने विज्ञान के ऊपर, अपनी तकनीकी के ऊपर भरोसा रखो, सिर्फ प्रेसीडेंट बुश के ऊपर भरोसा रखकर नैया पार नहीं होगी।

[अनुवाद]

विदेश मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं कि "यह सभा उनके नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है। इस सभा को मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास क्यों व्यक्त करना चाहिए?...*(व्यवधान)*

श्री गुरुदास दासगुप्त (पंसकुरा) : भोजनावकाश का क्या होगा?

अध्यक्ष महोदय : आज कोई भोजनावकाश नहीं होगा।

श्री गुरुदास दासगुप्त : भोजनावकाश क्यों नहीं होगा?

अध्यक्ष महोदय : मुझसे मत पूछिए। मेरे निर्णय को चुनौती देने का आपको कोई अधिकार नहीं है। आप जाकर भोजन कर सकते हैं।

श्री प्रणब मुखर्जी : मेरे प्रिय मित्र प्रो. मल्होत्रा यहां उपस्थित हैं, यद्यपि मेरी बात सुनने के लिए विपक्ष के नेता यहां नहीं हैं। जैसी कि मुझे आशा थी, आपने बिलकुल ठीक कहा कि केवल लोक सभा के सदस्य अथवा दूसरी सभा के सदस्य ही नहीं बल्कि पूरा देश इस वाद-विवाद को देख रहा है।

अध्यक्ष महोदय : यहां टीका-टिप्पणी अथवा काना-फूसी मत करिए। अगर आप बात करना चाहते हैं तो कृपया बाहर चले जाइए।

श्री प्रणब मुखर्जी : इसलिए, सभा के नेता के रूप में मैं आपके साथ मिलकर सभी संबंधित सदस्यों से अपील करता हूं कि हम सभी का अपना दृष्टिकोण है और हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, हो सकता है कि हमारे विचारों से अन्य लोग सहमत न हों, परन्तु हरेक को अपने तरीके से, जैसे वह चाहे अपने विचार व्यक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

इसलिए मैं प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत इस प्रस्ताव का समर्थन करने तथा असैनिक परमाणु समझौते से संबंधित मामलों को सही परिदृश्य में प्रस्तुत करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

इस असैनिक परमाणु सहयोग समझौते की किसी प्रकार का सौदा करने में मुझे व्यक्तिगत रूप से आपत्ति है। यह एक समझौता है। इस प्रकार के क्रियाकलापों के माध्यम से हम अंतर्राष्ट्रीय समुदाय विशेषकर उन 45 देशों के साथ असैनिक परमाुण सहयोग चाहते हैं जिनके पास असैनिक परमाणु व्यापार क्षेत्र में प्रवेश करने की क्षमता है तथा जिन्होंने एन.एस.जी. का गठन किया है। अतएव, मैं अपनी राय सभा के माननीय सदस्यों हेतु रखना चाहता हूं। यह उनपर निर्भर करता है कि वे इसे स्वीकार करें या अस्वीकार करें; या आंशिक रूप से इसे स्वीकार करें या आंशिक रूप से अस्वीकार करें क्योंकि यह मूल सिद्धांत है। लेकिन इसके पूर्व में कतिपय तथ्य सही करना चाहूंगा; यह किसी सिद्धांत का प्रश्न नहीं है बल्कि कुछ निरे तथ्य हैं।

विपक्ष के माननीय सदस्य ने उच्च नैतिक धरातल पर अपनी बात लाते हुए कहा कि वामदलों के समर्थन वापस लेते ही यह सरकार अल्पमत में आ गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सं.प्र.ग. तथा इसके समर्थकों की संख्या के संबंध में 4 जुलाई, 2008 के कुछ तथ्य तथा आंकड़े प्रस्तुत करना चाहता हूं। यदि आप इसे पूरी तरह सुनना चाहते हैं तो मैं पूरा पढ़ सकता हूं लेकिन समय की बचत के लिए मैं इसे संक्षेप में रख रहा हूं। सं.प्र.ग. के 234 सदस्य थे; सी.पी.आई.(एम)-42, सी.पी.आई.-10, आर.एस.पी.-3, फार्वर्ड ब्लाक-3, केरल कांग्रेस-2, निर्दलीय-1, सब मिलाकर 61; तथा बी.एस.पी.-17, राष्ट्रीय लोक दल-3; असंबद्ध-2 कुल 22 थे। कुल संख्या 317 थी। बी.एस.पी. ने पहले ही अपना समर्थन वापस ले लिया था। इसका अर्थ हुआ कि 317 में से 19 घटा दें तो यह संख्या 298 होती है। वामदलों के सभी 61 सदस्यों का समर्थन वापस लेने पर ये संख्या 237 रह जाती है।

उसी दिन, समाजवादी पार्टी ने आधे घंटे बाद अपने 39 सदस्यों का समर्थन दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा सीधा अंकगणित, कहता है कि 237 में 39 जोड़ दें तो यह संख्या 276 बैठती है। आज की तिथि में लोकसभा की प्रभावी संख्या आपके सचिवालय से प्राप्त की जा सकती है। इस समय लोकसभा की वास्तविक मत संख्या 541

[श्री प्रणब मुखर्जी]

है। इसे निकालने के लिए अंकगणित की आवश्यकता नहीं है कि साधारण बहुमत बनता है।

लेकिन विपक्ष के नेता ने यह मुद्दा बनाया है कि सरकार ने अपना बहुमत खो दिया है। हां, यह सिद्ध तब होगा जब बटन दबाया जाएगा। भगवान के लिए, कृपया तब तक इंतजार करें। जब तक यह सिद्ध नहीं हो जाता है तब तक सरकार अल्पमत में नहीं है। यदि यह पहली बात है।

दूसरी बात, विपक्ष के नेता ने दूसरा नैतिक दृष्टिकोण अपनाया — हमने नयी गैर भाजपा या विपक्षी पार्टी की सरकार को अस्थिर करने की कोशिश नहीं की। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पीछे नहीं जा रहा हूं — 1977 में जब भाजपा भी सरकार का हिस्सा थी तब एक साथ, 'मैंडेट थ्योरी' की अवधारणा के आधार पर, आठ राज्य सरकारें बर्खास्त कर दी गई थीं। मैं उसपर नहीं जा रहा हूं। मैं उस तथ्य का उल्लेख कर रहा हूं जब 1989 के चुनाव के बाद आपने अपने समर्थन से सरकार बनाई, जो पहली सबसे बड़ी पार्टी नहीं थी। पहली सबसे बड़ी पार्टी इंडियन नेशनल कांग्रेस थी जिसने 197 या 198 की संख्या होने के बावजूद सरकार नहीं बनाई। हमारी पार्टी सबसे बड़ी एक मात्र पार्टी थी। दूसरी सबसे बड़ी पार्टी, मुझे सही-सही याद है, की संख्या 143 के लगभग थी जिससे श्री विश्वनाथ प्रसाद सिंह ने वाम पार्टियों के समर्थन से तथा भाजपा के समर्थन से, जिसने 89 या 90 सदस्य थे, तथा कुछ अन्य पार्टियों के सहयोग से सरकार बनाई। निश्चित रूप से, विपक्ष के नेता यह नहीं भूले होंगे कि वह सरकार किस प्रकार गिरी। हम विपक्ष में थे, हमने सरकार का विरोध किया, तथा विपक्षी पार्टी के रूप में हमारा विश्वास था कि हम अलग रहें, हमें भंडाफोड़ करना चाहिए था तथा संभव हो तो सरकार गिरानी चाहिए थी। यही विपक्षी पार्टी का मूलभूत अधिकार है जिसपर हमने विश्वास किया...*(व्यवधान)*

मोहम्मद सलीम : उन्होंने एकसाथ मतदान किया...*(व्यवधान)*

श्री प्रणब मुखर्जी : तब क्या हुआ? इसलिए, आप इसे अस्थिर करने की बात कर रहे हैं। हाल ही में कर्नाटक सरकार को किसने अस्थिर किया?...*(व्यवधान)* यदि आप अपने अंक बढ़ाना चाहते हैं तो बढ़ाएं लेकिन यह निश्चित करें विपक्ष के नेता कि अपने जोश में आपने यहां तक कहा कि दो प्रधानमंत्री, श्री मोरारजी देसाई तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाम लिया जो परमाणु हथियार नहीं चाहते थे। आपने अपने जोश में यह भी कहा कि उन्होंने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। मैं विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहता हूं कि श्री नेहरू 1964 में मर गए थे, परमाणु अप्रसार संधि 1970 में अस्तित्व में आई। अतएव, एक मृत व्यक्ति, अपना मत व्यक्त नहीं कर सकता है कि उन्होंने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने का निर्णय लिया या नहीं। मैं इन पहलुओं पर आता हूं। आपने इसका श्रेय लिया। हां, मैं जानता हूं कि 1960 से आपकी पार्टी परमाणु हथियार के बारे में बोलती रही है। हमने ऐसा नहीं किया। हम इस बात में विश्वास करते हैं कि परमाणु हथियार लड़ाई जीतने का हथियार नहीं है; परमाणु हथियार सभ्यता का संपूर्ण विनाश है। इसलिए, अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि इंदिराजी ने 1974 में पोखरण में एक परीक्षण किया। 1989 में राजीव गांधी, युवा प्रधानमंत्री ने निरस्त्रीकरण सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने क्या कहा?

यह एक असाधारण भाषण था जो उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में दिया। हाल में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। हमने वह भाषण परिचालित किया था। यह बेहतरीन भाषणों में से एक था। मैं कुछ बातें उससे उद्धृत करना चाहूंगा। उनका परमाणु हथियार राष्ट्रों, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से अंतिम अपील थी कि भारत परमाणु हथियार से प्रौद्योगिकी में केवल एक स्क्रू ड्राइवर की दूरी पर है, लेकिन हम कह रहे हैं कि हम अपने विकल्प खुले रखेंगे। 1974 से मई 1998 तक वह अंतर्राष्ट्रीय कहावत थी जिसका भारतीय प्रधानमंत्रियों तथा विदेश मंत्रियों ने प्रयोग किया। उन्होंने कहा, ''हम अपने विकल्प खुले रखेंगे।'' आपने वह विकल्प बंद कर दिया।

क्या आप इसपर गंभीरतापूर्वक विचार करते हैं कि दो माह के भीतर आप इतने सक्षम हो गए थे कि दूसरे परीक्षण के लिए तैयार हो गए यदि सब कुछ तैयार नहीं होता? अतएव, अपनी उद्विग्नता में तथ्यों को हम नहीं मरोड़ें। हां, तथ्यों के आधार पर अपना तर्क रखें। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया अपनी सीट पर बैठ जाएं। कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

श्री प्रणब मुखर्जी : दूसरा मुद्दा यह है। वे पुनः वार्ता करेंगे या समय-समय पर वार्ता करेंगे या नहीं, मैं उसके बारे में अनुमान नहीं लगा रहा हूं क्योंकि भविष्य में क्या होगा कोई नहीं जानता है और जब यह होगा तभी हमारे जैसे साधारण व्यक्ति जान सकते हैं कि क्या हो रहा है, न कि प्रतिबद्धताओं पर कि हम यह करने जा रहे हैं तथा वह करने

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

जा रहे हैं। अथवा, कभी-कभी, हम विगत में हुई घटनाओं से अपने निष्कर्ष निकालते हैं। क्योंकि वह रिकॉर्ड में है।

मेरे लिए, रिकार्ड है। हमारे पास दूसरे पोखरण परीक्षण के पश्चात्, तत्कालीन प्रधानमंत्री का संयुक्त राष्ट्र आम सभा में दिया गया भाषण का रिकार्ड है। हमारे पास रिकॉर्ड में, महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में तत्कालीन विदेश मंत्री का हस्ताक्षरित लेख है। ये सभी रिकॉर्ड में हैं। इन रिकॉर्डों से हम पाते हैं कि हम सी.टी.बी.टी. पर वस्तुत: हस्ताक्षर करने जा रहे हैं; यह समय की बात है। जब यह विधित: होगा। अतएव, आप पुन: वार्ता करेंगे। ये सभी रिकॉर्ड में हैं — कुछ चीजें मुद्रण में आ गई हैं। अमेरिका की तरफ से हमारे विदेश मंत्री से प्रमुख वार्ताकार स्ट्रोब तालबोट थे — पुस्तक उपलब्ध है, यह बाजार में है। यह यहां है — यदि कोई चाहे, तो इसे देख सकता है; मेरे सहयोगी श्री आनन्द शर्मा इसे मुझे दे रहे हैं — यह रिकॉर्ड में हैं, पृष्ठ दर पृष्ठ, जो भी हुआ वह इसमें लिखा है। अत, निश्चित रूप से लोग निर्णय करेंगे कि आपका कार्यनिष्पादन क्या है, आपने क्या किया है।

यह कहने के पश्चात्, अध्यक्ष महोदय, मेरी मंशा बहस के इस भाग या उस भाग को काटकर अंक भरने की नहीं थी। मेरी इच्छा यह कहने की है कि "खुद निर्णय लें।" प्रधानमंत्री ने आपको अवसर दिया है — यहां उपस्थित प्रत्येक सदस्य को; मुझे विश्वास है कि वे इसपर अपना दिमाग लगाएंगे। आत्मचेतना तथा निर्णय के अनुसार, जब हम उनसे बहस के अंत में ऐसा करने को कहेंगे तो वे अपने अधिकार का प्रयोग करेंगे।

उससे पहले, दोनों पक्ष अपनी बात रखने की कोशिश करेंगे और मैं यह अपने पूरे अधिकार और ईमानदारी से कर रहा हूं।

आज नहीं पहले भी काफी बातें कही गई हैं। मुझे इस सभा का सदस्य बनने और कई माननीय सदस्यों के साथ इस सभा में बैठने का सौभाग्य नहीं मिला है किन्तु संसदीय परिसर में मैंने लगभग चार दशक राज्य सभा में बिताए हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे यह याद नहीं है कि इस असैन्य परमाणु सहयोग करार की भांति विदेश नीति के किसी अन्य मुद्दे पर इतने व्यापक रूप से चर्चा की गई हो। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2005 में संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की थी। 18 जुलाई, 2005 को एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया था। यदि मैं गलत तारीख बता रहा हूं तो इसे सही कर दिया जाए किन्तु यदि मुझे सही-सही याद है तो वह 18 जुलाई, 2005 का दिन ही था। इसपर 25 जुलाई को यहां पर वाद-विवाद किया गया था। जब कभी कोई महत्वपूर्ण बात हुई तो उसपर यहां वाद-विवाद किया गया। संयुक्त वक्तव्य पर वाद-विवाद किया गया है। फरवरी-मार्च 2006 में पृथक्करण योजना पर वाद-विवाद किया गया है। अगस्त में राज्य सभा में — मैं राज्य सभा का उल्लेख नहीं करना चाहता हूं किन्तु इसकी हरेक को जानकारी है — प्रधानमंत्री ने मेरे वामपंथी मित्रों द्वारा 1 से 9 तक उठाए गए प्रश्नों का प्रश्नवार उत्तर दिया। प्रधानमंत्री ने सभी नौ प्रश्नों पर आश्वासन दिया था और संबंधित सदस्य ने भी यह कहा था कि वह उत्तर से सन्तुष्ट हैं यह सारी बातें मनगढ़त नहीं हैं बल्कि राज्य सभा के वाद-विवाद के मुद्रित खंडों में यह सब रिकॉर्ड है।

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर) : इसके बाद हाइड एक्ट आया।

श्री प्रणब मुखर्जी : हां, मैं आपकी बात को समझ गया हूं कि इसके बाद हाइड एक्ट पारित हुआ। हाइड एक्ट के बाद हमने कहा कि इसपर भी ध्यान दिया जाएगा। मैं इसी पहलू पर आ रहा हूं। मैं सारा ब्यौरा दे रहा हूं। मैं कोई बात नहीं छुपाऊंगा और इसीलिए मैंने माननीय अध्यक्ष महोदय की कृपादृष्टि की मांग की है। यह जानने का प्रयत्न मत करिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ऐसी बातें मत करिए। हम गंभीर चर्चा कर रहे हैं।

श्री प्रणब मुखर्जी : एक शब्द विशेष को ही पकड़कर मत बैठिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहता हूं कि इसके बाद कुछ घटनाएं घटीं और हमने अपने सहयोगियों के साथ बातचीत की। यू.पी.ए. की अध्यक्षा ने पहल की। हाइड एक्ट के बाद, संसद के शीतकालीन सत्र में दोनों सभाओं में इसपर चर्चा हुई। इस संबंध में सात बार चर्चाएं हुई और वर्ष 2007 के अंतिम शीतकालीन सत्र में अंतिम बार चर्चा की गई। जब हाइड एक्ट पारित हुआ तो उसी दिन मैंने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यह कहा कि हाइड एक्ट के संबंध में आदेशात्मक उपबंध है जो हम पर लागू नहीं होते हैं और हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे। इसका क्या अर्थ है? इसका यह अर्थ है कि हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे। इन मुद्दों पर यदि कहीं पर भी वे हाइड एक्ट की शर्तें थोपना चाहेंगे या वे हाइड एक्ट के साथ अपने सहयोग को संबद्ध करना चाहेंगे तो ऐसा करना करार तोड़ने की बात होगी। 123 असैन्य सहयोग करार वेबसाइट पर उपलब्ध है। कृपया आप इसकी जांच करें। मैं अपने वामपंथी मित्रों से यह अनुरोध करता हूं कि वे इसे लागू करने के बारे में अपने अर्थ लगाने को भूल जाएं। क्या आपको कहीं पर 123 करार में हाइड एक्ट शब्द का उल्लेख मिला है?

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : किन्तु अमेरिका के राष्ट्रीय कानूनों में इसका उल्लेख है।

[प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा]

श्री प्रणब मुखर्जी : मल्होत्रा जी, यह आपका अर्थ-निरूपण है। मैं इसी पर आ रहा हूं। आप अपने तरीके से अर्थ लगाने के लिए स्वतंत्र हैं।

आई.एस.एस.ए., भारत संबंधी सुरक्षा करार भी बेबसाइट पर है। इसीलिए मैंने यू.पी.ए.-वाम दल समिति में अपने वामपंथी सहयोगियों को यह दस्तावेज नहीं दिया? मैं बाद में इसे स्पष्ट करूंगा। किन्तु इस समय मैं यह बात बताना चाह रहा हूं कि हम यह बात मानते हैं कि हाइड एक्ट में ऐसे आदेशात्मक उपबंध हैं जो हमें किसी भी परिस्थिति में मंजूर नहीं हैं।

हम अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर कभी समझौता नहीं करेंगे। यह हमारी मूल नैसर्गिक ताकत है। इसलिए मैं अपने सहयोगियों, जिन्होंने इतने लंबे समय से हमारा समर्थन किया है, को यह बताने का कष्ट कर रहा हूं। स्वयं यू.पी.ए. की अध्यक्षता और प्रधानमंत्री ने स्वयं यह कहा है कि हमने गत चार सालों में काफी अच्छा काम किया है। मैं जोर देकर यह बात कहना चाहता हूं कि हमने काफी अच्छा काम किया है। जी.डी.पी. में 8-9 प्रतिशत वृद्धि की ही बात नहीं है। चार सालों तक जी.डी.पी. में 9 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। यह कम नहीं हैं। कई वर्षों के बाद, इस वर्ष कृषि में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

श्री प्रणब मुखर्जी : यह ठीक है कि मूल्यों में वृद्धि हुई है। मैं बताता हूं कि ये क्यों बढ़े, किन्तु कृपया धैर्य रखें। हरिन पाठक जी, मैं हाथ जोड़कर आपसे अनुरोध करता हूं कि धैर्य रखें... *(व्यवधान)* मैं आपको बोलने की अनुमति नहीं दे रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित न करें?

*(व्यवधान)**

श्री प्रणब मुखर्जी : आप गलत समझ रहे हैं। मैं आडवाणी जी जितना बड़ा नेता नहीं हूं। मेरा कद उतना बड़ा नहीं है। आडवाणी जी काफी बड़े नेता हैं। वे देश के भावी प्रधानमंत्री हैं। मैं छोटा आदमी हूं। आपसे भी काफी छोटा। कृपया मेरी तुलना श्री लाल कृष्ण आडवाणी से न करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम कह रहे हैं कि हम आदेशात्मक उपबंध को नहीं मानेंगे। इसलिए हम सावधानी से उनसे बच रहे हैं। हमने बातचीत में यह सुझाव दिया है कि कृपया सतर्क रहें। ये उपबंध नहीं होने चाहिए।

मैं हमारे द्वारा विकसित तंत्र के बारे में बता रहा था। जब उन्होंने यह कहा कि वे चिंतित हैं तो यू.पी.ए. की अध्यक्षा और प्रधानमंत्री की पहल पर हम मिले। पहले, हमारी मुलाकात मेरे आवास पर हुई। जब से हमारी गठबंधन सरकार अस्तित्व में आई है तब से लेकर अब तक मैं हमेशा उनके संपर्क में रहा हूं। सभा के नेता के रूप में यह मेरी जिम्मेदारी थी। हम सदैव संपर्क में रहे। मुलाकात की कोई कमी नहीं थी और हरेक ने हमारे विचारों पर खुले तौर पर बातचीत की। फिर यू.पी.ए. की अध्यक्षा और प्रधानमंत्री के हस्तक्षेप पर एक तंत्र गठित करने का निर्णय लिया गया। 30 अगस्त को हमने घोषणा की थी कि इससे संबंधित एक तंत्र की स्थापना की जाएगी और एक समिति का गठन किया जाएगा। सभापति समिति के सदस्यों को मनोनीत करेंगे। तत्पश्चात् कार्य आरम्भ होगा। समिति का अधिदेश हाइड एक्ट के प्रभाव, 123 समझौते के प्रभाव तथा इन दोनों के प्रभाव, भारत की स्वतंत्र विदेश नीति तथा हमारे त्रि-स्तरीय नागरिक परमाणु कार्यक्रम, जिसे हमने काफी पहले स्वीकार किया था, पर वाम दलों की चिंताओं का समाधान करना था। वाम दलों की इन चिंताओं का समाधान समिति द्वारा किया जाएगा। तत्पश्चात् नागरिक परमाणु सहयोग को अमली जामा पहनाने से पूर्व समिति के निष्कर्षों को ध्यान में रखा जाएगा। कृपया याद रखें कि हमने इन्हीं शब्दों का उपयोग किया था। पाठ का प्रारूप मैंने तथा एक महत्वपूर्ण वामपंथी नेता ने तैयार किया था। चूंकि वे दूसरे सदन के सदस्य हैं, इसलिए मैं उनके नाम का उल्लेख नहीं कर रहा हूं। हम दोनों ने इसे संयुक्त रूप से पढ़ा था। इसका कार्यात्मक भाग यह था कि समिति के निष्कर्षों को अंतिम रूप दिए जाने के पश्चात् इसे यू.पी.ए. की अध्यक्षा को प्रस्तुत किया जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस तंत्र की स्थापना यू.पी.ए. की अध्यक्षा द्वारा की गई थी। महोदय, यह आपके द्वारा गठित की गई कोई संसदीय समिति नहीं थी, यह प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त कोई सरकारी समिति नहीं थी। यह एक राजनैतिक तंत्र था जिसकी नियुक्ति यू.पी.ए. की अध्यक्षा द्वारा की गई थी। इसलिए, समिति के निष्कर्षों को यू.पी.ए. अध्यक्षा को प्रस्तुत करना हमारी जिम्मेदारी थी और तत्पश्चात् सहयोग समझौते को कार्यरूप देने से पूर्व इन्हें ध्यान में रखने की जिम्मेदारी सरकार की थी।

हमने नौ बैठकें की। प्रथम छः बैठकों में हमने उनकी चिंताओं का समाधान किया, जिसे उस दस्तावेज में विस्तारपूर्वक बताया गया है और यहां तक कि प्रकाशित भी किया गया है, जो श्री सलीम हमें दिखा रहे थे। उनमें से कई टिप्पणियों एवं पत्राचारों को यहां दोहराया

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

गया है। तत्पश्चात् नवम्बर, 2007 में कुछ समस्या उत्पन्न हुई। हमने उनसे कहा कि आई.ए.ई.ए. एक ऐसी संस्था है जिसकी स्थापना स्वयं भारत द्वारा की गई थी। भारत आई.ए.ई.ए. के संस्थापक सदस्यों में से एक है। 35 गर्वनरों में 10 स्थायी गवर्नर हैं जिनमें भारत भी है। इसे आई.ए.ई.ए. के बोर्ड ऑफ गवर्नर के रूप में जाना जाता है तथा इसमें 10 स्थायी गवर्नर हैं, इसलिए, यह हमारी अपनी संस्था है। वे तीन प्रमुख मुद्दों पर चिंता व्यक्त कर रहे थे। पहली चिंता यह कि आई.ए.ई.ए. किस प्रकार अबाधित ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित कर सकता है? दूसरी यह कि क्या सरकार इस बारे में निश्चित है कि आई.ए.ई.ए. सरकार की पृथक्करण योजना तथा सामरिक कार्यक्रमों को मान्यता देगा? तीसरी चिंता यह कि यदि ईंधन आपूर्ति बाधित होती है, तो क्या सरकार को आई.ए.ई.ए. से कुछ हल मिल सकता है? हमने कहा था कि इस दस्तावेज को अंतिम रूप देने के बाद इन सभी चिंताओं का यथेष्ट समाधान किया जाएगा। इसके बाद यू.पी.ए. अध्यक्षा के हस्तक्षेप से यह निर्णय किया गया कि हम आई.ए.ई.ए. जाएंगे और इसके बाद इस बारे में पहल होगी — क्या पहल होगी? यह दस्तावेज नहीं है, बल्कि सहमति पाठ है, पाठ का सहमत भाग है, पाठ की भाषा है, स्वीकृति नहीं है। यह वार्ताकारों द्वारा किया जाता है जो कि प्रिंसिपल के कर्मचारी हैं। यहां प्रिंसिपल भारत सरकार है और प्रिंसिपल आई.ए.ई.ए. है। इस संबंध में प्रश्न उठाए गए हैं कि जब पाठ को अंतिम रूप दिया गया तब हमने पाठ नहीं दिया था। यह नहीं दिया गया था। हमने इसके कारणों को एक नहीं बल्कि तीन बैठकों में बताया था। यह कहा गया कि हम परिणाम देंगे। हम वास्तविक उपबंध बताएंगे। हम पाठ नहीं दे सके क्योंकि विभिन्न देशों में दस्तावेजों के व्यवहार का तरीका अलग-अलग है। हमारे देश में हम उसे गोपनीय कहते हैं जो कि गुप्त दस्तावेज; विशेष लोगों तक सीमित दस्तावेज; वर्गीकृत दस्तावेज; सीमित दस्तावेज होता है। आई.ए.ई.ए. सीमित तथा असीमित शब्द का उपयोग करता है। आई.ए.ई.ए. अधिकारियों ने कहा कि वे किसी संप्रभु राष्ट्र को अपने दस्तावेजों से नहीं बांध सकते हैं। वे खुद को बांधते हैं। यह सहमति है। यह सामान्य बुद्धि है कि अगर वे स्वयं को बांध रहे हैं, तो हमारी सरकार को भी बंधना होगा। इसी कारण यू.पी.ए. की अध्यक्षा ने यू.पी.ए. की ओर से सभी मंत्रियों को सदस्य के रूप में नियुक्त किया क्योंकि वे जानती थीं कि जब हमें सूचना का आदान-प्रदान करना होगा, तो कुछ सूचना गोपनीय दस्तावेज पर आधारित होंगी। इसलिए, हमने उनसे कहा कि हमें प्रतीक्षा करनी होगी और जब इसे कार्यसूची के रूप में बोर्ड ऑफ गवर्नर के अनुमोदन के लिए परिचालित किया जाएगा, तब पाठ उपलब्ध होगा। हमने पाठ उपलब्ध करा दिया है। लेकिन जब यह सब मामला खटाई में पड़ गया तब आप सबको पता है कि उसके बाद क्या हुआ। और मुझे उसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी निष्कर्ष पर जल्दबाजी में पहुंचने से पूर्व कृपया याद रखें कि भारत और जेनेवा के बीच, जेनेवा और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच समय का अंतर है।

मोहम्मद सलीम : उनका समय हमसे आगे है।

श्री प्रणब मुखर्जी : जब श्री करात ने मुझे यह पत्र पढ़कर सुनाया, इसकी अंतिम पंक्ति यह थी कि समर्थन वापस लेने का समय आ गया है और इसके बाद उन्होंने घोषणा की वे महामहिम राष्ट्रपति को सूची प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

उस समय भारत में 12.30 बजे थे, लेकिन वियना में पूर्वाह्न के 9 बजे थे...*(व्यवधान)* मैं इसके विस्तार में नहीं जा रहा हूं। जो भी हुआ है, उसके बाद हुआ है उसके पहले नहीं। इसलिए किसी भी तरह विश्वासघात का प्रश्न नहीं उठता। जो कुछ भी हुआ है उसके बाद हुआ है।

मोहम्मद सलीम : तो दस्तावेज गोपनीय नहीं था।

श्री प्रणब मुखर्जी : दस्तावेज को हमने गोपनीय बनाया था। यह हमने किया था। यह हमने किया था...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : जब सारी दुनिया को पता चल गया, तब डिक्लासीफाई कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप जब भाषण देंगे, तब बोलिएगा।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री प्रणब मुखर्जी : यह आम परिपाटी है। प्रो. मल्होत्रा, आप काफी वरिष्ठ हैं और मैं इसके गुण-दोष के विस्तार में नहीं जा रहा ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब तक वह अनुमति नहीं देते, मैं आपको बोलने की अनुमति नहीं दे सकता।

(व्यवधान)

श्री प्रणब मुखर्जी : यह तथ्य है कि यहां तक कि 1970 की भारत-सोवियत मैत्री संधि जैसे महत्वपूर्ण समझौते के बारे में भी संसद को उस समय पता चला जब यह घोषणा की गई कि समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए गए हैं। मैं संवैधानिक प्रावधानों के गुण-दोष में नहीं जा रहा। लेकिन 26 जनवरी, 1950 से आज की तिथि तक स्थिति

[श्री प्रणब मुखर्जी]

यही है। श्री आडवाणी ने जब संवैधानिक उपबंधों पर पुनर्विचार के लिए एक आयोग का गठन किया था, उस समय गृह मंत्री के रूप में, उप प्रधानमंत्री के रूप में यह देखने का अवसर उनके पास था। मुझे यह ज्ञात नहीं है कि उस समय उन्हें ऐसा क्यों नहीं लगा कि इस विशेष उपबंध को आयोग को दिया जाय जिसकी नियुक्ति की गई थी, जिसकी अध्यक्षता उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश ने की थी। यह खामी प्रतीत होती है। देर से यह विवेक क्यों?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : इस अनुभव के कारण... *(व्यवधान)*

श्री प्रणब मुखर्जी : मैं आदरपूर्वक, यह निवेदन करना चाहता हूं कि इसके पहले भी विपक्ष के नेता का डब्ल्यू.टी.ओ. समझौते के संबंध में ऐसा ही विरोध था। तत्पश्चात्, वे सत्ता में आए। उसके पहले भी उनके कुछ मतभेद थे और वे दूसरी सभा में महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे, जिन्होंने इस विधेयक को पारित न होने देने के लिए उस सभा में तत्कालीन सी.पी.आई.(एम) के साथ गठबंधन किया और बाद में, आपको ज्ञात है कि हम जिनिवा में हार गए। बाद में, हमारे समर्थन से आपको उसी समझौते को कुछ परिवर्तनों के साथ तब पारित करना पड़ा, जब आपकी सरकार थी। आदरपूर्वक, मैं यह कहना चाहता हूं कि यदि मैं संसद में रहा, तो मैं देखूंगा कि आप इस देश के लिए किस प्रकार का नया महान समझौता लेकर आएंगे। हमें भविष्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए, मैं उस संबंध में नहीं बोलना चाहता... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, मैं सभा का ज्यादा समय नहीं लूंगा। किन्तु मैं कुछ अन्य ठोस मुद्दों का उल्लेख करना चाहता हूं, जिनके बारे में बड़े विस्तार से कहा गया है। सर्वप्रथम, आप यह असैन्य परमाणु सहयोग क्यों करने जा रहे हैं? हमें इससे क्या व्यापक सुविधाएं प्राप्त होंगी? आज, हमारी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 1,45,000 मेगावाट के लगभग है। मुझे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि विद्युत की आवश्यकता क्यों है। विद्युत की हर चीज के लिए आवश्यकता है। हर कोई यह जानता है। मुद्दा यह है कि हम जो कुछ भी कह रहे हैं जैसे कि विद्युत उपलब्ध होगी आदि, सच है अथवा कल्पना है। आज, हमारी स्थापित क्षमता 1,44,565 मेगावाट है।

भविष्य के लिए क्या अनुमान है। मैं दूरवर्ती भविष्य के बारे में बात नहीं कर रहा हूं। मैं निकट भविष्य की बात कर रहा हूं, अर्थात् 2030, जो कि आज से 23 वर्ष दूर है। वर्ष 2030 तक केवल ऊर्जा में ही 1,50,000 मेगावाट तक कमी हो जाएगी। यदि, हम थोड़ा और आगे जाएं अर्थात् इसे 2050, तो ऊर्जा की यह कमी 4,12,000 मेगावाट तक पहुंच जाएगी। जब ये आंकड़े निकाले जाते हैं। तो हम इनमें ताप ऊर्जा, कोयला, पेट्रोल और डीजल, जलविद्युत तथा पवन, सौर आदि जैसी अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों को शामिल करते हैं। उन सबके अधिकतम दोहन के बावजूद भी इतनी कमी बरकरार रहेगी।

कुछ अध्ययनों के अनुसार यदि हम परमाणु ऊर्जा को शामिल करें, यदि हम उस पर आज से कार्य शुरू करें या अभी से कोई कार्रवाई शुरू करें तो वर्ष 2012 से 2020 तक आठ वर्षों की अवधि में 40,000 मेगावाट का उत्पादन करके, हम ऊर्जा में कमी को 4,12,000 मेगावाट से कम करके वर्ष 2050 तक मात्र 7,000 मेगावाट तक ला पाएंगे।...*(व्यवधान)*

वर्ष 2030 में, अर्थात् 22 वर्षों के भीतर हम इस कमी को 1,50,000 मेगावाट की कमी को तुलना में 1,00,000 मेगावाट तक ला पाएंगे। 1,00,000 मेगावाट की कमी को पूरा कर लिया जाएगा और केवल 50,000 मेगावाट बरकरार रहेगी।

हम थोड़ा पीछे जाएं तो हमें पता चलेगा कि एक विकसित देश में क्या हुआ था। वर्ष 1948 में चार्ल्स डीगौल फ्रांस के राष्ट्रपति थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के विध्वंस के पश्चात्, उस दूरदर्शी नेता ने सोचा था कि यदि उन्हें फ्रांस का निर्माण करना है, तो इसके लिए परमाणु ऊर्जा की आवश्यकता होगी। उन्होंने 1948 में कार्य शुरू किया। किन्तु एक प्रबल परमाणु ऊर्जा विरोधी लॉबी मौजूद थी और फ्रांस में इसका ही काफी विरोध हुआ। चार्ल्स डीगौल ज्यादा समय तक रस्ता में नहीं रहे। किन्तु उन्होंने प्रबल परमाणु ऊर्जा विरोधी लॉबी के बावजूद कार्य जारी रखा। वर्ष 1973 में पहला तेल संकट आया। वर्ष 1974, से उन्होंने अपना परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम आगे बढ़ाने का कार्य आरम्भ किया। वर्ष 1974 से आज तक, 34 वर्षों में उनकी ऊर्जा का 79 प्रतिशत परमाणु ऊर्जा के माध्यम से पूरा होता है। लोग पूछ रहे हैं कि अमरीका ऐसा क्यों नहीं कर रहा है; रूस बड़े पैमाने पर परमाणु ऊर्जा क्यों नहीं अपना रहा है। इसका उत्तर मुझे नहीं देना है। इसका उत्तर उन्हीं को देना चाहिए। किन्तु एक सीधा सा कारण मेरे दिमाग में आता है। वे लोग तेल पर चल रहे हैं। उन देशों में ऊर्जा के प्राथमिक स्रोत भारत में मौजूद स्रोतों से कहीं अधिक हैं। हमारे देश में मौजूद ऊर्जा के प्राथमिक स्रोत काफी कम हैं। कोयले का ही उदाहरण लीजिए। यदि हमें कोयले से ऊर्जा प्राप्त करनी है, तो वर्ष 2050 तक हमें 1.6 बिलियन टन कोयले का आयात करना पड़ेगा।

अपराह्न 2.00 बजे

आज पत्तनों की कुल क्षमता का कोयले को लादने और उसे

उतारने में पूरी तरह से उपयोग किया जाएगा। इसलिए, हमें पत्तनों की क्षमताओं का भी निर्माण करना चाहिए। यह एक कारक है।

दूसरा कारक जलविद्युत संसाधन हूं। आरंभिक चरण में ही हमारे जलविद्युत संसाधन ऐसे स्थानों पर है कि यदि आरंभिक चरण में भी हमारा व्यापक पौधरोपण कार्यक्रम हो, तो वनों की बड़े पैमाने पर कटाई की आवश्यकता होगी, जिसका पर्यावरणविदों द्वारा कड़ा विरोध किया जाएगा। इन कारकों को छोड़िए। उत्तरकाशी में क्या हो रहा है? जलविद्युत संयंत्र का निर्माण करने के प्रयासों का पर्यावरणविदों की ओर से विरोध हो रहा है। हम सभी को अच्छी तरह पता है। हमारी सरकार ने महसूस किया, उनकी सरकार ने महसूस किया, और ऐसा अचानक ही महसूस नहीं किया गया। हम पिछले चार वर्षों से सत्ता में हैं। चार वर्षों से पहले, 6 वर्षों तक ये सत्ता में थे। जादुगोडा में यूरेनियम का खनन या मेघालय में यूरेनियम का खनन इतना साधारण नहीं था।

वाद-विवाद में अपनी बात सिद्ध करने के लिए आप ऐसा कह सकते हैं। लेकिन यदि वे इसे स्वीकार करने से इंकार करते हैं, तो ऐसा करने से उन्हें कैसी टीस महसूस हुई होगी, इसके लिए केवल भगवान ही उनकी सहायता कर सकता है, मैं नहीं कर सकता। किन्तु यहां हम टीस महसूस कर रहे हैं। तभी हम ऐसा चाहते हैं। मैं माननीय प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने असैन्य परमाणु सहयोग समझौते के लिए एक दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाया है। वर्ष 1948 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यह कार्यक्रम आरंभ किया। होमी भाभा से लेकर विक्रम साराभाई तक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे और हमारे साथ महान वैज्ञानिक डा. राजा रमन्ना भी थे, मुझे उनके साथ राज्य सभा में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन सभी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसीलिए, आज हमारे वैज्ञानिक और इंजीनियर यह चमत्कार कर सकते हैं। यह मात्र ऊर्जा प्राप्त करने के संबंध में नहीं है। यह सहयोग 1974 से आज तक के तीस वर्ष के हमारी परमाणु प्रौद्योगिकी के आदान प्रदान के अलगाव को दूर कर मार्ग खोल देगा। मैं "रंगभेद" शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता किन्तु कभी-कभी कड़े शब्दों का प्रयोग किया जाता रहा है। वह अलगाव टूट जाएगा और यही फायदा है।

हमें न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप के पास क्यों जाना चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब तक हम एन.एस.जी. के पास नहीं जाते, तब तक हमारे रूसी मित्र, हमारे फ्रांसिसी मित्र और यहां तक कि अन्य देशों के हमारे मित्र इसके लिए राजी नहीं हो सकते। एन.एस.जी. और आई.ए.ई.ए. स्वीकृति दो ऐसी स्वाकृतियां हैं, जिन्हें आम आदमी की भाषा में पासपोर्ट और वीज़ा के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है। मैं यात्रा करूं या न करूं, यह मुझ पर निर्भर है। किन्तु यदि मेरे पास पासपोर्ट नहीं होगा, तो मैं वीज़ा के लिए आवेदन भी नहीं कर सकता। यदि मेरे पास वीज़ा नहीं होगा, तो मैं उस देश में प्रवेश नहीं कर सकता। ये पासपोर्ट और वीज़ा है। कृपया हमें यह पासपोर्ट और वीज़ा प्राप्त करने दें। तब हम निर्णय लेंगे कि हम यात्रा करेंगे या नहीं और यदि हम यात्रा करते हैं, तो हमारी यात्रा का गंतव्यस्थान क्या होगा। यदि आप वह फैसला लेना चाहते हैं, आप तो इंकार करेंगे ही, इसे संसद सदस्यों के सामूहिक विवेक पर छोड़ देना चाहिए, जो कि 70 करोड़ मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वे इसका निर्णय लेंगे, न कि मैं, न ही मेरे शब्द मात्र। मैं केवल अपनी बात रख सकता हूं। मैं सरकार की ओर से अपनी बात रख सकता हूं। आप ही अंतिम निर्णायक हैं और आपको ही निर्णय करना होगा कि आप इसे स्वीकार करेंगे या नहीं। किन्तु आदरपूर्वक मैं यह बता सकता हूं कि आप जो भी फैसला देंगे हम इसे पूरे सम्मान के साथ स्वीकार करेंगे। किन्तु फैसले से पहले, फैसला देते समय, मैं निश्चित तौर पर लोक मत के इस उच्चतम न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों को यकीन दिलाने के लिए उनके समक्ष अपनी दलील प्रस्तुत करना चाहता हूं। इसलिए, कृपया धैर्य रखें। यदि यह प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाता है, तो जरा सोचिए क्या स्थिति होगी।

सरकार चली जाएगी। खैर, सरकार को जनादेश लेना ही होगा, जैसा कि विपक्ष के नेता ने कहा है कि यदि सरकार बच जाती है तो छः महीने या सात महीने या आठ महीने पश्चात्, सरकार को जनादेश लेना ही होगा। यदि यह नहीं बच पाती है, तो नहीं बच पाएगी। लेकिन इसका क्या प्रभाव होगा? मेरा वामदल के मित्रों से यह एक सुस्पष्ट प्रश्न है। आप मेरे साथ वाद-विवाद कर सकते हैं। आप मुझे चुनौती दे सकते हैं। किन्तु अपना हृदय टटोलें और स्वयं से यह प्रश्न करें। क्या आप ऐसा महसूस करते हैं यही मुद्दा है जिस पर सरकार को गिराया जाना चाहिए — एक ऐसी सरकार जिसने चार वर्षों की अवधि में नौ प्रतिशत जी.डी.पी. बनाए रखी? मेरे पास कुछ आंकड़े हैं...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : मुद्रास्फीति का क्या होगा? केवल यही मुद्दा नहीं है...*(व्यवधान)*

श्री प्रणब मुखर्जी : मैं 9 प्रतिशत विकास दर की बात कर रहा हूं।...*(व्यवधान)* यह सरकार इसका श्रेय लेती है।...*(व्यवधान)* कल तक आप इसका श्रेय ले रहे थे। मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं। कितनी ही बार आपने कहा कि आप एन.आर.डी.जी.ए. सूचना अधिकार अधिनियम पारित करने के लिए लागू करने हेतु दबाव डाल रहे हैं।...*(व्यवधान)* यह कहते हुए आप श्रेय ले रहे हैं कि आपने जनजातियों की वन भूमि पर उनका अधिकार दिलाने में सरकार पर दबाव बनाया जबकि वस्तुतः यह सत्य नहीं है।...*(व्यवधान)* अन्ततः

[श्री प्रणब मुखर्जी]

आपको यह याद रखना होगा कि इनमें से बहुत सी बातें पहले संप्रग द्वारा उठाई गई थी।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह सही तरीका नहीं है। श्री बसुदेव आचार्य, आपकी पार्टी के अन्य वक्ताओं को भी बोलना है। जब आपकी बारी आए तो यह बात उठानी चाहिए। यह सही नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं करें।

*(व्यवधान)**

श्री प्रणब मुखर्जी : लेकिन मैं मुख्य बात यह कहने का प्रयास कर रहा हूं कि सरकार को गिराना खतरनाक बात है। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। कृपया धैय रखें।...*(व्यवधान)* मैं केवल एक मिनट लूंगा। मैं बोलने की अनुमति नहीं दे रहा हूं।...*(व्यवधान)*

मैं अपने अच्छे मित्र श्री हन्नान मोल्लाह का नाम लेते हुए एक सविनय निवेदन करना चाहता हूं। एक दिन उन्होंने कहा था। मैं क्या करूं? उन्होंनें कहा था "यदि भाजपा के लोग रेलगाड़ी में हैं, तो क्या आप मुझसे चलती हुई रेलगाड़ी से कूदने की आशा करते हैं?"

विनयपूर्वक मैं यह बात कहता हूं। चलती हुई रेलगाड़ी से न कूदें। आप को चोट लग जाएगी। मैं नहीं चाहता कि मेरे मित्र को चोट लग जाए। मैं आपको केवल प्रतीक्षा करने की ही सलाह दूंगा। अगला स्टेशन आने दीजिए। आप रेलगाड़ी बदल लीजिए। आपका गंतव्य भी वही है। इसमें नुकसान की कोई बात नहीं है यदि आप अपने गंतव्य स्थान पर कुछ देरी से पहुंचते हैं। कृपया अपनी पहचान उन लोगों के साथ मत जोड़िए, जिन्होंने बाबरी मस्जिद को तोड़ा था।... *(व्यवधान)* वर्ष 1977 तथा 1988 की गलती मत कीजिए।... *(व्यवधान)* कृपया यह बात न भूलें।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : अन्य व्यवधानों को कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं करें।

*(व्यवधान)**

श्री प्रणब मुखर्जी : वर्ष 1988 में आपने कहा था कि भाजपा अछूत नहीं हैं।...*(व्यवधान)* श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ फोटो खिंचवाकर आपने यह कहा था।...*(व्यवधान)* एक जुलाई को हुई बैठक के समाचार के साथ पहली जुलाई को एक फोटो-प्रकाशित हुई थी, जिसमें आपने कहा "भाजपा अछूत नहीं है।" आपने कहा कि आप कांग्रेस को हटाएंगे, आप भाजपा के साथ मिलकर काम करेंगे।... *(व्यवधान)* इसके परिणामस्वरूप भाजपा ने अपने सदस्यों की संख्या 2 से बढ़ाकर 89 कर ली तथा उसके बाद यह संख्या 119 हो गई और उसके बाद भाजपा और ताकतवर होती गई।...*(व्यवधान)*

वर्ष 1988 में आपने भाजपा को सम्मान दिया। वर्ष 1992 में बाबरी मस्जिद को ढहाया गया।...*(व्यवधान)* उन्हें संसद, संसदीय लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों को मत तोड़ने दीजिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सलीम, यह क्या हो रहा है? यह सही नहीं है। आप ऐसा नहीं कर सकते हैं। आपको धैर्य रखना चाहिए।

श्री प्रणब मुखर्जी : कृपया रेलगाड़ी मत छोड़िए। कांग्रेस विरोधी रवैया अपनाकर उनके साथ न जाएं। याद रखिए आपका साथी बुरा साथी है, विश्वसनीय साथी नहीं है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : मैं अगले वक्ता का नाम पुकारता हूं — प्रो. रामगोपाल यादव।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया माननीय नेताओं को अपने दृष्टिकोण स्पष्ट करने दें।

(व्यवधान)

श्री गुरूदास दासगुप्त (पंसकुरा) : अध्यक्ष महोदय, क्या मैं एक सुझाव दे सकता हूं? हमें भोजनावकाश कर लेना चाहिए।

श्री बुसदेव आचार्य : हम इसे आधा घंटे का कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : क्या आप सहमत हैं? बहुत अच्छा, सभा अपराह्न 3.00 बजे पुनः समवेत होगी।

सभा अपराह्न 3.00 बजे पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 2.09 बजे

तत्पश्चात लोकसभा मध्याह्न भोजन के लिए अपराह्न 3.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अपराह्न 3.02 बजे

लोकसभा मध्याह्न भोजन के बाद अपराह्न तीन बजकर दो मिनट पर पुनः समवेत हुई।

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*]

मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव — *जारी*

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव (सम्भल) : अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद देना चाहूंगा कि इस एतिहासिक चर्चा में भाग लेने के लिए आपने मुझे अनुमति दी और आपको इस बात के लिए बधाई देना चाहूंगा कि आप पूरे अपने अनुभव और योग्यता के साथ इस सदन की अध्यक्षता कर रहे हैं। मैंने नेता, प्रतिपक्ष आदरणीय आडवाणी जी को सुना, भाई सलीम को सुना और प्रणव दा को सुना। आइंस्टीन की रिलेटिविटी की थ्योरी का प्रतिपादन किया था तो लोगों को आश्चर्य हुआ था कि सारी चीजें सापेक्ष कैसे हो सकती हैं? कोई भी चीज पूर्ण नहीं है। कोई भी चीज पूर्ण सत्य नहीं है। प्रत्येक चीज सापेक्ष है। और कॉमन व्यक्ति को रिलेटिविटी का सिद्धांत समझाते हुए एक जगह उदाहरण दिया था। समय सापेक्ष है। और यह कहा था: यदि आप भट्ठी के बगल में बैठे हैं तो पांच मिनट भी पांच घंटे के बराबर लगेंगे लेकिन यदि आप एक सुन्दर स्त्री के बगल में बैठे हैं तो पांच घंटे पांच मिनट के बराबर लगेंगे। यहां पर जो बातें कही जा रही हैं, उन्हें सारा देश सुन और देख रहा है। यह सापेक्ष पूरी तरह से सच नहीं है। जो व्यक्ति जिस ऐंगल से देखता है, उसे वही ऐंगल दिखाई देता है। एक प्रसिद्ध फिलॉस्फर कृष्णामूर्ति हुए हैं जिन्होंने एक जगह लिखा है कि जब बादल गरजते हैं तो गौरैया डरकर अपने घोंसले में छुप जाती है जबकि मोर नाचने लगता है। एक को बहुत अच्छा लगता है तो दूसरे को खराब लगता है। आज हम जिस मसले पर यहां वाद-विवाद कर रहे हैं, उसका समर्थन बहुत बड़ी जनता कर रही है। जबकि कुछ थोड़े से लोग ही उसका विरोध कर रहे हैं। कुछ राजनैतिक व्यक्ति निजी कारणों या निहित स्वार्थों से उसका विरोध कर रहे हैं। देश व्यक्ति की राजनीति या राजनैतिक दलों से बड़ा होता है, यह हमें मानकर चलना चाहिये। जब देश की प्रतिष्ठा, उसके मान-सम्मान का सवाल हो, तो जो देश का नेतृत्व कर रहे हैं, उनके द्वारा दों चीजों का हमेशा ध्यान रखा जाता है। जब हम देश की जनता के बीच में जाते हैं तो यह कहते हैं कि किसी को समर्थन देने के लिये यह देखना चाहिए कि नेता की नीति और नीयत कैसी है? अध्यक्ष महोदय, जब इस सदन में इस विषय पर चर्चा हुई थी तो उस समय भी मैंने कहा था कि मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी की नीयत, उनकी ईमानदारी और देश के प्रति इनकी निष्ठा के संबंध में रत्तीभर भी संदेह नहीं है और मैं वही बात कहने और उनके विश्वास मत का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष जी, सदन में माननीय आडवाणी जी और श्री मोहम्मद सलीम जी ने कुछ बातें कहीं हैं। उनकी बातों को मद्देनजर रखते हुये मैं कुछ पहले कहना चाहूंगा और अपनी बात मैं बाद में कहूंगा। माननीय आडवाणी जी देश के बहुत बड़े नेता हैं जिन्हें बहुत जल्दी है कि वे कब प्रधानमंत्री बनें? "उन्हें बहुत जल्दी है" उन्होंने एक शब्द "कोऑलीशन धर्म" का प्रयोग किया था। मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि जब गुजरात में दंगे हुए थे, जब निर्दोष लोगों का नर-संहार किया गया था, मुसलमानों का एक तरह से कत्लेआम किया गया था तो माननीय अटल जी ने एक शब्द का प्रयोग किया था कि मोदी ने राजधर्म का पालन नहीं किया है। अटल जी राजधर्म की और आडवाणी जी हमारे प्रधानमंत्री जी को कोऑलीशन धर्म की सलाह दे रहे हैं। यह सोचना चाहिये कि उन्होंने कब किसी धर्म का निर्वहन किया? एक बात उन्होंने कही कि क्या पार्लियामेंट ईर्रेलवैंट हो गयी है? हमारे कांस्टीट्युशन में कहीं इसकी व्यवस्था नहीं है। अगर कोई इंटरनैशल ट्रीटी करता है तो पार्लियामेंट इसका रैटिफिकेशन करेगी। मैं प्रधानमंत्री की और उनकी डैमाक्रेटिक स्प्रिट की तारीफ करना चाहूंगा और उन्हें बधाई देना चाहूंगा कि इस बारे में चर्चा होने के बाद भी और इस कदम को उठाने के बाद उन्होंने अपनी तरफ से आकर सदन में विश्वासमत का प्रस्ताव पेश किया है। क्या यह पार्लियामेंट की रैलेवेंसी शो नहीं करता? इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है? मजबूरी कोई नहीं, मजबूरी आपकी हो सकती है, आप भी नहीं चाहते। आप मजबूरी की बात कर रहे हैं, मैं आपको दिखा रहा हूं कि आपके नेता ने "सामना" में क्या लिखा है, उसमें लिखा है — "डील विरोधी लेफ्ट, चीन का गुलाम।" उन्होंने कहा कि ये पहले रूस और सोवियत यूनियन के इशारे पर नाचा करते थे और अब चीन के इशारे पर नाचते हैं। सामना में सम्पादकीय है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, मैं खैरे साहब से कह रहा था कि नेता कुछ कहते हैं और आप कुछ करते हैं। आप अगर डील को देश समर्थक मानते हों तो आप इसके पक्ष में वोट कीजिए। मैंने शुरू में ही कहा कि देश बड़ा होता है, व्यक्ति या राजनैतिक दल बड़ा नहीं होता।...*(व्यवधान)* आप मुझे डिस्टर्ब मत कीजिए। आडवाणी जी ने कहा कि यह सही है कि जब विश्वास मत पर चर्चा हो रही हो तो इन टोटेलटी चर्चा होती है, लेकिन यहां एक विशेष मुद्दे को लेकर सैशन बुलाया गया है और लोग उसी पर केन्द्रित करें। उन्होंने कहा कि इस संधि के बाद पहले पोखरन हुआ था, जिसे स्वर्गीय इंदिरा जी ने किया था। उसके बाद पोखरन टू हुआ और अब पोखरन तीन कभी नहीं हो सकता। मैं यह जानना चाहता हूं कि जब देश पांच विस्फोट कर चुका है, जिसमें एक थर्मो न्युक्लियर एक्सप्लोजन भी

[प्रो. राम गोपाल यादव]

हे तो टेस्ट की जरूरत क्या है? टेस्ट तब किया जाता है जब हमें संदेह हो कि हमारा काम ठीक है या नहीं। जब टेस्ट होकर सब कुछ ठीक हो गया, क्या अमेरिका, रूस और चीन रोज़ाना टेस्ट कर रहे हैं?...*(व्यवधान)* ये रोज़ाना टेस्ट नहीं कर रहे हैं। जब पिछली बार किया था, उसका भी मुझे मालूम है कि कब किया था। जब हम इस पोजिशन में हैं...*(व्यवधान)*।

[अनुवाद]

श्री खारबेल स्वाईं (बालासोर) : यह 45 बार हो चुका है। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। उन्होंने सूचना दे दी है।

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : जब हम इस पोजिशन में हैं कि हम बना सकते हैं तो हमें जरूरत क्या है और जब जरूरत पड़ेगी तो कहीं रोक नहीं। अगर कहीं नेशनल इंटरस्ट में देश की एकता, अखंडता एवं सम्प्रभुता पर खतरा होता है तो इस डील में कहां पाबंदी है कि हम यह कदम नहीं उठा सकते, कोई पाबंदी नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं अन्य बातों पर नहीं जाऊंगा, लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि यह सही है कि हिन्दुस्तान ने नॉन प्रोलीफ्रेशन ट्रीटी पर कभी समझौता नहीं किया, सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत नहीं किए। इस सब के बाद भी मुझे प्रधानमंत्रीजी की तारीफ करनी होगी कि यह एक अपवाद है कि एन.पी.टी. और सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत न करने के बाद भी एन.एफ.सी. ग्रुप में एंटर करने का मौका हमें इस एग्रीमेंट के बाद मिल रहा है। यह एक अपवाद है। इसके लिए मैं प्रधानमंत्रीजी और सरकार को बधाई देना चाहता हूं। माननीय आडवाणी जी ने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा बहुत खराब है।

यह सही है, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि उन्होंने तमाम जगह विस्फोटों की बात कही, लेकिन वे यह भूल गए कि जब वे देश के गृह मंत्री और उप प्रधान मंत्री थे, तब इस देश की पार्लियामेंट पर हमला हुआ, लाल किले पर हमला हुआ और कश्मीर की विधान सभा पर हमला हुआ। देश की पार्लियामेंट पर तो तब हमला हुआ, जब देश के प्रधान मंत्री ने, मुंबई में दो दिन पहले कहा कि पार्लियामेंट पर हमला हो सकता है। जब देश के प्रधान मंत्री कहते हैं कि पार्लियामेंट पर हमला हो सकता है और दो दिन बाद हमला हो जाता है। तत्कालीन गृह मंत्री इसे नहीं रोक पाए। वह आदमी अब यह कहे कि देश में बहुत जगह विस्फोट हुए, कहां तक उचित है। हम सब ह्यूमन बीइंग्स है। देश को सर्वोपरि समझते हुए, इन सारी बातों से ऊपर उठते हुए, यदि ये बड़ी सोच रखते हैं, तो उन्हें अपना दिल भी बड़ा रखकर ये बातें करनी चाहिए।

आप भी और आप भी, आडवाणी जी का नाम तो लाल कृष्ण है। लाल और लाल मिल गए। कभी-कभी दो माइनस मिलकर पॉजीटिव हो जाते हैं, यह मत कीजिए। माइनस और माइनस, प्लस। इस प्रकार की इनसे कभी उम्मीद नहीं की जा सकती है। जिन लोगों ने इस पार्टी को बनाया था,...*(व्यवधान)*

श्री रूपचंद पाल (हुगली) : कुछ दिन पहले इन लोगों ने जो हाउस में बताया था, उसकी भी तो चर्चा कर दीजिए।...*(व्यवधान)*

प्रो. राम गोपाल यादव : मैं तो इस पर इस हाउस में पहले भी बोल चुका हूं। उस पर अब भी मैं आने वाला हूं। आप मुझे धैर्यपूर्वक सुनिए। अभी तो मैं आडवाणी जी की बात पर बोल रहा था। मैंने अभी अपनी बात शुरू ही नहीं की है। मैं तो अभी तक आडवाणी जी की ही बात पर बोल रहा था।

अध्यक्ष महोदय : छोड़िए-छोड़िए। लाल कोई खराब नहीं है, अच्छा ही है।

प्रो. राम गोपाल यादव : नेता विपक्ष ने अभी अमरनाथ के बारे में बात कही, लेकिन इसका दूसरा पक्ष नहीं बताया। जब इनके लोग, जम्मू में उपद्रव कर रहे थे, बन्द किए हुए थे, अमरनाथ जाने और आने वाले यात्री जब बीच में फंसे हुए थे, उनके भूखों मरने की नौबत आ गई और सर्दी में उन्हें बहुत विषम स्थितियों का सामना जब करना पड़ रहा था, तब कश्मीर में, अमरनाथ की यात्रा के दौरान रास्ते में पड़ने वाले गांवों के मुस्लिम्स ने लंगर खोल दिए। उनके खाने की व्यवस्था की। उन्हें किसी तरह की दिक्कत न हो, इसका इंतजाम करके उन्होंने एक अभूतपूर्व काम किया।

डॉ. राम लखन सिंह (भिण्ड) : डॉ. राम गोपाल जी, अमरनाथ की यात्रा के दौरान रास्ते में तो कोई गांव पड़ता ही नहीं है।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है।

प्रो. राम गोपाल यादव : आप बैठ जाइए। आपने शायद टेलीविजन पर नहीं देखा कि किस प्रकार से मुस्लिम लोगों ने अमरनाथ तीर्थयात्रियों के लिए लंगर और कपड़ों का इंतजाम किया। आप जालौन के यहां रहते हो और...*(व्यवधान)* आपको वहां जाने के बाद भी, तीर्थ यात्रियों और शिव भक्तों की दिक्कतों का अहसास नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : हो गया। अब आप बोलिए।

प्रो. राम गोपाल यादव : कुछ बातें इस प्रकार की आडवाणी जी कह रहे थे। वे देश के बड़े नेता हैं। मैं उनकी यहां कोई आलोचना नहीं कर रहा हूं, लेकिन मैं कुछ तथ्यात्मक बातें रख रहा हूं।

श्री मोहम्मद सलीम साहब ने कंई बातें कहीं। एक तो देश की सम्प्रभुता की बात कही। 1 अगस्त, 2007 का जो एग्रीमेंट टैस्ट इंटरनैट पर आया था, उसमें स्पष्ट रूप से न्यूक्लीयर इनर्जी से संबंधित समझौता है। उसकी प्रस्तावना में ही यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि – 'सम्प्रभुता के लिए आपसी सम्मान, एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने, समानता, आपसी लाभ, परस्परता तथा दूसरे के परमाणु कार्यक्रमों के प्रति वाजिब सम्मान रखने के आधार पर ऐसे सहयोग का विकास करना चाहते हैं।' जिस एग्रीमेंट की प्रस्तावना में बराबरी की बात कही गई हो, एक दूसरे की सॉवरेंटी का सम्मान करने की बात कही गई हो, उसे यह कहा जाए कि इसका कोई लीगल वजन नहीं है, यह उचित नहीं है। हमारे संविधान की प्रस्तावना की इंटरप्रेटेशन करते हुए जस्टिस सहचार खन्ना ने बेसिक स्ट्रक्चर की बात कही, वह प्रीएम्बल को लेकर कही। प्रीएम्बल बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें सब सार होता है। प्रीएम्बल में जब एक-दूसरे की सम्प्रभुता के सम्मान की बात कहीं, बराबरी की बात कही, तो फिर कहां हम सैकेण्ड रेट पार्टनर हो गए।...*(व्यवधान)*

श्री रूपचंद पाल : क्या आप एक मिनट के लिए यिल्ड करेंगे? ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : वह बोलने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। श्री रूपचंद पाल, आपको अन्य सदस्य को बोलने देने होगा। वह बोलने की अनुमति नहीं दे रहे हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : इसके अलावा 6 बेसिक प्रिन्सीपल्स की बात सलीम साहब ने कही। 6 बेसिक प्रिन्सीपल की बात हम लोगों ने पढ़ी है। हम यह भी जानते हैं कि पंचशील के सिद्धांत की बात कब और किस मुल्क के बीच में हुई थी? जब पंचशील का उल्लंघन हुआ और वर्ष 1962 में चीन ने देश पर आक्रमण किया, उस समय आप लोग क्या कर रहे थे? उसका नतीजा भी आपने देखा। उसके बाद आपकी पार्टी टूट गई। आप जिनके साथ बैठ रहे हैं, उनके साथ बैठने से फिर खतरा पैदा हो सकता है। दूरदृष्टि रखिएगा और दृढ़ इच्छा शक्ति रखिएगा।...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) **:** हम उनके साथ बैठे नहीं हैं और न ही बैठेंगे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : बहुत हो गया, उनकी भी सुनिए।

प्रो. राम गोपाल यादव : सलीम साहब ने वीमन इम्पावरमेंट की बात भी कही। महिलाओं के सशक्तिकरण की जब बात की जाती है, तब हम कहते हैं कि पिछड़े वर्ग की महिलाओं को भी उनका हिस्सा मिलना चाहिए तब आप चुप क्यों हो जाते हैं? आप संविधान की व्यवस्था के अनुसार कहां आरक्षण दे रहे हैं? आपने बंगाल में आज तक ओ.बी.सी. को आरक्षण नहीं दिया है।... *(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : जितना ओ.बी.सी. का होना चाहिए, उतना बंगाल में है। जितना प्रतिशत होना चाहिए, उतना है।...*(व्यवधान)*

प्रो. राम गोपाल यादव : आप मुस्लिम महिलाओं, पिछड़ी महिलाओं को कहां आरक्षण दे रहे हैं।...*(व्यवधान)* हम आरक्षण का कोई विरोध नहीं कर रहे हैं। हम इसका इस रूप में विरोध कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)* आप ओ.बी.सी. और मुस्लिम महिलाओं को महिला नहीं समझते हैं। जिनकी आबादी 80 फीसदी है, आप उनको कुछ नहीं समझते हैं।

महोदय, एग्रीमेंट और एनर्जी के बारे में बहुत सारी बात हुई है और यह सही है कि न्यूक्लियर एनर्जी से जो उत्पादन बढ़ेगा, उसमें समय लगेगा। लेकिन क्या यह सही नहीं है कि कोयले का भण्डार केवल 30 साल का ही बचा है।...*(व्यवधान)* जिस रफ्तार से डिमाण्ड बढ़ रही है, उस रफ्तार से 30 साल के लिए है।...*(व्यवधान)* वह तब है, जब आपकी डिमाण्ड न बढ़े।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह सही नहीं है। जब बोलने वाले सदस्य बोलने की अनुमति न दें तो वरिष्ठ सदस्यों को व्यवधान नहीं डालना चाहिए। यील्ड करने से कर सकते हैं। जब आपका टाइम आएगा तो आप करैक्ट करिये।

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : और जिस तरह से ग्लोबल वार्मिंग की वजह से हमारे ग्लेशियर्स पिघल रहे हैं, आगे चलकर हाइड्रो इलैक्ट्रिक पावर में भी दिक्कत हो सकती है तो एक स्थिति हम क्यों चाहते हैं?...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : न्यू डिस्कवरी, नया है।...*(व्यवधान)*

प्रो. राम गोपाल यादव : न्यू डिस्कवरी नहीं है, नया नहीं है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रो. यादव, अध्यक्षपीठ को सम्बोधित कीजिए।

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : आचार्य जी रनिंग कमेंट्री कर रहे हैं। आप करते रहिये।

श्री रूपचंद पाल : आप उल्टा कह रहे हैं, आपको जो कुछ बताया था, उसके उल्टा चल रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रो. यादव, अध्यक्षपीठ को सम्बोधित कीजिए।

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : मैं बता रहा हूं, आप समझ रहे हैं। रूपचन्द पाल जी, आप सुनते रहिये। आपने चार साल जैसी सरकार चलाई, उसमें जो कमियां हैं तो उसके लिए आप कम दोषी नहीं हैं। आपने जैसा चाहा, वैसी सरकार चली। आप इस सीमा तक गए कि प्रधानमंत्री एक कदम ऐसा नहीं उठा सकते, क्या आप प्रधानमंत्री को बंधुआ बना देंगे। आपके एक व्यक्ति की ईगो देश से बड़ी हो गई, एक व्यक्ति के ईगो की वजह से देश में चुनाव हों, पांच हजार करोड़ रुपया केवल इलैक्शन कमीशन का खर्च हो और 50 हजार करोड़ रुपया सारे एम.पीज़. का हो, 9 महीने पहले इन एम.पीज़. को बेकार में वहां चुनाव में जाना पड़े। अगर आपकी बात न मानी जाये तो विथड्रा करते हैं, वरना सारी कमी कांग्रेस की है और अच्छाई अगर इस दौरान गवर्नमेंट ने कुछ की तो आपकी है।

लैफ्ट शब्द की जो उत्पत्ति है, उसको आपने सही सिद्ध कर दिया है। फ्रेंच रिवोल्यूशन के बाद जो डायस के लैफ्ट में बैठा, उसको लैफ्ट कहा गया, क्योंकि वह विरोध करता था। संयोग से वह विरोध में था तो लैफ्टिस्ट शब्द तब से निकला है। अब आप यहां इनके साथ आकर बैठ जायें तो सही मायने में लैफ्टिस्ट हो जाएंगे। ...*(व्यवधान)*

श्री रूपचंद पाल : आप तो राइट में बैठ गये।

प्रो. राम गोपाल यादव : मैं तो सैण्टर में हूं, मैं तो मध्यमार्गी हूं, पहले भी था और अब भी हूं।

मैं आपके माध्यम से अपने मित्रों से यह कहना चाहता हूं कि अभी क्योंकि, हमारे अपने रिसोर्सेज़ अपने देश में यूरेनियम इतना कम है कि हमारे रिएक्टर पूरी कैपेसिटी से नहीं चल सकते और जो थोरियम है, उस पर आधारित रिएक्टर के बनने में, ऑपरेट होने में अभी 15-20 साल लगेंगे और जिस दिन थोरियम बेस्ट न्यूक्लियर रिएक्टर हमारे पास होगा, फिर हमें न न्यूक्लियर सप्लाई ग्रुप से यूरेनियम किसी से लेना है, हम दूसरों को दे सकते हैं, हमें लेना नहीं है। फ्यूचर में 20 साल बाद आपकी इनर्जी की गारण्टी होगी। अभी रोज दिक्कत होती है, डीजल के दाम बढ़ गये, पैट्रोल के दाम बढ़ गये, क्योंकि इण्टरनेशनल मार्केट में बढ़ गये, यहां महंगाई हो बढ़ी। महंगाई बढ़ाने के लिए केन्द्र तो जिम्मेदार है ही, लेकिन राज्य सरकारें भी जिम्मेदार हैं। वैट लगाने से भी दो परसेंट महंगाई बढ़ी और वैट की जो कमेटी बनी, उसके अध्यक्ष कौन थे, बताइये? पश्चिम बंगाल के जिम्मेदार मंत्री उत्तर प्रदेश में 2-2 बार गये कि वैट लगाइये, वरना यह कर देंगे। चिदम्बरम साहब भी गये और पश्चिम बंगाल के वित्त मंत्री असीम दासगुप्ता भी गये। ऐसा नहीं है, जो नरेगा का पैसा राज्यों में जा रहा है, वह किसी तरह से खर्च किया जा रहा है, जो पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम है, जिसका पैसा यहां से जाता है, वह टोटली कोलैप्स्ड हो गया तो क्या राज्य सरकारें जिम्मेदार नहीं हैं? महंगाई के लिए पूरी तरह से सिंगल आउट करना ठीक नहीं है। महंगाई बढ़ी है, उसे रोकना चाहिए। इसके लिए हमने आन्दोलन किया और आगे भी करते रहेंगे, लेकिन जिस इश्यू को लेकर यह बात हो रही है, जिस इश्यू को लेकर सरकार को गिराने की बात हो रही है और यह कहा जा रहा है कि हम ऐसा नहीं होने देंगे, हम डील नहीं होने देंगे। मुझे समझ नहीं आता है। ये कतई विरोध नहीं कर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी भी जानते हैं कि आडवाणी जी विरोध नहीं कर रहे हैं। उनको सिर्फ तकलीफ यह है कि वह दस्तखत नहीं कर पा रहे हैं।...*(व्यवधान)* मैं किसी पर व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाना चाहता हूं। एक साथ दोनों लोग आ गए। प्रधानमंत्री पद के दो दावेदार हो गए। अब समस्या यह है कि आडवाणी जी यह मानेंगे या नहीं मानेंगे या जिनको ये प्रपोज कर रहे हैं, उनको आडवाणी जी मानेंगे या नहीं मानेंगे।...*(व्यवधान)* यही समस्या है।...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : हमने किसी को प्रपोज नहीं किया है।

प्रो. राम गोपाल यादव : प्रपोज किया है। आपने तो इस सीमा तक प्रपोज किया...*(व्यवधान)* आप हार्स ट्रेडिंग की बात कह रहे हैं। समाजवादी पार्टी को जैसे तोड़ सकते हैं, तोड़िए। किसने कहा? यह रिकॉर्ड किया हुआ है।...*(व्यवधान)* आप बताइए। आप राजनीति में शुचिता की बात करते हैं, पवित्रता की बात करते हैं और एक व्यक्ति का ईगो सैटिस्फाई होगा इसके लिए...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री अहमद, यह क्या हो रहा है?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है?

(व्यवधान)

अपराह्न 3.32 बजे

इस समय श्री अकबर अहमद डम्पी और कुछ अन्य माननीय सदस्य आए और सभा पटल के निकट खड़े हो गए।

अध्यक्ष महोदय : यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।

[हिन्दी]

आप लोग जाइए, सीट पर बैठिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आप से अनुरोध कर रहा हूं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हम देखेंगे।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यहां क्या हो रहा है?

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : तो मैं सभा को स्थगित कर दूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : हम देखेंगे।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बोलने नहीं देते।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : सभा अपराह्न 3.45 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

अपराह्न 3.32½ बजे

तत्पश्चात् लोकसभा अपराह्न तीन बजकर पैंतालीस मिनट तक के लिए स्थगित हुई।

अपराह्न 3.45 बजे

लोकसभा अपराह्न तीन बजकर पैंतालीस मिनट पर पुनः समवेत हुई।

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*]

मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव — *जारी*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, प्रो. राम गोपाल यादव का नाम पुकारने से पहले मैं सभा के सभी वर्गों से पुनः अपील करता हूं कि इस वाद-विवाद को उस प्रकार से चलने दें जिस प्रकार से लोग हमसे आशा करते हैं। कृपया बार-बार व्यवधान पैदा न करें। मैं सभी वर्गों को बोलने का अवसर दूंगा। यदि आप बहस करना चाहते हैं तो आपको अवसर मिलेगा। हमें उचित व्यवहार दर्शाना चाहिए। यह मैं बार-बार यहां माननीय सदस्यों से अपील करता रहा हूं। कृपया इसका पालन करें। मैं निश्चित रूप से अनुरोध करूंगा कि किसी भी सदस्य को इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिससे किसी सदस्य की भावनाओं को ठेस पहुंचे।

जिस विषय के बारे में शिकायत की गई है मैं उसकी छानबीन करूंगा। यदि मुझे कुछ उचित नहीं मिलता है तो मैं उपयुक्त कार्रवाई करूंगा।

प्रो. रामगोपाल यादव अपना भाषण जारी रख सकते हैं।

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं समझ सका कि किस बात को लेकर किसी को विरोध हो सकता है। मेरा 16 साल का पार्लियामैंट्री कैरियर है। ऐसी नौबत कभी नहीं आई जब मैंने कोई ऐसी बात कही हो जो असंसदीय हो या किसी पर डायरैक्ट लांछन लगाने वाली हो। लेकिन इसके बाद भी इस तरह की बात होती है। चर्चा चल रही थी। एक माननीय सदस्य बोलता है तो दूसरा इंटरप्ट करता है, ऐसा हो जाता है। जब किसी के मन की बात नहीं होती तो वह इंटरप्ट करता है। मैं अपने साथियों से कहना चाहूंगा कि यदि कोई सदस्य इंटरप्ट करे तो आप कुछ मत कहिए। मैं अब कोई लम्बी बात नहीं कहूंगा। मेरे मन को इस बात से जरूर ठेस पहुंची है कि जब हम बोल रहे थे तब अनावश्यक रूप से इस तरह की बातें हुईं।

अध्यक्ष महोदय : थैंक्यू।

प्रो. राम गोपाल यादव : महोदय, मैं अंत में यह कहना चाहूंगा कि इस सदन का कार्यकाल केवल नौ या दस महीने है यानी 21 मई, 2009 तक है। ऐसा समय कभी नहीं आया जब किसी सरकार को कार्यकाल के अंतिम दिनों में विश्वास मत या अविश्वास मत का सामना करना पड़ा हो। यह सरकार के प्रति विश्वास, अविश्वास वाली बात नहीं है, मुझे लगता है कि यह सदन के प्रति है, क्योंकि यदि सरकार नहीं रहती है, जिसकी कोई संभावना नहीं है, सरकार वोट ऑफ कौन्फीडैंस में जीतेगी ही, यदि सरकार नहीं रहती है तो मंत्री रहेंगे लेकिन एमपीज नहीं रहेंगे और हर चुनाव के बाद यह रेशियो बढ़ता जाता है कि जब-जब नई पार्लियामैंट का गठन होता है तो जो पुराने आउट-गोइंग एमपीज होते हैं, उनमें से पहले 50 प्रतिशत और अब 60 प्रतिशत तक हारने लगे हैं और हो सकता है कि अबकी बार 65 प्रतिशत तक सदस्य सदन का मुंह न देखें। इसलिए मैं आप सबसे अपील करता हूं कि कटुता भुलाकर, जिन पर कोई पाबंदी नहीं है, न कोई दखल रखता है, कुछ नहीं रखता है, ऐबस्टेन कीजिए। यह बात मैं खास तौर से लैफ्ट वालों से कहूंगा। अगर बी.जे.पी. के साथ बैठ जाते थे तो आपकी आंखें लाल हो जाती थीं और अब बी.जे.पी. के साथ वोट करने का मन बना रहे हैं। आप अपनी अंतरात्मा को टटोलिए, ऐबस्टेन कीजिए और इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन डायरैक्ट या इनडायरैक्ट वे में कीजिएगा।

आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : अध्यक्ष महोदय, आज इस सर्वोच्च सदन में माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा मंत्रिपरिषद् में विश्वास मत का जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, उसके समर्थन में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। अभी परमाणु करार पर कई माननीय सदस्यों ने, जिनमें विपक्ष के नेता, पक्ष के नेता माननीय प्रणब मुखर्जी, प्रो. राम गोपाल यादव और मोहम्मद सलीम जी ने अपनी बात रखी है। आज तक संसदीय इतिहास में चाहे अंतर्राष्ट्रीय करार हो या राष्ट्रीय करार हो, इतनी बार बहस होते नहीं देखी। मैं इस लोक सभा में पांच बार से संसद सदस्य हूं, मैंने ऐसा होते हुए कभी नहीं देखा।

अपराह्न 3.51 बजे

[**उपाध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*]

इसलिए संसदीय लोकतंत्र में, जनतांत्रिक प्रक्रियाओं को सरकार से जितना बन पड़ा उतना उन्होंने निर्वहन करने का काम किया है। यह इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ने का काम हुआ है। जबकि संविधान में किसी भी एक्ट के तहत इस पर रोक लगने की कोई बात नहीं है। यह करार किया जा सकता है, इस बारे में केन्द्र सरकार को अधिकार है। लेकिन केन्द्र सरकार ने अपने अधिकार रहते हुए भी संसद को विश्वास में लेने की कोशिश की। संसद में आम चर्चा चलाकर, संसद में बहस चलाकर आम सहमति बनाने का अथक प्रयास इस सरकार ने किया। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि पूरी संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस पर तीन-तीन बार चर्चा हुई। इस चर्चा के बाद भी इस राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय करार पर जो सहमति और असहमति व्यक्त की जा रही है मैं समझता हूं कि उसमें हमें कुछ चीज दिखाई दे रही है, क्योंकि इसमें देश के भीतर की ताकत तो है ही, कहीं देश के बाहर की ताकत न लगी हो। जनतंत्र में हम किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहते, लेकिन हमें लगता है कि कहीं अंतर्राष्ट्रीय ताकत भी इस खेल में लगी न हो कि भारत को यदि परमाणु ऊर्जा प्राप्त हो जायेगी, भारत यदि परमाणु सम्पन्न राष्ट्र हो जायेगा, तो उससे उनको कहीं भविष्य में चिंता न हो जाये। ऐसा हमें लगता है, क्योंकि हम देख रहे थे कि एक बड़े नेता हैं, जो बड़े उछलते हैं कि परमाणु करार राष्ट्र हित के खिलाफ है। मैं इसकी डिटेल में नहीं जाना चाहता, क्योंकि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष कल बोलेंगे। लेकिन यदि मैं इन पर चर्चा करूं तो आश्चर्य होगा। इनको यह भी याद रखना चाहिए कि करार पर किसी प्रकार का बदलाव लाने के लिए श्री बराक ओबामा जी इच्छुक नहीं हैं। अमेरिका में जार्ज डब्ल्यू बुश की जगह पर आने वाले जो राष्ट्रपति हैं, वे भी कहते हैं कि कोई

परिवर्तन नहीं होगा। इसलिए उनको समझना चाहिए कि देश बहुत बड़ा है। अब संसद तो है ही। हम चुने हुए संसद सदस्य हैं, इस समय 541 संसद सदस्य हैं जबकि 545 की संख्या है। लेकिन इस देश के बाहर भी आम जनता है, जो सबसे बड़ी संसद है, जो लोक संसद है। इसका भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि बिजली से...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय, बिजली से रोटी का सवाल भी जुड़ा हुआ है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि ऊर्जा से रोटी का सवाल जुड़ा हुआ है। परमाणु करार राष्ट्र हित के खिलाफ है, इस तरह का बयान आता है। जो भाषण हुए हैं, खासकर हमारे मित्र सलीम साहब का, उनके साथ हमारा बहुत अच्छा रिश्ता है। उन्होंने शब्द का इस्तेमाल न करके बड़ी सावधानी पूर्वक अपनी बात रखी है। क्योंकि वे संसद में अपनी बात रखने में काफी सक्षम हैं, कलात्मक और अच्छे वक्ता हैं। लेकिन इसका भाव यही था कि यह जो करार है, वह राष्ट्र विरोधी है। क्या कोई राष्ट्रीय अध्यक्ष, कोई देश का राष्ट्र...*(व्यवधान)* मैं आप पर प्रहार नहीं कर रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि करार राष्ट्र विरोधी है। आपके कहने का तर्क इतना था कि महंगाई का सवाल था, रोजगार का सवाल था, असंगठित मजदूर के हित समेत कई सवाल थे। आपने फिर ग्रोथ रेट का सवाल उठाया। आप जो कह रहे हैं, उसकी पूरी भूमिका में यही था कि यह जो करार हो रहा है, वह राष्ट्र विरोधी करार है। मैं आपसे निवेदनपूर्वक कहना चाहता हूं, क्योंकि उपाध्यक्ष महोदय, किसी राष्ट्राध्यक्ष पर आज तक किसी भी संसद में, मेरा जितना अनुभव है, मैं कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री की नीयत पर शंका करना कहीं से भी मुनासिब नहीं है।

हमारे विचारों में अंतर हो सकता है, मतभेद हो सकता है, दृष्टिकोण में अंतर हो सकता है, करार करने के तौर-तरीकों में अंतर हो सकता है, यह डिबेटेबल प्वाइंट है, इस पर राष्ट्रीय बहस हो सकती है, लेकिन किसी भी देश के प्रधानमंत्री की नीयत पर संदेह नहीं की जा सकती है। चाहे हाइड्रोइलेक्ट्रिक का सवाल हो, पवन ऊर्जा की बात हो, यूरेनियम की बात हो, उस पर बहस हो सकती है, लेकिन प्रधानमंत्री देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में देश का सबसे बड़ा नेता होता है, उसकी नीयत पर शंका करना मुनासिब नहीं है, ईमानदारी नहीं है। हमारी सोच में अंतर हो सकता है, बुद्धि में अंतर हो सकता है, सोच और विचार अलग-अलग हो सकते हैं, लोकतंत्र में विचारों का आदान-प्रदान हो सकता है, लेकिन नीयत पर शंका करना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। यह स्थिति आज देश के सामने आई है। न्युक्लियर डील पर चर्चा करते हुए माननीय सदस्य ने डीलर और लीडर की बात कही है। डीलर का अनुभव हम लोगों को कम ही है, हम लोगों को लीडर का अनुभव है, हम लोग पोलिटिकल आदमी हैं। डीलर तो वह होता है कि उससे जनता पांच किलो चीनी मांगती है तो पांच किलो चीनी दे देता है, दो किलो गेहूं मांगा तो दो किलो गेहूं दे दिया। लेकिन लीडर ब्लैक और दूसरी बात नहीं करता है, वह जिस बात में राष्ट्रीय होता है, उसमें आवाम और दूसरी चीजों की चिंता न करते हुए केवल राष्ट्र हित की चिंता करता है, वह डील की चिंता नहीं करता है। यह करार है, एग्रीमेंट है, कोई डील नहीं है। यह दो लोकतांत्रिक राष्ट्रों के बीच करार है, एग्रीमेंट है। इसीलिए शंका करना कहीं से उचित नहीं है। आज टेक्नोलॉजी का आधुनिकीकरण एवं एडवांसमेंट करना समय की मांग है। आज पूरी दुनिया में कोई भी देश, जो हमारे जैसे उन्नतशील विकासशील देश हैं, विकसित देश बनना चाहते हैं, उनके लिए यह समय की मांग है कि अपनी टेक्नोलॉजी का आधुनिकीकरण, रिफाइनमेंट और एडवांसमेंट करें। आज पूरी दुनिया में आठ देश न्युक्लियर वेपन्स के मामले में पावर वाले देश माने जाते हैं, उनमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान भी हैं, लेकिन उसमें रहते हुए भी कुछ देश हमें इस रूप में रिकग्नाइज नहीं कर रहे हैं। पूरे विश्व में हमें यह रिकग्निशन नहीं मिला है कि हम न्युक्लियर बेपन्स वाले देश हैं। हमारे पास आत्मरक्षा के लिए न्युक्लियर वेपन्स हैं, हम एटम बम बना सकते हैं, लेकिन आज की जरूरत बिजली घर बनाने की है, पावर हाउस बनाने की है। हमें एटॉमिक पावर स्टेशन चाहिए जहां बिजली का उत्पादन हो सके। आने वाले तीस-चालीस सालों में हमारे देश में चार लाख 20 हजार मेगावाट बिजली की जरूरत होगी। मैं इसकी डिटेल में नहीं जाना चाहता हूं लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि आने वाले समय में हमारे देश की जो बिजली की आवश्यकता होगी, उसको पूरा करने के लिए यह करार जरूरी है। आज वर्ष 1945 की स्थिति नहीं है, उस समय जो सिनैरियो था, जब जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर बमबारी हुई थी, वह सिनैरियो अब चेंज हो गया है और पूरे विश्व का ध्यान अब अधिक से अधिक बिजली उत्पादन पर है। आज परिस्थितियां बदली हुई हैं, इसीलिए आज चाहे न्युक्लियर कोआपरेशन की बात हो या एनर्जी सिक्योरिटी की बात हो, यह परमाणु करार जरूरी है। हमारे कुछ साथियों ने हाइड एक्ट की चर्चा की है।

अपराह्न 4.00 बजे

वह हाइड एक्ट अमेरिका के लिए है और वह कोई छिपा हुआ एक्ट नहीं है, फिर आप क्यों चिंता करते हैं। यह एक्ट तो अमेरिका पर लागू होगा। आपको भी पूरा अधिकार है कि आप अपने देश के लिए हाइड एक्ट बनाएं। इसके लिए हम सब स्वतंत्र हैं, हम वह बना सकते हैं। हमें परमाणु के मामले में अपने घरेलू कानून बनाने का अधिकार है। इस सर्वोच्च संस्था संसद को अधिकार है कि वह अपने लिए ऐसा एक्ट बनाए। इसलिए इसमें परेशानी की बात कोई नहीं है। यह हाइड एक्ट अमेरिका के लिए है, हमारे लिए नहीं है। इस बारे में कई बार माननीय प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री जी ने

[श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव]

सफाई दी है। इस सदन में भी तीन बार इस विषय पर चर्चा हुई है और उन्होंने अपनी बात यहां भी रखी थी। राम गोपाल जी ने ठीक कहा था कि अब तीसरा पोखरण नहीं होगा। लेकिन हमें जो भी परमाणु परीक्षण करना होगा, उसे करने का हमें अधिकार है, यह हमारी सम्प्रभुत्ता है। हमारी स्वतंत्र विदेश नीति है, उस पर कोई आंच नहीं आ सकती। यह हमारी धरोहर है। इसलिए 123 करार पर जो शंकाएं उठाई जा रही हैं, वे सही नहीं हैं।

बदलते हुए समय में विश्व का जो विज्ञान जगत है, उसमें हम ऑब्जर्वर नहीं, पार्टनर बनना चाहते हैं। भारत केवल ऑब्जर्वर नहीं होगा, पार्टनर होगा और हम किसी भी न्यूक्लियर करार में पार्टनर होंगे, यह हमारी सबसे बड़ी एचीवमेंट होगी।

मैं ज्यादा नहीं कहकर एक-दो बातें और कहना चाहूंगा। इस करार पर राजनीति की भी काफी चर्चा हुई है। जो लोग इस करार के खिलाफ वोट देने का मन बना रहे हैं, क्या वे एक हैं, यह मैं उनसे पूछना चाहता हूं? आप लोग दिल से कहें, क्योंकि जब से केन्द्र में मायावती बहन की हलचल शुरू हुई है, आडवाणी जी सदमे में हैं कि यह क्या हो रहा है। अगर यह सरकार नहीं रहेगी तो फिर मायावती जी प्रधान मंत्री बन जाएंगी, यह सोच कर आडवाणी जी सदमे में हैं। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि ये लोग एक नहीं हैं। बी.जे.पी. के मीडिया के जो लोग हैं, वे लड़ाई कराने में लगे हुए हैं। इनका जो मीडिया प्रभाग है, वह आर.जे.डी. में फूट देखने लगा है। मैं कहना चाहता हूं कि हमारी पार्टी एक है, चट्टान की तरह मजबूत है। इनके मीडिया वालों ने पटना में और फिर दिल्ली में खबर फैला दी कि हमारी पार्टी में इस मामले को लेकर असंतोष है, जो कि सही नहीं है।

ये लोग हॉर्स ट्रेडिंग की बात कर रहे हैं। उसकी पैदाइश कब शुरू हुई थी, आया राम, गया राम कब शुरू हुआ था, यह एक दिन की बात नहीं है, बहुत पुरानी बात है। आप जो राष्ट्रीय करार पर बोल रहे हैं...*(व्यवधान)* माफ करना, आपका भगवा रंग है और इनका लाल रंग है। लाल रंग और भगवा का कभी संगम नहीं हुआ है और न कभी हो सकता है, यह बिल्कुल अननैचुरल मेल है। यह मेल केवल 22 तारीख तक के लिए है और तब तक के लिए ही इनमें गठबंधन हुआ है।

श्री बसुदेव आचार्य : यह कभी नहीं हो सकता।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : आचार्य जी भी कह रहे हैं कि इनका मेल कभी नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप भगवा वाली गाड़ी को लाल झंडा दिखाकर उतर जाएं और इनका साथ न दें।

विपक्ष के नेता सम्प्रदायिकता की चर्चा कर रहे थे। उन्होंने तीर्थ स्थलों की चर्चा की। वह अमरनाथ और अयोध्या की चर्चा कर रहे थे।

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद) : आतंकवाद की भी चर्चा कर रहे थे।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या कट्टरपंथी होना और देश के धर्म निरपेक्ष स्वरूप को नुकसान पहुंचाना आतंकवाद नहीं है? हम एक धर्म निरपेक्ष राज्य में रहते हैं और यहां पर हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सब स्वतंत्र रूप से और एकता से रह सकते हैं। इस एकता को तोड़ने का काम जो होता है क्या वह आतंकवादी गतिविधि नहीं है?...*(व्यवधान)* मैं यह मानता हूं कि कट्टरपंथी विचाराधारा भी आतंकवाद का पर्याय है।...*(व्यवधान)* बाबरी-मस्जिद को किसने गिराया था? ये लोग उस समय क्षमा मांग रहे थे लेकिन फिर उसी रास्ते पर जा रहे हैं। आप लोगों ने तीर्थ-यात्रा की चर्चा की है इसलिए मैं भी तीर्थ-यात्रा की चर्चा करना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी पार्टी का टाइम 32 मिनट है, आपके और लोग भी बोलने वाले हैं, इसलिए आप खुद ही देख लें।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं अपनी बात एक-दो मिनट में समाप्त कर रहा हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं अनुशासन को मानने वाला सदस्य हूं। ये लोग कैसे तीर्थयात्री हैं, इसे जरा समझिये। देश और विदेश के लोग हर साल गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करते हैं। कामा और दीग तहसील राजस्थान के अंदर पड़ती है। राजस्थान की चीफ मिनिस्टर कौन हैं मैं उनका नाम लेना नहीं चाहता हूं।...*(व्यवधान)* वहां पर अवैध खनन हो रहा है...*(व्यवधान)* हमने 57 सांसदों से हस्ताक्षर करवाये थे।...*(व्यवधान)* हम सारे लोग माननीय प्रधान मंत्री जी से मिले थे और उनसे कहा था कि देश की धरोहर को बचाइये। ये लोग राम और कृष्ण में भेद कर रहे हैं।...*(व्यवधान)* वहां खनन माफिया से पैसा लेकर खनन करवा रहे हैं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अगर आप मुझे बोलने नहीं देंगे तो मैं भी आपको बोलने नहीं दूंगा।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : ये लोग सेतु-समुद्रम को तोड़ने की चिंता करते हैं लेकिन डायनामाइट लगवाकर कृष्ण-स्थली को तोड़ रहे हैं। राधा मंदिर है, वहां गोवर्धन पर्वत है, गोवर्धन पर्वत को तोड़ रहे हैं।...*(व्यवधान)* वहां जो किसानों की सरसों की खेती है वह बर्बाद हो रही है।...*(व्यवधान)* वहां डायनामाइट लगाकर उस जगह को बर्बाद किया जा रहा है।...*(व्यवधान)* ये सेतु-समुद्रम की बात करते हैं।...*(व्यवधान)* राम और कृष्ण की चिंता नहीं करते हैं, राम और कृष्ण में भेद नहीं चलेगा। वहां करोड़ों लोगों की आस्था है। राधा-कृष्ण की भूमि को डायनामाइट लगाकर तोड़ रहे हैं।... *(व्यवधान)*

श्रीमती किरण माहेश्वरी (उदयपुर) : ये गलत आरोप लगा रहे हैं। अगर वहां की जानकारी चाहिये तो मुझे बोलिये, मैं वहां से आती हूं। राजस्थान के संदर्भ में इनके द्वारा लगाया गया आरोप गलत है। ...*(व्यवधान)*

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : राधा-कृष्ण की जन्मभूमि को डायनामाइट लगाकर तोड़ा जा रहा है।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, बी.जे.पी. की चाल, चरित्र और चेहरा सभी कुछ दोहरा है।...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, गोवर्धन पर्वत को डाइनामाइट लगा कर तोड़ रहे हैं और ये लोग यहां धर्म की बात कह रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने कहा कि, कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : बी.जे.पी. की सरकार डाइनामाइट लगा कर गोवर्धन पर्वत को तोड़ रही है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मेरी अनुमति के बिना कोई भी भाषण कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया नई सदस्य हैं। ये क्या बोल रही हैं? अभी इन्हें सदन की कार्यवाही को समझने में समय लगेगा।...*(व्यवधान)* वहां राधे कृष्ण के मंदिर को डाइनामाइट लगा कर तोड़ रहे हैं। राजस्थान में इनकी सरकार है और ये धर्म की बात कह रहे हैं।...*(व्यवधान)* इनकी चाल, चरित्र और चेहरा सब दिखाई दे रहा है। इनका धर्म से कोई मतलब नहीं है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने कहा कि कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मैं कार्यवाही वृत्तान्त को देखूंगा। जो भी आपत्तिजनक तथा असंसदीय होगा, मैं उसे निकाल दूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, कुछ भी अनपार्लियामेंटरी नहीं है। मैं पार्लियामेंटरी सिस्टम जानता हूं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मैं पहले ही कह चुका हूं कि यदि कुछ आपत्तिजनक है, तो मैं उसे निकाल दूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कोई अनपार्लियामेंटरी शब्द यूज़ नहीं किया है।

श्री लालू प्रसाद : हमारे दल के नेता जब बोलने के लिए खड़े होते हैं और जब सच्चाई को सबके सामने रखते हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री लालू प्रसाद : आप हमारी बात सुनिए। हम लोग महाभारत करने के लिए तैयार हैं। यहीं महाभारत शुरू हो जाएगा।...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

महोदय, आप इन्हें बैठाइए।...*(व्यवधान)* मैं क्यों नहीं बोलूंगा। मैं एम.पी. से मिनिस्टर बना हूं और आप मुझे बोलने नहीं देंगे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नही किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री राम कृपाल यादव, कृपया अपने स्थान पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अपने-अपने स्थानों पर जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है। कृपया अपने स्थान पर जाइए।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जा रहा है। कृपया बैठ जाइए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : मंत्री जी इंटरवीन कर सकते हैं।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : पहले माननीय सदस्यों को बैठने दिया जाए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : रिकॉर्ड में कुछ नहीं जा रहा है। आप बैठ जाएं।

*(व्यवधान)**

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : रिकॉर्ड में कुछ नहीं जा रहा है।

*(व्यवधान)**

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री डी.पी. यादव, अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं कनक्लूड कर रहा हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कोई अनपार्लियामेंट्री शब्द इस्तेमाल नहीं किया है।... *(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : अगर कोई अनपार्लियामेंट्री या ऑब्जैक्शनेबल बात होगी तो एक्सपंज कर दी जाएगी।

(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं चुनौती देकर कहना चाहता हूं कि क्या राजस्थान प्रदेश में गोवर्धन पर्वत के आसपास डीग और कॉमा तहसील में 184 इल्लीगल माइनिंग सरकार के संरक्षण में नहीं चल रहा है? ये सवाल है।...*(व्यवधान)*

श्रीमती किरण माहेश्वरी (उदयपुर) : इनको इसकी जानकारी नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अगर गलत होगा तो हम फेस करने के लिए तैयार हैं। हम तथ्यों के आधार पर जानकारी दे रहे हैं। ...*(व्यवधान)* 184 जगह पर डाइनामाइट लगाकर खनन हो रहा है। ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : जब आपका नंबर आएगा तब बोलिएगा।

(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : एक बार बाबरी मस्जिद गिराई और दूसरी बात क्रिस्चियन...*(व्यवधान)*

श्रीमती किरण माहेश्वरी : हमें भी बोलने की छूट है।... *(व्यवधान)* ये राजस्थान के बारे में डिसकस करने आए हैं या हिन्दुस्तान के बारे में?...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : आपको भी समय देंगे। जब आपकी पार्टी का समय आएगा आप तब बोलना।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अब अपना भाषण समाप्त कीजिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : आप तीर्थस्थल के बारे में बोल सकते हैं तो क्या हम नहीं बोल सकते? महोदय, क्या गोवर्धन तीर्थस्थल नहीं है?...*(व्यवधान)* अगर आप अमरनाथ के बारे में बोलेंगे तो हम भी गोवर्धन के बारे में बोलेंगे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : जब आपके बोलने का समय आएगा तब आप भी बोल लेना।

(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : 184 अवैध खनन राजस्थान सरकार की देखरेख में हो रहे हैं, यह मेरा आरोप है।...*(व्यवधान)* 184 जगह अवैध खनन हो रहा है, डाइनामाइट हजारों एकड़ में लगा हुआ है। ...*(व्यवधान)* पिछले साल उस गांव में हजारों एकड़ में सरसों के पौधे लगे थे। मैं उस गांव में गया था, बोलखेड़ा गांव में गया था, मैंने वहां मीटिंग की थी। मैं कागज या अखबार से पढ़कर नहीं बोल रहा हूं, मैंने खुद दौरा किया है, राजस्थान के कॉमा तहसील में बोलखेड़ा गांव की बात है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अब समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

आपकी पार्टी का समय खत्म हो रहा है।

(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूं।

मैं अंत में कहना चाहता हूं कि एक बयान आपकी पार्टी की तरफ से आया था कि जो दागी या चार्जशीटिड मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं, उनको मत देने का अधिकार नहीं होगा। क्या चार्जशीटिड विपक्ष के नेता आडवाणी जी नहीं हैं? क्या उनको वोट देने का अधिकार है? उन पर बाबरी मस्जिद गिराने की चार्जशीट है, यह कैसे हो सकता है? यदि इन लोगों को अधिकार नहीं है तो उन लोगों को भी अधिकार नहीं है।...*(व्यवधान)* माननीय कल्याण सिंह जी भी यहां बैठे हुए हैं, उन पर भी एक दिन की सजा है, ये सभी एक दिन के सजायाफ्ता हैं।...*(व्यवधान)* आडवाणी जी बाबरी मस्जिद गिराने में चार्जशीटिड हैं। माननीय कल्याण सिंह चार्जशीटिड हैं और सजायाफ्ता हैं और किसी सजायाफ्ता को वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। सबके लिए एक मापदंड तैयार होना चाहिए। मापदंड हो तो एक हो, पूरी संसद में एक पैरामीटर और एक मापदंड तैयार किया जाए। ...*(व्यवधान)* बाबरी मस्जिद के चार्जशीटिड को, मस्जिद गिराने वालों को और माननीय कल्याण सिंह को वोट देने का अधिकार नहीं है। ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कंक्लूड कर रहा हूं। मैं समझता हूं कि सच्चाई को ये लोग बर्दाश्त नहीं करेंगे, क्योंकि चाल, चरित्र और चेहरा, ये सब है इनका दोहरा, इसीलिए ये सच्चाई को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

इसलिए अंत में कंक्लूड करते हुए माननीय प्रधान मंत्री जी जो विश्वास का प्रस्ताव सदन में लाये हैं, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं और मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री ब्रजेश पाठक (उन्नाव) : उपाध्यक्ष महोदय, भारत-अमरीका परमाणु डील जैसे गंभीर मुद्दे पर सरकार विश्वास मत का प्रस्ताव लाई है। उसे यह जानना है कि पिछले चार साल और दो माह से जो सरकार चल रही थी, उसकी वास्तव में देश की जनता में परिस्थिति क्या है और देश के लोग चाहते हैं कि सरकार चले, डील हो या न हो। लेकिन मैं बड़े दुख के साथ कहना चाहता हूं कि यह लोगों का देश है और लोगों का सदन है। लेकिन यहां संसदीय परम्पराएं चीर-चीर हो रही हैं। द्रौपदी की तरह उनका चीरहरण किया जा रहा है और हम सब लोग मूकदर्शक बनकर देख रहे हैं। हमारे अध्यक्ष महोदय लगातार टी.वी. पर चिल्लाते रहे, चीखते रहे कि पूरी दुनिया देख रही है कि हिन्दुस्तान के लोगों का सदन कैसा है। यह बड़े दुख का विषय है। यहां सारे सीनियर मैम्बर्स बैठे हैं, माननीय प्रधान मंत्री जी बैठे हैं, नेता विपक्ष भी हैं, सारे देश के लोग देख रहे हैं और दुनिया के लोग भी इस सदन को देख रहे हैं, लेकिन सदन में

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

क्या हो रहा है। मैनहैंडलिंग होती है, मुद्दों से हटकर बात होती है। परमाणु डील के बारे में यहां पर विचार होगा, परमाणु मुद्दे पर बहस होगी, लेकिन परमाणु डील क्या है, कोई बता नहीं रहा है। सरकार ने परमाणु डील के बारे में कुछ पक्ष नही रखा। हमारे पूर्व वक्ता सलीम साहब बता रहे थे, परमाणु डील के बारे में उन्होंने कुछ बताया कि डील क्या है। डील के प्वाइंट्स क्या हैं, डील का मतलब क्या है। भारत के लोग इस डील से फायदा पायेंगे या नुकसान पायेंगे। क्या गरीब आदमी की कुटिया में बत्ती जलेगी कि नहीं जलेगी, यह कोई बताने वाला नहीं है। यह कहा जा रहा है...*(व्यवधान)* मैं एक-एक बात पर आ रहा हूं। आप सुनने का माद्दा पैदा करिये। आप सुनने की ताकत पैदा करिये, उसके बाद देश पर राज करने की बात करिये। ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय, परमाणु डील के बारे में कहा जा रहा है कि डील डीलर चला रहे हैं। अभी सलीम साहब कह रहे थे कि डील डीलर चला रहे हैं। श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी कह रहे थे कि डीलर विक्रेता होता है। अखबारों, टी.वी. में हमने भी सुना है और पढ़ा है कि कोई डीलर इस देश को चलाने के लिए कदम आगे बढ़ा रहा है। लेकिन देश के लोग डीलर को बर्दाश्त करने वाले नहीं हैं, यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : पाठक जी, क्या आप मेरी बात सुनेंगे, आप जितना धीरे से बोलेंगे, उतना ये लोग अच्छी तरह से सुनेंगे।

श्री ब्रजेश पाठक : अमरीका में कुल 104 परमाणु रिएक्टर इस समय काम कर रहे हैं। जो देश हमें परमाणु इनर्जी देना चाहता है, जिससे हम डील कर रहे हैं, वहां कुल 104 परमाणु रिएक्टर काम कर रहे हैं, जबकि वहां एक हजार प्रस्तावित थे। लेकिन उन्होंने अपना काम रोक दिया। 1970 के दशक में वहां एक दुर्घटना घटी और अमरीका ने परमाणु रिएक्टरों पर काम रोक दिया और कहा कि इस पर विचार करना पड़ेगा, इससे लोगों का नुकसान है, जीवन का भय है, यह मानवता और पर्यावरण के खिलाफ है। आप सब जानते हैं, पूरी दुनिया के लोग जानते हैं और भारत के लोग भी जानते हैं कि 1979 में एक ऐसी दुर्घटना घटी, जिसमें सैकड़ों लोग अमरीका में मारे गये। तब अमरीका ने सोचना शुरू किया कि हमें परमाणु इनर्जी मानवता की कीमत पर, पर्यावरण की कीमत पर, लोगों की जिंदगी की कीमत पर नहीं चाहिए, नहीं चाहिए। तब अमरीका में आखिरी परमाणु रिएक्टर 1979 में प्रस्तावित किया गया था, जो 23 साल बाद बनकर तैयार हुआ। आज हिन्दुस्तान के लोगों को बताया जा रहा है कि यह डील देश हित में है। जबकि हमें लगता है कि डील भी काला है और दाल में भी कुछ काला है।

उपाध्यक्ष महोदय, इस डील को देश हित में बताया जा रहा है। ...*(व्यवधान)* मैं पूरी दुनिया के लोगों से पूछना चाहूंगा, एक तरफ दुनिया के लोग, दुनिया के सारे राष्ट्र परमाणु बिजली के बारे में, परमाणु रिएक्टरों के बारे में चिंतित हैं कि इसका कचरा कहां जाएगा? उससे जो कबाड़ निकलेगा, वह कहां जाएगा? कबाड़ अमेरिका में... *(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आप अपना सुर नीचे रखिए तो ठीक रहेगा।

श्री ब्रजेश पाठक : उपाध्यक्ष जी, परमाणु का कबाड़ अमेरिका ने 40 प्रदेशों में छिपाकर रखा हुआ है। टनल बनाकर रखा हुआ है, मैं आपको सच्चाई बता रहा हूं। यह बिल्कुल सच है कि परमाणु का जो कचरा है, वह चालीस प्रदेशों में रखा है और अमेरिका सोच रहा है कि...*(व्यवधान)* सुनने की क्षमता रखिए। देश के लोगों को सुनने दो कि वास्तव में यह परमाणु करार क्या है।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री ब्रजेश पाठक के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : उपाध्यक्ष जी, ऐसे लोगों के नाम पर मैं एक शेर कहता हूं, फिर मैं अपनी बात शुरू करूंगा।

मगरूर जितने दरख्त थे, हैरत में पड़ गये,
ऐसी चली हवा कि वे जड़ से उखड़ गये।

अमेरिका के बारे में बार-बार कहा जा रहा है कि वह भारत से दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहता है, वह भारत को कुछ देना चाहता है। वह भारत को एक ऐसी सौगात देना चाहता है जिससे भारत के लोग बिजली जला पाएंगे और गांवों के लोग बिजली पाएंगे तो रोशनी दिन जैसी पाएंगे, इसलिए गांवों के लोग चुपचाप पीछे होंगे और लोग समझेंगे कि यह सच्चाई है। लेकिन मैं आपको बताऊंगा कि सच्चाई क्या है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : मानवेन्द्र सिंह जी, क्या आपसे किसी ने पूछा?

श्री ब्रजेश पाठक : अभी देवेन्द्र यादव जी कह रहे थे और आडवाणी जी ने भी बहस में बताया तथा सलीम साहब ने भी बताया

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री ब्रजेश पाठक]

कि हमारे भारत में आतंकवादी घटनाएं हो रही हैं। यह एक सच्चाई है और एक सच्चाई यह भी है कि भारत के लोग चाहे इस पक्ष के हों, चाहे या उस पक्ष के हों, चाहे ये लोग हों जो इधर बैठे हैं, सदन में सब जानते हैं कि भारत में आतंक कहां से पनपता है, इसकी चिंगारी कहां से आ रही है, कौन माचिस दिखा रहा है, यह दुनिया को भी पता है। हर उस शख्स को पता है कि किसने ताकत दी है, यह दुनिया को पता है। ऐसा देश जो लगातार हिन्दुस्तान को अस्थिर करने की साजिशें रचता रहा है, वह एक ऐसा देश जो हिन्दुस्तान को लगातार आगे बढ़ने से रोकता रहे, एक ऐसा देश जो हिन्दुस्तान पर यह चाहता है कि छोटे-मोटे देशों की तरह हिन्दुस्तान को भी अपनी बढ़ती हुई औपनिवेशिक नीति पर हिन्दुस्तान पर भी अपना कब्जा जमाना चाहिए। यह डील गुलामी की तरफ भारत का बढ़ता हुआ एक कदम है, ऐसा मैं कह सकता हूं। इस डील से देश के लोगों को रत्ती भर भी फायदा होने वाला नहीं है। ऐसा क्यों है, यह भी मैं अभी बताता हूं क्योंकि आज यह डील यदि माननीय प्रधान मंत्री जी ने साइन की तो बटन दबाकर बिजली बीस साल बाद जलेगी और वह भी तब जब लगातार काम चलेगा और बीस साल में कितना पानी नदी में बह चुका होगा, यह किसी को पता नहीं है कि कौन इधर आएगा, कौन उधर आएगा यह किसी को पता नहीं है। एक ऐसी डील के बारे में, एक ऐसे परमाणु करार के बारे में हिन्दुस्तान के लोगों को बगैर विश्वास में लिये, बगैर भरोसें में लिये आपके सत्ता पक्ष के मैम्बर्स का बयान आ रहा था, मैं टेलीविजन पर देख रहा था, भारत के लोग देख रहे थे।

कुछ सदस्य कह रहे थे कि दो लाख टन बिजली पैदा होगी। मैं उन सदस्यों का नाम नहीं लेना चाहता। टी.वी. चैनल के एक रिपोर्टर एक सदस्य से कह रहे थे कि जी-8 क्या है, तो वह बोले कि सदन में बताऊंगा। जब सदस्य ने रिपोर्टर से पूछा तो बताया कि उसे नहीं मालूम। इस पर सदस्य ने कहा कि मेरे मुंह पर माईक लगाकर क्यों पूछ रहे हो? जब देश के सांसद इस न्युक्लीयर डील के बारे में जागरूक नहीं है, परमाणु करार क्या है, फिर जल्दी किस बात की है? हमारे पीछे कौन बटन दबा रहा है कि आओ भारत के लोगों और हमारी मुट्ठी में बंध जाओ। मैं सदन में दावा करना चाहता हूं कि भारत कभी गुलाम होने वाला नहीं है, कभी पिछलग्गू नहीं बनेगा। आज भारत दुनिया को लीड करने के लिये तैयार हो रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, यू.पी.ए. और विशेषकर कांग्रेस पार्टी के लोग लगातार टी.वी. और अखबारों में बयान दे रहे हैं कि हमें कृतार्थ किया जा रहा है कि रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे। मैं पूछना चाहता हूं कि ऐसे कौन से रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे, बताये? सन् 1984 में मध्य प्रदेश में भोपाल गैस कांड हुआ। यह एक साधारण केस था जहां हजारों लोग मारे गये। आज भी वहां लूले-लंगड़े लोग पैदा हो रहे हैं। अगर कहीं परमाणु संयंत्र से विकीर्ण का खतरा हुआ, दुर्घटना घटी, अमरीका तो अपनी जान बचा जायेगा, मेरे देश का क्या होगा? इस पर न विचार यू.पी.ए. सरकार ने किया, न उसके अलाइड पार्टनर्स ने किया।

उपाध्यक्ष जी, आप जानते हैं कि परमाणु करार में यह साफ-साफ लिखा हुआ है कि अगर भारत ने परमाणु करार की तरफ अपना कदम बढ़ाया तो उसका रिमोट कंट्रोल अमरीका के हाथ में होगा। जब तक अमरीका नहीं चाहेगा, आपकी बत्ती नहीं जलेगी। वह आपकी बत्ती गुल कर देगा। इसलिये आज जरूरत है कि हिन्दुस्तान के लोगों, एक ऐसी सरकार के खिलाफ, एक ऐसे प्रस्ताव के खिलाफ, एक ऐसी डील के खिलाफ, जिसे डीलर आगे बढ़ा रहे है, आप इकट्ठे हो जाओ। मैं ऐसे डीलर का नाम नहीं लेना चाहता जो इस डील को आगे बढ़ा रहा है। हमारे देश के साथ कभी सच्चाई से पेश नहीं आ सकता है क्योंकि वह विक्रेता है, वह लाभ-हानि का मौका तलाशा करता है।

उपाध्यक्ष महोदय, कोई यह कह रहा है कि रेलगाड़ी चली जा रही है, उसमें लैफ्ट और राईट के लोग बैठे हुये हैं। मेरा कहना है कि यह भावनाओं से खेलने का मामला नहीं है। यह मामला देश की सम्प्रभुत्ता का है, देश की एकता-अखंडता को बरकरार रखने का मामला है। इस दिशा में चाहे लैफ्ट के लोग हों, या राइट पक्ष के लोग हों, या सामने बैठे लोग हों, आप अपने कलेजे पर हाथ रखिये, अपनी अंतरआत्मा से पूछिये कि अगर भारत के हितों पर आंच आयेगी तो आपके मुंह से इन्कलाब के नारे निकलेंगे? लेकिन मुझे हिन्दुस्तान के लोगों पर पूरा भरोसा है कि उनके द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि जब तक एक-एक बिन्दु को पढ़ नहीं लेंगे, वे तक तक न यू.पी.ए. के लीडर्स पर भरोसा करेंगे और न ही जॉर्ज बुश पर भरोसा करेंगे। जॉर्ज बुश के बारे में दुनिया जानती है कि उसने सद्दाम हुसैन के साथ क्या किया? सद्दाम हुसैन की क्या गलती थी, यह पूरी दुनिया के लोग जानते हैं। वह तो सम्प्रभुत्व राष्ट्राध्यक्ष थे। अमरीका नहीं चाहता था कि कोई तेल अपनी मर्जी से बेचे। इसलिये उसने उनके तेल के कुओं पर कब्जा कर लिया और उसे अपना उपनिवेश बना लिया। इसलिये हम लोगों को होशियार रहने की जरूरत है। हम अमरीका के चुंगल में फंसने वाले नहीं हैं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आपसे कोई मशविरा नहीं मांगा है।

श्री ब्रजेश पाठक : उपाध्यक्ष महोदय, यह एक बहुत ही इम्पार्टेंट मसला है। देश के लोगों को भरोसे में नहीं लिया जा रहा है... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मेरी अनुमति के बिना श्री ब्रजेश पाठक के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : उपाध्यक्ष जी, देश की जनता को भरोसे में लेने की जरूरत है। जब परमाणु करार का मसला आया, अच्छा होता अगर कोई ट्रेन चलानी है। अगर किसी देश एवं प्रदेश के लिए अलग से व्यवस्था करनी है, बुंदेलखंड को अलग से पैकेज देना है तो आप उसमें अपना निर्णय ले लीजिए। उत्तर प्रदेश के हितों पर कुठाराघात कर लीजिए, लेकिन अगर देश के बारे में कोई समझौता करना है, देश की सम्प्रभुता के बारे में सोचना है तो सारे राजनैतिक दलों में से कुछ लोगों को बुला लेते और कहते कि हम अमेरिका के यहां जा रहे हैं, गलत जाएं या सही जाएं, सच्चाई को सुन लो और आप भी हमारे साथ चलो। अगर हम लोग अपने परिवार में कोई बात करते हैं, कई बार ऐवसे अवसर आते हैं कि दूसरे परिवार या दूसरे जिले में जाते हैं तो परिवार को बैठा कर पहले उन सब की बात सुनने का काम करते हैं, उसके बाद कोई निर्णय लेने का काम करते हैं, लेकिन इन्होंने किसी भी राजनीतिक दल को बुला करके नहीं पूछा और न ही बताया कि वास्तव में सच्चाई क्या है। किसी से परमाणु डील के बारे में नहीं पूछा गया। देश के लोगों को पता नहीं है कि परमाणु डील क्या है। पूरे देश का भविष्य दांव पर है, इसलिए आज पुनः अपील करता हूं। अभी हमारे पूर्वक्ता बोल रहे थे कि अंतरात्मा की आवाज पर दे दो। अंतरात्मा की आवाज पर कौन मांगता है, यह किसी से छुपा नहीं है, मैं कहना नहीं चाहता। ये आत्मा की आवाज पर नहीं, देश के नाम पर वोट मांग रहे हैं। अंतरात्मा की आवाज पर वह वोट मांगेगा, जो दयनीय हालत में होगा। क्या आज हमारे प्रधान मंत्री जी इतने दयनीय हो गए कि अंतरात्मा की आवाज पर वोट मांगने लगे?

उपाध्यक्ष महोदय, यह सच्चाई है कि हिन्दुस्तान के हितों से कतई समझौता करने की आवश्यकता नहीं है। आज इस सदन में मैं कांग्रेस पार्टी से पूछना चाहता हूं कि इस डील को जल्दबाजी में करने की क्या जरूरत है? आप जापान जा रहे हैं और कह रहे है कि हम डील करके आएंगे और ये भाई, जिन्होंने कभी कांग्रेस पार्टी को पसंद नहीं किया, साम्प्रदायिकता से लड़ने के सवाल पर आपके साथ पूरे चार साल रहे। आपकी सरकार को चलाने का मौका दिया, अगर ये साथ न होते तो आप जरा सोचो कि आप कहां होते। अभी एक भाई कह रहे थे कि प्रधान मंत्री जी कभी मजबूर नहीं हुए, अरे, मजबूर तो उस दिन हो गए थे जिस दिन देश के लोगों ने तुम्हें पूरे वोट नहीं दिए थे। अगर तुम्हारी एक दल की सरकार होती, क्या तब आप मजबूर होते। आपने उधार मांग कर, क्रेडिट पर अपना घर बनाया था। आप तो मजबूर हो गए। अगर बैंक से कर्जा लोगे तो आपको बैंक पर निर्भर रहना पड़ेगा। आपने अगर समय पर किश्तें नहीं दीं और समय से ब्याज नहीं चुकाया, जो देशहित के बारे में लेफ्ट ने मांगा था, आपने अगर नहीं किया तो लेफ्ट ने कोई गलत काम नहीं किया। लेफ्ट के लोग, हमारे जो वामपंथी साथी हैं, वे वास्तव में देशहित के लिए इस समस्या को आपके सामने लाए हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, ऐसे समय में विश्वास मत का प्रस्ताव लाया गया, जब पूरा देश बढ़ती महंगाई से कराह रहा था, गरीब आदमी की कमर टूट गई। अभी नरैगा की चर्चा कर रहे थे।...*(व्यवधान)* वहां सौ रुपए से ज्यादा नहीं मिल सकता।...*(व्यवधान)* मैं आप सबसे पूछना चाहता हूं कि सौ रुपए में कितने दिन और कितने परिवार चल सकते हैं? आपको बढ़ती हुई महंगाई पर कंट्रोल करना चाहिए था। आपको कोशिश करनी चाहिए थी कि जो आटा आठ रुपए से लेकर 15 रुपए किलो, दाल 26 रुपए से 62 रुपए किलो, सरसों का तेल 40 रुपए से 75 रुपए किलो, वनस्पति घी 40-50 रुपए से 80 रुपए के.जी. बिक रहा है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? सभी लोग सरकारों के बारे में बताते हैं, ये कहते हैं कि प्रदेश सरकारों पर निर्भर करता है। इस सच्चाई को आप कतई नहीं छिपा सकते कि हिन्दुस्तान की सरकार यू.पी.ए. की सरकार के हाथ में है। माननीय प्रधान मंत्री जी आप सीधे तौर पर हिन्दुस्तान में बढ़ती हुई महंगाई के लिए जिम्मेदार हैं। अब यह स्पष्ट हो गया कि परमाणु ऊर्जा करार करने के बाद हमारा भारत देश पुनः दासता की बेड़ियों में जकड़ जाएगा, अमेरिका जब चाहेगा तब हमारे ऊपर सारे के सारे प्रतिबंध लगा देगा और परमाणु रिएक्टरों पर सीधी निगरानी रखेगा। जिससे हमें परेशानी रहेगी और हमेशा तंग हाल रहना पड़ेगा।...*(व्यवधान)* माननीय लालू प्रसाद जी, अगर आप मंत्री न होते, तो आप भी इधर ही होते। मैं सच्चाई बोल रहा हूं। अगर आप कलेजे पर हाथ रख के देखें और विचार करें, तो आपको मेरी बगल में आना पड़ेगा। सह सच्चाई है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया चेयर को एड्रैस कीजिए।

श्री ब्रजेश पाठक : आप देश की सोचिए। रेल मंत्रालय बहुत बड़ा है, इसे लात मार दीजिए और आइए, हिन्दुस्तान को बचाने के लिए आगे बढ़िए। तब देश के लोग समझेंगे कि वास्तव में अपने देश के लिए कुछ किया है।

महोदय, कहा जा रहा है कि देश के परमाणु वैज्ञानिक इस डील के साथ हैं। नाम लिया जा रहा है उनका, जो देश के सर्वोच्च पद

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

पर रह चुके हैं, लेकिन मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहता हूं और मैं चाहता हूं कि जब वे उत्तर दें तो इसका भी जवाब दें कि हिन्दुस्तान के तीन-तीन प्रख्यात वैज्ञानिकों ने...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : जब आप हौले बोलते हैं, तो आपको सभी सुनते हैं। जब आप ऊपरले स्वर में चले जाते हैं, यानी बहुत तेज बोलते हैं, तो सुनाई कम पड़ता है।

श्री ब्रजेश पाठक : महोदय, परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. पी.के. आयंगर, परमाणु ऊर्जा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डॉ. ए. गोपालाकृष्ण और भाभा अनुसंधान केन्द्र के पूर्व निदेशक के.एन. प्रसाद ने साफ-साफ शब्दों में प्रधान मंत्री जी को अवगत कराया कि यह डील किसी भी हालत में देश हित में नहीं है। यह सच्चाई है।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया शान्ति बनाए रखिए। साइलेंस प्लीज।

श्री ब्रजेश पाठीक : तीन वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया कि परमाणु करार कतई देश हित में नहीं है। इसे तुरंत तपाल में डाल देना चाहिए। मराठी भाषी समझ गए होंगे कि 'तपाल' का क्या मतलब है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि इसे रद्दी की टोकरी में फेंक देना चाहिए क्योंकि देश-हित पहले है, उसके बाद ही हम लोग अमेरिका का हित देख पाएंगे।...*(व्यवधान)*

श्री लालू प्रसाद : आपकी पार्टी दो साल तक समर्थन क्यों देती रही?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मेरी अनुमति के बिना जो भी कोई मुद्दे उठाएंगा, उसे कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : सुनने का भी माद्दा रखिए।

उपाध्यक्ष महोदय : लालू प्रसाद जी, आप बैठ जाइए। आप बगैर परमीशन लिए बोल रहे हैं।

श्री लालू प्रसाद : जब मुलायम सिंह यादव जी का इधर प्रवेश हुआ,...*(व्यवधान)*

श्री ब्रजेश पाठक : माननीय उपाध्यक्ष जी, अमेरिका की बात चली।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। कृपया अब समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान में अमेरिका के बहुत दोस्त पैदा हो गए। किताबों में मैंने पढ़ा है कि हमारे देश के उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के एक बहुत बड़े शायर हुआ करते थे जिनका नाम था फिराक गोरखपुरी। उन्होंने लिखा है—

"अमेरिका की गुलामी पर रजामंद हुआ तू,
शिकवा मुझे तुझसे है, अमेरिका से नहीं।"

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अब समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वैज्ञानिकों की मानें, तो हाइड एक्ट, 2006 के तहत जो समझौता हुआ है उसके अनुसार भारत, अमेरिका सहित, तमाम अन्य देशों के जो परमाणु ऊर्जा ग्रुप के सदस्य हैं या उस समूह में शामिल हैं, अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए पूरी तरह से अमेरिका के नियंत्रण में हो जाएगा, क्योंकि परमाणु ऊर्जा के लिए खनिज और जरूरी साजोसामान उपलब्ध कराने वाले देशों के समूह पर अमेरिका का कब्जा है और पूरा दबदबा है। द्विपक्षीय 123 करार, हाइड एक्ट, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लागू हो, ऐसा भी सम्भव नहीं है क्योंकि यह द्विपक्षीय समझौता है और अमेरिका के घरेलू कानूनों से बंधा हुआ है, जिसमें हाइड एक्ट भी शामिल है।

उपाध्यक्ष महोदय : प्लीज साइलेंस।

श्री ब्रजेश पाठक : अरबों डॉलर के निवेश के बाद भी परमाणु ऊर्जा का योगदान, 2020 तक, देश की ऊर्जा की आवश्यकता का मात्र 7 प्रतिशत हो पाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी पार्टी का टाइम खत्म हो गया है।

श्री ब्रजेश पाठक : इससे ज्यादा बिजली भारत को कैसे मिल सकती है। कहा जा रहा है कि भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्र लगेंगे। हिन्दुस्तान एक विकासशील देश है। यह कदम आगे बढ़ा रहा है। नौजवानी की तरह तेज़ी के साथ आगे बढ़ना चाहता है। लेकिन इस पर इतने रुपये का अधिभार लाद देना कतई उचित नहीं होगा। जब हम कोयला और गैस से सस्ती बिजली बना सकते हैं तो दो-तीन

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

प्रतिशत बिजली के लिए भारत पर करोड़ों-अरबों रुपयों का बोझ लादना कतई उचित नहीं होगा। इतना ही नहीं इस परमाणु डील पर प्रस्ताव करने के लिए विरोधी पार्टियों को अपने पक्ष में करने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद इत्यादि हथकण्डे अपना लिए हैं, जिसके तहत केन्द्र सरकार ने, यू.पी.ए. सरकार ने हमारी बहन कुमारी मायावती जी पर सी.बी.आई. का गलत इस्तेमाल किया...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया सभा में शांति बनाए रखें। कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री ब्रजेश पाठक : देश की लगभग सभी पार्टियों ने इसकी निन्दा की है और भर्त्सन की है और कांग्रेस पार्टी को आड़े हाथों लेने का काम किया है। इसके अलावा विपक्षी पार्टियों के कई सांसदों को लालच देकर और डरा-धमकाकर अपने पक्ष में करने की कोशिश की गई है। आखिर इस डील में क्या है जो कांग्रेस पार्टी अपनी सरकार को दांव पर लगा बैठी है। मैं देश के लोगों से और इस सदन से भी पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी की इस सरकार की नई देशभक्ति की परिभाषा के पीछे असली मकसद क्या है? पूरे देश की जनता इस बात पर हैरान है कि कांग्रेस पार्टी देशभक्ति की नई परिभाषा लिख रही है जो कि जार्ज बुश की नई गुलामी की तरफ ले जा रही है, उनके कदमों की तरफ ले जा रही है। इसलिए इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए हमारी पार्टी इस परमाणु डील को करने के तौर-तरीकों से बिलकुल सहमत नहीं है। हमारी पार्टी इसका डटकर पूरा-पूरा विरोध करती है और हमारी पार्टी इसी सोच के ध्यान में रखकर विरोध करेगी अर्थात् हम इस प्रस्ताव का डटकर विरोध करेंगे।

मैं अंत में एक बात कहना चाहता हूं कि मनमोहन सिंह जी देश की जनता को बख्श दीजिए, उनको रोटी, दाल और सब्जी तो दे नहीं पाए, महंगाई कम नहीं कर पाए, अब परमाणु के नाम पर बिजली का लालीपॉप मत दीजिए। क्योंकि परमाणु से पेट नहीं भरेगा और यह भावी पीढ़ी का कोई भला नहीं करेगा। परमाणु करार देश को गुलामी की ओर ले जाने का काम करेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : उपाध्यक्ष महोदय, यू.पी.ए. की पार्टी से तीन लोग बोल चुके हैं, रामगोपाल जी बोल चुके हैं, लेकिन एन.डी.ए. से एक भी नहीं बोला है।

उपाध्यक्ष महोदय : इनकी संख्या ज्यादा है और ये डी.एम.के. पार्टी की तरफ से बोल रहे हैं।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : वे डी.एम.के. पार्टी से हैं, लेकिन वह भी तो यू.पी.ए. का पार्ट है। यू.पी.ए. से चार-चार लोग बोल चुके हैं। लेकिन ओपोजिशन से एक आदमी ही बोला है।

उपाध्यक्ष महोदय : सभी का नम्बर आएगा और सभी को बोलने के लिए बुलाया जाएगा।

[अनुवाद]

पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री (श्री टी.आर. बालू) : अपने प्रिय नेता डा. क्लैग्नार एम. करूणानिधि के नेतृत्व में, मैं अपनी पार्टी डी.एम.के. की ओर से भारत के प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

इसके साथ ही, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, अपने पार्टी नेता की ओर से मैं इस सभा में कहता हूं कि, हम अपने वामपंथी मित्रों द्वारा दिए गए समर्थन तथा सहायता के लिए पूरा आभार व्यक्त करते हैं। जो जरूरत के समय काम आता है, वही सच्चा मित्र कहलाता है। यह सही है कि, जहां तक इस मुद्दे का संबंध है, उनका हमसे मतभेद हो सकता है, परन्तु मुझे नहीं लगता कि ऐसा हमेशा चलेगा। मेरे मित्र, निश्चित रूप से हमारे वामपंथी दल, इस मुद्दे के अतिरिक्त हमारा हमेशा समर्थन करेंगे क्योंकि इसपर उनके विचार हमसे अलग हैं। मुझे ऐसा ही लगता है। इस सरकार के लिए आपके समर्थन की जरूरत हमेशा से थी और केवल आपका समर्थन ही नहीं परन्तु समाजवादी पार्टी जैसे मित्रों जोकि कुछ ही दिन पहले हमारे साथ आए, के समर्थन की भी इतनी ही जरूरत है। हमें न केवल यह प्रस्ताव पारित करने के लिए बल्कि आने वाले दिनों में सभी के समर्थन की जरूरत होगी। इसका अर्थ है कि हम विश्वास मत हासिल करने वाले हैं। विपक्ष से मेरे मित्रों ने कुछ बातों का उल्लेख किया था जोकि उच्चतम न्यायालय के न्याय निर्णयाधीन लंबित हैं। मैं उसका उत्तर नहीं देना चाहता। माननीय अध्यक्ष महोदय के अनुरोध के अनुसार मैं उस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहता। सबसे पहले मैं आपको उस बारे में आश्वासन देना चाहता हूं जैसा कि पांच मिनट पहले श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव ने करारा जवाब दिया।

परमाणु ऊर्जा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। किसी भी विकासशील देश को ऊर्जा की आवश्यकता क्यों होती है? कि सतत विकास के लिए इसकी आवश्यकता होती है। केवल यही नहीं हमें ऊर्जा के साथ अवसंरचना की आवश्यकता है। इस अवसंरचना को भी सामाजिक

[श्री टी.आर. बालू]

अवसंरचना तथा भौतिक अवसंरचना के तौर पर विभाजित किया जा सकता है। यह सभी बातें हमारे विकास का हिस्सा है। आज ऊर्जा की क्या आवश्यकता है? यह 6,08,400 मिलियन यूनिट है। केवल 5,54,248 मिलियन यूनिट उपलब्ध हैं। इस प्रकार से 54,556 मिलियन यूनिटों की कमी है। यह हमारी कुल आवश्यकता का लगभग 9 प्रतिशत है। परमाणु ऊर्जा का योगदान केवल 3700 मेगावाट है। इस वर्ष 2000 में ही 10,000 मेगावाट प्राप्त कर लेना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। वर्ष 2020 तक हमें 20,000 मेगावाट परमाणु ऊर्जा की आवश्यकता होगी। ऐसा क्यों नहीं हुआ? इसका क्या कारण है? इस क्षेत्र में, जहां तक परमाणु ऊर्जा का संबंध है, तो देश इस परमाणु विकल्प को क्यों विकसित नहीं कर सकता? इसका कारण यह है कि आधुनिक उपकरण तथा प्रौद्योगिकी उपलब्ध नहीं है। इस कारण एन.एस.जी. के देश अपने प्रतिबंधों की वजह से भारत को इनकी आपूर्ति करने की स्थिति में नहीं हैं। इनके बीच कोई द्विपक्षीय समझौता नहीं है। आई.ए.ई.ए. तथा एन.एस.जी. द्वारा कोई निवेश नहीं किया गया है। क्या हम केवल परमाणु ऊर्जा पर निर्भर कर रहे हैं? प्रश्न यही है। जैसे कि कोई बुद्धिमान व्यापारी अथवा पेशेवर किसी भी उद्योग में उत्पाद-मिश्रण करता है, हमें भी उत्पाद मिश्रण ही करना चाहिए। इसीलिए, जहां तक ऊर्जा का संबंध है हमें जल विद्युत को अपनाना चाहिए।

अपराह्न 5.00 बजे

हमें पवन ऊर्जा की ओर जाना होगा, हमें कोयला ऊर्जा की ओर जाना होगा और हमें पुराने ईंधन से विद्युत का उत्पादन करना होगा। परमाणु ऊर्जा अंतिम विकल्प है, परन्तु हमें इस अवसर को गंवाना नहीं चाहिए। जहां तक विद्युत उत्पादन का संबंध है तो हमें विभिन्न चीजों के मिश्रण से उत्पाद तैयार करना चाहिए। 112 करोड़ की जनसंख्या वाले हमारे देश के लिए सभी विकल्प अनिवार्य हैं। इसीलिए हमें परमाणु ऊर्जा की आवश्यकता है। परमाणु ऊर्जा और हमारे वर्तमान रियक्टरों तथा आने वाले समय में स्थापित किए जाने वाले नए रियक्टरों के लिए हमें कच्ची सामग्री, यूरेनियम तथा संबंधित पदार्थों की आवश्यकता है।

अतः जुलाई, 2005 में जब डा. मनमोहन सिंह, ने संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति श्री जॉर्ज बुश से भेंट की तो एक संवाद आरंभ हुआ। यह संवाद नया नहीं है। इस संवाद का आरंभ नेहरू के युग में हुआ था। जब पंडित जवाहरलला नेहरू भारत के प्रधानमंत्री थे तो उन्होंने यह संवाद आरंभ किया था। इस संवाद का अब नवीकरण किया गया है। यही पूरी बात है। इसका आरंभ वहां हुआ था। यह कोई नया संवाद नहीं है। परन्तु साथ ही, जब इस देश की महान नेता श्रीमती इंदिरा गांधी ने वर्ष 1975 में पोखरण-I परीक्षण किया तो यह संवाद ठंडे बस्ते में चला गया। इसके बाद जब 2005 में डा. मनमोहन सिंह श्री बुश से मिले तो उन्होंने इस संवाद को फिर बहाल करने का निर्णय लिया। संवाद के पश्चात् इस द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के अनुसार यह समझौता भारत सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका की सकार के बीच सहयोग के लिए है ताकि परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग किया जा सके।

महोदय, यह समझौता हमारे स्वदेशी त्रिस्तरीय परमाणु कार्यक्रम की कीमत पर नहीं किया गया है। यह हमारे सामरिक परमाणु कार्यक्रम की स्वायत्तता तथा हमारे अनुसंधान और विकास क्रियाकलापों की कीमत पर नहीं किया गया है। हमारी सरकार इन सब के प्रति कटिबद्ध है। इसमें संपूर्ण परमाणु ऊर्जा के सहयोग का उपबंध है जिसमें नाभिकीय रियेक्टर, सबद्ध रियेक्टर, फ्यूल साईकिल तथा पुनर्संसाधन सहित संवर्धन को भी शामिल किया गया है। इसमें परमाणु नाभिकीय व्यापार तथा परमाणु सामग्री, उपस्कर, कल-पूर्जे तथा संबद्ध प्रौद्योगिकी तथा सहयोग के हस्तांतरण का भी उपबंध है। फिर इसमें ऐसा कोई उपबंध नहीं है जिसके अनुसार हमारे शस्त्र कार्यक्रम अथवा किसी सुरक्षोपाय रहित परमाणु सुविधा समझौते में कवर न होने वाली की जांच की जानी आवश्यक हो। अंतिम उपबंध है कि यह किसी भी प्रकार से भारत के परमाणु परीक्षण करने के अधिकार को प्रभावित नहीं करता है। अंतिम उपबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

प्रतिपक्ष से मेरे मित्र ने कहा था कि भारत अमेरिका का अधीनस्थ बन जाएगा। हमारा अमेरिका का अधिनस्थ बन जाने का प्रश्न कहां है? हमारा देश किसी भी विदेशी देश के किसी भी जोर-जबर्दस्ती के समझौते पर कभी भी सहमत नहीं हुआ और हमने कभी भी हमारी विदेश नीति से समझौता नहीं किया। भारत की विदेश नीति हमारे राष्ट्रीय हितों के अनुरूप ही है और इसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। चाहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी हों या डा. मनमोहन सिंह हो, इसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। हमारी विदेश नीति अपरिवर्तनीय है तथा हम इसे बदल नहीं सकते।

महोदय, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच 123 समझौता से भारत के विरुद्ध पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से चल रही प्रौद्योगिकी वंचन व्यवस्था का अंत हो जाएगा तथा भारत के परमाणु अलगाव का अंत हो जाएगा। यह अधिक महत्वपूर्ण है। इससे और अलगाव नहीं होगा तथा इस अलगाव के कारण पिछले 30 वर्षों से हमारे रिक्येक्टरों के लिए ईंधन और ना ही किसी नई परमाणु प्रौद्योगिकी तक हमारी पहुंच रही है। इसलिए इन सभी वर्षों के दौरान हमारा परमाणु ऊर्जा विकास रुका रहा और हम अधिकतम क्षमता तक नाभिकीय ऊर्जा का उत्पादन नहीं कर पाए।

प्रतिपक्ष का प्रत्येक सदस्य निश्चित ही इन बाध्यताओं को भली-भांति जानता है। परंतु साथ ही, राजनीति के कारण वे एक भूमिका निभाना चाहते हैं और यह भूमिका आज और कल निभायी जा रही है।

महोदय, मैं इस नाभिकीय मुद्दे को यही विराम देता हूं चूंकि मैं गहराई में नहीं जाना चाहता क्योंकि अनेक माननीय सदस्यों ने इस पर भाषण दिया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि हम विश्वास प्रस्ताव क्यों लाए हैं। अगर इसे हम नहीं लाएं हैं तो, विशेषकर विपक्ष के श्री मल्होत्रा जी, जो दस दिन पूर्व अत्यंत व्यग्र थे, इस अविश्वास प्रस्ताव को लाएं होंगे। अगर इस धरती पर किसी व्यक्ति को डा. मनमोहन सिंह पर विश्वास नहीं है तो वे भारत में किस प्रकार का प्रजातंत्र स्थापित करना चाहते हैं। परंतु इस देश के अत्यंत प्रिय व्यक्तित्व पर प्रश्न उठाया जा रहा है। उन पर क्यों प्रश्न उठाया जा रहा है?

हमारे प्रिय नेता डा. कलैंग्नार करूणानिधि, श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा आरंभ तथा ज्योति बसु, श्री शरद पवार, श्री लालू प्रसाद और अनेक अन्य नेताओं के सहयोग से आरंभ किया गया प्रजातंत्र का धर्म युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। इसे दस माह का और अधिक समय मिल गया है। हम पांचवें वर्ष के आरंभ में हैं तथा हमें अभी बहुत कुछ करना है। हमें अब तक आरंभ किए गए कार्य को पूरा करना है।

अब ऐसे कौन से कार्य हैं जिन्हें परिणति तक पहुंचाना है? वर्ष 2003-04 के दौरान प्रति व्यक्ति आय कितनी थी? यह 20,895 रुपये थी ओर वर्ष 2007-08 में यह 33,229 रुपये है। वर्ष 2003-04 में विदेशी मुद्रा भण्डार कितना था? यह 107.45 बिलियन डालर था। दिनांक 31.3.2008 को, यू.पी.ए. शासन काल के दौरान, यह 299.23 बिलियन डालर था और 30.5.2008 को यह 304.88 बिलियन डालर था।

खाद्य सुरक्षा के बारे में क्या स्थिति थी? मेरे मित्र, श्री शरद पवार के उत्तम प्रबंधन और दूरदर्शितापूर्ण प्रशासन की मदद से अब तक का खाद्यान्न उत्पादन 227 मिलियन टन रहा है। यह अब तक हुआ सबसे अधिक उत्पादन है। 225 लाख टन गेहूं की खरीद की गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की यह सबसे अधिक खरीद है। भारत में यह भण्डार 18 महीने तक चलेगा; यह सब समर्थन मूल्य, ऋण माफी तथा अन्य उपायों के कारण हुआ है। 265 लाख टन चावल की खरीद हुई है। भारत में यह भण्डार एक और वर्ष तक चलेगा और अब भी खरीद जारी है। क्या यह डा. मनमोहन सिंह की सरकार का उत्तम प्रबंधन नहीं है?

वे मुद्रास्फीति की बात करते हैं। यहां मुद्रास्फीति हैं, परंतु वहीं बाजार में वस्तुएं उपलब्ध होनी चाहिए। खाद्यान्न जैसी वस्तुएं भारतीय बाजार में हमेशा उपलब्ध होगी, चाहे मूल्यों में वृद्धि हो या कमी हो। परंतु वहीं, खाद्य सुरक्षा विद्यमान है। डा. मनमोहन सिंह के दूरदर्शिता पूर्ण प्रबंधन के कारण यू.पी.ए. सरकार ने खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की है।

महोदय, यदि वस्तुएं उपलब्ध नहीं भी हैं, फिर भी हमारे पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भण्डार है जिससे हम आयात भी कर सकते हैं। विदेशी मुद्रा की कोई कमी नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि दूरदर्शिता पूर्ण प्रबंधन के कारण, हम आम आदमी का ध्यान रख पा रहे हैं।

महोदय, मैंने कहा था कि अन्य अवसंरचनाओं के साथ ऊर्जा से आर्थिक विकास होता है। मूल रूप से, अवसंरचना का विकास आर्थिक दोहन का मार्ग प्रशस्त करता है। वही, सामाजिक अवसंरचना मानव पूंजी का सृजन करती है। भौतिक अवसंरचना तथा सामाजिक, अवसंरचना दोनों मिलकर आर्थिक अवसंरचना का अंग बनते हैं। हम अवसंरचना का सृजन कर सकते हैं। सड़कों का निर्माण किया जा सकता है; पत्तनों का निर्माण किया जा सकता है; दूरसंचार सुविधाओं का सृजन किया जा सकता है; मानव पूंजी का सृजन किया जाना चाहिए। मानव पूंजी के सृजन के लिए सामाजिक अवसंरचना मौजूद होनी चाहिए।

उस सामाजिक अवसंरचना के लिए श्रीमती सोनिया गांधी जी के कुशल नेतृत्व में डा. मनमोहन सिंह जी ने पिछले बजट में ही केवल 'शिक्षा' के लिए 34400 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए हैं जो कि पिछले बजट से 20 प्रतिशत अधिक है। 'स्वास्थ्य' के लिए उन्होंने 16534 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए हैं जो कि पिछले बजट से 15 प्रतिशत अधिक है। 'पेयजल' के लिए उन्होंने 7300 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए हैं और 'स्वच्छता' के लिए उन्होंने 1200 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए हैं। इसके अतिरिक्त वे संपूर्ण देश में 16 विश्व विद्यालय तथा 7 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान स्थापित करने जा रहे हैं। यह हमारे सामाजिक अवसंरचना का भाग है। यह सामाजिक संरचना निश्चित तौरा पर काफी मानव पूंजी निर्माण का सृजन करती है। मानव पूंजी निर्माण की वजह से आर्थिक अवसंरचना विकसित होती है।

सिर्फ इतना ही नहीं, भारत निर्माण नामक एक अग्रणी कार्यक्रम विद्यमान है जो संप्रग, मैडम सोनिया जी, डा. मनमोहन सिंह जी और प्रणब दा की दिमागी उपज है। उन्होंने वर्ष 2005 से 2009 तक छह कार्यक्रमों के लिए 1,74,000 करोड़ रुपये मुहैया कराएं हैं। किस प्रयोजनार्थ? ग्रामीण सिंचाई के प्रयोजनार्थ, सिर्फ 10 मिलियन हेक्टेयर का लक्ष्य रखा गया है, जबकि हम अब तक 38 मिलियन हेक्टेयर तक पहुंच चुके हैं। क्या यह उपलब्धि नहीं है? जहां तक ग्रामीण

[श्री टी.आर. बालू]

सड़कों का प्रश्न है, 66,802 बस्तियों को सड़क से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है, जबकि हम अब तक 17,000 बस्तियों को सड़क से जोड़ चुके हैं। हमें शेष कार्य को भी पूरा करना हैं। कम से कम इस मामले में हमारे लिए कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। यदि वे हमारे विरोध में मतदान करते हैं तो इसका अभिप्राय है कि वे आम आदमी के ग्रामीण सड़क विकास के विरोधी हैं। जहां तक 'ग्रामीण आवास' का प्रश्न है, हमारा लक्ष्य 60 लाख आवासों का है; हमने अब तक 45 लाख ग्रामीण आवास मुहैया कराएं हैं। हमें शेष 15 लाख ग्रामीण आवासों का निर्माण करना है और उन्हें गरीब एवं जरूरतमंद लोगों का सुपुर्द करना है। यदि वे हमारे विरोध में मतदान करते हैं तो इसका अर्थ है कि वे इस देश के निर्धनतम लोगों के विरुद्ध हैं। 'ग्रामीण जलापूर्ति' के मामले में 6 लाख बस्तियों का लक्ष्य रखा गया है। 6 लाख बस्तियों में से 3.5 लाख बस्तियों को ग्रामीण जलापूर्ति मुहैया करायी जा चुकी है। 'ग्रामीण विद्युतीकरण' के तहत 1,25,000 गांवों को शामिल करने के लक्ष्य की तुलना में 45,000 गांवों में विद्युतीकरण का कार्य पूरा किया जा चुका है। शेष गांवों में हमें अभी बिजली पहुंचानी है। साथ ही, ग्रामीण दूरसंचार के अंतर्गत अब तक 24,000 गांवों को शामिल किया जा चुका है, शेष गांवों को शामिल किया जाना है।...*(व्यवधान)*

महोदय, क्या वे इस विकास को रोकने जा रहे हैं। यदि वे इस विकास को रोकते हैं तो इसका अभिप्राय है कि वे इस देश के निर्धनतम लोगों के विकास को रोक रहे हैं।

महोदय, अब मैं एन.आर.ई.जी.पी. की चर्चा करता हूं...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है। कृपया उन्हें बोलने दीजिए।

*(व्यवधान)**

श्री टी.आर. बालू : महोदय, हमने इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2007-08 तक 200 जिलों को शामिल कर लिया था। अब हमने इसका दायरा 200 जिलों से बढ़ाकर 604 जिलों का कर दिया है। पिछले वर्ष, हमने सिर्फ 12,000 करोड़ रुपये मुहैया कराए थे और इस वर्ष हमने 16,000 करोड़ रुपये मुहैया कराए हैं। प्रावधान में 33 प्रतिशत की वृद्धि की गयी है। वार्षिक रूप से, इस कार्यक्रम से तीन करोड़ लोगों को आजीविका मिल रही है। इस अग्रणी योजना के अंतर्गत सत्रह लाख कार्यों की पहचान की गयी है। इसमें से 8 लाख कार्यों को अब तक शामिल किया जा चुका है। क्या वे इसका विरोध करने जा रहे हैं? मुझे इसका पता नहीं है। इन सभी उपलब्धियों के बावजूद, यदि मेरे मित्र हमारी सरकार का विरोध करते हैं तो मुझे पता नहीं कि मुझे किस भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

अब मैं कृषि ऋण की माफी की चर्चा करता हूं। इस वर्ष के आम बजट में, हमारी संप्रग सरकार ने ऋण माफी हेतु 60,000 करोड़ रुपये मुहैया कराए हैं। जून की समाप्ति के पहले, मैडम सोनिया गांधी जी और मेरे युवा मित्र, श्री राहुल गांधी जी के निर्देश के अंतर्गत वित्त मंत्री जी द्वारा इस धनराशि को बढ़ाकर 71,680 करोड़ रुपये कर दिया गया है।

उपाध्यक्ष महोदय : आपके दल के लिए निर्धारित समय अब समाप्त होने जा रहा है।

श्री टी.आर. बालू : महोदय, मैं सत्ता पक्ष में शामिल हूं। कृपया मुझे संप्रग के लिए आवंटित समय में से बोलने की अनुमति दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : आप सिर्फ अपने दल के लिए आवंटित समय में से बोल सकते हैं, संप्रग के लिए आवंटित समय में से नहीं।

श्री टी.आर. बालू : महोदय, मैं अपनी बात शीघ्र ही समाप्त करूंगा। कृपया मुझे और पांच मिनट का समय दीजिए। मुझे अपने पुराने मित्र और विपक्ष के नेता, के प्रश्नों का उत्तर देना है जिन्होंने आज सुबह कतिपय प्रश्न उठाए थे। मैं उनके प्रश्नों का सिर्फ उत्तर देने का प्रयास कर रहा हूं।

उन्होंने कहा था कि सड़कों के निर्माण के संबंध में वर्तमान में कुछ भी नहीं किया जा रहा है। मुझे पता नहीं है कि उन्होंने मुझसे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए क्यों कहा क्योंकि यदि मैं उत्तर देता हूं तो उन्हें काफी असुविधा होगी।

स्वर्णिम चतुर्भुज और पत्तन सम्पर्क — एन.एच.डी.पी. I के अंतर्गत — हमने 7,500 कि.मी. लंबे मार्ग को चार लेनो वाला बनाया है, उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम में हमने 6,647 कि.मी. बनवाया है, एन.एच.डी.पी.-III के अंतर्गत हमने 12,105 कि.मी. सड़क बनवायी है; ऊंचे किनारों वाली दो लेन की सड़क के निर्माण हेतु, हमने 20,000 कि.मी. सड़क की पहचान की है; चरण-V के अंतर्गत, हमने 6,500 कि.मी. लंबी सड़क को छह लेनो वाला बनाना निर्धारित किया है; चरण-VI के अंतर्गत हमने 1000 कि.मी. एक्सप्रेस वे हेतु प्रावधान किया है; तथा हमने एन.एच.डी.पी.-VII के अंतर्गत ग्रेड सेपरेटर, फ्लाई ओवर, रिंग रोड इत्यादि का निर्माण करवाया है। जहां तक स्वर्णिम चतुर्भुज का प्रश्न है, 97 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अब मैं यह बताना चाहूंगा कि जब राजग सरकार के सत्ता छोड़ने के समय कितनी किलोमीटर सड़क बनी थी। राजग सरकार के दौरान उन्होंने मात्र 2,342 कि.मी. का कार्य पूरा किया था। संप्रग जिसकी अध्यक्षा, मैडम सोनिया गांधी जी हैं, की सरकार ने अब तक 5,948 कि.मी. का निर्माण कार्य पूरा कयिा है।

प्रतिदिन सड़क निर्माण का औसत क्या था? राजग शासन के दौरान यह 1.86 कि.मी. था। वर्त्तमान में यह 3.96 कि.मी. है। इसमें सौ प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है।

जहां तक स्वर्णिम चतुर्भुज का प्रश्न है, उन्होंने मात्र 1,955 कि. मी. का निर्माण करवाया था। संप्रग सरकार स्वर्णिम चतुर्भुज के अंतर्गत अब तक 2,884 कि.मी. सड़क का निर्माण करवा चुकी है। वे भी साढ़े चार वर्ष तक सत्ता में थे। राजग सरकार ने कितने ठेके दिए थे। उन्होंने 122 ठेके दिए थे। डा. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार ने 246 ठेके दिए थे। संप्रग सरकार के दौरान इन ठेकों की कुल लागत 83,668 करोड़ रुपये रही जबकि राजग शासन के दौरान यह मात्र 23,126 करोड़ रुपये थी।

अब मैं पत्तन सुविधाओं की बात पर आता हूं। मैं अवसंरचना के बारे में बात कर रहा हूं। वर्ष 2003-04 में, सभी 12 प्रमुख पत्तनों पर कुल परियात 345 मिलियन मीट्रिक टन था। वर्ष 2007-08 में कुल परियात 519 मिलियन मीट्रिक टन था और वह 50.5 प्रतिशत अधिक था।

वर्ष 2003-04 के दौरान पत्तन क्षमता 390 कि.मी. टन थी जबकि वर्ष 2007-08 में यह 532 मि.मी.टन थी जिसका अर्थ यह है कि क्षमता में 36 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इसके बाद, सभी छोटे पत्तनों, जो लगभग 200 थे और बड़े पत्तन 12 थे, वर्ष 2003-04 में राजग के शासनकाल के दौरान कुल परियात 466 मि.मी.ट. था जबकि हमारे शासनकाल में 2007-08 के दौरान यह परियात बढ़कर 717 मि.मी.ट. हो गया अर्थात, इसमें 54 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

महोदय, जब राजग का शासन समाप्त हुआ तो कोई समुद्री नीति नहीं थी। किन्तु इस यू.पी.ए. सरकार ने एक नई समुद्र विकास नीति की परिकल्पना की है। इस नीति के अंतर्गत हमने कुल 387 परियोजनाओं की पहचान की है जिसमें से 276 पत्तन परियोजनाएं और 111 पोत परिवहन परियोजनाएं हैं। अभी तक हमने 33 परियोजनाएं पूरी कर ली हैं और 137 परियोजनाओं पर काम चल रहा है जिन्हें 2 या 3 वर्षों के अल्प समय में पूरा कर लिया जाएगा। हमें अपने लक्ष्य पूरे करने हैं।

अंततः पेट्रोलियम उत्पादों के बारे में, लोग पेट्रोल की कीमत में वृद्धि के बारे में कह रहे हैं। जब हमने वर्ष 2004 में इस सरकार की बागडोर संभाली थी तब कच्चे तेल की कीमत 30 डॉलर प्रति बैरल थी, जबकि अब यह 130 डॉलर प्रति बैरल है। राजग के शासनकाल के दौरान वर्ष 1998 में कच्चे तेल की कीमत 12.20 डॉलर प्रति बैरल थी; 1999 में यह 29.50 डॉलर और वर्ष 2003 में 34.70 डॉलर प्रति बैरल थी। वर्ष 1998 और 2003 के बीच कच्चे तेल की कीमत में मात्र 22.50 डॉलर प्रति बैरल की वृद्धि हुई थी।

1998 के दौरान एस.के.ओ. अर्थात केरोसीन की कीमत 2.52 रुपये प्रति लीटर थी। इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की। वर्ष 2002 में उन्होंने केरोसीन की कीमत 2.52 रुपये से बढ़ाकर 5.55 रुपये प्रति लीटर कर दी। वर्ष 2003-04 में सत्ता छोड़ने से पूर्व उन्होंने एक बार फिर इसकी कीमत को बढ़ाकर 9.01 रुपये प्रतिलीटर कर दिया। इसका यह अर्थ है कि 3 वर्षों में, उन्होंने अकेले केरोसीन की कीमत में 6.49 रुपये प्रति लीटर की वृद्धि कर दी। आज, यदि हम आनुपातिक गणना करें तो यह बढ़कर 26 रुपये प्रति लीटर हो जाता है। किन्तु क्या हमने केरोसीन की कीमत को छुआ? नहीं। सरकार के यह सारे काम देखते हुए और यदि आप गरीबों के हितैसी हैं तो कृपया हमें वोट दें या सभा से बाहर चले जाएं।

इसी अनुरोध के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : अब, मैं श्री अनंत गंगाराम गीते को बुलाता हूं।

[हिन्दी]

गीते जी, आपकी पार्टी को इस विषय पर बोलने के लिए 16 मिनट अलाट हुए हैं।

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि) : पहले मैं 16 मिनट बोल लूं, फिर देख लेंगे।

श्री इलियास आज़मी (शाहबाद) : डी.एम.के. को जैसे समय दिया है, वैसे ही दें।

उपाध्यक्ष महोदय : यह हम देखेंगे कि किसको कितना समय देना है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने जो विश्वास मत का प्रस्ताव इस सदन में पेश किया है, मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं।...*(व्यवधान)* क्यों कर रहा हूं, वही बताने जा रहा हूं। आज यह सरकार अल्पमत में है। सरकार अल्पमत में होने के कारण...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : *श्री अनंत गंगाराम गीते के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही वृत्तांत में और कुछ सम्मिलित नहीं किया जाएगा।*

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, अभी तो मैंने बोलना ही शुरू नहीं किया और उसके पहले ही इतनी टोका-टाकी हो रही है।

उपाध्यक्ष महोदय : आप बोलना शुरू कीजिए, अब टोका-टाकी नहीं होगी।

श्री अनंत गंगाराम गीते : इसका मतलब यह निकलता है कि परसों यहां पर ये रहने वाले नहीं हैं। हाउस कल खत्म हो रहा है। उपाध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस बात को स्वीकार किया है कि सरकार अल्पमत में है।

श्री लालू प्रसाद : ऐसा कुछ नहीं है। हम बहुमत में हैं।

श्री अनंत गंगाराम गीते : यह प्रस्ताव किसलिए लाए हैं।...*(व्यवधान)* अगर आप बहुमत में हैं तो यह प्रस्ताव किस लिए लाया है? उपाध्यक्ष जी, यदि सरकार बहुमत में है तो यह प्रस्ताव किस लिए लाया गया है, यह सेशन किसलिए बुलाया गया है?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : ऐसा कुछ नहीं है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय देवेन्द्र प्रसाद जी, आप डिस्टर्ब न करें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : वामपंथियों के समर्थन पर यह सरकार चार साल दो महीने चली और कल तक आपका समय है। सरकार बनने से पूर्व महामहिम राष्ट्रपति जी को वामपंथियों ने लिखित रूप में एक पत्र दिया था कि यू.पी.ए. की सरकार, जो माननीय मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व में बनने जा रही है, उस सरकार को हमारा समर्थन है। उस पत्र के कारण महामहिम राष्ट्रपति जी ने मनमोहन सिंह जी को सरकार बनाने की इजाजत दी। कुछ दिन पहले वामपंथियों ने महामहिम राष्ट्रपति जी से मिलकर उन्हें लिखित रूप में पत्र दिया है कि हमने सरकार से समर्थन वापस ले लिया है। नैतिकता के तौर पर अगर आप स्वीकार करते हैं कि आप अल्पमत में हैं तो उसी वक्त प्रधानमंत्री जी को सरकार से इस्तीफा देना चाहिए था।...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री लालू प्रसाद : आप शिव सेना के लोग हैं। आप बात सुनिये। ...*(व्यवधान)*

श्री आनंदराव विठोबा अडसूल (बुलढाना) : आपकी बात बाद में सुनेंगे।...*(व्यवधान)*

श्री लालू प्रसाद : आप बात सुनिये। सी.पी.एम. ने विदड्रा किया तो समाजवादी पार्टी का समर्थन था। इनको हम करैक्ट कर रहे हैं।

श्री आनंदराव विठोबा अडसूल : आप करैक्ट बाद में कीजिएगा। ...*(व्यवधान)*

श्री लालू प्रसाद : करैक्ट कब करेंगे, जब आप यहां से चले जाएंगे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : जो कोई भी मेरी अनुमति के बिना बोलेगा, उसका भाषण कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा चाहे वे श्री लालू यादव ही क्यों न हों।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : मननीय राम गोपाल यादव जी जब यहां पर बोल रहे थे तो उन्होंने कहा है कि समाजवादी पार्टी ने अधिकृत रूप में आपको समर्थन दिया है। मेरा कहना है कि फिर भी सरकार अल्पमत में है।...*(व्यवधान)* जब इस पर मतदान होगा तो पता चल जाएगा कि सरकार अल्पमत में है या बहुमत में है लेकिन अभी तो सरकार अल्पमत में है। आज की बहस विश्वास मत प्रस्ताव पर है। सरकार सदन का विश्वास पाने के लिए यह प्रस्ताव लाई है। यह बहस न्यूक्लीयर डील पर नहीं है। आज न्यूक्लीयर डील का प्रस्ताव सदन के सामने नहीं है। जो प्रस्ताव माननीय प्रधान मंत्री जी ने रखा है वह कोई न्यूक्लीयर डील का प्रस्ताव नहीं है। यह दो दिन का विशेष अधिवेशन केवल विश्वास मत प्राप्त करने के लिए बुलाया गया है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज इस सरकार की ओर से न्यूक्लियर डील के संदर्भ में कोई प्रस्ताव सदन के सामने चर्चा करने के लिए नहीं है। मैं विपक्ष के नेता श्री आडवाणी जी को धन्यवाद दूंगा कि जैसे ही प्रधानमंत्री ने इस प्रस्ताव को सदन के सामने रखा, आडवाणी जी ने काफी विस्तार से चर्चा की कि इस सरकार का विरोध किस लिए

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

करना चाहिए और एन.डी.ए. इसके विरोध में क्यों हैं। जब विश्वास मत पर चर्चा हो रही है, तो निश्चित रूप में सरकार के पिछले चार साल के कार्यकाल के बारे में सदन में चर्चा जरूर होनी चाहिए। सरकार विश्वास प्रस्ताव पर सदन में चर्चा के लिए आई है, क्या यह सरकार चार साल के कार्यकाल में अपने कार्यों में सफल रही है? क्या सरकार ने अपने कार्यों में सफलता प्राप्त की है या पूरी तरह से असफल रही है, चर्चा इन मुद्दों पर होनी चाहिए। न्यूक्लियर डील पर चर्चा करने का आज कोई प्रस्ताव नहीं है।

ऐसी ही स्थिति 1991 में श्री नरसिंह राव जी के समय आई थी। उस समय कारण अलग था। आज श्री नरसिंह राव जी नहीं हैं, उनके पीछे कुछ कहना उचित नहीं होगा। मैं उनके संदर्भ में यहां कुछ कहने नहीं जा रहा हूं, लेकिन उस सरकार को बचाने के लिए जिस प्रकार से उस समय हार्स ट्रेडिंग हुआ, उस संदर्भ में कई मामले न्यायालय में चले। कुछ लोगों को कुछ समय के लिए जेल में जाना पड़ा और उसके बाद सरकार अपना विश्वास प्रस्ताव पारित करके चार-पांच साल तक चली। आज की स्थिति उससे भी घिनौनी है।

श्री लालू प्रसाद : यह प्रिवलेज का मामला बन जाएगा।

श्री अनंत गंगाराम गीते : प्रिवलेज का मामला बनने का यहां कोई सवाल नहीं है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : गोयल जी, आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : लालू जी, आप भी कई बार मेरी परमिशन के बिना बोल चुके हैं। वह सब रिकार्ड में नहीं जाएगा।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : लालू जी, आप मेरी परमिशन के बिना कुछ नहीं बोलेंगे। आप हर बात पर हस्तक्षेप मत कीजिए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आठवले जी, क्या आपने बोलने की परमिशन ली है? क्या मैं आपसे कहूं कि पहले आप अपनी सीट पर जाइए और फिर बोलिए।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, मैंने केवल इतना ही कहा है कि सरकार को बचाने के लिए जिस तरीके से घिनौने प्रयास किए जा रहे हैं...*(व्यवधान)* आप सुनिए। ऐसा कहने पर मुझे लालू जी ने याद दिलाया कि यह प्रिवलेज का मुद्दा है। यदि आप प्रिवलेज लाना चाहते हैं तो पिछले हफ्ते से मीडिया, इलैक्ट्रानिक चैनल्स में जो फीगर्स और बयान आ रहे हैं, आप उनके ऊपर प्रिवलेज लाइए।...*(व्यवधान)* आप लाने की हिम्मत दिखाइए।...*(व्यवधान)*

श्री लालू प्रसाद : जिस किसी नेता ने कहा है, उसके खिलाफ लाया जाएगा।...*(व्यवधान)*

श्री अनंत गंगाराम गीते : मीडिया में जो आ रहा है, उसके खिलाफ प्रिवलेज लाने की हिम्मत दिखाइए। आज मीडिया में 24 घंटे ऐसी खबरें आ रही हैं। उनसे कहिए।...*(व्यवधान)* आप प्रिवलेज लाने की धमकी उनको दीजिए।...*(व्यवधान)*

श्री सुरेन्द्र प्रकाश गोयल (हापुड़) : आप जो कुछ कहते हैं, वही मीडिया देता है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रघुनाथ झा) : शिव सेना के चीफ बाला साहेब ठाकरे ने न्यूक्लियर डील को सपोर्ट किया। यह किस वजह से इसका विरोध कर रहे हैं, हम यह जानना चाहते हैं?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : गीते जी के अलावा किसी की बात रिकॉर्ड में नहीं जाएगी।

*(व्यवधान)**

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जा जाएगा। कृपया बैठ जाइए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : आज पूरे देश में क्या हालत है? जब से यह चर्चा शुरू हुई है, देश के सामने एक ही इशू बचा है और वह है अमेरिका के साथ होने वाला न्यूक्लियर डील। इसके अलावा कोई समस्या नहीं बची है, इस प्रकार का आभास निर्माण करने का प्रयास हो रहा है। वास्तविकता क्या है? आज महंगाई बहुत बढ़ गई है। आज इनफ्लेशन 11-12 परसेंट है। अर्थशास्त्री चिंता जता रहे हैं और कह रहे हैं कि शायद इनफ्लेशन 15-16 परसेंट तक बढ़ सकता है। महंगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया उनकी बात सुनिए। व्यवधान मत डालिए।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : यह कोई तरीका नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष महोदय, हम जानना चाहते हैं कि सरकार की ओर से इसे रोकने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं? मेरे ख्याल में कोई प्रयास सरकार की तरफ से नहीं हो रहे हैं बल्कि सदन के अन्दर और बाहर यह बयान आ रहे हैं कि महंगाई सिर्फ हमारे यहां नहीं, पूरी दुनिया में हो रही है। इनफ्लेशन को रोकने के लिए क्या प्रयास हो रहे हैं और आज क्या स्थिति है? महंगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिससे आम आदमी परेशान हैं। यहां लालू जी ने खड़े होकर पर-कैपिटा इनकम 3600-3700 बताई और कहा कि वह 2007-08 में बढ़ी है।...*(व्यवधान)* बाद में इन्होंने कहा कि वह 20 हजार से 30 हजार हो गई है। उन्होंने नहीं कहा कि यह पर-कैपिटा इनकम पर-इअर, पर-मंथ या पर-डे है जबकि वह कहना जरूरी था। यह क्लीयर होना चाहिए था। अगर मैं गलत हूं तो मेरी बात में सुधार करिए। एक सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक आज

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

देश में पर-कैपिटा इनकम पर-डे केवल 12 रुपए है और 38 परसेंट जनता बिलो पावर्टी लाइन है। आज भी गांवों में हमारी 70 परसेंट आबादी है। 70 परसेंट आबादी में, मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता लेकिन कई राज्य ऐसे हैं जहां 80 परसेंट गांवों में बिजली नहीं है।

श्री लालू प्रसाद : इसी के लिए इंतजाम हो रहा है।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया माननीय सदस्य की बात सुनिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : मैं वही कह रहा हूं कि यह डील हो जाएगी तो उजाला ही उजाला हो जाएगा? इसका मतलब है कि हम देश की जनता को गुमराह इस प्रकार से करते हैं — इसके बारे में भी तो सोचो, कल हमें जनता के सामने जाना है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री गीते के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष महोदय, कई राज्य ऐसे हैं जहां 80 परसेंट गांवों में बिजली नहीं है और 70,75,65 और 55 प्रतिशत यानी आधे से ज्यादा ऐसे राज्य हैं, जहां बिजली नहीं है। आप सब की दुआ से अटल जी की सरकार में मैं आखिरी डेढ़ साल ऊर्जा मंत्री रहा हूं और इसीलिए देश की ऊर्जा स्थिति से अवगत हूं। मैं आज भी इस संदर्भ में जानकारी लेता रहता हूं कि हमारे देश में ऊर्जा की स्थिति क्या है। आज भी देश के आधे से ज्यादा राज्य हैं जहां 55 प्रतिशत से अधिक गांवों में बिजली नहीं है। आज भी 40-45 प्रतिशत ऐसे गांव हैं जहां बिजली के लिए जो डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम चाहिए, वह सिस्टम ही नहीं है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : जब आपका समय आएगा, तब बोलना।

श्री अनंत गंगाराम गीते : आप कहते हैं कि डील होने के बाद घर-घर में बिजली आएगी। लेकिन आज भी 45 प्रतिशत गांव ऐसे

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

हैं, जहां बिजली नहीं है, वहां यह सिस्टम ही नहीं है। अगर मैं गलत हूं तो ऊर्जा मंत्री सुशील कुमार शिंदे जी यहां बैठे हैं, वे मुझे सुधार सकते हैं।...*(व्यवधान)* मैं आपको वही बात रहा हूं कि हमने क्या किया।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : 45 प्रतिशत गांव ऐसे हैं जहां बिजली डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम नहीं है। इसका मतलब है कि बिजली का निर्माण ही नहीं हो पा रहा है और हम वहां तक बिजली नहीं ले जा सकते। आप गांवों की बात छोड़िए, हम दिल्ली में हैं, दिल्ली भारत की राजधानी है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया सभा में शांति बनाए रखें।

[हिन्दी]

लाल सिंह जी आप अपनी सीट पर जाएं।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : दिल्ली राज्य की बिजली ट्रांसमिशन के लिए अपनी कोई सुविधा नहीं है।...*(व्यवधान)* दिल्ली सिंगल मेगावाट भी बिजली जनरेट नहीं करती। आप गांवों की बात छोड़िए। लालू जी आप सुन लीजिए, मैं सरकार की सफलता बता रहा हूं कि आप कितने सफल हैं, यह सरकार कितनी सफल है।

श्री सुरेन्द्र प्रकाश गोयल : महोदय, दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ पावर प्लांट है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाये। आपको इस मामले पर बोलने का अवसर मिलेगा।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री गोयल, क्या आप अपने स्थान पर जाने का कष्ट करेंगे? कृपया अपने स्थान पर जाये। आप सभा में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। अतएव, कृपया अपने स्थान पर चले जाये।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। कृपया बैठ जाये।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : शुरूआत हो गई है, अब इनको जाना ही है। सदन के नेता प्रणव मुखजी ने बिजली के संदर्भ में आंकड़े दिए कि हमारी आज की इन्स्टाल्ड कैपेसिटी 1,44,000 मेगावाट है और यदि हम बिजली का निर्माण नहीं कर सके, पावर जनरेट नहीं कर सके तो वर्ष 2050 तक पवार डेफिसिट 1,50,000 मेगावाट हो सकता है। इस पर उन्होंने चिंता जताई है। वर्ष 2020 तक 4 लाख 50 हजार मेगावाट पर डेफिसिट हो सकता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री (श्री कपिल सिब्बल) : वर्ष 2050 तक बोलिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : वर्ष 2050 तक यह डेफिसिट 4 लाख 50 हजार मेगावाट का हो सकता है। इस तरह की चिंता उन्होंने यहां व्यक्त की है और चिंता जो वह व्यक्त कर रहे हैं, उसे जस्टिफाई करने के लिए ये आंकड़े उन्होंने दिये हैं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : उन्होंने जो आंकड़े दिये हैं, वे गलत नहीं है, उन्होंने सही जानकारी दी है। पिछले महीने ही एक सेमिनार में, हमारे ऊर्जा मंत्री, श्री सुशील कुमार शिंदे ने, हाइड्रो पावर के बारे में जो हमारी पोटेंशल है, उसके बारे में ओपन स्टेटमैन्ट दिया था, जो सारे अखबारों और मीडिया में आया है कि आज भी भारत में जो कैपेसिटी हमें हाइड्रो पावर में, हाइडल में एड करनी है, उसका पोटेंशल 1 लाख 50 हजार मेगावाट का है। कहने का मतलब यह है कि हमारे देश में हाइड्रो पावर का जो पोटेंशल है, वह एक लाख पचास

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री अनंत गंगाराम गीते]

हजार मेगावाट का है। खास तौर पर जो उत्तरी राज्य जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश आदि हैं, इन सारे इलाकों में एक लाख पचास हजार मेगावाट का पोटेंशल हमारे पास है। जो हाइड्रो पावर है, यह दुनिया की सबसे सस्ती और क्लीन बिजली है।...*(व्यवधान)*

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री विलास मुत्तेमवार) : वहां जंगल काटने पड़ेंगे, यह संभव नहीं है। यह एनवॉयरनमैन्ट का मामला है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : यह एनवॉयरनमैन्ट की चिंता नहीं है। एनवॉयरनमैन्ट की कोई चिंता नहीं है। यदि एनवॉयरनमैन्ट की चिंता है, तो सरकार के एक मंत्री इस पोटेंशल के बारे में पब्लिकली क्यों कहते हैं?...*(व्यवधान)* ऐसा नहीं कहा है, हमने भी सर्व किया है, वहां एनवॉयरनमैन्ट की कोई चिंता नहीं है, वहां एनवॉयरनमैन्ट क्लियरेन्स हो सकता है। इसमें सरकार की मानसिकता चाहिए, सरकार की काम करने की इच्छा चाहिए। जिस हिम्मत से पूरी सरकार को दांव पर लगाकर न्यूक्लियर डील के लिए आप जा रहे हैं, परन्तु यहां आप हाइड्रो पावर के मामले में अपनी हिम्मत को क्यों हार रहे हैं?...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कुछ भी रिकार्ड पर नहीं जायेगा।

*(व्यवधान)**

श्री अनंत गंगाराम गीते : यदि आपको पसंद नहीं होगा, तो मैं बैठ जाऊंगा। उपाध्यक्ष जी, मुझे हर बात पर टोका जा रहा है। मेरा आधा समय तो टोका-टोकी में ही जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया आप कंटीन्यू करें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : महोदय, जो प्रस्ताव सदन में चर्चा के लिए उपस्थित है, उस प्रस्ताव के बाहर हमने कुछ नहीं कहा है। हम जो भी कह रहे हैं, हमने वास्तविकता को सामने रखा है।

उपाध्यक्ष महोदय : लालू जी, कृपया आप डिस्टर्ब मत कीजिए, जब आपकी बारी आयेगी, तब आप बोलिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : यदि आप उसे स्वीकार नहीं करना चाहते हैं तो अलग बात है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया उन्हें बोलने दें।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री अनंत गंगाराम गीते : वही मैं बता रहा हूं, मैं उसी पर आ रहा हूं। आज यह हालत है कि महाराष्ट्र जैसा राज्य, जो एक समय देश में पहले नम्बर का स्टेट था, आप विश्वास नहीं करेंगे, आज महाराष्ट्र में 14 घंटे की लोडशैडिंग है।...*(व्यवधान)* वहां 14 घंटे बिजली नहीं है। लगता है कि अभी 16 घंटे होना बाकी है। वहां यह हालत है। ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया सुनिये, डिस्टर्ब करने का यह कोई तरीका नहीं है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : जो वास्तविकता है, सरकार उसे स्वीकार करना नहीं चाहती है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : अब आप उनका टाइम खराब न करें।

श्री अनंत गंगाराम गीते : आज महंगाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं। आज देश की क्या स्थिति है।

सरकार ने साठ हजार करोड़ रुपये के ऋण माफी की घोषणा की और चार करोड़ किसानों का पचार हजार करोड़ का कर्जा माफ कर दिया। जो पांच हैक्टेयर से ऊपर के किसान हैं, उनके वन टाइम सैटलमैंट के लिए साठ हजार करोड़ रुपये की घोषणा की, लेकिन बजट में एक पैसे का भी प्रोविजन नहीं है, एक रुपये का भी प्रोविजन नहीं है। आप बताइए कि क्या आपके बजट में एक रुपये का प्रोविजन है? एक रुपये का भी प्रोविजन नहीं है। आपने घोषणा की।...*(व्यवधान)* आप भी जब जनता के सामने जाओगे, अभी जनता के सामने जाना है, तब किसान आपसे यही सवाल करेंगे। किसानों की आत्महत्या लगातार चल रही हैं। बैंकों को आदेश दिये गये कि जिनका कर्जा माफ है, उनकी लिस्ट लगा दो, बैंकों ने लिस्ट लगा दी है। ...*(व्यवधान)* पहले आप सुन लीजिएगा, बाद में मुझे जवाब दीजिएगा। यदि मैं कुछ गलत कह रहा हूं तो आप सुधार कर सकते हैं। उपाध्यक्ष जी, आज बैंकों को आदेश दिये गये हैं, बैंक मुसीबत में हैं। जो नेशनेलाइज्ड बैंक हैं, वे रिजर्व बैंक के तहत आते हैं, एक बार एक फतवा रिजर्व बैंक से निकल गया तो उनको उसे मानना है। उनके पास कोई चारा नहीं है। लेकिन जो सहकारी बैंक्स हैं, जो सहकारिता की सोसायटीज हैं, जो गरीबों की हैं, जो शेयर होल्डर्स की हैं,...*(व्यवधान)* इन कोआपरेटिव बैंकों से जो कर्जा गया है, उन कोआपरेटिव बैंकों को धन कहां से आएगा? नेशनेलाइज्ड बैंकों तक को अभी तक धन नहीं गया है।...*(व्यवधान)* खाली उन्होंने लिस्ट लगायी है। आज ऐसी स्थिति है।...*(व्यवधान)* मैं महाराष्ट्र की बात कहता हूं। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज सूखे की स्थिति पूरे महाराष्ट्र में है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : यह कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी जब बारी आएगी तो आपको जो कहना हो, आप कह लेना लेकिन जब कोई दूसरा बोलता है तो कम से कम उसकी बात सुनिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, आज महाराष्ट्र में दुर्भाग्य से सूखे की स्थिति है। लगभग पूरे महाराष्ट्र में- विदर्भ में, मराठवाड़ा में सूखे की स्थिति है। उस तरफ तो यह हालत है कि किसानों ने एक बार बीज बोया, इंतजार किया, बारिश नहीं आई, फिर दोबारा बीज बोया, अब तीसरी बार बीज बोने का समय है लेकिन अभी भी वर्षा नहीं है। जिनका कर्जा आपने माफ किया है और वह किसान यदि बैंक में जाता है कि मुझे कर्जे की जरूरत है, आप मुझे नया कर्जा दे दीजिए, बैंक इंकार कर रहे हैं, नहीं दे रहे हैं।...*(व्यवधान)* कहीं भी नहीं दे रहे हैं।...*(व्यवधान)* आप गांवों में जाइए, आप वहां जा नहीं सकेंगे। आप मेरी बात पर यकीन करिए। जिस दिन आपकी गांव में जाने की नौबत आएगी, आप गांव में नहीं घूम सकेंगे। जिनका कर्जा माफ किया है, उनको नया कर्जा नहीं मिल रहा है और न ही उनकी अर्जी स्वीकार की जा रही है और जिन्होंने ईमानदारी से कर्जा दिया है, ईमानदारी से इंस्टॉलमेंट दी है, वैसे किसानों को भी आज बैंक कर्जा नहीं दे रहे हैं।...*(व्यवधान)*

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल) : उपाध्यक्ष जी, ये पिछले बीस मिनट से एक ही बात बोल रहे हैं। इनके पास नया कुछ कहने के लिए नहीं है।...*(व्यवधान)* जिन लोगों ने पैसा इन बैंकों से ले रखा होगा, उनका माफ नहीं हो रहा होगा।...*(व्यवधान)*

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, मैं देश की जनता की स्थिति को सामने रख रहा हूं। आप देश के किसानों को गुमराह कर रहे हैं। अलग-अलग बयान होते हैं।...*(व्यवधान)* कर्जामाफी के नाम पर किसानों के साथ मजाक किया जा रहा है। आज आप विदर्भ के किसी भी गांव में चले जाइये, आपको मालूम होगा...*(व्यवधान)** उपाध्यक्ष जी, विदर्भ के मंत्री यहां बैठे हुये हैं। वे गांवों में जायें और वहां के राष्ट्रीयकृत बैंकों में जाकर जानकारी लें और किसानों से पूछें कि इस साल किन-किन बैंकों ने कर्जा दिया है। अगर ऐसा एक भी उदाहरण दीजियेगा, तो मैं अपने संसद सदस्य पद से इस्तीफा दे दूंगा।...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री प्रफुल पटेल) : आप क्या बात कर रहे हैं?

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाये। आपकी बारी आने वाली है। तब आप अपनी बात कह लेना।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, आप विदर्भ के किसी जिले के गांव में चले जायें, किसान परेशान हैं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : किसी सदस्य की बात रिकॉर्ड पर नहीं जा रही है।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने पहले भी कहा है और फिर कह रहा हूं कि जब कोई दूसरा बोल रहा हो तो उसे डिस्टर्ब न करें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप मेरी बात सुनिये। आपकी बारी आयेगी तो जो आपको कहना हो, कह लेना।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अब अपनी बात समाप्त करें।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जायें।

(व्यवधान)

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया मेरी बात सुने।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री प्रफुल पटेल, मैं आपको बोलने की अनुमति दूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री प्रफुल पटेल : उन्होंने जो बयान किया है कि अगर मेरी बात गलत होगी तो मैं सदन से इस्तीफा दे दूंगा। यह कैसे प्रमाणित होगा?

उपाध्यक्ष महोदय : जब आपकी बारी आयेगी, तो आप अपनी बात रखियेगा।

श्री प्रफुल पटेल : उपाध्यक्ष जी, मैं सरकार की ओर से कह रहा हूं कि अगर इनकी बात गलत साबित करूं तो क्या ये इस्तीफा देंगे?...*(व्यवधान)* सरकार जवाब देने के लिये तैयार है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : इस तरह तो हाउस का टाइम वेस्ट हो रहा है।

(व्यवधान)

श्री प्रफुल पटेल : उपाध्यक्ष जी, ये गैर-जिम्मेदाराना बयान दे रहे हैं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : मैं आपको बोलने के लिये मौका दूंगा। अगर नहीं दूंगा तब आप कहना।

(व्यवधान)

श्री प्रफुल पटेल : आप इस्तीफा दीजिए।

सायं 5.59 बजे

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन हुए*]

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मुझे विचार करने दें। मुझे पता करता हूं।

(व्यवधान)

सायं 6.00 बजे

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए। छः बज गए हैं।

[अनुवाद]

जब तक हम बहस समाप्त नहीं करते हैं तब तक के लिए सभा के समय का विस्तार करते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक मिनट रुकें। कृपया बैठ जायें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : एक मिनट रुकें। मैं यहां नहीं था; मुझे दुख है; मुझे पता करने दें।

(व्यवधान)

श्री प्रफुल पटेल : महोदय, माननीय सदस्य ने ऋण माफी के संबंध में एक वक्तव्य दिया है तथा कहा है कि यदि वे गलत साबित होते हैं तो वे इस्तीफा देने को तैयार हैं। अगर वे वक्तव्य दे रहे होते हैं तो या तो वे स्वयं तथ्य प्रस्तुत करें या वे हमें ऐसा करने की अनुमति दें।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपकी बारी आएगी।

(व्यवधान)

श्री प्रफुल पटेल : उन्हें त्यागपत्र देना चाहिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य, मुझे विश्वास है कि आप इसके बाद बोलेंगे। श्री गीते जारी रह सकते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बहुत अच्छा-आपके पास कहने के लिए और कुछ नहीं हैं?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे दुख है; आपका समय भी समाप्त होता है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप क्या करने की कोशिश कर रहे हैं?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, मुझे बोलने दिया जाए। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए। आपके कहने से इनका भाषण नहीं होगा।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री गीते, कृपया अपना स्थान ग्रहण करें, आप अधिक से अधिक और दो मिनट का समय ले सकते हैं। आपकी पार्टी के लिए 16 मिनट का समय था, आपने 32 मिनट ले लिया है। मुझे दुख है; मैं इससे ज्यादा की अनुमति नहीं दे सकता हूं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप दो मिनट में अपना भाषण खत्म कीजिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप मजाक कर रहे हैं, यह अच्छा नहीं लगता।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, 16 मिनट में 12 मिनट तो टोका टाकी हुई है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए, आपका एक मिनट तो चला गया।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, चार दिन पहले कांग्रेस के युवा नेता राहुल गांधी जी विदर्भ में गए थे। उन्होंने जो बयान दिए हैं, उन्हें आप एक बार पढ़ लीजिए। आप मेरी बात मत सुनिए, अपने युवा नेता कांग्रेस के राहुल गांधी जी वहां गए थे, उनके किसानों के कर्जे के संदर्भ में क्या बयान आए हैं, उसे आप पढ़ लीजिए। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हम उसे पढ़ लेंगे।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : मैं गलत नहीं कह रहा हूं।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, उन्होंने वहां जो स्थिति है, उसका बयान किया है। आप उसे पढ़ लीजिए, सिर्फ मेरा कहने का ढंग अलग है, वही बात मैंने अपने ढंग से कही है।...*(व्यवधान)* उनकी हालत दिन-प्रति-दिन खराब होती जा रही है। कर्जा माफी का सिर्फ नारा हो चुका है, लेकिन आज सारी जगह किसान परेशान हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष महोदय, न्यूक्लियर डील के मामले पर वामपंथियों ने सरकार का समर्थन वापस लिया है।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह आप पहले बोल चुके हैं, अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए।

(व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष महोदय, आप मुझे थोड़ा बोलने का समय दीजिए।

अध्यक्ष जी, एन.डी.ए. का समय है।

अध्यक्ष महोदय : आपकी पार्टी का समय एन.डी.ए. के समय में नहीं आता है। आपकी पार्टी का समय अलग है। एन.डी.ए. का भी टाइम नहीं बचा है। अब श्री भर्तृहरि महताब बोलेंगे।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, मैंने एक भी गलत बयानी नहीं की है और न प्रस्ताव के अलावा कुछ कहा है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, मुझे समाप्त तो करने दीजिए। हमारा टाइम है, उसी में हम बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : 12 घंटे की डिबेट में आपकी पार्टी के 16 मिनट हैं। ऑलरेडी 37 मिनट हो गए हैं और कितना बोलेंगे। जब बड़ी पार्टी बनकर आएंगे, तो आपको ज्यादा समय मिलेगा।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, मुझे अपनी बात समाप्त तो करने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : यही तो हम रिक्वैस्ट कर रहे हैं।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट से ज्यादा नहीं बोलूंगा।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, बोलिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, न्यूक्लियर डील के मामले पर वामपंथियों ने समर्थन वापस लिया। उन्होंने बिना कारण के समर्थन वापस नहीं लिया है। उन्होंने कारण दिए हैं। उन सारे कारणों का जवाब सरकार को देना है, लेकिन अभी तक किसी कारण का जवाब नहीं मिला है। हाइड एक्ट के बारे में यहां पर श्री डी.पी. यादव जी कह रहे थे कि वह तो अमरीका का कानून है और वह तो हम पर लागू नहीं होता। यही तो खतरा है। आप समझ नहीं रहे हैं। श्री डी.पी. यादव कह रहे थे कि हम भी हाइड एक्ट बनाएं। खतरा यही है कि हाइड एक्ट बनाकर अमरीका ने अपने आपको प्रोटैक्ट कर लिया है। यदि अमरीका की सम्प्रभुता पर या अमरीका के इंटरैस्ट पर कोई बाधा किसी विदेशी करार से आती है, तो उसे खारिज करने का अधिकार, उस हाइड एक्ट ने ही उन्हें दिया है, हमें नहीं। यही तो सबसे बड़ा खतरा है।

अध्यक्ष महोदय : आपके दो मिनट हो गए। अब आप बैठ जाइए। आपने बोल दिया। अब आप इसी बात को कितनी दफा बोलेंगे। आप बैठ जाइए।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, एक ही सेंटेंस में अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। लम्बा सेंटेंस नहीं, छोटे सेंटेंस में आप अपनी बात समाप्त कीजिए और बैठिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : दुनिया में आज अगर कोई सबसे बड़ा व्यापारी है, तो वह अमरीका है। न्यूक्लीयर डील के एग्रीमेंट के इस व्यापार के माध्यम से, इस देश में दूसरी ईस्ट इंडिया कंपनी आ रही है। मैं यह चेतावनी देता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री महताब, आपके पस बोलने के लिए 15 मिनट का समय है। कृपया अन्य सदस्यों द्वारा उठाए गए मुद्दों को नहीं दोहराएं।

श्री भर्तृहरि महताब (कटक) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस देश के प्रधानमंत्री द्वारा लाए गए प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हूं। विपक्ष के नेता ने मूल रूप से चार मुद्दों को श्रेणीबद्ध किया है जो हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि सप्रंग सरकार के चार वर्षों पर ध्यान दें न कि केवल परमाणु समझौते पर तथा बढ़ते मूल्य, आतंरिक सुरक्षा तथा अमरनाथ विवाद मामलों पर ध्यान दें।

प्रारंभ में, मैं कहूंगा कि सरकार भारत अमेरिका असैनिक परमाणु समझौते पर इतनी तेजी से आगे क्यों बढ़ रही है। मुद्रास्फीति की ऊंची दर से लोगों को काफी परेशानी हो रही है। सरकार लोगों को धैर्य रखने के लिए कहती है लेकिन परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर करने में धैर्यहीनता का परिचय देती है। क्या अमेरिका ने राष्ट्रपति में विश्वास करना इस देश के लोगों में विश्वास रखने से ज्यादा प्राथमिकता रखता है?

जबसे वामपंथ ने कांग्रेस से नाता तोड़ा है। तथा समर्थन वापस लिया है, इस विश्वास मत को अमेरिका भारत असैनिक परमाणु समझौते पर 'ऊपर' या 'नीचे' के मत के रूप में प्रदर्शित करने का अभियान छेड़ा गया है। सदा की तरह, कांग्रेस धोखेबाज है। यह किस तरह, इसकी व्याख्या मैं करूंगा। 18 जुलाई, 2005 को हुए भारत-अमेरिका संयुक्त वक्तव्य के 48 घंटे बाद, हमारे नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तीन मूल मुद्दे उठाए। प्रथम, अमेरिका द्वारा जो कुछ पेश किया जा रहा है इसमें अल्प कालिक रूप से भारत की रणनीतिक अवरोधक कम होगा। द्वितीय, मध्यकालिक रूप से, यह भारत की

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

सामरिक परमाणु क्षमता को कम करेगा तथा तृतीयतः दीर्घकालिक रूप से, यह भारत के सामरिक परमाणु कार्यक्रम को समाप्त करेगा। तीन वर्ष बाद, हाइड एक्ट, 123 समझौता तथा आई.ए.ई.ए. के साथ प्रारूप सुरक्षोपाय समझौते पर से पर्दा हटाने के बाद, ये शंकाएं भविष्यवाणी साबित हुई हैं।

यह तथ्य है कि राजग सरकार ने अमेरिका के साथ महत्वपूर्ण वार्ता की शुरूआत की थी लेकिन यह भी तथ्य है कि भारत बराबर का हिस्सेदार था तथा इस वार्ता में किसी के अधीन नहीं था। हम विश्वास करते हैं कि अमेरिका के साथ राजनीतिक गठजोड़ उतना ही भारत के हित में है जितना कि रूस तथा यूरोपीय समुदाय के साथ रणनीतिक गठजोड़। कांग्रेस के विपरीत, हम सोचते हैं कि आज के भारत के पास बराबर के रूप में व्यवहार किए जाने योग्य शक्ति भी है और अधिकार भी है। अतएव, जब कोई यह बलपूर्वक कहता है कि वह दुर्बलकारी खण्डों को हटाकर भारत के हितों की रक्षा के लिए परमाणु करार पर पुनः बातचीत करेगा, तो इस तर्क में दम है।

मैं स्पष्ट रूप से कहूंगा कि हमारी पार्टी परमाणु ऊर्जा के विरूद्ध नहीं है। हमारी पार्टी अमरीका के साथ रणनीतिक साझेदारी के खिलाफ नहीं है। हमारी पार्टी चाहती है कि भारत दुनिया में परमाणु हथियार सम्पन्न देश के रूप में पहचान बनाने का अपना प्रयास जारी रखे। हमारी पार्टी हमारे देश के विकास के लिए ऊर्जा आत्मनिर्भरता के महत्व को समझती है। यह सभा आयातित हाइड्रो कार्बन पर भारी और बढ़ती निर्भरता तथा बढ़ती तेल कीमतों से अवगत हैं जिसने हमें स्वदेशी पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत की खोज करने पर मजबूर कर दिया है। क्या हमें यह पता नहीं है कि फ्रांस में उसकी ऊर्जा का 70 प्रतिशत परमाणु ऊर्जा है, जापान में 50 प्रतिशत, जर्मनी में भी इतना ही है और चीन परमाणु ऊर्जा उत्पादन में आगे बढ़ रहा है तथा भारत का कार्यक्रम यदि हम अभी आरंभ करें तो वर्ष 2020 तक हमारी ऊर्जा आवश्यकताओं का मात्र 10 प्रतिशत तक पहुंचेगा? अतएव, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत होना चाहिए किन्तु किस कीमत पर? आज मेरे राज्य में बिजली की प्रति यूनिट दर रु. 2.30 है। मैंने कहीं पढ़ा है कि इस परमाणु ऊर्जा की लागत प्रति यूनिट 7.80 रु. होगी। इसे कौन खरीदेगा? प्रधान मंत्री ने वैज्ञानिक तथा सुरक्षा प्रतिष्ठानों को यह समझाने में बड़ी मेहनत की है कि भारत के रणनीतिक हितों के साथ समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने बार-बार इस सभा में यह कहा है।

यह सही है कि कई लोगों ने 123 समझौता नहीं पढ़ा है। कई लोगों ने हाइड एक्ट या यूनाइटेड स्टेट्स एटामिक एनर्जी एक्ट, 1954 नहीं पढ़ा है, फिर भी आश्चर्यजनक रूप से कई लोग करार के बारे में बोलते हैं और संशोधन सुझाते हैं। मैं एक प्रश्न पूछता हूं। क्या सरकार अथवा प्रधानमंत्री परमाणु ऊर्जा अधिनियम में संशोधन पर विचार कर रहे हैं? आपने मौनव्रत धारण कर रखा है। क्या आप चाहते हैं कि यह भावी पीढ़ी करे?

एक हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो गयी है। वामदलों ने समर्थन वापस लिया किन्तु माननीय राष्ट्रपति को कई गैर संसद सदस्यों द्वारा पत्र सौंपा गया। माननीय प्रधानमंत्री जापान से लौटते हैं और माननीय राष्ट्रपति से मिलते हैं तथा विश्वास मत प्राप्त करने के लिए संसद का एक विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध करते हैं। यह तकनीकी बारिकियों का मुद्दा नहीं है; यह संसदीय शिष्टाचार की मर्यादा और शालीनता से जुड़ा मुद्दा है।

इस घटना से कुछ दिन पहले एक और हास्यास्पद घटना हुई। इस सरकार ने औपचारिक घोषणा की कि वह आई.ए.ई.ए. सेफगार्ड समझौते के ब्यौरों के बारे में वामदलों को नहीं बताएगी क्योंकि वे सरकार का अंग नहीं हैं। किन्तु फिर हमें पता चला कि समझौता पहले ही सबके लिए इंटरनेट पर उपलब्ध है। हम इस करार को एक राष्ट्रीय मुद्दा बताते हैं। फिर भी प्रमुख विपक्ष से बात नहीं की गयी, किन्तु बंद दरवाजों में बैठकें हुई। हम इसे राष्ट्रीय मुद्दा कहते हैं और उसके बाद इसे एक मुस्लिम, एक सिख या एक सांप्रदायिक मुद्दा अथवा तेलंगाना या हरित प्रदेश या झारखंड के मुद्दे के रूप में बदला जा रहा है। इसमें भारतीय कहां हैं? अपने गठबंधन के सहयोगियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए सरकार को कतिपय राज्यों की सीमाएं बदलने को कहा गया है; उड़ीसा के तीन जिलों का भी उल्लेख है। जब इस सरकार को यह भरोसा नहीं है कि यह 48 घंटों तक टिकेगी या 108 दिनों तक तो इसके आश्वासन का मतलब क्या है? मैं इस सरकार से पुरजोर अनुरोध करूंगा कि उड़ीसा के लोगों की भावनाओं के साथ नहीं खेलें।

महोदय, मैं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की ओर भारत की परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की पहल पर अपनी प्रतिक्रिया का विश्लेषण करना चाहूंगा। इस चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में भारत की भावना और उपलब्धियों के प्रति मैं बहुत अधिक आदर भाव रखता हूं। जब कभी मैं आत्मनिर्भर भारत, हम भारत को जहां ले जाना चाहते हैं उस प्रगतिशील भारत का सपना देखता हूं तो प्रायः उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में सोचता हूं जिन्होंने इस कार्यक्रम का नेतृत्व किया। हमारे पास आरंभ में कुछ भी नहीं था किन्तु हमने असंभव को कर दिखाने का साहस किया। इसके आरंभ से ही जो दिशा हमने अपनायी वह हमारी अपनी थी। हमारा कार्यक्रम साहसपूर्ण तथा मुख्यतः स्वप्रेरित था। हमने वह सीखा जो हम नहीं जानते थे। हमने यूरेनियम की तलाश की और कुछ पाया जो काफी नहीं था। प्रो. भाभा ने थोरियम को यूरेनियम 233 के फिसाइल

[श्री भर्तृहरि महताब]

तत्व में बदलने की आवश्यकता को समझा। किन्तु यात्रा लम्बी है; दूरी को काफी हद तक नापा जा चुका है। एक के बाद एक सरकारों ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने की कोई इच्छा नहीं जताई क्योंकि हमने महसूस किया कि यह अत्यधिक भेदभाव कारी है। वर्ष 1947 से 1998 तक एक सतत् प्रक्रिया जारी थी और उसके बाद आज हम यहां है। द्विपक्षीय समझौते के बाद हम बातचीत की बहुपक्षीय प्रक्रिया में पहुंचे हैं। 1974 और बाद में 1998 के साहसिक प्रयासों के पश्चात, मैं यह कहने में संकोच नहीं करूंगा कि संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाली दुनिया हमारे कार्यक्रम को अवरूद्ध करने के लिए एकजुट हो गयी। कोई भी भारत पर प्रसार का दोषारोपण करने में सफल नहीं हो पाया है। भेदभाव के कुएं में रहने में खुश क्यों हैं? हममें आत्म विश्वास है। हम अपने विकास और वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं और फिर भी कुछ रूकावटें हैं। हमें उन्हें पहचानना होगा। हमारे पास पर्याप्त यूरेनियम नहीं है। हमें इस प्रतिबंध से बच निकलना होगा। किन्तु अन्य प्रतिबंध भी हैं। वे सामग्री, रसायन, मशीन, इलेक्ट्रानिक कम्पोनेंट, कम्प्युटर तथा नियंत्रण प्रणाली के डिजाइन और विनिर्माण से संबंधित हैं। हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तक सीमित हैं। भेदभाव सबके लिए नुकसानदेह हैं। मुझे समझाया गया है कि परमाणु कार्यक्रम में शामिल प्रौद्योगिकी का केवल छोटा सा भाग ही वास्तव में आणविक है। अत: प्रश्न यह है कि यदि परमाणु समझौता भारत को आगे ले जाएगा तो बदले में हम क्या दे रहे हैं? यही हमारी चिन्ता है। क्या इस प्रक्रिया में हम अमरीका के अनुचर हो रहे हैं? कोई सौदा, कोई समझौता बराबरी पर किया जाना चाहिए। किन्तु आज चिन्ता की बात यह है कि जो सौदा तैयार किया गया है वह हमें अनुचर बना देता है। दुनिया हमें परमाणु हथियार सम्पन्न देश के रूप में मान्यता नहीं देती है। निश्चय ही, यह नहीं कहता कि भारत एक गैर परमाणु हथियार सम्पन्न राज्य है किन्तु क्या हमें इस खास श्रेणीकरण से ख़ुश हो जाना चाहिए और अपने रणनीतिक कार्यक्रमों को धीमा करने की अनुमति देनी चाहिए? यही हमारी चिन्ता है।

मैं इस मत को नहीं मानता कि आई.ए.ई.ए. के समक्ष मसौदा पर बातचीत नहीं हो सकती है। अमरीका के साथ द्विपक्षीय समझौते के बाद हम बहुपक्षीय समझौता करने जा रहे हैं। भारत सशर्त सुरक्षोपाय (सेफगार्ड) समझौता स्वीकार कर सकता है। मैं विनम्रतापूर्वक कहूंगा कि इस प्रकार के सौदे की बात हो तो राजनय और अन्तर्राष्ट्रीय संधि और समझौते को राजनयिक और वैज्ञानिकों द्वारा किया जाना बेहतर होगा। किन्तु राष्ट्र के सम्मान और हित का संरक्षण करने का निर्णय केवल राजनीतिक स्तर पर ही किया जाना चाहिए।

प्रधान मंत्री ने जो व्यापक आम राय की बात की थी वह आज यहां नहीं है। बल्कि प्रधान मंत्री ने अपने मंत्रि परिषद में इस सभा का विश्वास प्राप्त करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

वामदलों ने पाला बदलकर उन्हें छोड़ दिया है। भारत अमरीका परमाणु समझौते को खटाई में डालने के लिए वामपंथियों द्वारा समर्थन वापस लेने से शुरू हुए संकट से पता चलता है कि किस प्रकार जब गलतियां निकालने का एजेण्डा सामने आता है तो आदर्श सिद्धांत और नीतियां हवा हो जाती हैं।

सप्रंग सरकार नाममात्र का बहुमत हासिल करने में सफल हो सकती है परन्तु इसे क्या यह माना जाएगा कि उन्हें देश की जनता का समर्थन प्राप्त है? मुझे यह समझ में नहीं आता कि ऐसी जल्दबाजी क्या है।

मैं पहले ही यह कह चुका हूं कि प्रधान मंत्री द्वारा अपने मंत्रिपरिषद में विश्वास व्यक्त करने के लिए यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। हर व्यक्ति इन बातों पर ध्यान देगा कि इस सरकार ने पिछले चार वर्ष और दो महीनों के दौरान क्या-क्या किया है। क्या इसने जनता के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाया है। क्या इसने जनता को सुरक्षा मुहैया करायी है? क्या इसने मूल्य वृद्धि पर लगाम लगायी? क्या इसने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर देश का गौरव बढ़ाया है?

यह सरकार हर मोर्चे पर विफल रही है। तथापि, प्रधान मंत्री जी इस सदन का विश्वास हासिल करना चाहते हैं। इस सरकार ने भुवनेश्वर में एम्स जैसा एक संस्थान स्थापित करने का बार-बार आश्वासन दिया है। इस संबंध में क्या हुआ? अब आप जाने वाले हैं। पारादीप में तेलशोधक कारखाना शुरू का क्या हुआ? क्या इंडियन ऑयल कारपोरेशन ने एक निजी उद्यम को मदद पहुंचाने के उद्देश्य से इस परियोजना से अपने हाथ नहीं खींच लिए? और यह तब घटित हुआ है जब यह सरकार समर्थन जुटाने में लगी है।

अध्यक्ष महोदय : अब कृपया अपनी सीट पर बैठ जाइए। मैंने आपको आपके दल के लिए आवंटित समय से ज्यादा समय दे दिया है।

श्री भर्तृहरि महताब : अंतत:, सप्रंग सरकार के शासनकाल के दौरान, हमारा संघीय ढांचा तार-तार हुआ है। राष्ट्रीय दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण साबित हुआ है। मुझे समझ में नहीं आता कि आखिर प्रधान मंत्री जी इस सदन का विश्वास हासिल करना क्यों चाहते हैं। क्या इसका मकसद वाम दलों को उनका स्थान बताना है? क्या इसका मकसद भविष्य में और अधिक सहयोगियों को अपने साथ लेना है? यदि ऐसी बात है तो जनमत क्यों न हासिल किया जाए?

मैं यह कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं कि मेरी पार्टी प्रधान मंत्री द्वारा लाए गए इस प्रस्ताव का विरोध करता है।

[हिन्दी]

विदेशी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आनन्द शर्मा) : महोदय, मैं प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत के पक्ष में इस सदन में अपनी बात कहने जा रहा हूं। पक्ष-विपक्ष की तरफ से सुबह से चर्चा हो रही है। बुनियादी प्रश्न यही है कि क्या किसी नयी बात पर चर्चा के लिए इस सदन का विशेष सत्र बुलाना पड़ा या कुछ ऐसे हालात बने।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उन्हें याद दिलाने के लिए धन्यवाद। आगे बोलिए।

[हिन्दी]

श्री आनन्द शर्मा : जिससे राजनीति के अंदर हो ध्रुव, जो दोनों अपनी विचाराधारा की बात कहते हैं, सिद्धान्तों की राजनीति की बात करते हैं, मूल्यों की बात करते हैं, वह देश के अंदर एक अवसर देखकर, एक वह सरकार जो इस देश के जनहित का कार्य कर रही है, वह सरकार जिसने पिछले चार सालों में हर वह कार्य किया है, सामाजिक क्षेत्र में, कृषि के क्षेत्र में, गांवों के क्षेत्र में जो शायद पिछली सरकार के गठबंधन को...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री शाहनवाज़ हुसैन, अब आप बोलने वाले हैं। यदि कोई व्यक्ति आपके भाषण में व्यवधान पैदा करता है तो आपको कैसा लगेगा? ऐसा न करें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : महोदय, मैंने कुछ नहीं कहा है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ऐसा लगता है, आपके दोनों साइड जो सदस्य बैठे हुए हैं, वे हलचल करते हैं।

(व्यवधान)

श्री आनन्द शर्मा : महोदय, हमारे एन.डी.ए. के मित्रों, को, बी.जे.पी. के मित्रों को छः वर्ष का समय दिया गया। छः वर्ष के समय में जो प्राथमिकताएं इस सरकार के दिखाई हैं, यू.पी.ए. सरकार, प्रधान मंत्री जी और यू.पी.ए. की अध्यक्षा, श्रीमती सोनिया गांधी जी ने सामाजिक क्षेत्र के लिए, शिक्षा के क्षेत्र में जो पहले बजट का प्रावधान था, वह 8 हजार करोड़ रुपये से बढ़ाकर आज 32 हजार करोड़ रुपये हो गया, चार गुना बढ़ा है। उसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में, ग्रामीण क्षेत्र में जो इन्वैस्टमैंट हो रही हे, जो इन्फ्रास्ट्रक्चर को बनाने का प्रयास हो रहा है, वह कार्य अपनी रफ्तार से चलता रहे, वही इस देश के हित में है। अगर उस रफ्तार को रोकने के लिए, जिस गति से आज देश प्रगति कर रहा है, उसे रोकने के लिए केवल राजीनतिक अवसरवादिता को सामने लाकर देश को गुमराह किया जा रहा है, देश के हित को कौन देख रहा है, कौन अनदेखा कर रहा है, उसे जनता भी देख रही है। सदन में चर्चा के माध्यम से यह भ्रामक प्रचार, मिथ्या प्रचार कि इस सरकार ने, इस प्रधान मंत्री ने कोई भी वह वायदा, जो इस सदन को, देश को दिया हो, उससे खिलाफी की है, वह बिल्कुल गलत बात है। इस सरकार ने, प्रधान मंत्री जी ने जो इस सदन में कहा, छः बार इस पर चर्चा हुई, पारदर्शिता के साथ, प्रजातांत्रिक मूल्यों को सामने रखते हुए सदन और देश को विश्वास में लिया गया कि सरकार ने क्या पहल की है। देश की जरूरत को देखते हुए, विशेषकर ऊर्जा की कमी, ईंधन की बढ़ती हुई कीमतों को देखते हुए आने वाले समय में हमारी प्रगति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो कदम उठाया गया, वह सबसे बात करके उठाया गया। सरकार की कोशिश रही कि आम सहमति बने।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह क्या बात है कि आप बैठे-बैठे बोल रहे हैं। सदन की कुछ तो गरिमा है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : काफी सक्षम वक्ताओं को बोलना शेष है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : कुछ भी करना चाहते हैं, कुछ भी बोलना चाहते हैं, यह क्या बात है।

(व्यवधान)

श्री आनन्द शर्मा : सभापति महोदय, जैसे मैंने कहा,... *(व्यवधान)*

श्री रामपाल सिंह (विदिशा) : अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी अपने सम्बोधन में आपको सभापति महोदय बोल रहे हैं। यह अध्यक्ष महोदय की गरिमा के अनुरूप नहीं है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : क्या आपको कोई मुश्किल हो रही है? हमें कोई मुश्किल नहीं हो रही है तो आप क्यों बोल रहे हैं। क्या आपको कोई परेशानी है?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप मेहरबानी करके बैठ जाइए। सिल्ली प्वाइंट्स उठाते हैं।

(व्यवधान)

श्री आनन्द शर्मा : माननीय अध्यक्ष जी, अगर आपत्ति यहीं तक सीमित है तो मैं उसे स्वीकार करता हूं, मुझे इसमें कोई कष्ट नहीं है।

अध्यक्ष जी, जैसे मैंने कहा, देश इस बात का साक्षी है कि अगर कभी देश और सदन को ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ विश्वास में लिया गया, तो वह प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह और यू.पी.ए. की सरकार ने लिया। इस सदन में और दूसरे सदन में सात बार चर्चा हुई। जो भी प्रश्न उठाये गये, एक-एक बात का जवाब दिया गया। अगस्त, 2006 में जिन सात बिन्दुओं पर स्पष्टीकरण मांगा गया, प्रधान मंत्री जी ने सदन को और देश को आश्वासन दिया कि समझौता या करार को करने से पहले हर बात को ध्यान में रखा जायेगा। इस करार के लिए, जिसकी चर्चा हुई, उसका उद्देश्य क्या है? उसका उद्देश्य है कि यह देश, जो आज 21वीं सदी में अपनी एक बड़ी भूमिका बना रहा है, यह देश जो परमाणु क्षेत्र के अंदर सक्षम है, वह सक्षमता आजादी के बाद, जो पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की दूरदर्शिता थी, सोच थी, डा. होमी भाभा, डा. राजा रमन्ना, इन सबने मिलकर काम किया, हमारे देश के वैज्ञानिकों ने मिलकर काम किया और सन् 1974 में भारत को, दुनिया को संदेश देने का निर्णय हुआ जब स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी इस देश की प्रधान मंत्री थी। उसके बाद सर्वविदित है कि न्युक्लियर सप्लायर ग्रुप बना और भारत पर पाबंदियां लगीं। उस पाबंदी के माहौल में जहां पर तकनीक पर रोक लगायी गयी, परमाणु ईंधन पर रोक लगी, उसके बावजूद हमारे वैज्ञानिकों ने भारत को सक्षम बनाया कि हमें भी विश्व के अंदर एक परमाणु शक्ति के रूप में स्वीकार किया जाये। हम उनके कृतज्ञ हैं।

हम इस देश के वैज्ञानिकों को बधाई देते हैं कि उन्होंने इस वातावरण में भारत को लक्ष्य की प्राप्ति कराई। लेकिन उसके बाद आज जो चर्चा हो रही है कि यह पहल क्यों हुई, यह करार क्यों हुआ? यह करार जो अलगाव था, आईसोलेशन थी, अंतर्राष्ट्रीय मुख्यधारा से भारत को बाहर कर दिया गया था, उसे खत्म करने के लिए है ताकि भारत मुख्यधारा में बराबरी के दर्जे से शामिल हो। समान अधिकार और समान जिम्मेवारी, जो तमाम उन राष्ट्रों की है, जिनको परमाणु शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया या वे राष्ट्र जिन्होंने एन.टी.पी. पर दस्तखत किये, आज प्रणव जी ने बड़ा खुलासा किया कि हमने क्यों दस्तखत नहीं किये। भारत के अधिकार को, भारत के हितों की रक्षा करने के लिए हमने एक सैद्धांतिक निर्णय किया था कि उस अधिकार को बचाये रखने के लिए हम दस्तखत नही करेंगे। आज विपक्ष के माननीय नेता जी ने कई बातें कहीं। उन्होंने एक आरोप लगाया, जो मैं समझता हूं कि बहुत गंभीर आरोप है। उन्होंने सदन में कहा कि यह सरकार जो करार कर रही है, समझौता कर रही है, उससे भारत का दर्जा एक गुलाम का हो जायेगा। यह बराबरी के दर्जे की बात नहीं है। इस बात को मैं जिम्मेदारी से सदन में रखता हूं कि यह करार या समझौता, जो भारत कर रहा है, वह खुले आम कर रहा है, बराबरी के दर्जे से कर रहा है, किसी से छोटा बनकर नहीं कर रहा है।

दूसरी बात कही गयी कि अमेरिका की कांग्रेस ने जो एक्ट बनाया, वह एक्ट वहां के राष्ट्रपति को एक बार अधिकार देने के लिए कि भारत के साथ नागरिक परमाणु सहयोग कर सके। लेकिन जहां तक भारत का प्रश्न है, माननीय प्रधान मंत्री जी ने सदन में इस बात को स्पष्ट रूप में कहा था कि जहां तक हमारी जिम्मेदारी है, हमारी प्रतिबद्धता है, वह केवल 123 एग्रीमैंट के साथ होगी जिसमें भारत एक बराबरी के दर्जे से अपनी प्रभुसत्ता को बनाये रखते हुए, अपनी संप्रभुता को बनाये रखते हुए दस्तखत करेगा। किसी दूसरे देश की संसद को यह अधिकार नहीं है कि वह कोई कानून बनाये, जो हिन्दुस्तान पर लागू हो। यह बात प्रधान मंत्री जी ने कही है। हम उस बात से हटे नहीं हैं। अभी जो समझौता हुआ है, जिसके कारण हमारे वामपंथी दलों ने अपनी कुछ अलग राय रखी है। हमारे वामपंथी दलों ने जो राय रखी है...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : डा. मनोज, यह आपको शोभा नहीं देता। किसी की अनुमति लिए बगैर, अपनी सीट पर बैठ-बैठ टीका-टिप्पणी करना आपको शोभा नहीं देता।

[हिन्दी]

श्री आनन्द शर्मा : जो बात हमारे वामपंथी मित्रों और नेता, विपक्ष ने कही कि आई.ए.ई.ए. के साथ हुए सेफगाड्‌र्स एग्रीमेंट में

देश के हितों की अनदेखी हुई है। इसके बारे में, मैं सूक्ष्म रूप में यह कहना चाहूंगा कि पहली बार यह समझौता हुआ है जिसमें न केवल भारत के हितों की रक्षा हुई है, बल्कि एक स्पष्ट बात यह हुई है कि हमारी सामरिक परमाणु संस्थाओं और नागरिक परमाणु संस्थाओं के लिए जो सैपेरेशन प्लान है, उसे उन्होंने स्वीकार किया है। अगर किसी को इसके बारे में कोई शक हो तो वह उस एग्रीमेंट को पढ़े जिसमें साफ लिखा गया है:

[अनुवाद]

"अपनी नागरिक और सामरिक परमाणु सुविधाओं और कार्यक्रमों को चरणबद्ध तरीके से चिन्हित व अलग करना..."

भारत यही करेगा।

[हिन्दी]

यह कहना गलत है कि इस एग्रीमेंट में आपको एक परमाणु शक्ति के रूप में नहीं माना गया है। अगर नहीं माना गया है तो समझौते में बार-बार स्ट्रेटजिक या मिलिटरी और सिविलियन फेसिलिटीज को अलग करने की चर्चा क्यों की गयी है। दूसरी बात यह है कि जब यह तय करना हो कि हमारी कौन सी न्युक्लियर फेसिलिटी सिविलियन है और कौन सी स्ट्रेटजिक या मिलिटरी, तो वह निर्णय करने का अधिकार भारत को है, किसी अन्य को नहीं। मैं यह बात रिकॉर्ड के लिए स्पष्ट करना चाहता हूं क्योंकि माननीय नेता, विपक्ष ने खुलकर इसकी चर्चा की है। इसमें लिखा गया है।

[अनुवाद]

"भारत अपने स्व-निर्णय के आधार पर भारत द्वारा पैराग्राफ 13 में उल्लिखित घोषणा में चिन्हित प्रतिष्ठनों को एजेन्सी सुरक्षोपाय हेतु प्रस्तुत करने के अपने निर्णय को लिखित में एजेंसी को अधिसूचित करेगा।"

[हिन्दी]

सदन को और इस देश को कोई भ्रम नहीं रहे, कोई ऐसी बात न कही जाए जो सत्य को नकारती हो, इसलिए ये बातें कहना मैंने जरूरी समझा है। माननीय नेता, विपक्ष ने यह भी आरोप लगाया था कि यह सरकार बड़े गुपचुप तरीके से काम कर रही है। मुझे इस बात पर हैरत है, सदन और देश को भी इस पर हैरत होगी। मल्होत्रा जी, जब आपकी सरकार थी, तब दस महीने तक बात होती रही, उस दस महीने के समय में तत्कालीन विदेशमंत्री माननीय जसवंत सिंह जी स्ट्रोब टालबोट साहब से बात करते रहे। उस समय न तो सदन को विश्वास में लिया गया और न देश को विश्वास में लिया गया। उसे कहा जाता है कि बिल्कुल गुपचुप तरीके से काम करना, गुपचुप तरीके से देश के सामरिक हितों पर चर्चा करना, उन पर पेशकश और ऐसे समझौतों पर दस्तखत करने की पेशकर जिनको कभी भी यह देश स्वीकार नहीं करता जब तक कि वह बराबरी पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय संधि न हो। मैं सी.टी.बी.टी. का जिक्र कर रहा हूं। यह भी कहा गया कि डील को लेकर सरकार इस सदन के अंदर आए। सरकार वर्ष 2005 से लेकर आज तक बार-बार सदन में आई। यह भी कहा गया कि देश के संविधान को बदल दिया जाए जिससे रेटीफिकेशन की बात सदन के अंदर आए। मैं स्ट्रोब टालबोट की किताब में से केवल एक पैराग्राफ पढ़ना चाहूंगा।...*(व्यवधान)*

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, क्या यह किताब वेदवाक्य है, जिसे बार-बार पढ़ा जा रहा है। अगर इसमें कुछ गलत बयानी की गयी हो, क्या इसे बार-बार सदन में पढ़ा जाएगा।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप इसे असत्य कह दीजिए।

श्री आनन्द शर्मा : महोदय, मैं यह बात पूरी जिम्मेदारी के साथ केवल इसलिए कह रहा हूं क्योंकि पूरा देश और दुनिया आज इसे देख रही है। मैं नेता, विपक्ष का आदर करता हूं। वह बुजुर्ग भी हैं, अनुभवी भी हैं, इसीलिए दुख है कि अगर इतने कद के व्यक्ति द्वारा कोई ऐसी बात कह दी जाए जो उन्हीं की सरकार के कार्यकाल के क्रियाकलाप को नकारती हो इसलिए मेरा फर्ज बनता है कि मैं उस बात को सामने रखने का काम करूं। यह बात जसवंत सिंह जी को भी पता है और उन्होंने कभी इसका खंडन नहीं किया। इस किताब के पेज नम्बर 45 में कहा गया है वह मैं बताना चाहता हूं।

[अनुवाद]

श्री जसवंत सिंह ने कहा, भारत मई के अंत तक सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करेगा।...*(व्यवधान)* यदि ऐसा वस्तुत: हुआ तो यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम होगा, परन्तु अभी भी अनिश्चित भविष्य के लिए समझौते के अनुसमर्थन की बात शेष रह जाती है। मैंने जब इस बात का उल्लेख किया तो जसवंत जी ने मुझे आश्वस्त किया कि भारतीय प्रणाली के अंतर्गत, हस्ताक्षर अनुसमर्थन के समान है तथा उन्होंने संबंधितों संसदीय प्रक्रिया को औपचारिकता मात्र बताया, जब अनुसमर्थन और संसद को विश्वास में लेने की बात आती है तब आप इस बात को विपक्ष के माननीय नेता को भी पर्याप्तत: और सही-सही बताएं।

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : रिकार्ड के लिए हम कहना चाहते हैं कि यह बिल्कुल असत्य है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है आपकी बात भी रिकार्ड पर आ गई है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जो कुछ भी महत्वपूर्ण होता है, कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित किया जाता है।

[हिन्दी]

श्री आनन्द शर्मा : अध्यक्ष महोदय, नेता विपक्ष ने और भी कई बातें कही हैं। मैं उनकी एक बात पर छोटी सी टिप्पणी करना चाहता हूं। उन्होंने पोखरण तीन के बारे में बात कही कि यह अधिकार हमसे ले लिया गया है कि भारत दोबारा ऐसा विस्फोट कर सकता है या नहीं। मैं कहना चाहता हूं कि अगर भारत को उस चीज की जरूरत है, चाहे वह 123 एग्रीमेंट है या आई.ए.ई.ए. के साथ सेफगार्ड एग्रीमेंट है, ये दोनों मेरे पास हैं, जिसने भी इन्हें पढ़ा है, चाहे वे वामपंथी साथी हों, चाहे उनके नए मित्र बी.जे.पी. और एन.डी.ए. हों, दोनों समझौतों में कहीं यह नहीं लिखा गया है। भारत का अधिकार भारत का रहेगा। जब जरूरत होगी, हमारी राजनीतिक लीडरशिप है, वह फैसला करेगी। यह अधिकार अपने पास हमने तब रखा था, जब 1968 में एन.पी.टी. पर दस्तखत हुए थे। उस समय कांग्रेस की सरकार और इंदिरा जी ने फैसला किया था और उसे हमने नहीं खोया है। अगर करार के अंदर एक बात है तो वह यूनीलैटरल मॉरीटोरियम को जारी रखने की है। स्वेच्छा से एक तरफा पाबंदी जो लगाई है।

अगर याददाश्त कमजोर हो जाए तो गम्भीर बात है। अगर नेता विपक्ष और विपक्ष में, क्योंकि अभी तो आप बड़ी जिम्मेदारी की बात करते हैं और आपको पूरे देश की जिम्मेदारी भी देखनी है, तो यह याददाश्त कायम रखना भी जरूरी है। मैं कहना चाहता हूं कि वह निर्णय भी आपका था। प्रधान मंत्री जी ने तो यही कहा है कि जो पेशकश थी, हम उसे जारी रखेंगे। इसके अलावा अगर कोई एक शब्द हो तो हमें बता दें।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : हाइड एक्ट में है।

श्री आनन्द शर्मा : वह मैंने बता दिया है। याददाश्त जब कम हो जाए, विशेषकर ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर जिसमें राष्ट्र का हित जुड़ा हो, पहला तो यह कि किस तरह से परमाणु विस्फोट की बात, दूसरा संसद को विश्वास में लेना या न लेना, जो मैंने बताया, तीसरी बात भी उतनी ही गंभीर है, क्योंकि एक बार नहीं, दो बार नहीं, बार-बार स्मरण शक्ति पर प्रश्न चिन्ह लग जाए तो मैं नहीं सोचता कि उसमें कोई कमी है या जानबूझ कर भूल रहे हैं, यह तो देश देखे। तीसरी बात जो कही, उसके लिए यह किताब लिखी गई और इस किताब की जरूरत पड़ी – 'मेरा देश-मेरा जीवन', 'माई कन्ट्री माई लाइफ' वह किताब आ गई। उस किताब में लिख दिया गया, अब फिर वही विदेश मंत्री का जिक्र आ गया, जब हमारे हवाईजहाज को हाइजैक कर लिया गया था और कंधार ले गए थे, तब विदेश मंत्री जी भी साथ गए थे। मौलाना अजहर मसूद और कुख्यात आतंकवादियों को जेल से निकालकर कंधार ले गये। अब यह कहा कि मुझे मालूम नहीं। अगर यह बात सही है तो वे देश के गृह मंत्री थे, बाद में उप-प्रधान मंत्री थे, अगर उन्हें यह मालूम नहीं था कि जहाज हाइजैक हो गया, देश के विदेश मंत्री जेल से निकाल कर आतंकवादियों को ले गये, तो यह बहुत ही गंभीर बात है। अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे बड़ी बात इस सदन में रखना चाहता हूं कि वे कैबिनेट कमेटी ऑफ सिक्योरिटी के सदस्य थे, सी.सी.पी.ए. के मैम्बर थे और उन्हीं के कैबिनेट के साथियों ने जो आज भी एन.डी.ए. में हैं, चाहे उस समय के रक्षा मंत्री हों, चाहे उस समय के वित्त मंत्री हों, जो बाद में उस समय विदेश मंत्री बने माननीय यशवंत सिन्हा जी, उन्होंने रिकार्ड पर कहा कि वे बैठक में मौजूद थे, उन्हें पूरी बात मालूम थी। इतना ही नहीं और भी स्मरण-शक्ति की बात सुन लीजिए। अमरीका के उस समय देश में राजदूत कौन थे? उनका नाम भी गलत लिख दिया। उन्होंने वाशिंगटन से बयान दिया कि उस समय मैं हिन्दुस्तान में अमरीका का सफीर नहीं था। ब्लैक-वैल ने यह कहा था। अगर यह स्मरण-शक्ति का सवाल है तो गंभीर है। जान-बूझकर संवेदनशील विषय पर अगर यह भ्रमक विचार कि जो कुछ गलत हुआ हमारे शासन काल में, उसका मुझे कुछ नहीं पता, मुझे तो केवल भविष्य का देखना है – इसे मैं समझ सकता हूं।

श्री खारबेल स्वाईं (बालासोर) : टैररिस्ट को ले जाना क्या गलत था, जब 150 पैसेन्जर्स वहां थे।...*(व्यवधान)* आप बोलिये।

[अनुवाद]

अध्यक्ष माहेदय : श्री स्वाईं, आप उन्हें यह आदेश नहीं दे सकते कि वह क्या बोलें और क्या नहीं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए। वह बिना अनुमति के बोल रहें हैं।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मंत्री जी, आप उनकी बातों का उत्तर न दें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री स्वाईं, यह सब क्या हो रहा है। कृपया अपने स्थान पर बैठें। यह बिल्कुल अनुचित बात है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मंत्री जी, अपनी बात जारी रखिए। उनकी बातों का उत्तर मत दीजिए।

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : जिस मीटिंग में यह फैसला हुआ था उसमें माननीय मनमोहन सिंह जी भी थे।

अध्यक्ष महोदय : इंट्रप्ट करके बोलने से क्या होगा, आपको मौका मिलेगा, ठीक टाइम पर बोलिये।

श्री आनन्द शर्मा : अध्यक्ष महोदय, सब लोग यहां समझदार हैं परिपक्व हैं और जानते हैं कि सच्चाई बहुत कड़वी होती है, कष्ट देती है। जहां तक चुनौती की बात है तो मैं चुनौती नहीं दे सकता हूं। मैं तो बड़े आदर के साथ विपक्ष के नेता के बारे में कहता हूं कि बड़े नेता हैं लेकिन एक बात जरूर कहता हूं कि अगर हमारी सरकार उस समय होती तो अमृतसर से आगे जहाज नहीं जाता। प्रवचन बहुत हैं और आंतरिक सुरक्षा के बारे में हम रोज प्रवचन सुनते हैं। रोज यह भी सुनते हैं कि पोटा होता तो यह होता। पोटा होते हुए भी संसद कांड हुआ, लालकिला कांड हुआ, अक्षरधाम, रघुनाथ तथा कश्मीर विधान सभा कांड हुआ। यह सब उस समय हुआ। एक नयी बात आज सामने आ रही है कि दो छोर साथ-साथ आ गये हैं। हमारे वामपंथी मित्रों ने चार वर्ष तक हमारा समर्थन किया, उसके लिए धन्यवाद। लेकिन यह बात उनसे भी कहूंगा कि साझा-न्यूनतम कार्यक्रम केवल आपका लिखा हुआ नहीं था, वह साझा था। यू.पी.ए. के जो सहयोगी दल हैं, उनहोंने जनता से जो वायदे किए थे, वे सब हमारे कार्यक्रम में शामिल हैं। बहुत अच्छे-अच्छे काम हुए हैं, चाहे वह ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना है, चाहे भारत निर्माण का कार्यक्रम है, चाहे 12 करोड़ बच्चों को मिड डे मील देने की स्कीम के तहत कवर किया गया हो, जितने भी बड़े कार्यक्रम हैं, उनका श्रेय अगर ये कहें कि उन्हें है और सरकार को नहीं है, यू.पी.ए. की अध्यक्षा को नहीं है, तो यह एक अजीबो-गरीब परिस्थिति है।

दूसरी बात, जहां तक आम सहमति बनाने की है, यू.पी.ए. की तरफ से, सरकार की तरफ से, माननीय प्रधान मंत्री की तरफ से कोशिश में कमी नहीं रही है। सबसे बातचीत हुई है, वामपंथी मित्रों से भी बार-बार बात हुई है। श्री सलीम जी थोड़ा गुस्से में जरूर आ गए, मैं माफी चाहता हूं। मैं सिर्फ अपनी जानकारी बढ़ाना चाहता था कि आप जिस पुस्तक से पढ़ रहे हैं, वह किस वैज्ञानिक ने लिखी है, जो परमाणु शास्त्र जानते हैं, क्योंकि अपनी पार्टी की पुस्तक पढ़ कर देश को ज्ञान देना अलग बात है। मैं सिर्फ यही स्पष्टीकरण चाहता था। मैं एक बात स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि हम एक-दूसरे का विरोध कर सकते हैं, हमारे मतभेद हो सकते हैं, लेकिन हमें इस बारे में जरूर सोचना चाहिए कि कोई ऐसी बात न हो, जिससे कि इस देश की प्रतिष्ठा और गरिमा पर आंच आए। आज आडवाणी जी ने देश के जिन इंस्टीट्यूशंस की बात कही, उन पर आघात नहीं लगना चाहिए। प्रधानमंत्री के इंस्टीट्यूशन पर इतना बड़ा आघात करना कि धोखा हुआ है, यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। आपकी सहमति नहीं बनी, वह क्यों नहीं बनी, यह आप जानते हैं। श्री प्रणब जी कोर्डिनेशन कमेटी के अध्यक्ष थे, यह सोचते थे कि इन्हें समझा लेंगे। लेकिन जिन्हें न समझने का मन बना लिया था कि पहले देर करेंगे और बाद में सरकार से समर्थन वापिस ले लेंगे, तो उन्हें कौन समझा सकता है। जब उन्हें समझाने की संभावना ही नहीं रही, तब जो प्रस्तावना थी, वह समाप्त हुई और प्रणब जी ने उसकी विस्तार से चर्चा कर दी कि आई.ए.ई.ए. में क्यों गए। आज आप दोनों इकट्ठे हुए हैं, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। यह पहली बार नहीं हुआ है।

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता – उत्तर पूर्व) : आपको खबर होनी चाहिए। हम दोनों कहां इकट्ठे हुए हैं?

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : एक सुस्थापित परम्परा है जिसे आपको मानना होगा। जब तक माननीय सदस्य, जो बोलने के लिए खड़े हैं, अपनी सहमति नहीं देते तब तक आप उनके भाषण में बाधा नहीं डाल सकते। आपको खुद बोलने के लिए उनसे उनकी सहमति लेनी होगी।

(व्यवधान)

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : एक शब्द भी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री आनन्द शर्मा : मैं किसी को उत्तेजित करने के दृष्टिकोण से बात नहीं कह रहा हूं। अगर हमारे वामपंथी मित्र कोई बात कहते हैं, तो एन.डी.ए. और आर.एस.एस. का बयान उनके पक्ष में आता है कि हम इनके दुख को समझ सकते हैं। मुझे देश को याद दिलाना है कि यह कोई पहला मौका नहीं है, जब कोई बड़ा काम देश के लिए हो रहा है और जिसका मिल कर विरोध हुआ हो। मैं वर्ष 1985 की तरफ ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूं, जब हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी ने इस देश में कम्प्यूटर और इंफोर्मेशन टेक्नोलाजी की बात कही थी। जब राजीव गांधी जी ने 21वीं सदी के भारत को बनाने की बात कही, उस वक्त भी राइट और लेफ्ट वामपंथी और बी.जे.पी. ने इकट्ठे हो कर सदन के अंदर और सदन के बाहर विरोध किया था तथा देश के अंदर आंदोलन किया कि रोजगार खत्म हो जाएंगे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : अपनी बात जारी रखिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री आनन्द शर्मा : देश में विरोध हुआ, हड़ताल हुई, नौजवानों को कहा गया कि यह प्रधान मंत्री आप सब को बेरोजगार बना देंगे। 21वी सदी की बात का मजाक उड़ाया गया। राजीव जी 1991 में चले गए, हमने उनको खो दिया लेकिन आज देश उनका ऋणी है, कृतज्ञ है और आने वाली पीढ़ियां उनको याद करेंगी। आज हिन्दुस्तान आई.टी. की एक सुपर पावर है। आज दुनिया के अन्दर आई.टी. इनेबल्ड सर्विसेज का 65 परसेंट हिस्सा भारत के पास है। क्या इस बात को कोई इन्कार कर सकता है? कम से कम आज तो स्वीकार कर लो, अब मान लो कि उस समय गलत कहा था और वाकई उन्होंने बड़ा काम किया था।

अध्यक्ष महोदय, मेरे मन में कोई शंका नहीं है कि आने वाले कुछ सालों के बाद देश में प्रगति के लिए ऊर्जा की जरूरत को देखते हुए, बढ़ती हुई ईंधन की कीमतों को देखते हुए जब परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम आगे बढ़ेगा, जैसा आज सुबह प्रणव जी ने कहा कि कितनी बड़ी कमी का देश हो सामना करना पड़ेगा, अभी उत्पादन को मद्देनजर रखते हुए सन् 2050 तक उसमें साढ़े 12 लाख मेगावाट की जरूरत होगी, चार लाख दस हजार मेगावाट की कमी होगी और पांच लाख चालीस हजार जो पैदा होगी, उसमें वह भी शामिल है जो डेढ़ लाख हाइड्रो पावर है। इसके ऊपर पूरा विस्तृत उल्लेख हुआ। तेल की कीमतें क्या थी, क्या नहीं थी, मैं उस पर बिल्कुल नहीं जाना चाहता हूं और न ही दोहराना चाहता हूं। मुझे एक चीज कहनी है जो जरूरी होगी, सन् 2020 तक 40 हजार मेगावाट होगी और वह बढ़ती जाएगी।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मैं उन सदस्यों को बाहर जाने के लिए कहूंगा जो बैठे-बैठे बोलेंगे चाहे वे किसी भी पक्ष के क्यों न हो। यह एक बीमारी है। आप सीट पर बैठे-बैठे टिप्पणियां कर रहे हैं और यहां तक अनुमति लेने की जहमत भी नहीं उठा रहे हैं। यह संसद के प्रति अत्यंत अनादर की बात है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित न करें।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आप अध्यक्षपीठ को सम्बोधित करें। अपनी बात जारी रखें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिर्फ मंत्री जी के भाषण को कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित किया जाए।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : एक शब्द भी कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। वक्ता को बाधित न करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : अध्यक्ष महोदय, आप इनको भी डांट लगाइए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : उनको ज्यादा डांटा है।

श्री आनन्द शर्मा : आपत्तियों को देखते हुए एक बात जरूर है कि भारत को इसमें उत्तेजित होने की जरूरत नहीं है। जहां भारत को पन बिजली योजनाओं की जरूरत है या थर्मल प्रोजैक्ट्स की जरूरत है या रिन्यूएबल्स विंड एंड सोलर एनर्जी की जरूरत है, वहीं बड़े पैमाने पर न्यूक्लियर एनर्जी जो क्लीनलैस्ट सोर्स ऑफ एनर्जी है, उसकी भी भारत को जरूरत है और यह सरकार उसे कर रही है। इसलिए विरोध करना गलत है।

मुझे अंत में दो बिन्दुओं पर ध्यान दिलाना है -- पहला हमारे विपक्ष के मित्र बड़े प्रसन्न लगते हैं, जरूर रहें, हम आपको दुखी बिल्कुल नहीं देखना चाहते हैं। यह प्रीमैच्योर सैलिबरेशन है, वक्त से पहले जब किसी का रिश्ता होता है तो रिश्ता होने के साथ-साथ भविष्य में पैदा होने वाले बच्चे का नाम रख दिया जाता है। आप अभी खुश मत हों। इनके प्रधान मंत्री की उम्मीदवार मायावती जी हैं, आडवाणी जी नहीं हैं। इसलिए खुश मत होइए, ताली मत बजाइए, अभी रुक जाइए।

अध्यक्ष महोदय : एक बिन्दु और बोल दीजिए।

श्री आनन्द शर्मा : मुझे एक और चीज कहनी है। मैंने जो तीन नाम लिए हैं, वे तीनों नाम नेताओं के हैं। क्या इन तीनों का इकट्ठा आना चाहे इस विषय में राजनीतिक अस्थिरता लाना, सरकार का विरोध एक अच्छे काम के लिए करना, देश की जनता को गुमराह करना क्या सिद्धांत की राजनीति है या अवसरवादिता है?

सायं 7.00 बजे

देश दुनिया की मुख्यधारा में शामिल हो, यह भारत के हित में है? चीन में 41 नए रिएक्टर लग रहे हैं। अभी सलीम जी ने कहा कहां हो रहा है। चीन में जाकर देखिए। वहां अगले 12 सालों में 41 नए रिक्टर होंगे। यूके में गॉर्डन ब्राउन प्रधानमंत्री ने 12 नए रिएक्टर लगाने की घोषणा की है। अमरीका ने 23 नए रिएक्टरों की बात की है और भारत में न लगे, यह किसके हित में है? भारत अलग रहे, यह किसके हित में है? मैं इस बारे में एक बात कहना चाहता हूं कि जब इस करार पर शंकाएं और इशारे हुए, जब उंगली उठाई गई और आरोप लगे, तब इस पर भारत के बड़े अधिकारियों ने चर्चा की, चाहे वह 123 एग्रीमेंट है या आई.ए.ई.ए. सेफगार्ड एग्रीमेंट है। कहा गया कि भारत की परमाणु एजेंसी के मुखिया, जो बड़े परमाणु वैज्ञानिक हैं, उनके साथ डा. अनिल काकोदकर, जो भारत के सुरक्षा एडवाइजर हैं और बाकी भारत के सुरक्षा अधिकारी, भारत के विदेश सचिव, बड़े-बड़े राजदूत, इन सब लोगों ने देश हित की अनदेखी कर दी, यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण आरोप है। मैं याद दिलाना चाहता हूं कि इसमें कितनी सच्चाई है और यह कितना देश के हित में है। एन.डी.ए. शासन के समय नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर श्री ब्रजेश मिश्रा, ने भी इसका पुष्टीकरण और समर्थन किया है। वह भी शायद वाजपेयी जी की तरफ से, जो खुद बार-बार कहते हैं उस समय के राष्ट्रपति, अबुल कलाम जी के बारे में, उन्होंने भी समर्थन किया है। आपको किसकी बात कैसी लगती है? आप कहते हैं कि अब ले जाओ तो पहले क्यों बैठा कर रखा था? हमने तो नहीं कहा था कि आपके शासन काल में वे शासन चलाएं? वे प्रिंसीपल सैक्रेट्री भी थे और नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर भी थे। वाजपेयी जी ने उन्हें रखा था, सूझबूझ से रखा होगा। आज वाजपेयी जी बुजुर्ग हैं, हम उनका आदर करते हैं और आप कह रहे हैं कि ले जाओ। उन्होंने जिसे सलाहकार माना तो कुछ सोचकर रखा होगा, इसे आप जरा सोचिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं करें।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : महोदय, तीन मिनिस्टर तो पहले ही बोल चुके हैं।

अध्यक्ष महोदय : उनका समय है, हम क्या करें? जब समय खत्म हो जाएगा तब मौका नहीं मिलेगा। हम पूरा रिकॉर्ड रखते हैं, जब उनका समय खत्म हो जाएगा तब नहीं बुलाएंगे।

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री आनन्द शर्मा : यह बात सदन में बार-बार कही गई कि भारत की जो स्वतंत्र विदेश नीति है, वह कमजोर पड़ जाएगी, उससे समझौता हो रहा है। ईरान का भी जिक्र आया कि शायद उससे भारत के संबंध खराब हो जाएंगे। एक बात प्रधानमंत्री जी ने कही है कि भारत का विदेश नीति स्वतंत्र रहेगी, यह स्वतंत्र नीति है। मैं वामपंथी मित्रों को याद दिलाना चाहता हूं, क्योंकि इनकी तरफ से रोज प्रवचन आते हैं–

[अनवुाद]

हमें न ही किसी प्रमाणपत्र की आवश्यकता है और न ही किसी उपदेश की।

[हिन्दी]

भारत को स्वतंत्र विदेश नीति जवाहर लाल नेहरू जी ने दी थी, जो भारत के पहले प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री थे।...*(व्यवधान)* पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू थे। ये पहले भी भूल रहे थे कि कौन किस समय प्रधानमंत्री थे। इसे कांग्रेस की सरकारों ने बचाकर रखा, इसमें न हमारे मित्रों का, न माननीय नेता विपक्ष दल का और न ही वामपंथी दलों का इस विदेश नीति को बनाने में कोई योगदान रहा है। यह विदेशी नीति आज भी स्वतंत्र है। हमारी स्ट्रेटजिक रिलेशनशिप दुनिया की हर बड़ी शक्ति के साथ हैं, हर उभरती शक्ति के साथ हैं। हम एक आंख से और एक दिशा में नहीं देखते, हम पूरी दुनिया को देखते हैं क्योंकि हम भारत को दुनिया की बड़ी शक्ति के रूप में देखते हैं। अगर हमारी अमरीका के साथ करार की चर्चा है तो रशिया के साथ स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप है और साथ ही जापान, ईयू, फ्रांस, जापान, यूनाइटेड किंगडम, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और नाइजीरिया के साथ भी पार्टनरशिप है। हमारे विदेश मंत्री जी यहां पर मौजूद हैं, मैं यही चाहता हूं कि एक ऐसी पाठशाला लगाई जाए, एक संगोष्ठी बुलाई जाए, जिसमें हमारे मित्रों को, मैं बड़े आदर के साथ कहता हूं कि जब कोई इतनी गंभीर बात कही जाती है, वह तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। देश के हित की बात को दलगत राजनीति से नहीं जोड़ना चाहिए। आज एक ऐतिहासिक मौका भारत के पास है। अगर हम उसे छोड़ देते हैं तो हमारी आने वाली पीढ़ियां भारत को माफ नहीं करेंगी और इसलिए हमारी सरकार कांग्रेस को, यू.पी.ए. को उस कटघरे में खड़ा नहीं करना चाहती, वह आपको मुबारक हो। इन्हीं शब्दों के साथ अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं और जो विश्वास मत प्रधान मंत्री जी ने सदन में रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब, श्री गुरूदास दासगुप्त। आपके दल के लिए निर्धारित समय 15 मिनट है।

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, इधर से एक भी मैम्बर को नहीं बुला रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आपका अगला नम्बर है, आइये देख लीजिए। फर्स्ट टाइम उनकी पार्टी से कोई नहीं बोला है। आप तो जानते हैं कि फर्स्ट राउंड के खत्म होने के बाद सैकिंड राउंड शुरू होता है।

[अनुवाद]

श्री गुरूदास दासगुप्त (पंसकुरा) : महोदय, मुझे खेद है, मैं माननीय प्रधान मंत्री द्वारा मंत्रिपरिषद में इस सभा का विश्वास हासिल करने हेतु प्रस्तुत इस प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं।... *(व्यवधान)*

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल) : ...भारी मन से।

श्री गुरूदास दासगुप्त : हां, भारी मन से।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा. शकील अहमद) : क्यों?

श्री गुरूदास दासगुप्त : उसको मैं स्पष्ट करूंगा।

वाम दल सप्रंग सरकार के गठन में कुछ हद तक सहायक रहे हैं। हम इस राजनीतिक प्रयोग को सफल देखना चाहते थे। क्यों? मैं आपके प्रश्न का उत्तर देता हूं। ऐसा इसलिए था क्योंकि हम एक सक्षम विकल्प चाहते थे, हम देश में एक ऐसा राजनीतिक विकल्प चाहते थे जो न सिर्फ इस देश को साम्प्रदायिकता से दूर रखे बल्कि वह गरीबी, भूख, बेरोजगारी, दीनहीनता तथा देश की मूल मानवीय समस्याओं से लड़े।

मुझे सही मायने में खेद है कि इसका हनन हुआ है। यह हनन क्यों हुआ? यह हनन इसलिए हुआ क्योंकि सरकार ने एकपक्षीय निर्णय लेना शुरू कर दिया था। एकपक्षीयता क्या है? सरकार द्वारा बेझिझक एकपक्षीय निर्णय लिया गया। हमने वाम एजेण्डा की मांग नहीं की थी। हमने जनता के एजेण्डे की बात की थी। हम आम सहमति वाली सरकार चाहते थे न कि मनमाने ढंग से एकपक्षीय निर्णय लेने वाली

सरकार। वस्तुतः देश को आम सहमति वाली सरकार की जरूरत थी। जबकि एकदलीय शासन का हमेशा के लिए अंत हो चुका था, सप्रंग सरकार बहुदलीय प्रणाली का मॉडल बनी होती। हमने सच्चे मन से इस बात पर विश्वास किया था। इसीलिए हमने समर्थन दिया था।

साठ वर्षों की आजादी ने हमें राजनीतिक आजादी दी है न कि आर्थिक आजादी। इसने हमें राजनीतिक प्रजातंत्र दिया है न कि आर्थिक प्रजातंत्र। मताधिकार तो है पर हमें जीने का अधिकार प्राप्त नहीं है। इसीलिए हम एक नया शासन ढांचा चाहते थे। वाम दल एक ऐसा राजनीतिक ढांचा चाहते थे जो आम जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप हो।

महोदय, सिर्फ कट्टरवाद इस देश का दुश्मन नहीं है। गरीबी समान रूप से दुश्मन है। इसलिए जनता ने दोनों मोर्चों पर नए प्रयासों की उम्मीद की थी। जनता यह भी चहती थी कि राष्ट्रीय संप्रभुता को अक्षुण्ण रखा जाए न कि इसके साथ समझौता किया जाए। मेरे प्रिय मित्रों, मैं यह नहीं कह रहा कि कुछ नहीं किया गया है। मेरा कहना है कि कुछ किया गया है। परन्तु बहुत कुछ किया जा सकता था। बहुत कुछ किया जाना चाहिए था। बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। बहुत लोगों को ऐसा किए जाने की आशा थी। सरकार ने लोगों की आशाओं को पूरा नहीं किया। यही त्रासदी है और इसी त्रासदी के खतरे में हम आज विश्वास मत पर चर्चा कर रहे हैं।

वाम ईमानदार रहा है। हमने अपना राजनीतिक समर्थन दिया। यह समर्थन राजनीतिक प्रकृति का था। इसकी प्रकृति वैचारिक थी, क्योंकि हमारा हमेशा यह मानना है कि देश में कुछ नया राजनीतिक प्रयोग किए जाने की आवश्यकता है। हमने सत्ता का सुख कभी नहीं भोगा। हम कभी मंत्री नहीं बने। हम कभी भी मंत्री बनना नहीं चाहते थे। यह सरकार गठन के लिए केवल राजनीतिक समर्थन था।

महोदय, यह संबंध क्यों टूटा? यह प्रश्न मैं स्वयं से नहीं बल्कि सरकार से पूछ रहा हूं। यह संबंध सरकार के "आक्रामक राजनीतिक एकलवाद" के कारण टूटा। किस प्रकार हमारी राय की अनदेखी की गई? सभा में एक के बाद एक प्रस्तुत किए बजटों के मामले में वामदलों से किस प्रकार का व्यवहार किया गया? परन्तु हमारे सुझावों की दोषदर्शी ढंग से अनदेखी की गई।

सभी विकल्पों की अनदेखी करते हुए बार-बार पेट्रोलियम उत्पादों के मूल्य बढ़ाए गए। महंगाई आसमान छू रही है। महंगाई पर काबू पाने की हमारी राय पर सरकार द्वारा विचार नहीं किया गया। सरकार ने इन विचारों पर कोई ध्यान नहीं दिया कि अर्थव्यवस्था कुप्रबंधन की शिकार है। हमने चेतावनी दी थी कि विकास के बढ़ते अंतर से देश के मूल ढांचे को खतरा है। इसपर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यही करण है कि यह संबंध टूटा। अपने दिल से पूछिए, अपने नेताओं को बताइए, उत्तर ढूंढिए और हमें सीधे-सीधे बताइए कि संबंध टूंटने के लिए कौन जिम्मेदार है।

सबसे अहम बात तो यह है कि सरकार ने भारत अमेरिका परमाणु समझौते पर जिस तरह का दबाव बनाया है या जिस तरह आज दबाव बनाना चाहती है। उससे इस सौदे के कफन में आखिरी कील ठुक चुकी है। क्या यह हमारे संबंधों की बलि चढ़ाने के लिए जरूरी था? क्या कांग्रेस पार्टी इस पर विचार करेगी? जब हम पेट्रोलियम का आयात करने वलो अन्य देशों में मूल्यों पर विचार करें तो हम आयातित मुद्रास्फीति की धारणा को नहीं मान सकते। वहां मुद्रास्फीति कम क्यों है? भारत में यह इतनी अधिक क्यों है? यूरोपीय देशों में यह इतनी कम क्यों है? वे भी हमारी ही तरह पेट्रोलियम उत्पादों का आयात करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मूल्य इसका कारण नहीं है। अत्यधिक कराधान इसका कारण है। हमने कराधान में कमी करने का सुझाव दिया था और हमने यह सुझाव भी दिया था कि धनी लोगों पर तथा पेट्रोलियम कंपनियों के अनर्जित लाभ पर कर लगाकर राजस्व की कमी को दूर किया जा सकता है। हमने शेयर बाजार के लेन-देन पर और कर लगाने का सुझाव दिया था। हमने धनी लोगों, अधिक लाभ कमाने वाली कंपनियों पर और अधिक कर लगाने का सुझाव दिया था। हमने सेवा क्षेत्र पर और अधिक कर लगाने का सुझाव दिया था। हमने उच्च आय वर्ग पर अधिक कर लगाने का सुझाव दिया था। हमने सरकार को विस्तृत विकल्प सुझाए थे। क्या सरकार ने उसपर ध्यान दिया? हमने एक बड़े बजट लगभग दस लाख करोड़ रु. के बजट का प्रस्ताव किया था। यह प्रस्ताव हमने किस प्रयोजनार्थ किया था, इसका उद्देश्य था— कृषि में नई जान फूंकना, गरीबी का उन्मूलन, नौकरियों का सृजन उत्पन्न, पेयजल व्यवस्था, सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदि को सुदृढ़ करना। आपने अधिक धनराशि का आवंटन किया। आपने उसका आवंटन किया परन्तु यह थोड़ी सी अधिक थी। देश में आज लोगों को जिस अभाव का सामना है, उसे देखते हुए यह कुल आवश्यकता से कम है। राजस्व किस प्रकार अर्जित किया सकता है? हमने सरकार को एक प्रगतिशील कर प्रणाली का सुझाव दिया था। भारत, विश्व के उन देशों में से है, जहां सबसे कम कर लगाया जाता है। इसलिए हम उन लोगों पर कर लगा सकते थे, जिनके पास भुगतान करने की क्षमता है। महोदय, हो सकता है, इससे आपको ठेस पहुंचे, परन्तु मैं आपको ठेस पहुंचाना नहीं चाहता। काफी लंबे समय से हम मित्र हैं। महोदय, मेरा कहना है कि अपने घनिष्ठ संबंधों के कारण धनी लोगों पर कर लगाने की सरकार की कोई राजनीतिक प्रतिबद्धता नहीं है।

[श्री गुरूदास दासगुप्त]

मेरे माननीय युवा मित्र, विदेश राज्य मंत्री सकल घरेलू उत्पाद की बात कर रहे थे। इससे पहले वह परिवहन का प्रतिनिधित्व करने वाले सरकार के सदस्य थे। वह बहुत उत्साह से कह रहे थे कि देश में बहुत खाद्यान्न है। वह बहुत उत्साह से ऐसा कह रहे थे। यदि ऐसा ही है, तो डा. सेनगुप्ता के नेतृत्व में श्रम मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत नवीन जानकारी मुहैया कराने वाले दस्तावेजों में कहा गया है कि 77 प्रतिशत जनसंख्या 20 रुपए प्रतिदिन से अधिक खर्च नहीं कर सकती। आपने देश की ऐसी हालत कर दी है। आपके पास चार वर्ष से अधिक का समय था। क्या किया गया? क्या किए जाने का प्रस्ताव था? प्रख्यात अर्थशास्त्री डा. सिंह ने कौन-सी तब नई शुरूआत की है। क्या आप हमें बताएंगे कि आर्थिक नीति में क्या नया किया गया है, जिससे कि आप कह रहे हैं कि एक नई शुरूआत की गई है। आप भारतीय जनता पार्टी की आर्थिक नीति का ही पालन कर रहे हैं।

महोदय, जनवरी 2008 थोक मूल्य सूचकांक बढ़ना शुरू हुआ था। आज यह लगभग 12 प्रतिशत है। मैं भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट प्रस्तुत कर रहा हूं वकील महोदय...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप वकीलों को इस प्रकार से संबोधित नहीं कर रहे हैं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : नहीं, महोदय, मैंने कहा था 'वकील महोदय'।

अध्यक्ष महोदय : मंत्री वकील।

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैंने कहा था 'वकील महोदय'।

अध्यक्ष महोदय : आपको कहना चाहिए था 'मंत्री वकील'।

(व्यवधान)

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह गलत जानकारी दी जा रही है कि मुद्रास्फीति एक अंतर्राष्ट्रीय परिघटना है। थोक मूल्य सूचकांक जनवरी, 2008 से बढ़ना आरम्भ हुआ था। आज यह लगभग 12 प्रतिशत है। यह 13 वर्ष के उच्चतम स्तर पर है। यूरोपीय देशों में मुद्रास्फीति की दर क्या है? मेरे पास भारतीय रिजर्व बैंक के दस्तावेज की एक प्रति है। श्री पटेल इसकी एक प्रति चाहते थे। मैं इसे आपको दिखाना चाहता हूं। आपने विमानपत्तनों की रणनीति के बारे में हमसे चर्चा नहीं की है, परन्तु मैं यह जानकारी आपको दे सकता हूं।

यूरोपीय देशों में मुद्रास्फीति की दर मई में 3.7 प्रतिशत थी। यह पिछले 16 वर्षों में सर्वाधिक है। जून 2008 में इसके चार प्रतिशत हो जाने की संभावना है। महोदय, 227 मिलियन मिट्रिक टन खाद्यान्न का उत्पादन किया गया है जोकि एक रिकॉर्ड है। श्री बालू, मैं इस बात से सहमत हूं परन्तु मूल्य क्यों बढ़ रहे हैं? आपने कॉलेज में कौन-सी प्राथमिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया है? प्राथमिक अर्थव्यवस्था कहती है — अधिक आपूर्ति, कम मूल्य...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री बालू पीठासीन नहीं हैं। मैं पीठासीन हूं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैं उनके माध्यम से सरकार से यह पूछ रहा हूं। वह सरकार का ही रूप है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बहुत ही वरिष्ठ सदस्य हैं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैं सहमत हूं; मैं यह जानता हूं।

मैं मानता हूं कि मैं एक वरिष्ठ सदस्य हूं। बात यह है कि 227 मिलियन मिट्रिक टन खाद्यान्न का उत्पादन किया गया, जोकि अब तक का सर्वाधिक उत्पादन है।

अध्यक्ष महोदय : परन्तु अब केवल एक मिनट बचा है।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, मुझे कुछ समय और दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : कितना और समय?

श्री गुरूदास दासगुप्त : श्री बालू ने दावा किया है कि देश में 227 मिलियन मिट्रिक टन उत्पादन हुआ है। इस दावे को मैं स्वीकार करता हूं। यह सच है। यह आपकी एक उपलब्धि है। यदि यह आपकी उपलब्धि है तो कृपया बताइए कि खाद्य उत्पादों के मूल्य बढ़ने से महंगाई क्यों बढ़ रही है। गेहूं और चावल के संबंध में यह 12 प्रतिशत क्यों है? इसके 13 प्रतिशत हो जाने की क्यों आशंका है। यहां अधिक आपूर्ति और अधिक मूल्य हैं। अर्थशास्त्र का यही विरोधाभासी पाठ सत्तारूढ़ पार्टी में शामिल सिद्धांतवादियों द्वारा पढ़ाया जा रहा है।

महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि निवेश में वृद्धि हुई है। यह आपके लिए एक और उपलब्धि है। यह सकल घरेलू उत्पाद का 36 प्रतिशत है। यह उच्च वृद्धि है। यदि ऐसा है तो क्या मैं आदरणीय अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री से यह पूछ सकता हूं कि पिछले छः महीनों में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक घटकर 4 प्रतिशत क्यों हो गया है। यह कम क्यों हो रहा है? मौद्रिक उपाय विफल हो गए हैं; ब्याज दर में वृद्धि हुई है; और आर्थिक कार्यकलाप में मंदी आ रही है। ठहराव

के संकेत हैं। सरकार इसे स्वीकार नहीं करेगी, लेकिन महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे देश में ठहराव के साथ मुद्रास्फीति की भयानक स्थिति है। आपका महानतम योगदान यह है कि आपने इस देश को भयानक मुद्रास्फीति के दायरे में ला दिया है। चाहे आप इसे स्वीकार करें अथवा नहीं, जहां तक देश की अर्थव्यवस्था का संबंध है यह अद्यतन स्थिति है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली ध्वस्त हो गई है।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अब अपनी बात समाप्त करें।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, मैं आपसे और समय देने का अनुरोध करूंगा।

अध्यक्ष महोदय : आप कितना समय चाहते हैं?

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, मुझे पांच मिनट चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। मैं आपकी वरिष्ठता के कारण आपको समय दे रहा हूं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, आप बहुत दयालु अध्यक्ष हैं।

अध्यक्ष महोदय : नहीं। मेरे ऊपर दोनों ओर से प्रहार किए गए हैं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, आप हमेशा विमत विचार प्रकट करते रहे हैं। लोकतंत्र में विमत विचार...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं केवल यह कह रहा हूं कि परिवर्तन कौन लाएगा।

श्री गुरूदास दासगुप्त : जनता परिवर्तन लाएगी। जनता को सोमनाथ चटर्जी, गुरूदास दासगुप्त अथवा मनमोहन सिंह की आवश्यकता नहीं है। जनता परिवर्तन लाएगी। परिवर्तन अप्रतिरोध्य है और यह परिवर्तन लाया जाएगा।

अध्यक्ष महोदय : यह बिल्कुल सही है। प्रश्न यह है कि जनता किसे चुनेगी।

श्री गुरूदास दासगुप्त : वे सही पार्टी चुनेंगे। भारत एक ऐसा देश है जहां निरक्षरता अधिक है, लेकिन जनता की परिपक्वता संदेह के दायरे से परे है।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

श्री गुरूदास दासगुप्त : प्रो. मल्होत्रा, मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आवश्यक वस्तु अधिनियम की कारगरता को कम कर दिया था। लेकिन प्रश्न यह है कि इसे इस समय सत्तासीन सरकार द्वारा पुन वैधीकृत क्यों नहीं किया गया। कृषि संकट बढ़ता जा रहा है। अधिक उत्पादन हुआ है, लेकिन यह सांयोगिक है क्योंकि अच्छी वर्षा हुई है। अगर सूखा पड़ता तो हम पुन: संकट में होते। बात यह है कि कृषि संकट में है, सिंचाई कम है, निवेश कम है, उत्पादकता कम है और किसानों की स्थिति बदतर है। इन चार वर्षों में आप परमाणु सहयोग के लिए संधि करने के लिए जितने तत्पर रहे हैं उतनी तत्परता आपने कृषि के पुनरूद्धार के लिए नहीं दिखाई? उदारीकरण के पूर्ण विस्फोट के साथ उच्छृंखला, शोषणभूलक पूंजीवादी प्रणाली कहर ढा रही है। कंपनियों को रिकार्ड मुनाफा हुआ है।

महोदय, एक औद्योगिक घराना — जिसका कि मैं नाम नहीं लूंगा — ने अपने प्रबंध निदेशक की पत्नी को 240 करोड़ रुपए का विदेशी विमान उपहार में दिया है। यह हर जगह समाचार में आया है।

कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री संतोष बागड़ोदिया) : इसमें गलत क्या है?...*(व्यवधान)*

श्री गुरूदास दासगुप्त : क्या आप उनके लिए संक्षिप्त विवरण देना चाहेंगे? यह अच्छा है। मैं चाहता था कि आप ऐसा करें... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं क्योंकि आपका समय इस आपसी नोक-झोंक में व्यतीत हो रहा है। केवल दो मिनट और हैं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, बात यह है कि इस देश में जहां गरीबी इतनी अधिक है यह क्षमा करने योग्य नहीं है। धन का इस प्रकार का खुला प्रदर्शन आपराधिक कार्य है...*(व्यवधान)* महोदय, अधिक मुनाफा, कम मजदूरी, विपदाग्रस्त, रोजगार, कार्पोरेटों का अत्यधिक दिखावा तथा जनता को कंगाल बनाना ही आज का चलन है।

बेरोजगारी की समस्या विस्फोटक बिन्दु पर पहुंच गई है। मैं आपको कुछ और तथ्य देना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय : अब, आपके पास बोलने के लिए एक मिनट और है।

श्री गुरूदास दसगुप्त : महोदय, इस मुद्दे पर बोलने के लिए कृपया मुझे दो मिनट और दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैं आपको पांच मिनट दे चुका हूं जैसा कि आप चाहते थे।

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैं आपका आभारी हूं, लेकिन माननीय अध्यक्ष द्वारा विमत विचार को समय दिया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैंने आपको बोलने का समय दिया है। यह संसदीय लोकतंत्र भी है, अर्थात् आपको सदन में अपनी संख्या के आधार पर बोलने का समय दिया जाता है।

श्री गुरूदास दासगुप्त : महोदय, मेरा ध्यान भंग हो जाता है। किसी भी व्यक्ति के लिए ध्यान भंग होना अच्छा गुण नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप काफी वरिष्ठ हैं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : नहीं, मैं बहुत वरिष्ठ नहीं हूं। मैं आपसे काफी कनिष्ठ हूं।

अध्यक्ष महोदय : आप अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं? अगर आप भी इस कुर्सी पर होते तो यही करते।

श्री गुरूदास दासगुप्त : हम लोग आज दस बजे तक बैठेंगे। कृपया मुझे बोलने के लिए कुछ समय और दीजिए। मैं कुछ और तथ्य प्रस्तुत करूंगा। जो सरकार की सफलता में सहायक होंगे।

अध्यक्ष महोदय : मैं इस संबंध में चिंतित नहीं हूं। मैं केवल सदन की कार्यवाही के संचालन के बारे में चिंतित हूं।

श्री गुरूदास दासगुप्त : इस समय जबकि मूल्य वृद्धि 13 महीने के उच्चतम स्तर पर है, औद्योगिक उत्पादन छः वर्षों के न्यूनतम स्तर पर है और पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन गिरकर 2.5 प्रतिशत हो गया है, क्या यह उस सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का संकेत है जिसका निर्माण सरकार कर रही है? मई में छः आधारभूत उद्योगों की वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत से घटकर 3.5 प्रतिशत हो गई है तथा भारतीय वायदा बाजार में सट्टेबाजी में बहुराष्ट्रीय फर्मों की भागीदारी से एक बार पुनः भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी है। प्रिय प्रधानमंत्री जी, आपने दो फर्मों को स्थानीय बाजार से जमाखोरी के लिए दो लाख टन गेहूं की खरीद करने की अनुमति दी है तथा आपने जमाखोरों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की है और न ही आपने अधिनियम को पुनः वैधीकृत किया है।

आप प्रति व्यक्ति आय का उल्लेख कर रहे हैं। मैं खाद्यान्नों की प्रति व्यक्ति खपत के बारे में बात करना चाहूंगा। यह 476 ग्राम से घटकर 418 ग्राम हो गया है। उपभोक्ता मूल्य वृद्धि के परिणामस्वरूप कितना परेशान हो रहा है? उपभोक्ता थोकमूल्य से 60 प्रतिशत अधिक दे रहे हैं जो कि खुदरा तथा थोक मूल्य के बीच तीन गुना का सामान्य अन्तर है। खतरनाक मुद्रास्फीति ने देश को कितने खतरनाक तरीके से जकड़ रखा है? शर्म की बात है कि सरकार मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में असफल रही है जिस प्रकार से सरकार अमरीका की ओर बढ़ रही है।...*(व्यवधान)*

मुद्रास्फीति का मूल कारण बढ़ती हुई समानान्तर अर्थव्यवस्था है। क्या डा. मनमोहन सिंह देश को बताएंगे कि उन्होंने देश में बढ़ती हुई समानान्तर अर्थव्यवस्था के संकट तथा काले धन को रोकने के लिए क्या किया है?

मैं मानवीय समस्या पर ही आ रहा हूं। एक वर्ष में 23 मिलियन बढ़े हैं। यह आपकी प्रिय कंपनी मैरी लिंच की रिपोर्ट में बताया गया है। आज उनका कहना है कि देश में एक लाख मिलियनर हैं। एक डॉलर कमाने वाले भारतीयों का क्या हाल है? 350 मिलियन लोग ऐसे हैं जो प्रतिदिन एक डॉलर तथा 700 मिलियन लोग ऐसे हैं जो प्रतिदिन 2 डॉलर कमाते हैं। ऐसा भारत आपने बनाया है। देश में एक मिलियनर 7,000 निर्धन लोगों के बराबर है। यह असफलता हमने अर्जित की है। प्रधान मंत्री जी आपको इस घोर असफलता की कीमत चुकानी होगी। आप जमीनी हकीकत को नजरअंदाज करते हुए परमाणु समझौता करना चाहते हैं। अपकी प्रतिबद्धता भारत के लोगों के प्रति न होकर किसी और के प्रति है...*(व्यवधान)*

चुनाव सिर पर हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अध्यक्षपीठ को सम्बोधित करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। यह क्या है?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : वे अपना काम खुद कर सकते हैं तथा उन्हें आपकी सहायता की जरूरत नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अपना भाषण समाप्त करते हुए कह रहा हूं कि आपकी पेशी चल रही है। चुनाव सिर पर है। हम जानते हैं कि आम जनता का निर्णय क्या होगा। अप्रिय वास्तविकता का सामना करने के लिए तैयार रहें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया सभा में शांति बनाए रखे, माननीय सदस्य बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मेरे मन में यह था कि जिस समय आनन्द शर्मा जी भाषण कर रहे थे, उस समय मेरे मन में आया कि आप मुझे मौका देंगे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है? यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि वरिष्ठ सदस्य इस प्रकार से कर रहे हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं उस समय चार्ज था कि मैं आनन्द शर्मा जी के भाषण का जवाब दूं, लेकन बीच में गुरूदास दासगुप्ता जी आ गए, वह मेरे लिए सरप्राइज था।

अध्यक्ष महोदय : आपको इसकी ठीक खबर नहीं थी।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : जब मुझे किसी साथी ने कहा तो आपने कहा कि आप तुरन्त बोलने वाले हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैंने यह कहा था कि आप बोलेंगे।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : जब मैं मन बनाकर बैठा था, उस समय प्रधानमंत्री जी भी थे। अब वे भी नहीं हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप मुझे नजरअंदाज क्यों कर रहे हैं? कृपया अध्यक्षपीठ को सम्बोधित करें। मुझे पता है कि आप बहुत अच्छे वक्ता हैं। मैं आपको धैयपूर्वक सुनना चाहता हूं।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मुझे आपकी हमेशा हमदर्दी मिलती है। लेकिन शुक्र है कि कांग्रेस अध्यक्षा यहां मौजूद हैं, इसलिए मुझे उन लोगों के जाने की कोई फिक्र नहीं है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : ऐसा इसलिए उन्हें आपको कोई उत्तर नहीं देना है तथा इसलिए वे यहां से चले गए हैं।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मुझे नहीं मालूम, लोग मुझसे क्यों डर रहे हैं, मैं तो इतना खराब भाषण भी नहीं देता हूं।

अध्यक्ष महोदय : लीडर आफ दी हाउस आ गए हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं चाहता था कि कुछ बुजुर्ग लोग यहां मौजूद रहें, क्योंकि आनन्द शर्मा जिस समय भाषण दे रहे थे, तो वे आडवाणी जी पर चुटकी ले रहे थे। शायद उनको ध्यान नहीं था कि उनके आगे जो पंक्ति बैठी है, वह और हमारे अध्यक्ष महोदय भी बुजुर्ग हैं। लेकिन उनके भाषण में आडवाणी जी के लिए सम्मान से ज्यादा कटाक्ष था और आडवाणी जी की याददाश्त पर उन्होंने प्रश्नचिह्न लगाया है।

अध्यक्ष महोदय, मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कहता हूं कि जितने इंग्लिश के शब्द आडवाणी जी को मालूम हैं, आनन्द शर्मा से दस गुना ज्यादा याददाश्त आज भी हमारे नेता लालकृष्ण आडवाणी जी की है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, जब मैं उधर था, तब भी ये मुझे टोकते थे। मैं चेहरा ध्यान रखता हूं। अभी मैं मंत्री नहीं हूं और ये उधर बैठे हैं, लेकिन ये मर्यादा का ध्यान नहीं रखते। हम लोक सभा में चुनकर आए हैं, लेकिन राज्य सभा वालों ने आज यहां शोर मचाया है।

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है। ऐसा कहना शोभा नहीं देता है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं इसे ऊर्दू में कहूं तो उन्होंने यहां के माहौल को तशवीशनाक़ बनाया है।

अध्यक्ष महोदय : तशवीशनाक़ का मतलब क्या है?

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : बहुत खराब हालात।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : लाल सिंह जैसे बढ़िया वक्ता मौजूद हैं लोक सभा में, लेकिन आनन्द शर्मा जी को मौका मिला। लोक सभा के सदस्य लाल सिंह जी को लोक सभा में बोलने का मौका नहीं मिला है, मुझे इनकी चिन्ता हो रही है।

[अनुवाद]

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री वायालार रवि) : महोदय, इस प्रकार की कीमत ठीक नहीं है। कुछ ही वक्ताओं को बोलने का अवसर मिलता है। उन्हें इस पर से सरकार की नियत पर शक नहीं करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : वे यह चाहते हैं कि यहां आए तथा बैठें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष जी, मेरी इनके साथ हमदर्दी है। मेरी मर्जी इनको आहत करने की नहीं है। मेरे इनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। मैं बोलते वक्त संयम का बहुत ध्यान रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, बोलिये।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अच्छे सम्बन्ध तो मेरे आपसे हैं और आपकी हमदर्दी और इस टोका-टोकी में आपका जरा संरक्षण चाहिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इसीलिए तो ये लोग हमसे थोड़ा नाराज हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मुझे आपका थोड़ा संरक्षण चाहिए। यहां पर शादी की बात हो रही थी या रिश्ते की बात हो रही थी। जब चुनाव हुए तो हम उधर थे। चुनाव के नतीजे आ गये, आपने ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। कृष्णा जी, शान्ति रखिये।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : इनको भी थोड़ी दिक्कत हो गई है, इनकी आवाज नहीं आ रही है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया सभा की कार्यवाही में व्यवधान न डालें।

[हिन्दी]

आप डिस्ट्रक्टिड मत होइये। ठीक है, हम क्या करेंगे, हमारा तो बोलते-बोलते गला सूख गया।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष जी, बड़ा हल्ला हुआ था, जब आप वहां नहीं थे। हमारे मित्र गीते जी को बोलने नहीं दिया गया। उनको मंत्री लोग टोकते रहे। खुदा का शुक्र है कि मेरे बोलते वक्त आप आ गये हैं तो मुझे आपका संरक्षण चाहिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आपकी बात बहुत ध्यानपूर्वक सुनना चाहता हूं।

[हिन्दी]

शान्त रहिये, यह ठीक नहीं है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, जब चुनाव के नतीजे आये तो ये जीतकर नहीं आये। इनके कभी ख्वाबो-ख्याल में नहीं था कि इनकी सरकार आने वाली है। इनकी बॉडी लैंग्वेज भी ऐसी नहीं थी कि ये सरकार में आने वाले हैं, लेकिन ये सरकार में आ गये। ये बड़े गुमान के साथ हमारे इंडिया शाइनिंग की धज्जियां उड़ा रहे थे।...*(व्यवधान)* अभी बताऊंगा, कर्म आपको सिखाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय, बहुत टोका-टोकी होती है। कल इन सब को बोलना है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हम इसीलिए बोलते हैं कि थोड़ा करो, ज्यादा मत करो। ठीक है, बोलिये।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मुझे जब भी टोका जाता है तो मैं अच्छा बोलता हूं और ज्यादा खतरनाक बोलूंगा, आपको पहले बता देता हूं। अगर चुपचाप सुनोगे तो आराम से बोलता जाऊंगा। आप संयम से सुनो, यही आपके हित में है।

अध्यक्ष महोदय : शाहनवाज़ जी, ठीक से बोलिए।

[अनुवाद]

कृपया एकाग्रता बनाए रखें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, नतीजे आये, 137 सदस्य हमारे जीतकर आये और कांग्रेस के 272 नहीं आये, मात्र 145 सदस्य आपके जीतकर आये।...*(व्यवधान)* ठीक है, 143, मैंने तो दो बढ़ा भी दिये, ताकि आपका मन थोड़ा ठीक रहे। हमारे 138 और

इनके 143, कितने का अन्तर हुआ है, पांच का अन्तर हो गया। ये तो हमारे मित्र हैं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : 153 हैं, यह हमारी लिस्ट में है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : यह बीच में आज की बात है, लेकिन उस वक्त 143 थे।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है।

[अनुवाद]

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि सभा की कार्यवाही में बाधा न डालें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं सपा वालों का भी इन्तजाम करूंगा, मैं आप पर आ रहा हूं। मुझे आपने टोक दिया, अब आप पर आऊंगा। सर, इतना टोकने का क्या मतलब है?...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह हद हो रही है।

[हिन्दी]

एक दफा, दो दफा हुआ तो ठीक है, लेकिन हर दफा ऐसा कैसे होगा।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी का पदाधिकारी भी हूं। मैं पूरे देश में प्रचार के लिए भी जाता हूं। मैं केरल गया था, मैं किशनगंज की बगल में बंगाल में सिलीगुड़ी की तरफ गया था, तब मैंने देखा था कि कांग्रेस पार्टी और कम्युनिष्ट पार्टी आपस में चुनाव लड़ रहे थे। रोड के इस पार मेरी सीट थी, हम लालू जी के उम्मीदवार से लड़ रहे थे और बगल में कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार श्री प्रियरंजन दा लड़ रहे थे। दोनों का भाषण एक दूसरे के खिलाफ होता था तो चुनाव के बाद सरकार बनाने के लिए जो आपका रिश्ता हुआ, वही अनैतिक था, क्योंकि आप एक दूसरे के खिलाफ लड़े थे, लेकिन हमारे डर से दोनों मिल गये थे। ये जो मिले थे, सिर्फ बी.जे.पी. न आ जाये, इसलिए मिले थे, क्योंकि, इनके कई नेताओं को रात में भी बी.जे.पी. के नाम से नींद नहीं आती है। उनको लगा कि कहीं बी.जे.पी. ने आ जाये, इसलिए यह रिश्ता हुआ। जिस दिन यह रिश्ता हुआ था, उस दिन निकाह से पहले ही तलाक की डेट तय थी, क्योंकि जिस रिश्ते में...(व्यवधान) मायावती को अभी बना लो, जैसे प्रधानमंत्री...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उस व्यक्ति का नाम न लें जो सभा में उपस्थित नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मायावती के भूत से डरो मत। ...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उस व्यक्ति का नाम न ले जो सभा में उपस्थित नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : हमने मना किया है।

[अनुवाद]

कार्यवाही वृत्तांत से नाम निकाल दें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : जैसा मैंने कहा कि निकाह से पहले ही तलाक की डेट तय थी, यह पता था कि चुनाव में आपको एक-दूसरे के खिलाफ लड़ना ही है। हम यह चाहते थे कि देश में चर्चा महंगाई पर हो, हम यह चाहते थे कि किसानों की आत्महत्या की चर्चा हो, हम यह चाहते थे कि बेरोजगारी की चर्चा हो। यहां बड़ी-बड़ी स्कीम्स आयी थीं। मैं नौजवान हूं, इसलिए मुझे नौजवानों के रोजगार की चिंता होती है। नरेगा स्कीम आयी थी जिसे हमारे बिहार के नेता रघुवंश बाबू लेकर आए थे। उस समय बड़ी उम्मीद जागी थी, लेकिन उन सारी योजनाओं को आज फ्लाप योजनाओं के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। आज चर्चा किस बात पर हो रही है? हम तो कम्युनिस्ट मित्रों से कहते थे कि आप इनके खिलाफ लड़कर आए हैं, ये आप पर भरोसा करने वाले नहीं हैं। ये आपको यूज करेंगे और बाद में कैसी-कैसी बातें करेंगे, क्योंकि यह कांग्रेस की आदत है। बिहार में एक कहावत है कि मीठा-मीठा गप-गप और तीखा-तीखा थू-थू। जब आप इनकी मदद कर रहे थे, तब बसु दादा आपको देखकर मुस्कराते

[श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन]

थे, सलीम साहब को देखकर मुस्कराते थे, गुरूदास जी को देखकर मुस्कराते थे। आज जिस तरह का हमला उन लोगों ने किया है, मुझे ऐसी अपेक्षा नहीं थी। इन्होंने चार साल दो महीने इनके बल पर मजा किया और आज जिस तरह के शब्दबाण आपने उन पर चलाये हैं, आप कह रहे हैं कि कम्युनिस्ट और बी.जे.पी. मिल गए। हमारी विचार-धारा अलग है। हम कभी भी कम्युनिस्ट पार्टी से मिल नहीं सकते। आपने इनको यूज किया और आज आप इनके ऊपर बी.जे.पी. के साथ मिलने का इल्जाम भी लगा रहे हैं।

महोदय, न्यूक्लियर डील पर हमारे साथी कह रहे थे कि न्यूक्लियर डील पर आइए। वे काफी तैयारी से आए हैं, लेकिन हमारे नेता लाल कृष्ण आडवाणी जी के भाषण के बाद अगर कोई भाषण न भी होता, तो भी कोई जवाब नहीं था।...*(व्यवधान)* वह तो आप कहेंगे। अगर वे बहुत अच्छे से अच्छा भी बोलें, तो भी आप खराब कहेंगे और आपका नेता खराब से खराब बोले तो भी आप क्लैपिंग करेंगे, यह तो आपका धर्म है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उन्हें उत्तर मत दीजिए। आप अपना भाषण चालू रखें, आप अच्छी बातें कह रहे हैं। एकाग्रता बनाए रखिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैं आपको अनुमति नहीं दूंगा। कृपया अपनी सीट पर बैठिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : शान्ति बनाए रखें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, मेरे भाषण के बाद खारबेल स्वाईं जी, हरीन जी और विजय कुमार मल्होत्रा जी तीनों हमला बोलने वाले हैं। आप इसके लिए तैयार रहिएगा। मैं तो आनंद शर्मा जी की बातों का जवाब देने के लिए खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय : इतना टाइम नहीं है। थोड़ा-थोड़ा प्वाइंटेड बोलिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : यह प्वाइंटेड नहीं, बहुत प्वाइंटेड है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं? आपको क्या मुसीबत है, बैठ जाइए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, न्यूक्लियर डील पर बहुत बड़ी-बड़ी बातें कही गयीं। आनंद शर्मा जी की अंग्रेजी तो बहुत अच्छी है, आज हिन्दी में उन्होंने अच्छा भाषण किया। क्या हो गया कांग्रेस को, कांग्रेस की विचाराधारा तो स्वदेशी थी। गांधी जी ने स्वदेशी की बात कही। आनंद शर्मा जी ने गांधी जी का नाम एक बार भी नहीं लिया, लेकिन अमेरिकंस का नाम दस-बारह बार जरूर ले लिया। इन्होंने अपने भाषण में 22 बार अमेरिका बोला और जिस किताब का उपयोग किया, वह किसी कांग्रेस के विद्वान की लिखी हुयी किताब नहीं ली, बल्कि इनको अमेरिकन राइटर की किताब पर ही भरोसा है। आजकल कांग्रेस आई नहीं, कांग्रेस ए हो गयी है। ...*(व्यवधान)* यह कांग्रेस अमेरिका की तरह बात करती है।... *(व्यवधान)* वह जन्मपत्री अभी हम आपको बतायेंगे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बोलते रहिए।

(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, न्यूक्लियर डील के बारे में इन्होंने कहा कि हम लोगों ने सब बातें कह दीं। जसवंत सिंह जी बात करके आए थे। हम आपको जो बात कह रहे थे, हम छिपकर समझौता नहीं करते हैं। नरसिंह राव जी के जमाने में डब्ल्यू.टी.ओ. में बिना किसी चर्चा के, सत्ता, विपक्ष की बात किए बिना आप वहां जाकर सिगनेचर कर आए थे। वैसा काम हम नहीं करते।

जब डील की बात थी, तब प्रधान मंत्री जी जापान गए थे। प्रणब दा का जब कोई बयान आता है, मैं कांग्रेस के किसी नेता का बयान देखूं न देखूं, मैं प्रणब बाबू की बहुत इज्जत करता हूं, उनकी बात बड़े ध्यान से सुनता हूं, क्योंकि उनकी सब लोग इज्जत करते हैं। उनकी बात पर मुझे भरोसा है, वे सदन के नेता हैं, में सदन का सदस्य हूं, उन्होंने कहा था कि संसद को विश्वास में लिए बिना कोई समझौता नहीं होगा। लेकिन पता लगा कि आधी रात के अंदर यह डील कैसे हो गई।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है?

[हिन्दी]

यह क्या बात है?

(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, मैंने महाभारत में कुछ लोगों का उपहास उड़ाते देखा था। ये महाभारत से प्रेरित हो गए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, बहुत हो गया।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : पौने आठ बज गए हैं। हमारे पास बोलने के लिए बहुत से वक्ता शेष हैं।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, 8 जुलाई और 9 जुलाई को आई.ए.ई.ए. के मसौदे का जो पेपर था, उसे सार्वजनिक कर दिया गया। वह पेपर न यू.पी.ए. ने अपने एलीज़ को दिखाया, न इन्होंने संसद को दिखाया, न विपक्ष को दिखाया और पता लगा कि इन्होंने रात के अंधेरे में देश के साथ धोखा किया है।...*(व्यवधान)*

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : देश को दिखा दिया था। ...*(व्यवधान)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : हमने वैबसाइट पर डाउनलोड करके देखा। इन्हें पता ही नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रत्येक सदस्य को उत्तर मत दीजिए।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : ये हाइड एक्ट को हाइडल एक्ट कर रहे थे। अब जोर से हंस रहे हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप छोड़िए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री शाहनवाज हुसैन के भाषण के सिवाय कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा। कृपया बैठ जाइए।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए। हम ऐलाऊ नहीं करेंगे।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जो भी यह कह रहे हैं उसमें से एक भी शब्द कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित न करें

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : अगर मिसलीडिंग आफ दी हाउस है, तो आप लीडिंग कीजिए।

(व्यवधान)

श्री सैयद शानहवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, इस पर बहुत चर्चा हो गई कि भारत के साथ आप बहुत बड़ी भलाई कर रहे हैं। ऐसा मैसेज दिया जा रहा है कि सन् 2050 में या 2030 में जब भारत की नई पीढ़ी आएगी तब वह मनमोहन सिंह जी को याद करेगी कि इन्होंने रोशनी दी।...*(व्यवधान)* न्यूक्लियर एनर्जी से बिजली का सिर्फ पांच प्रतिशत उत्पादन होगा और आप इतना बड़ा ख्वाब दिखा रहे हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि ये अपनी सरकार को, देश को इस बात पर दांव पर क्यों लगाने पर तुले हुए हैं।

इन्होंने भारत को नान-न्यूक्लियर कंट्री के दायरे में लाकर खड़ा किया। इस ट्रीटी से, इस एग्रीमैंट से भारत नान-न्यूक्लियर कैटेगरी में आ जाएगा, उस पर ये अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। मैं अपको कहना चाहता हूं कि यह समझौता हिन्दुस्तान को उजाले की तरफ नहीं बल्कि अंधेरे की तरफ ले जाएगा। आप कह रहे थे कि इस पर कोई राजनीति नहीं हो रही है, इस पर कोई सियासत नहीं कर रहे हैं, आप देश के लिए कुर्बान हो रहे हैं, बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। पार्लियामैंट में आने से पहले बयान दे रहे हैं कि हम देश के लिए कुर्बान हो जाएंगे। अध्यक्ष महोदय, इस पर अलग-अलग राजनीति हो रही है। यह सरकार अल्पमत में है और अल्पमत में होने के बाद इस सरकार ने अब समझौता किया। जिस दिन यू.पी.ए. सरकार नैतिकता की बात करती है, हम प्रधान मंत्री जी की इज्जत करते हैं, हम उनका धन्यवाद

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन]

करते हैं कि उन्होंने गुरू गोविंद सिंह जी का नाम लिया। हम बिहार के रहने वाले हैं और हमें गर्व है कि गुरू गोविंद सिंह जी बिहार के थे। इस वजह से हम पूरी जिम्मेदारी से कह सकते हैं कि गुरू जी ने कभी देश के साथ कोई समझौता नहीं किया। अगर गुरू जी का नाम लिया तो देश के साथ कोई समझौता नहीं होना चाहिए, देश के साथ कोई विश्वासघात नहीं होना चाहिए, जो एटमी डील है, यह इस देश के साथ विश्वासघात है। आने वाली पीढ़ी आपको कभी माफ नहीं करेगी।

अध्यक्ष महोदय, इनके नेताओं का बयान आ रहा था कि भारत क्या एक टापू है जिस पर कोई कब्जा कर लेगा? एक ईस्ट इंडिया कंपनी यहां आयी थी। उसमें भी ईआई था। उस कम्पनी ने इस मुल्क पर 300 साल राज किया। अगर यह डील हो गयी, तो हिन्दुस्तान 600 साल की गुलामी में चला जायेगा और इसके लिए आप जिम्मेदार होंगे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है। यदि आप ऐसा करेंगे, तो हम आपको बोलेंगे कि आप थोड़ा बाहर चले जाइये।

(व्यवधान)

श्री हरिन पाठक : वे हमारे मिनिस्टर हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : कम्युनिस्ट पार्टी के साथी जो विरोध कर रहे हैं, वे सही हैं। आज तो राजनीति हो रही है। इस देश में तो आदत है। सबसे पहले मैंने फंदे साहब का बयान देखा कि यह डील मुस्लिम विरोधी है।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : उन्होंने इस बात का खंडन कर दिया।...*(व्यवधान)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : जी, आपने खंडन कर दिया। उसके बाद कितना खंडन हो गया। वह कानून में बदल गया, आइटम बन गया। उसी नाम पर सियासत हो रही है।

अध्यक्ष महोदय, जिस समाज से मैं आता हूं, उसके नाम पर बड़े लोग नेतागिरी करते हैं। जो नेतागिरी करने वाले लोग हैं, उन्होंने तरह-तरह के बयान दिये। अब फंदे साहब का बयान आया और वह वापस हो गया, वह एक अलग विषय है। लेकिन आजकल मैं देख रहा हूं कि जब यह डील हो रही है, तो उसका भी साम्प्रदायिकीकरण किया जा रहा है। इस पर अलग-अलग बयान दिये जा रहे हैं। कुछ बयान विपक्ष में दिलाये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में बहनजी दिला रही हैं कि यह विरोधी है। कुछ बयान पक्ष में दिलाये जा रहे हैं कि यह डील मुस्लिम विरोधी नहीं है।...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : आप बहनजी की बात मान लें।...*(व्यवधान)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : हम जिसे मानते हैं, उसी को मानते हैं। हम श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी को मानते हैं। हम बार-बार नीयत बदलने वाले नहीं हैं।...*(व्यवधान)* इसलिए लोगों ने कहा। अब समाजवादी पार्टी के जो मित्र हैं, वे इनके साथ थे, हमारे इनसे भी बड़े अच्छे संबंध हैं। कभी एक जमाना था जब दावत में इनके हाथ से प्लेट छीन ली गयी थी। हमें भी यह अच्छा नहीं लगा।

अध्यक्ष महोदय, कहीं दावत मिले और बुलावा न भी हो, किसी कांग्रेस के मित्र के यहां चले जायें, तो थोड़ी बहुत इज्जत कुलीग के नाते तो हमें मिलेगी। लेकिन हमें यह पसंद नहीं था। अब क्या बात हुई, वह राम गोपाल जी ने बतायी होगी। एक शायर ने कहा कि "कुछ तो मजबूरियां हुई होंगी, यूं ही कोई बेवफा नहीं होता।" ...*(व्यवधान)*

श्री राम कृपाल यादव (पटना) : हमारा लगातार समर्थन रहा है।...*(व्यवधान)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : वह बयान हम पढ़ चुके हैं इसलिए उसमें हम जाना नहीं चाहते क्योंकि हमारा भाषण बड़ा लम्बा हो जायेगा। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप अपना भाषण लम्बा मत कीजिए क्योंकि ज्यादा समय नहीं है।

(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : समाजवादी पार्टी के नेता ने कब कांग्रेस के लिए क्या बयान दिया, कब कांग्रेस के नेता ने क्या बयान दिया, कब किन्होंने क्या कहा, कब उन्होंने क्या कहा।... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उस व्यक्ति का नाम न लें जो सभा में उपस्थित नहीं हैं। इन नामों को कार्यवाही वृत्तांत से निकाल दें।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सपा के एक नेता है।...*(व्यवधान)* अध्यक्ष जी, मेरे पास काफी कागज हैं जो नीचे रखे हुए हैं।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप उसे मत निकालिये।

(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आप दिखाने के लिए कहते, लेकिन मैं बड़े अनुशासन में चलता हूं। जब आप चेयर पर होते हैं, तो मैं ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं इसलिए ही आपको इतना ज्यादा पसंद करता हूं।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष जी, मैंने जब कहा कि "कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं ही कोई बेवफा नहीं होता।" पता नहीं उत्तर प्रदेश में आप पर क्या दिक्कत आ रही है? आप क्यों उनके साथ जा रहे हैं? जितना अपमान आपकी पार्टी का कांग्रेस ने किया, हम लोग मर जाते, लेकिन कभी उस दरवाजे पर नहीं जाते।... *(व्यवधान)*

श्री रामजीलाल सुमन (फ़िरोज़ाबाद) : अध्यक्ष महोदय, ये बिल्कुल निरर्थक बातें हो रही हैं। एक स्वस्थ बहस होनी चाहिए। इस तरह सदन का समय बर्बाद हो रहा है।...*(व्यवधान)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, इनको पिंच हो रहा है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : केवल शाहनवाज़ हुसैन की बात ही रिकार्ड में जायेगी।

(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, आज कांग्रेस पार्टी ने जिनका सहारा लिया है उनको और जिनको छोड़ा है, उनकी संख्या तो इंटेक्ट है। जो भी संख्या हो, उन्होंने राष्ट्रपति भवन में जो संख्या दी हो, लेकिन जिनका इन्होंने सहारा लिया है, जिस तरह एक शायर ने कहा कि "इस कद्र बदहवास हो गये आंधियों में लोग, जो पेड़ खोखले थे, उन्हीं से लिपट गये। इनके यहां तो खुद की संख्या कम हो रही है, खुद अपने सांसदों को बचाते फिर रहे हैं। आज उन्हीं के सहारे ये एन.डी.ए. की आंधी में उनसे लिपट गए।...*(व्यवधान)* मुझे चिंता नहीं है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं अब मुझे प्रधानमंत्री से कल प्रातः उत्तर देने के लिए पूछना होगा। अगर इस प्रकार से वाद-विवाद चल रहा है तो बहस करने का कोई अर्थ नहीं है।

[हिन्दी]

यह क्या बात हो रही है?

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मुझे अगर न टोका जाए, तो मैं अपनी बात दो-चार मिनट में खत्म कर दूं।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको पांच मिनट देता हूं, अपनी बात समाप्त कीजिए।

[अनुवाद]

श्री शाहनवाज हुसैन, आपके पास पांच मिनट हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया, मैं ऐसा पसंद नहीं करता।

[हिन्दी]

बहुत हो गया। क्या बात है? कोई भी मेंबर बिना इंटरप्शन्स के बोल नहीं सकता है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं कोई 20 मेंबर्स वाली पार्टी से एम.पी. नहीं हूं, मैं 130 मेंबर्स वाली पार्टी से एम.पी. हूं। इसलिए आप मुझे बोलने से नहीं रोक सकते हैं। मेरी पार्टी के पास समय है। मैं आपकी तरह 20 मेंबर्स वाली पार्टी का एम.पी. नहीं हूं।...*(व्यवधान)* इसलिए आप लोग मेरी फिक्र मत कीजिए।

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं विभिन्न दलों के नेताओं से अनुरोध करता हूं कि वे अपने सदस्यों को नियंत्रित करें। यह उचित नहीं है। मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगा। अब यदि कोई सभा की कार्यवाही में बाधा डालता है तो मैं उसे बाहर जाने के लिए कहूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : इसमें आर.एस.एस. कहां से आई।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : पाठक जी, आप चुप रहिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मैं अब अपनी बात समाप्त करने की ओर बढ़ रहा हूं। केवल तीन-चार मिनट में मैं अपनी बात समाप्त कर लूंगा।

अध्यक्ष महोदय : अगले चार मिनट में आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मैं समझता था कि केवल सपा और बसपा वाले लोग टोकाटाकी करेंगे, लेकिन आज मैं ही सबसे ज्यादा टोका गया हूं। मैं बहुत उम्मीद में था कि मेरे संबंध अच्छे हैं, इसलिए कोई टोकेगा नहीं, लेकिन मैं देख रहा हूं कि सबसे ज्यादा मुझ ही टोका जा रहा है। अब मैं इनके द्वारा कही गयी बातों पर आता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना समय बर्बाद न करें। मैं आपको चार मिनट का समय दूंगा।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मुझे आपका संरक्षण चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको पूरा संरक्षण दे रहा हूं।

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : महोदय, मैं इन लोगों को भी हमारे साथ लाना चाहता हूं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं आपके माध्यम से इस डील के बारे में एक समरी एक लाइन में कहना चाहता हूं कि आज इसे पूरी दुनिया देख रही है, एक से एक बातें कही जा रही हैं, डील के बारे में बहुत चर्चा हो रही है, लेकिन परसेप्शन थोड़ा खराब है। मैं अकलियत से हूं, इसलिए मैं अकलियतों की बात कहता हूं। हमारा कॉंट्रैक्ट आप नहीं ले सकते, आज तक कॉंट्रैक्ट पर ही राजनीति हुई है।

श्री रामदास आठवले : आप भी नहीं ले सकते हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आप तो बहुत नजदीक आ गए हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह आपसे बहुत प्यार करते हैं। मैं समझता हूं कि आपके अच्छे मित्र हैं।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : लेकिन यह परसेप्शन बन गया है और इस परसेप्शन में गुट निरपेक्ष राजनीति की वजह से कांग्रेस मशहूर थी। लेकिन आज यह परसेप्शन बन गया है। वर्ष 1989 में मैं यहां पढ़ता था कि अमेरिका का इराक से झगड़ा था। उस झगड़े में बड़े-बड़े पोस्टर्स लगाए गए थे। अगर मैं गलत हूं तो कांग्रेस के कोई वरिष्ठ नेता उठकर मुझे टोक देंगे, मैं मान लूंगा कि मेरी बात गलत है। ''दोस्ती के दो ही नाम, राजीव गांधी और सद्दाम'' यह नारा उस जमाने में लगा था जब इराक की जंग शुरू हुई थी और उसी सरकार के जमाने में सद्दाम हुसैन फांसी पर लटका दिए गए और इस सरकार की ओर से कुछ नहीं हुआ। इसी सरकार के जमाने में हिंदुस्तान की अकलियत के लोग सोचते थे कि ये लोग गुट निरपेक्ष थे, ये लोग हमेशा ईरान और गल्फ की राजनीति करते थे, इन लोगों को क्या हो गया? आज जब ईरान के खिलाफ पूरी दुनिया में साजिश हो रही है और यह सरकार जिस तरह से अमेरिका से मजबूती से दोस्ती कर रही है, उससे अल्पसंख्यकों के मन में घबराहट पैदा हुई है।...*(व्यवधान)* बाबरी मस्जिद की घटना के समय नरसिंहा राव जी प्रधानमंत्री पद पर थे।...*(व्यवधान)* आप भी उसी पार्टी के हैं।

कुंवर मानवेन्द्र सिंह (मथुरा) : महोदय, इस प्रकार संप्रदाय के नाम पर भारत का विखण्डन बंद कीजिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब मैं आपसे बाहर जाने के लिए कहूंगा। यह मैं आपको अन्तिम चेतावनी दे रहा हूं।

[हिन्दी]

श्री सैय्द शाहनवाज़ हुसैन : अध्यक्ष महोदय, देश का प्रधानमंत्री एक इंस्टीट्यूशन है। आप हमारे स्पीकर है, आप हमारी पार्टी के हैं या नहीं हैं, लेकिन आप हमारे स्पीकर हैं, इसलिए चेयर का सम्मान किया जाता है। नरसिंह राव जी देश के प्रधानमंत्री थे, लेकिन किसी कांग्रेजी नेता की जबान पर स्वर्गीय नरसिंह राव जी का नाम कभी नहीं आया।

रात्रि 8.00 बजे

जिनकी सरकार में मनमोहन सिंह जी खुद वित्त मंत्री थे। अभी चर्चा में हमारे मित्र ने कहा कि वह नरसिंह राव जी के कार्यकाल में हुआ था, भारत का मुसलमान अच्छी तरह से जानता है...*(व्यवधान)* आप ऐसी बात करके बहस को दूसरी तरफ न ले जाएं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप लोग क्या कर रहे हैं,

[अनुवाद]

मुझे उनका नाम पुकारना होगा। आप दोनों का अब मैं नाम पुकारूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैय्द शाहनवाज़ हुसैन : मैं इस डील के बारे में कहना चाहता हूं कि इसका परसैप्शन खराब है। अगर परसैप्शन खराब नहीं होता, तो स.पा. के साथ मुसलमानों का वोट बड़ी तादाद में रहा है, मैं इसे मानता हूं, लेकिन खतरा सरकार पर मंडरा रहा है, उस खतरे का एहसास आपको भी है इसलिए 16 साल के बाद आपको जामा मस्जिद की सीढ़ियां चढ़कर इमाम साहब से मिलने जाना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, अब अपनी बात समाप्त करें।

[अनुवाद]

कृपया उनकी ओर न देखें। मैं शायद इतना सुंदर नहीं हूं। लेकिन कृपया आप मुझे संबोधित करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैय्द शाहनवाज़ हुसैन : मुझे आपको देखकर थोड़ा आत्मबल मिलता है, टोका-टाकी से नजर उधर चली जाती है। मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मुझे आपकी पार्टी के अन्य सदस्यों के समय में कटौती करनी पड़ेगी। मैं आपकी पार्टी के इतने वक्ताओं को बोलने का मौका नहीं दे सकता।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैय्द शाहनवाज़ हुसैन : मुस्लिम वोट जाने की दहशत में इनके नेता को जामा मस्जिद जाकर इमाम बुखारी के दरवाजे को खटखटाना पड़ा। इतनी भी क्या मजबूरी इन्हें आ पड़ी, यह सब समझ सकते हैं। मैं इस न्यूक्लियर डील को हिन्दू-मुसलमान में नहीं बांटना चाहता। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस देश के अंदर जब भी ये लोग कमजोर होते हैं, तब एक ही बात कहते हैं कि हम साम्प्रदायिक ताकतों को अलग रखने के लिए एक साथ हुए हैं। जब अलग होते हैं, तब इन्हें मुस्लिम याद नहीं आते।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या अब मुझे निर्देश देना चाहिए।

(व्यवधान)

श्री सैय्द शाहनवाज़ हुसैन : इस डील को मैं हिन्दू या मुस्लिम के पक्ष या विरोध में नहीं देखना चाहता। यह डील न तो मुसलमानों के पक्ष में है और न ही हिन्दुओं के, यह डील तो हिन्दुस्तान के विरोध में है इसलिए यह डील हिन्दुओं और मुसलमानों के भी विरोध में है।

मैं अपनी बात आपका आभार व्यक्त करते हुए समाप्त करना चाहूंगा। आज एक ऐतिहासिक दिन है। इतिहास इस बात को याद रखेगा। अगर मैं आज नहीं बोलूंगा तो इतिहास मुझे माफ नहीं करेगा। यह सरकार अमेरिका के साथ समझौता करके अमेरिकी गुलामी कबूल कर रही है। जो हाल कांग्रेस पार्टी का नरसिंह राव जी के कार्यकाल में हुआ था, उससे भी खराब हाल अब होने जा रहा है। इन्होंने हमारे नेता पर आरोप लगाया कि हम लोगों ने आतंकवादियों को छोड़ दिया, तो क्या उन 150 निर्दोष लोगों की जान आपके हवाले कर देते। हमने अपने देश के एक भी नागरिक को मरने देने का काम नहीं किया और उनकी जान की कीमत पर दो टके के आतंकवादियों को हमें छोड़ना पड़ा। मैं यहां पर एक बात और कहना चाहता हूं।... *(व्यवधान)* मैं एक मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा इसलिए मुझे आपका संरक्षण चाहिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाएं और शाहनवाज जी अब आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : ठीक है। इन्होंने कहा कि हमने उन आतंकवादियों को छोड़ दिया, लेकिन एक बात आनन्द शर्मा जी फिर भूल गए, मैं उन्हें थोड़ा याद दिला दूं कि आप तो आतंकवाद के खिलाफ कभी मजबूती से लड़े ही नहीं। भारत के इतिहास में वह पहली घटना थी, जब कश्मीर के चरारे शरीफ में आपने आतंकवादी मस्तगुल को बिरयानी खिलाई थी। हिन्दुस्तान की राजनीति में पहली बार चरारे शरीफ में मस्तगुल को आपने सेफ पैसेज दिया था।

अध्यक्ष महोदय : अब अपनी बात समाप्त करें।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आपका धन्यवाद तो कर दूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपका धन्यवाद स्वीकार कर लिया है।

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : इन्होंने ही उसे सेफ पैसेज दिया था। आज जो आरजेडी के सांसदों ने कहा कि पूरी बिजली ला रहे हैं। बिहार में 15 साल में एक बल्ब तो जला नहीं पाए, लालटेन से काम चलाते रहे। आप बिजली की बात करते हैं।...*(व्यवधान)* पिछले 15 सालों में आप बिहार में बिजली नहीं ला सके और आज बिजली की बात करते हैं। मेरे नेता माननीय आडवाणी जी के बारे में इन्होंने चर्चा की कि बी.जे.पी. खामोश हो गयी। मैं कहना चाहता हूं कि बी.जे.पी. खामोश नहीं हुई है।...*(व्यवधान)* हम बिहार में भागलपुर से जीतकर आये हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : केवल श्री प्रफुल पटेल का भाषण ही कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित किया जाएगा। श्री हुसैन मैंने आपको बहुत समय दिया था।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं आखिर में यही कहना चाहता हूं कि—

"दरिया हो खामोश तो मत समझ कि रवानी नहीं है
हम हैं अपने फर्ज से मजबूर, मत समझ कि जोशे जवानी नहीं है।"

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार) : अध्यक्ष जी, बता दिया जाए कि छोटी पार्टियों को आज समय मिलेगा या नहीं।

अध्यक्ष महोदय : समय दो घंटा है। आपका नाम आयेगा।

श्री प्रभुनाथ सिंह : हम नम्बर में बहुत पीछे हैं क्या?

अध्यक्ष महोदय : इनके 11 मैम्बर्स हैं, आपके 8 हैं।

श्री रामदास आठवले : हमारा भी नम्बर आयेगा क्या?

अध्यक्ष महोदय : आपका तो आयेगा ही नहीं।

श्री प्रभुनाथ सिंह : हमें बुलवाएंगे।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आपको बुलवाएंगे।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : कांग्रेस पार्टी की तरफ से 6 कैबिनेट मिनिस्टर्स बोले हैं।

अध्यक्ष महोदय : आपके मिनिस्टर्स नहीं है, इनके हैं, इसलिए बोले हैं।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : यू.पी.ए. की तरफ से, गवर्नमेंट की तरफ से तीन गुना टाइम लिया गया है।

अध्यक्ष महोदय : यू.पी.ए. का टाइम नहीं होता है। ये अपनी पार्टी की तरफ से बोल रहे हैं।

[अनुवाद]

श्री प्रफुल पटेल अपनी पार्टी के लिए बोलने जा रहे हैं। उनकी पार्टी को अलग से समय मिला हुआ है। हम पहले ही बहुत सा समय बर्बाद कर चुके हैं। श्री प्रफुल पटेल अब अपना भाषण शुरू कर सकते हैं।

[हिन्दी]

नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री प्रफुल पटेल) : माननीय अध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो प्रस्ताव यहां रखा है कि हमारे मंत्रिमंडल में यह सदन विश्वास व्यक्त करता है, इस प्रस्ताव के समर्थन में मैं यहां पर खड़ा हुआ हूं। सुबह से जिस तरह से यहां बहस हो रही है उस पर मुझे थोड़ी हैरत और आश्चर्य हो रहा है कि यह सरकार रहे या न रहे, देश की विदेश-नीति, इसके लिए केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। मेरा संसदीय कार्य माननीय प्रणव जी या विपक्ष के नेता माननीय लालकृष्ण आडवाणी जी से कम है। इन्हें

40-40 साल का अनुभव है लेकिन मेरे 18 वर्ष के संसदीय कार्य में मैंने कभी नहीं देखा कि देश की विदेश नीति को इतना ज्यादा हम लोगों ने न केवल केन्द्र बिन्दु विवादास्पद बना दिया है। मैं समझता हूं कि काफी लोग देश-विदेश के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं क्योंकि वहां की पार्लियामेंट और वहां के पार्लियामेंट सिस्टम को आप जानते हैं। लेकिन जिस तरह से हम इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं, कभी-कभी दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि हम लोग भी विश्व के सामने जिस अंग्रेजी में "सॉरी फिगर" कहते हैं, ऐसा चित्र पेश कर रहे हैं। हमारे मतभेद हैं और लोकतंत्र में मतभेद हो सकते हैं। हमारा देश लोकतंत्र में विश्वास करता है और लोकतंत्र के माध्यम से हम लोग संसद में पहुंचते हैं।

महोदय, लोकशाही में विभिन्न विचार रखना कोई गलत बात नहीं है। चाहे आज हम कितनी भी कटुता के साथ एक-दूसरे के लिए अपने विचारों को व्यक्त कर रहे हैं, लेकिन संसदीय सिस्टम में विरोध या विरोधाभास होना गलत बात नहीं है। मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि इसका एक तौर तरीका होना चाहिए। हम जिस निचले स्तर पर चर्चा कर रहे हैं, शयद चर्चा के मूल केंद्र बिन्दु को हम नजरअंदाज कर रहे हैं।

[अनुवाद]

मैं आज के 'टाईम्स ऑफ इंडिया' के एक संपादकीय की दो पंक्तियों का उल्लेख करना चाहूंगा। इसमें कहा गया है:

> "विश्वास मत केवल सरकार का बचना या गिरना ही नहीं अपितु भारत की भावी दिशा भी तय करेगा। संसदविद् कल अपने मत डालेंगे अतएव, उन्हें अपने मत का उपयोग विश्व में भारत के स्थान के बारे में अपनी मूल धारणा के आधार पर ही करना चाहिए।"

मैं कोई वक्तव्य देने का प्रयास नहीं कर रहा हूं। परंतु सच यह है

[हिन्दी]

कि आज और आने वाले कल में जो बहस होने जा रही है, उसके ऊपर पूरे विश्व की निगाह है। दुनिया देखने जा रही है कि दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र किस दिशा में जा रहा है। किस तरह से हमारी बहस हो रही है और हमारी सोच कैसी है, इस तरफ पूरे विश्व का ध्यान है। मुझे हैरत होती है कि हम देश की एनर्जी सिक्योरिटी के बारे में कितने साधारण और छोटे दायरे में चर्चा कर रहे हैं। आज पूरे विश्व में एनर्जी सिक्योरिटी के बारे में कितनी गंभीर सोच है। मुझे अमरीका की संसद का बाहर से कार्य देखने का मौका मिला है, इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया की संसद के कार्य को भी मैंने देखा है। वहां कितनी गंभीरता के साथ एनर्जी सिक्योरिटी के बारे में चर्चा होती है। मतभेद वहां भी होते हैं, लेकिन राष्ट्र के प्रति हमारी जो सोच और विचार होना चाहिए, यहां कई वक्ताओं के माध्यम से उस सोच को छोटा और निचले स्तर का बनाने की कोशिश की जा रही है। आज अमरीका या दूसरे देश अपने राष्ट्र के हित को ध्यान में रख कर कानून बनाते हैं और अपने करार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर करते हैं। उसी प्रकार से हमारे प्रधानमंत्री ने एक बार नहीं अनेक बार इस देश के सदन में लोकसभा हो या राज्य सभा में, बहस के माध्यम से देश को आश्वस्त करने का काम किया है कि हमारी सरकार की सोच हमारे देश के प्रति क्या है। हमारा करार जो अमरीका के साथ हो रहा है, उसमें हमारे देश के लिए फायदे-नुकसान क्या हैं, बहुत पारदर्शिता के साथ प्रधानमंत्री जी ने आपके सामने बात रखी है। कई वक्ताओं ने हाइड एक्ट की बात कही है।

रात्रि 8.13 बजे

[उपाध्यक्ष **महोदय** *पीठासीन हुए*]

हाइड एक्ट में क्या अच्छा है, क्या बुरा है, उसमें क्या आपत्तिजनक है, वह अलग बात है। हाइड एक्ट के माध्यम से हम भी सरकार के माध्यम से कह सकते हैं, हालांकि हमारी संसद या हमारे देश के ऊपर वह लागू नहीं होता है। कपिल सब्बिल जी, चिदम्बरम जी कानूनी स्थिति को आपके सामने जरूर रखेंगे, लेकिन साधारण तौर पर किसी को समझाने की जरूरत नहीं है कि दूसरे देश का कानून हमारे देश पर लागू होता है या नहीं। हाइड एक्ट में किस प्रकार से हमारे देश के लिए वेवर्स है, वहां के राष्ट्रपति जी को किस प्रकार से हमारे देश के लिए 123 एक्ट के बारे में जो भी पहलू हैं, उसमें भी वेवर के अधिकार दिए गए हैं, वे भी सैक्शन 104 में दिए हैं। मैं उसके बारे में टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं, लेकिन हाइड एक्ट के बारे में हम निश्चित चर्चा किए जा रहे हैं। हाइड एक्ट में आपको क्या आपत्तिजनक लगता है, उस बारे में अगर चर्चा हो, तो भी मैं समझ सकता हूं। उसका हम सरकार के माध्यम से आपको उत्तर देने की कोशिश करेंगे, लेकिन यहां 123 एग्रीमेंट की बात हो रही है। इस एग्रीमेंट में क्या मुद्दे आपत्तिजनक हैं। अभी मेरे पूर्ववक्ता ने बड़े साधारण तरीके से कह दिया कि ईस्ट इंडिया कंपनी के कारण देश 300 साल तक गुलाम रहा। अगर हम 123 एग्रीमेंट को पारित करेंगे, तो देश 600 साल के लिए गुलाम हो जाएगा। हम देश के हित में काम करने के लिए संसद में चुन कर आए हैं। क्या हम लोगों को इतना भी महसूस नहीं हो रहा है कि देश की एनर्जी सिक्योरिटी के बारे में हमें गंभीरता से सोचना होगा।

[श्री प्रफुल पटेल]

क्या आज सही मायने में हमारी एनर्जी सिक्योर है या नहीं? 1970 के बाद जब विश्व में ऑयल प्राइसेज बढ़ने लगे, पहली बार ओपेक का गठन हुआ। उसके बाद देश ने एनर्जी सिक्योरिटी को बहुत सीरियसली लेने का काम किया। श्रीमती इंदिरा गांधी देश की प्रधान मंत्री थी। उन्होंने ऑयल एक्सप्लोरेशन को शुरू किया और उसकी बहुत गम्भीरता से शुरूआत की। मुम्बई हाई आया। देश में ऑयल और गैस की अनेक डिसकवरिज हुईं। उसके बाद लोगों में व्यापक सोच बनने लगी कि देश को दूसरी ओर भी ले जाने की जरूरत है। इसके बाद 1974 को पहला विस्फोट इंदिरा जी के समय हुआ। सुबह बहुत साधारण तरीके से नेता विपक्ष ने यहां कह दिया कि हमने पोखरण टू किया। पोखरण टू तो उस समय हुआ जब पोखरण वन हुआ। आपके सत्ता में आने के दो महीने बाद पोखरण टू हुआ। क्या आप लोगों ने दो महीने में अचानक देश की सोच ओर परमाणु शक्ति की तैयार कर ली? जिस तरह आप लोगों ने यहां बात रखने की कोशिश की है, सही मायने में मैं समझता हूं कि संसद का समय इस प्रकार की छोटी चर्चा में न करते हुए बल्कि व्यापक चर्चा करते। हम लोगों को उस सयम खुशी होती जब हमें कोई इसका सॉल्यूशन बताते। यहां केवल यह कहा गया कि 123 एग्रीमेंट नहीं होना चाहिए। इसका मतलब देश गुलाम हो जाएगा, देश कैसे गुलाम होगा, इसके बारे में अगर कोई नई बात रखी होती तो अच्छा होता।

[अनुवाद]

मैंने किसी भी वक्ता को 123 करार के संबंध में आपत्तिजनक भाग पर साधिकार बोलते हुए नहीं सुना; किसी भी वक्ता ने इस करार के इन मुख्य बिन्दुओं की बारीकी पर देर तक नहीं बोला। मेरी इच्छा है कि इस मुद्दे पर बहस होनी चाहिए। मुझे विश्वास है यदि उसमें कुछ तकनीकी बात है तो न केवल मैं अपितु मेरे सम्माननीय साथी श्री कपिल सिब्बल और श्री पी. चिदम्बरम इस कानूनी बिन्दु पर चर्चा कर सकते हैं कि ऐसे मुद्दे कौन से हो सकते हैं जो भारत के हित में नहीं होंगे...*(व्यवधान)*

श्री गुरूदास दासगुप्त : कितने महान वक्ता हैं...*(व्यवधान)*

श्री प्रफुल पटेल : शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। श्री दासगुप्त आप मुझे बहुत देर से पहचान रहे हैं। यदि श्री गुरूदास दासगुप्त तथा अन्य वक्ता इस बात पर बोल पाते कि भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा किस प्रकार पूरी करेगा; मुद्दे क्या हैं और अन्य राष्ट्र किस प्रकार ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर किस प्रकार विचार कर रहे हैं तो मुझे बहुत खुशी होती।

विपक्ष के माननीय नेता ने एक बहुध्रुवीय विश्व की बात की है। मुझे बहुत खुशी होगी और इस प्रकार का कोई प्रश्न ही नहीं है। वस्तुतः मैं यह कहना चाहता हूं कि उन्हें माननीय प्रधानमंत्री और उनकी सरकार की इस बात के लिए सराहना करनी चाहिए कि वे भारत को इस दिशा में ले जा रहे हैं अथवा उसके अलगाव को दूर कर रहे हैं जो विगत 30 वर्षों से भी ज्यादा समय से चल रहा है। वास्तव में इस करार में भारत को वापस केन्द्रीय स्थिति में लाने का प्रयास किया गया है। वस्तुतः हम सभी को सामूहिक रूप से इस बात की बधाई देनी चाहिए कि भारत पिछले 30 वर्षों में कहां से कहां पहुंच गया है। हम वर्षों से भारत के महान वैज्ञानिकों और भारत के नेताओं द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों और विकास की उपेक्षा करने का प्रयास करके इतने तुच्छ और पक्षपाती होने का प्रयास क्यों कर रहे हैं?

इसीलिए मैं वास्तव में ऐसा महसूस करता हूं और मैं इस 123 करार को समझने में असमर्थ हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि अधिकांश लोग यह सोच रहे हैं और यही मानने का प्रयास कर रहे हैं कि यह 123 करार केवल भारत और अमेरिका के बीच हो रहा है यह 123 करार अमेरिका ने न केवल भारत के साथ अपितु चीन तथा कई अन्य राष्ट्रों के साथ भी किया है...*(व्यवधान)*

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : हाईड एक्ट को छोड़कर

श्री प्रफुल पटेल : मेरे मित्र, मैं कुछ कहने का प्रयास नहीं कर रहा हूं। हां आपने हाईड एक्ट की बात की। परंतु सच यह है कि जब आप 123 करार की बात करते हो तो मैं बताना चाहूंगा कि यह 123 करार अमेरिका के साथ किया है। हाईड एक्ट भारत पर उस प्रकार से लागू नहीं होता जिस प्रकार से विपक्ष में मेरे साथी बात रहे हैं...*(व्यवधान)* यह भात के लिए चर्चा और वाद-विवाद का मुद्दा नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है सभा के नेता श्री प्रणब मुखर्जी ने सुबह अपने भाषण में इस बात का जिक्र किया था कि हाईड एक्ट हमारे देश के कानूनों पर लागू नहीं होता। यह भारत की संसद और भारत के कानूनों का मुद्दा है 123 का करार हाईड एक्ट में कतई कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। यह अमेरिकी कांग्रेस के लिए है; यह भारत के साथ करार करने के लिए अमेरिकी प्रशासन के लिए है।

हाईड एक्ट उनकी सीनेट ने अधिनियमित किया था यह... लागू नहीं होता...*(व्यवधान)* श्री वरकला राधाकृष्णन, मैं इन सब बातों में नहीं जाना चाहता...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : श्री राधाकृष्णन आपको बोलने से पहले

अध्यक्ष पीठ से अनुमति लेनी होगी कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : मेरी अनुमति के बिना जो भी बोलेगा उसकी बातों को कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। कृपया बैठ जाईए।

*(व्यवधान)**

श्री प्रफुल पटेल : जब उनकी बारी आएगी तो उनका यह बताने के लिए स्वागत होगा कि हाईड एक्ट... लागू होता है...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : यह कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं हुआ।

श्री प्रफुल पटेल : मैं यह बात कहना चाहता था कि मैं सुबह से हर विपक्ष की ओर से अपने प्रत्येक माननीय और प्रतिष्ठित साथी का भाषण सुन रहा हूं। कोई भी एक संदर्भ, कोई भी एक सदस्य न तो सभा को और न सरकार में हममें से किसी को भी यकीन दिला पाया है कि आखिर 123 करार में आपत्तिजनक क्या है। मैं समझता हूं कि यह एक निश्चित स्थिति है जिसे मेरे मित्रों ने यहां अपनाया है। कम से कम यहां उपस्थित श्री गुरूदास दासगुप्त तथा मेरे साथियों को धैर्य रखना चाहिए।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री रूपचंद पाल (हुगली) : इसे लिखित रूप में सरकार को दिया है लेकिन सरकार ने कुछ रिप्लाई नहीं दिया है।

श्री प्रफुल पटेल : मैं इन मुद्दों पर इसलिए नहीं आना चाहता हूं क्योंकि यह बहस सुबह से चल रही है। आप लोगों की तरफ से बात रखी गई है और मैं समझता हूं कि सरकार की ओर से इसके बारे में पूरी तरह से उत्तर देने की कोशिश की गई है। अगर आप समझना ही नहीं चाहते हैं और यह कहना चाहते हैं कि 123 एग्रीमेंट सिर्फ इंडिया स्पेसिफिक है और हाइड है तो मैं कहना चाहता हूं यह इंडिया स्पेसिफिक जरूर होगा लेकिन सिर्फ यू.एस. कांग्रेस, यू.एस. एडमिनिस्ट्रेशन या हमारे लिए लागू होता है, ऐसा इस एग्रीमेंट में कहीं दर्शाया नहीं गया है। अब आप जबरदस्ती किसी चीज को करना चाहेंगे...*(व्यवधान)* हमारे देश के प्रधानमंत्री ने इस संसद में सात बार लोकसभा और राज्य सभा में बयान दिया और हमारे देश की स्थिति को स्पष्ट किया है। क्या यह बयान और संसद की बहस यू.एस. कांग्रेस या यू.एस. एडमिनिस्ट्रेशन तक नहीं जाती?

[हिन्दी]

हमारे माननीय प्रधानमंत्री यहां जो बहस करते हैं या आप लोगों को इतना स्पष्ट आश्वासन देने की कोशिश करते हैं, क्या उसके बारे में, देश की संसद के बारे, में...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री रूपचंद पाल, कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा क्योंकि जब आपकी बारी आएगी आप तब ही बोलेंगे।

[हिन्दी]

श्री रूपचंद पाल : मैं राइट ट्रैक पर लाना चाहता हूं।

[अनुवाद]

श्री प्रफुल पटेल : मैं अपने मित्रों के साथ अनावश्यक तर्क वितर्क नहीं करना चाहता क्योंकि कल तक इस सरकार को चलाने के लिए की गयी व्यवस्था के तहत हम हर मुद्दे पर उनसे परामर्श किया करते थे। एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि कई भाषणों में 123 करार और परमाणु समझौता को तो एक ओर रखा गया लेकिन वे विगत विचार वर्षों के दौरान सरकार के प्रत्येक पहलू की आलोचना कर रहे हैं जिस पर मैं पुरजोर यह कहना चाहूंगा कि वे विगत चार वर्षों के दौरान सरकार द्वारा किए गए सभी फैसलों और किए गए सभी कार्यों के भागीदार रहे हैं...*(व्यवधान)*

श्री गुरूदास दासगुप्त : मैं इससे इंकार करता हूं।

श्री प्रफुल पटेल : अब आप इससे इंकार कर सकते हैं। अब आपके लिए इससे इंकार करना बहुत सुविधाजनक है...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : श्री प्रफुल पटेल के भाषण के सिवा कार्यवाही वृत्तांत में कुछ और भी सम्मिलित न किया जाए।

*(व्यवधान)**

श्री प्रफुल पटेल : आप हमें पुस्तकें दिखा रहे हैं। हमारे पास भी सरकार के प्रकाशन हैं। आप उन्हें पढ़कर उत्तर देने का प्रयास

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री प्रफुल पटेल]

करने की बजाय यहां जोर जोर से क्यों बोल रहे हैं। आपने उन्हें पढ़ने में समय नहीं लगाया है।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अध्यक्षपीठ को संबोधित करें। आपको सीधे-सीधे बिन्दु पर विचाराधीन विषय पर आना चाहिए।

श्री प्रफुल पटेल : उपाध्य महोदय, लोगों के पास कोई और काम नहीं है। वे केवल सरकार के बारे में मुद्दे उठाने का प्रयास कर रहे हैं। अतएव लोग यहां पर यों ही ऐसी बातें कर रहे हैं कि भारत के पास इतना अधिक कोयला भण्डार है। इसलिए हमें अपनी ताप इकाईयों और ताप विद्युत क्षमता का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। वस्तुत:, हमें ऐसा करना चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि आप इतने हल्के ढंग से इसका उल्लेख करें। प्रत्येक देश को अपने यहां मौजूद प्राकृतिक भंडारों में से अपने आवश्यक भंडार रखने चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं है कि आपके पास जो कुछ भी है, आप उसे रातों रात खर्च कर दें, इसका दोहन करना या इसका उपयोग करना शुरू कर दें। कुछ मुद्दे हैं, जिनका श्री प्रणब मुखर्जी ने बिल्कुल सही उल्लेख किया है। वर्ष 2050 तक लगभग 1.6 बिलियन टन कोयले का आयात किए जाने की संभावना है।

क्या आपको वैश्विक तापमान पर पड़ने वाले इसके प्रभाव और हमारे देश के संभार-तंत्र पर इसके प्रभाव के बारे में पता है? क्या आपको हमारे देश में 1.6 मिलियन टन कोयले के आयात के किसी ऐसे उदाहरण का स्मरण है। आयात किए गए कोयले की वैश्विक कीमतों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? ये सब मुद्दे हैं। हम भारत की ऊर्जा सुरक्षा के प्रमुख मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर बहुत ही हल्के ढंग से चर्चा मात्र कर रहे हैं। जब भी मैं अपने मित्र पेट्रोलियम मंत्री को इस सभा में देखता हूं, तो उन्हें देश के समक्ष यह स्पष्ट करने में मुश्किल में पाता हूं कि इस देश को मेरे मित्र वित्त मंत्री के माध्यम से किस प्रकार की सहायता मिल रही है, जिन्हें भारत की वर्तमान ऊर्जा आवश्यकताओं का समर्थन करने के प्रयास में कितना व्यय करना पड़ता है। मैं आपके सामने कुछ आंकड़े पेश करूंगा। मेरे पास ये आंकड़ें मौजूद हैं। मैं आपके सामने ये आंकड़ें अवश्य रखूंगा क्योंकि वामदलों के मेरे मित्रों ने भारत की सरकार की आलोचना की है और किस प्रकार से हम गरीबों और आम लोगो के हितों को हल्के ढंग से अनदेखा करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत की एक वर्ष की पेट्रोलियम उत्पादों की आवश्यकता लगभग 135 मिलियन टन है, जिसमें से पेट्रोलियम उत्पादों का घरेलू उत्पादन 32 मिलियन टन है। पेट्रोलियम उत्पादों की आवश्यकता की वार्षिक वृद्धि अमूमन 8-9 प्रतिशत है। गत वर्ष सरकार को पेट्रोलियम उत्पादों से अल्प वसूली हुई थी, जो कि 75000 करोड़ रु. की बहुत बड़ी धनराशि के बराबर थी। इस वर्ष, 130 डॉलर की आज की कीमतों के बावजूद पेट्रोलियम उत्पादों से अल्प वसूली की राशि 215 लाख हजार करोड़ से भी ज्यादा होगी। क्या इस प्रकार से कोई भी सरकार चीजों को इतना हल्के ढंग से ले सकती है? क्या आप यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि हम भारत के गरीबों को अनदेखा कर रहे हैं? आप क्या आशय निकालने का प्रयास कर रहे हैं। भाषण दर भाषण आप यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ता; सरकार हमारे देश के लोगों की आवश्यकताओं के प्रति असंवेदनशील है। क्या आप जानना चाहते हैं कि सरकार को प्रति लि. पेट्रोल पर कितना नुकसान उठाना पड़ता है? यह 12 रु. प्रति लि. है। क्या आपको मालूम है कि सरकार को डीजल पर कितना नुकसान होता है? यह 25 रु. प्रति लिटर है। किरोसीन पर अल्प वसूली 35 रु. प्रति लिटर है। क्या आपको ज्ञात है कि एल.पी.जी. के संबंध में प्रति सिलिंडर अल्प वसूली कितनी है। यह 355 प्रति सिलिंडर है। क्या यह सरकार आम आदमी के प्रति असंवेदनशील है — मैं इसका उत्तर जानना चाहता हूं। स्वतंत्र भारत की कोई भी सरकार ऊर्जा सुरक्षा की इतनी मुश्किल में कभी भी नहीं रही, जिससे हम गुजर रहे हैं और इसके बावजूद सरकार यह देखने के लिए प्रतिबद्ध है कि इस असाधारण अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण देश के आम आदमी, देश के गरीब आदमी पर भार न पड़े। इसके बावजूद भी यहां दायीं और बैठ मेरे मित्र, जो कि वामदलों से हैं, यह संकेत देने का प्रयास कर रहे हैं कि हम गरीबों के हिमायती नहीं हैं बल्कि हम गरीब विरोधी हैं...*(व्यवधान)* इस संपूर्ण चर्चा को बहुत ही छोटे, बहुत ही संकीर्ण स्तर पर लाया जा रहा है, जो कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर एक अधिक व्यापक वाद-विवाद का रूप ले सकता था। जैसा कि विपक्ष के नेता ने कहा है कि हम चार वर्ष और दो महीने पूरा कर चुके हैं और 10 महीने में चुनाव होने हैं। यह हमारे चुनाव लड़ने या चुनावों में विलंब करने का प्रयास करने का प्रश्न नहीं है। इस तरह की कोई परिकल्पना नहीं की गई है। सरकारें आती हैं और जाती हैं; हम भी आते हैं और जाते हैं। यह हमारे चुनावों के बारे में चिंतित होने या चुनावों को टालने का प्रयास करने का प्रश्न नहीं है। यहां प्रश्न यह है कि क्या हम सही दिशा में बढ़ रहे हैं। यहां प्रश्न यह है कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा के प्रति सरकार की निष्ठा और सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रश्न चिह्न लगाया जा रहा है।

यहां मुद्दा यह है कि व्यक्तिगत तौर पर हमारे प्रधानमंत्री की देशभक्ति पर विपक्ष के कुछ वर्गों द्वारा प्रश्न चिह्न लगाया जा रहा था। मैं कहना चाहता हूं कि इस विश्वास मत में यही वास्तविक परीक्षण है

कि भारत के प्रधानमंत्री, भारत की सत्ताधारी सरकार वास्तव में देशभक्त है या नहीं, मैं समझता हूं कि यही इस चर्चा का और इस विश्वास मत का केन्द्रीय मुद्दा है, जो प्रधानमंत्री ने मांगा है।

हम चुनाव टालने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। हम जानते हैं कि चुनाव तभी होंगे, जब उनका समय आएगा। लेकिन प्रश्न यह देखने का प्रयास करने का है कि क्या आप सभी भारत के गरीबों के लिए प्रतिबद्ध हैं और आप सभी भारत के भविष्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। जैसा कि मेरे सहयोगी श्री आनन्द शर्मा ने पहले भी उल्लेख किया है कि लोग दिवंगत प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की कम्प्यूटरीकरण के संदर्भ में विद्वता पर भी प्रश्न चिह्न लगाते थे। आज, यदि भारत ने विश्व की ज्ञान अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अपनी छाप छोड़ी है, तो यह सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही है और यह टेलीफोनी के कारण ही है, जिसकी श्री राजीव गांधी ने इस देश में शुरूआत की थी। इसीलिए प्रश्न इस बात का है कि हम भारत की भावी पीढ़ी, भारत की युवा पीढ़ी को क्या पेश करने जा रहे हैं। हम सभी जानते हैं। प्रत्येक संसद सदस्य को ज्ञात है कि यदि सुबह 10 लोग आपसे मिलने आते हैं, तो 10 में से 9 लोग अपने भविष्य, अपनी नौकरियों के लिए पूछने आते हैं और बदले में हम उन्हें क्या दे रहे हैं? क्या हम भारत को समय से पीछे ले जाना चाहते हैं या हम भारत को आगे बढ़ता देखना चाहते हैं। समस्त शिक्षा को देखते हुए जो हमें नसीब हो रही है और हमारे देश में मौजूद शिक्षित युवाओं के साथ, क्या हम उनको एक अच्छा और सुनहरा भविष्य देंगे या उनको समय से पीछे ले जाएंगे? इस संपूर्ण सभा के समक्ष यही प्रश्न है और प्रधान मंत्री ने आज विश्वास मत के माध्यम से यही मांग की है, केवल इसलिए नहीं कि आज या कल चुनाव होने वाले हैं। यह विश्वास मत भारत के भविष्य के बारे में हैं और इसीलिए मैं आप सबसे आग्रह करता हूं कि आप इसे समझें।

इसलिए, यह सब आपके ऊपर है कि आप अपने विवेक से निर्णय लें, जैसा कि मैंने "द टाइम्स ऑफ इंडिया" के संपादकीय से उद्धृत किया है। इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से पूरे जोरदार ढंग से माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा (संगरूर) : उपाध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज प्रधान मंत्री जी ने वोट ऑफ कांफीडेंस का जो रिजोल्यूशन यहां रखा है, उस पर चर्चा हो रही है लेकिन इसका मेन सेंटर स्टेज न्यूक्लियर डील है। हालांकि यहां पर कई वक्ताओं ने महंगाई की बात की है लेकिन चूंकि यू.पी.ए. की सरकार को सपोर्ट करने वाली बहुत बड़ी लेफ्ट पार्टी ने इस इश्यू पर सपोर्ट वापस लिया है, इसलिए आज इस मुद्दे पर ज्यादा बहस हो रही है। प्रफुल्ल पटेल जी मेरे बहुत अच्छे दोस्त भी हैं और आनंद शर्मा जी ने तथा प्रणव जी ने इस डील के हक में बहुत कुछ कहा है और आज नहीं बल्कि दो साल से यह बात चल रही है। इसमें हाइड एक्ट के बारे में इन्होंने भी कहा कि वह हमारे ऊपर कैसे लागू होती है, तो मैं इनसे यही पूछना चाहता हूं कि उसको फिर खत्म क्यों नहीं कर देते क्योंकि और तो कोई इश्यू ही नहीं है। अगर वह इश्यू न होता तो आज इस हाउस में मैं समझता हूं कि या तो यूनैनीमसली डील को पास कर दिया जाता, अगर लेफ्ट न भी करता तो सारा हाउस इसको पास कर देता। ये दो सैक्शंस 103 और 104 जो हैं, इसके रिजल्ट क्या होंगे? मेरी पार्टी पहले से कह चूकी है और मैंने यहां बोलते हुए भी कहा था कि हम डील के खिलाफ नहीं हैं। अमेरिका के साथ दोस्ती हो, हम उसके खिलाफ नहीं हैं। अमेरिका से नहीं, सारे पाकिस्तान के साथ बात शुरू हुई तो सबसे पहले हमने वैलकम किया। हमारा कहना है कि हमारे देश का जो नेबर है, उसके साथ जो बातचीत हो रही है, वह अच्छी होनी चाहिए।

हम चाहते हैं कि चीन के साथ हमारे अच्छे ताल्लुकात हों, सारी दुनिया के साथ अच्छे हों। इसका रिजल्ट क्या होगा कि आपकी इस डील के बाद इसका मतलब यह नहीं होगा कि नया दोस्त बनाने के लिये ईरान जैसे पुराने दोस्त मुल्क की कीमत पर यह डील की जाये ...*(व्यवधान)*

अनेक माननीय सदस्य : ऐसा नहीं है।

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : इसमें ऐसा है लेकिन आप पाईंट क्लीयर नहीं कर सकते हैं। तभी यह डिसकशन आज हो रही है। तकरीबन दो साल हो गये हैं, आप नहीं कर सके हैं। दूसरी बात, जो एटामिक एनर्जी पर बोलते हुये यहां कही गई है कि हम उसके बाद एटामिक एनर्जी पर तजुर्बे नहीं कर सकेंगे। मैं परमात्मा से दुआ करता हूं कि हमारी किसी देश के साथ जुदाई न हो। लेकिन जिनके पास एटामिक पॉवर है, अगर कल चीन के साथ जंग हो जाती है तो उसके क्या रिज़ल्ट होंगे? हमारी डिफैंस फोर्सेज़ पहले ही से डिमौरलाइज्ड हैं क्योंकि पे-कमीशन की रिपोर्ट के बेस पर प्रोटैस्ट करती हैं। इस हालत में वे कैसे लड़ेंगी कि बाकी मुल्कों के पास एटामिक पॉवर है, हमारे पास नहीं है। हम यह पॉवर पैदा नहीं कर सकते हैं, क्या इस देश को खतरा नहीं होगा, क्या इससे देश का खतरा टल जायेगा? हमारे ये दो मुद्दे ऐसे हैं जिन्हें आप करें। अगर न्यूक्लीयर एनर्जी लायेंगे तो हम उसके हक में हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। इसका मतलब

[श्री सुखदेव सिंह ढींडसा]

यह हुआ कि आप ये बातें क्लीयर नहीं कर सके। चाहे आप बड़े वकील हैं, चाहे किसी न कहा हो, यह बात आप आज तक साफ नहीं कर सके।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री (श्री कपिल सिब्बल) : क्या हमारा साथ देंगे, अगर हम करते हैं? हम यह आपको आश्वासन देते हैं।

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : आप दो साल से तो कर नहीं सके, आज कैसे करोगे? हमारी पार्टी के सभी लोग कहते हैं कि देश का प्राइम मिनिस्टर सिख है, आप उसके साथ वोट डालें...*(व्यवधान)* मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मैंने किसी के भाषण में टोका-टाकी नहीं की, इसलिये मैं कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहूंगा। हमने अपोज़ीशन में होते हुये भी देश के सिख प्राइम मिनिस्टर बनने पर खुशी मनाई। वह बहुत ही ईमानदार और इकोनोमिस्ट हैं, इस वक्त देश का भला करेगा, उससे हमारी कौम को फक्र होगा। मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि जिस कौम ने इतनी खुशी मनाई, उस कौम को इस स्टेट में पिछले साढ़े चार साल में क्या मिला? मैं पूछना चाहता हूं, कि उसे क्या मिला?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री ढींडसा के भाषण के अलावा कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : जो कोई भी मेरी अनुमति के बिना बोलेगा। उसका भाषण कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित न किया जाए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : उपाध्यक्ष जी, मैं अकेले पंजाब के सिखों की बात नहीं करता।

मैं यह कहना चाहता हूं कि पंजाब का किसान, जिसकी एग्रीकल्चर इकोनोमी है, वैसे तो देश की है, उसकी डेढ़ परसैंट आबादी है और एक परसैंट, डेढ़ परसैंट जमीन है। हम 50 से 60 परसैंट फुडग्रेन देते हैं। यहां प्रधान मंत्री जी, फाइनेंस मिनिस्टर और एग्रीकल्चर मिनिस्टर बैठे हैं, मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि लोन माफिया जो 60 परसैंट पैसा देता है, उसका केवल एक परसैंट ही माफ हुआ। आज की डेट में सबसे ज्यादा पर-किसान, पर-फैमिली पंजाब का किसान कर्जाई है, तो आपने क्या दिया है? पंजाब का किसान हिन्दुस्तान को अनाज देता है।...*(व्यवधान)* अगर एग्रीकल्चर मिनिस्टर महाराष्ट्र को दे सकते हैं तो प्रधान मंत्री जी पंजाब को क्यों नहीं दे सकते?...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री प्रफुल पटेल : ढींडसा जी, गेहूं का पंजाब में जो प्रक्योरमेंट होता है,...*(व्यवधान)* हमारी सरकार ने 620 रुपए से एक हजार रुपए करने का काम किया है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : मैं यह भी बताना चाहता हूं, आपने कहा कि एक हजार रुपए किसान को दे दिए, लेकिन बाहर से कितना मंगवाया, कितना इम्पोर्ट किया?...*(व्यवधान)* 1600 रुपए। आगे देखिए, एग्रीकल्चर प्राइस कमीशन ने राइस की कीमत एक हजार रुपए प्रति-क्विंटल की, कभी भी किसी ने उसकी रिकोमेंडेशन के ऊपर तो दिया होगा, लेकिन नीचे कभी नहीं किया, उसे साढ़े आठ सौ रुपए कर दिया।...*(व्यवधान)* आज एक हजार डालर पर-टन राइस की कीमत इंटरनेशनल मार्केट में है तो फिर हिन्दुस्तान के पंजाब को क्यों नुकसान पहुंचाया जा रहा है, यह मैं पूछना चहाता हूं?...*(व्यवधान)* हमने 105 मीट्रिक टन व्हीट दिया है और 90 लाख टन राइस दिया है। एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब बड़े अच्छे हैं, हमारी बात भी सुनते हैं और किसानों की बात भी करते हैं। हो सकता है कि प्रधान मंत्री जी या फाइनेंस मिनिस्टर न मानते हों, लेकिन इन्होंने कभी साइंटिफिक तरीके से प्राइस फिक्स नहीं की। क्या मैं यह सोच लूं कि सिख प्राइम मिनिस्टर हैं, इसलिए किसान मर जाए तो मर जाए।...*(व्यवधान)* मैं इसे सपोर्ट करूं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया शांत रहिए।

(व्यवधान)

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : यह मैं किसान की बात कह रहा हूं। फिर इंडस्ट्री की बात आई, हमने कहा कि जो हिली स्टेट्स हैं, उन्हें कंसेशन दिया गया। पंजाब में बहुत नुकसान हुआ, सारी इंडस्ट्रीज़ जा रही हैं, एग्रीकल्चर फेल हो रही है, इसे भी बार्डर डिस्ट्रिक्ट्स को दे दो, क्योंकि हमने बहुत खून बहाया है, तो प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि यह आपकी सरकार ने किया था। मैंने कहा कि हम उनका वापस नहीं मांगते, हम चाहते हैं कि वही कंसेशन हमें भी दें। हमारी इंडस्ट्रीज़ क्यों बाहर जा रही हैं? सवा चार साल हो गए, आज तक किसी ने कुछ नहीं किया, बल्कि उसे एक्सटेंड कर दिया।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि पंजाबी और सिख के नाते आपने क्या किया, किस बात के लिए आपको सपोर्ट करें? यह तो पंजाबी और सिख की बात हो गई। अब मैं सिख इश्यू लेता हूं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : साइलेंस प्लीज।

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : मैं अपने आप नहीं बोल रहा हूं। हमें आदमी मिलते हैं, वे कहते हैं कि यह सिख है, इसलिए इसकी बात मानो और सपोर्ट करो। इसलिए मैं इस बात का जवाब दे रहा हूं। मेरा मकसद यह नहीं था। चूंकि यह सारा कुछ हो रहा है, इसलिए जवाब दे रहा हूं। इसका जवाब यही है कि सिख भी एक कौम है, जिसने इस देश के लिए अपना खून बहाया है। देश को आजाद रखने के लिए सबसे ज्यादा खून बहाया है। उसकी बात क्यों नहीं मानते? उस कौम के लिए कुछ क्यों नहीं करते?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया उन्हें बाधित न करें। कृपया सभा का समय व्यर्थ न करें।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : फ्रांस में टरबन इश्यू हुआ। यहां फ्रांस के प्रधान मंत्री आए। हम भी मिले। हमने कहा प्रधान मंत्री जी, सिखों के लिए यह बहुत जरूरी है। आप इस पर उनसे बात कीजिए। सुबह अखबारों में देखा, तो हमें पता लगा कि हमारे प्रधान मंत्री जी ने श्री एल.एन. मित्तल की बात तो उनके साथ बहुत जोर से उठाई कि उसकी फैक्ट्री के लिए ऐसा करो और वैसा करो, हम भी कहते हैं कि ये अमीर की बात बहुत सुनते हैं, लेकिन गरीब की नहीं सुनते। मित्तल जो दुनिया का सबसे बड़ा स्टील किंग है, उसकी बात तो बड़े जोर से की गई, लेकिन सिखों के टरबन की बात सिख ने नहीं की।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री वायालार रवि) : महोदय कृपया मुझे स्पष्टीकरण देने की अनुमति दें... *(व्यवधान)*

श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन' (बेगूसराय) : यह कोई तरीका नहीं है। वह कैसे हस्तक्षेप कर सकते हैं?...*(व्यवधान)*

श्री वायालार रवि : महोदय, मैं केवल एक स्पष्टीकरण देना चाहूंगा...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : अब, श्री वायालार रवि।

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : उपाध्यक्ष महोदय, क्या कोई भी मंत्री बिना अनुमति के कभी भी उठेगा और बीच में बोलेगा।... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने उन्हें बोलने की अनुमति दी है।

(व्यवधान)

श्री वायालार रवि : कृपया ऐसा न कहें कि प्रधान मंत्री ने फ्रांस के राष्ट्रपति से श्री मित्तल के बारे में बात की थी। यह ठीक नहीं है। मैं यह स्पष्टीकरण देना चाहता हूं...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : श्री सुखदेव सिंह ढींडसा, कृपया अब अपना भाषण जारी रखें।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : उपाध्यक्ष महोदय, सिखों की एक बात और है। 1984 के बाद, जब हरमंदिर साहब पर हमला हुआ, फौज गई, अकाल तख्त को बिलकुल ध्वस्त कर दिया गया। उससे सिखों में बहुत रोष पैदा हुआ। हिन्दुस्तान में ही नहीं, सारी दुनिया में रोष पैदा हुआ।...*(व्यवधान)* सरदार खुशवन्त सिंह जैसे व्यक्ति, जो यह कहता था कि मैं धर्म को मानता ही नहीं, उसने भी अपना पद्मश्री अवॉर्ड वापस कर दिया। मैं कहना चाहता हूं कि उस घटना के बाद

[श्री सुखदेव सिंह ढींडसा]

सारी दुनिया में हर सिख के अंदर इतना रोष था। जितने बाहर सिख हैं, जिन्होंने कोई स्पीच की या इस बारे में बयान दिया, उनके नाम इकट्ठे कर के, 1500 या 1600 सिखों की एक ब्लैक लिस्ट बना ली गई और कहा गया कि इस ब्लैक लिस्ट में जिन सरदारों के नाम हैं, उन्हें हिन्दुस्तान आने की इजाजत नहीं है। हमने कोशिश की और प्रधान मंत्री जी से मिले। जब हमने श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी और श्री अटल बिहारी वाजपेयी साहब से इस बारे में कहा, तो उन्होंने रिव्यू किया और 100-125 सरदारों के नाम उस लिस्ट में रह गए। हम ऐसा बिलकुल नहीं कहते कि जो आदमी देश के खिलाफ प्रसार करे, उसका नाम भी उस लिस्ट में से निकाल दो, लेकिन जिसका कोई कसूर ही नहीं है, जिसने कोई ऐसा काम किया ही नहीं है, उसे आप हिन्दुस्तान आने से क्यों रोकते हैं? क्या हमारी वह बात, प्रधान मंत्री ने मान ली?

गृह मंत्री (श्री शिवराज वि. पाटील) : आपकी बात मान ली है।

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

हमारा एक रिलीजियस इश्यू है। एस.जी.पी.सी. बनाई, वह तो अंग्रेजों ने बनाई। हमने लड़ाई की और बहुत कुरबानियां दीं। हमने 500 शहादतें दीं।

उसके बाद अंग्रेज एक एक्ट बना गए। उसके बाद पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के गुरूद्वारे तो अंडर आ गए, लेकिन हमारी मांग रही है कि जितने भी ऐतिहासिक गुरूद्वारे हैं, वे एस.जी.पी.सी. के अंडर होने चाहिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : चौधरी लाल सिंह जी, कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री सुखदेव सिंह ढींडसा के भाषण के अलावा कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : ढींडसा जी, कृपया अब भाषण समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : उपाध्यक्ष महोदय, हमारी आर्मी में सिख 25 प्रतिशत हुआ करते थे, लेकिन कई सालों से सभी स्टेट्स का कोटा फिक्स कर दिया है और राज्य की आबादी के अनुसार ही वह होगा। हमारे लोग तो देश की रक्षा में मरने के लिए ही जाते हैं। अब सिखों की संख्या 25 प्रतिशत से चार-पांच प्रतिशत रह गई है।. ..*(व्यवधान)* यही तो मैं हमारे सिख प्रधानमंत्री से पूछना चाहता हूं कि उन्होंने सिखों के लिए क्या किया है?...*(व्यवधान)* आप कहते हैं कि सिख प्रधानमंत्री हैं, लेकिन उन्होंने सिखों के लिए क्या किया है?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : लाल सिंह जी, यदि आपको कुछ मालूम नहीं है, तो बैठ जाएं।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप इस प्राब्लम को अंडरस्टैंड नहीं कर सकेंगे, इसलिए बैठ जाएं।

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : श्री आठवले जी, कृपया अपना स्थान ग्रहण करें। कृपया अब भाषण समाप्त करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री जी ने गुरू गोविन्द सिंह जी का एक श्लोक बहुत बोला। वह उन्होंने क्यों बोला? उसका मतलब क्या है? उन्होंने कहा – देह शिवा वर मोहे ऐहे, शुभ कर्मन ते कबहूं न टरूं।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइए। आठवले जी आप बैठ जाएं।

(व्यवधान)

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने जो श्लोक बोला, उसका तो अर्थ ही दूसरा है। वे तो बोल ही नहीं सके, उन्हें पता नहीं किसने लिखवा दिया?

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उसका अर्थ यह है कि गुरू गोविन्द सिंह जी ने कहा:

देहु शिवा वर मोहे, शुभ करमन ते कबहूं न टरूं,
न डरूं, अरसौं जब जाय लड़ूं, निश्चय कर अपनी जीत करूं।

इसमें क्या आ गया? दूसरा मैं कहूं कि यह भी हमारे गुरू ग्रन्थ साहिब में है...*(व्यवधान)*

श्री गुरजीत सिंह राणा (जालंधर) : आप यहां गुरू ग्रन्थ साहिब के सारे शबद सुना दो।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बाधा न डालें।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : ठीक है, मैं यहां शबद भी सुना दूंगा। आप सच्चाई सुनने के लिए तैयार नहीं है। ये शबद की बात कर रहे हैं, लेकिन उसको मानो तो क्यों ऐसा कर रहे हैं? डिप्टी स्पीकर साहब, इन्होंने जो ये बात चलाई है कि सिख हैं तो हमने तो खुशी मनाई थी, हम तो बहुत खुश हुए थे, हमने तो लड्डू भी बांटे थे, जब वे प्रधानमंत्री बने थे, लेकिन सिखों और पंजाब के लिए इन्होंने क्या किया है, मैं तो यह पूछना चाहूंगा? आपने सिखों और पंजाब के लिए क्या किया है?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाएं। कृपया बाधा न डालें। समय व्यर्थ न गवाएं।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया अब भाषण समाप्त करे।

[हिन्दी]

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा : इसलिए मैं यह कहूंगा कि ऐसी बातें करने का कोई फायदा नहीं है। ये आज जो वोट ऑफ कॉन्फीडेंस लाये हैं, उसके हम इसलिए खिलाफ हैं कि यह सरकार सवा चार साल में बिल्कुल ही फेल हुई है और इसने कुछ भी काम नहीं किया, इन्फ्लेशन बहुत हो गई, इसलिए इसको जाना चाहिए, इसलिए हम इनके खिलाफ हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : श्री प्रभुनाथ सिंह।

[अनुवाद]

माननीय सदस्य श्री प्रभुनाथ सिंह जी से बोलने का अनुरोध करने से पूर्व, मैं यह घोषणा करना चाहता हूं कि कमरा सं. 70, प्रथम तल संसद भवन में रात्रि भोज 9.15 तक तैयार हो जाएगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार) : उपाध्यक्ष जी, हम नमक नहीं खाएंगे, हराएंगे, इसलिए नमक खाने की जरूरत नहीं है।...*(व्यवधान)*

आज सदन में 11 बजे से चर्चा चल रही है और जो चर्चा चल रही है, यह सुनने के बाद लगता है कि सदन पास करेगा कि करार हो या नहीं हो। मैं नहीं समझता हूं कि यह करार पर चर्चा है। करार भी एक मुद्दा हो सकता है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी जिस समय प्रस्ताव रख रहे थे, उस समय वे बोल रहे थे कि चार वर्ष दो महीने में हमारी सरकार का यह लेखा-जोखा है। उस लेखे-जोखे पर चर्चा होनी चाहिए, उस लेख-जोखे पर विचार-विमर्श करके उन्होंने मंत्रिमंडल में विश्वास मांगा है। अगर उन्होंने सिर्फ अपने सहयोगियों से विश्वास मांगा होता तो उनके सहयोगी राष्ट्रपति भवन में लिखकर देते तो संख्या फूट जाती तो यहां विश्वास मत की जरूरत नहीं पड़ती, लेकिन कहीं न कहीं संशय की स्थिति है कि विश्वास है, विश्वास नहीं है। हो सकता है कि मतदान हो और ये जीत जायें। चूंकि हमारे पास संख्या की गिनती का कोई सही आंकड़ा नहीं है, इसलिए हम इस संबंध में कोई चर्चा नहीं करना चाहेंगे। जीतें, हारें, वह दूसरी बात है, लेकिन जब सदन में विश्वास मांगा गया तो सदन को चार वर्ष दो महीने का लेखा-जोखा करना होगा। प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व का लेखा-जोखा करना होगा, प्रधानमंत्री के कृतित्व का लेखा-जोखा करना होगा।

रात्रि, 9.00 बजे

लेखा-जोखा करना होगा प्रधानमंत्री की नीतियों का और लेखा-जोखा करना होगा प्रधानमंत्री की नीयत का। उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रधानमंत्री जी के व्यक्तित्व की चर्चा करना चाहता हूं। जब भी कोई आम चुनाव होता है, तो चाहे वह क्षेत्रीय दल हो या राष्ट्रीय दल हो, चुनाव के मैदान में जाता है, तो अपने नेता की तस्वीर और अपने नेता का नाम लेकर जाता है। वह अपने दल का नाम लेकर जाता है और मतदाताओं से दल और नेता के नाम पर विश्वास मांगता है, भरोसा मांगता है और विश्वास और भरोसा देता है कि यदि हमारी सरकार बनेगी, तो

[श्री प्रभुनाथ सिंह]

हम देश के लिए और जनता के लिए ये काम करेंगे। विगत चुनाव याद कीजिए, वर्ष 2004 का जो चुनाव हुआ, उनका नाम भी कहीं नहीं था। आदरणीय मनमोहन सिंह जी का नाम देश के किसी कोने में कांग्रेस के नेता की चर्चा में हमने कहीं सुना था। जो लोग उस चुनाव कांग्रेस के...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री जे.एम. आरून रशीद (पेरियाकुलम) : महोदय, कृपया उन्हें इस मुद्दे पर बोलने दें। वे सभा को भ्रमित कर रहे हैं...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया उनकी बात सुनिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : आप हमारी बात सुनिए। जो लोग चुनाव में आमने-सामने लड़ रहे थे, पश्चिम बंगाल में, केरल में, त्रिपुरा में, कई अन्य लोग जब चुनाव जीतकर आए, तो एक गठबंधन बना, यह कहकर कि हम सांप्रदायिक ताकतों को रोकने के लिए सरकार बना रहे हैं या समर्थन दे रहे हैं। उस समय कौन प्रधानमंत्री बन रहा था? अटल बिहारी वाजपेयी बनने जा रहे थे, लाल कृष्ण आडवाणी बनने जा रहे थे, हमें तो जानकारी नहीं है, हम भी सदन के सदस्य हैं, हमें नहीं मालूम है कि उनको शपथ का कोई निमंत्रण मिला था, जिसे कम्युनिस्ट के लोग रहे थे, कोई किसी को रोक नहीं रहा था, अपना धंधा सीधा करने के लिए वह एक नापाक गठजोड़ था। वह नहीं चला। व्यक्तित्व में कहीं नाम नहीं, कहीं चर्चा नहीं, कहीं पोस्टर में नाम नहीं, वे प्रधानमंत्री बन गए। मैं उनका देश के अर्थशास्त्री के रूप में बड़ा सम्मान करता हूं। जब स्वर्गीय चंद्र शेखर जी जिंदा थे, तो उनकी चर्चा करते थे, शायद मनमोहन सिंह जी उनके सलाहकार के रूप में हुआ करते थे, तब वे उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे। उस समय से मेरे मन में उनके लिए अर्थशास्त्री के रूप में बड़ा सम्मान है। लेकिन अगर आज विश्वास मत देना है, तो किसी अर्थशास्त्री को नहीं, सदन के नेता को, प्रधानमंत्री को, देश को देना है। जिस व्यक्ति का नाम उसके दल का कोई व्यक्ति चुनाव में चर्चा नहीं करे और वह उम्मीद रखे कि सदन में आम सदस्यों से विश्वास मत हासिल करेंगे, यह क्या हो रहा है? इतना ही नहीं, व्यक्तित्व का निखार कितना हुआ? देश में चुनाव हुए, कई उपचुनाव हुए लोकसभा के, कई राज्यों में चुनाव हुए, आपके राज्य में भी हुआ, कर्नाटक में हुआ, बिहार में हुआ, उत्तर प्रदेश में हुआ, लेकिन कहीं किसी कांग्रेसी नेता ने उन्हें नहीं बुलाया। शायद एक जगह पंजाब में बुलावा गया था, इसके अलावा कहीं किसी ने नहीं पूछा।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री वी. नारायणसामी) : महोदय वे क्या बोल रहे हैं? ...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैंठ जाइये।

(व्यवधान)

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती रेनुका चौधरी) : महोदय यह क्या हो रहा है? महोदय, इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : मैं इस पर विचार करूंगा।

[हिन्दी]

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री कांतिलाल भूरिया) : -बहुत ही हल्के शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं।...*(व्यवधान)* सदन को गुमराह कर रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

[हिन्दी]

अगर कुछ अनापार्लियामैंट्री शब्द होंगे, तो मैं देखूंगा।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री प्रभुनाथ सिंह जी के भाषण के अलावा कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री कांतिलाल भूरिया : उपाध्यक्ष महोदय, ये हल्के शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। इन्हें माफी मांगनी चाहिए।...*(व्यवधान)* इन्हें अपने शब्द वापिस लेने चाहिए।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने कहा है कि यदि कुछ अनपार्लियामैंट्री शब्द होंगे तो मैं देखूंगा।

[अनुवाद]

मैं और क्या कर सकता हूं?

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा। कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाये।

*(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने पहले भी कहा है कि जो अनपार्लियामैंट्री लफ्ज़ होंगे, उन्हें निकाल दिया जाएगा।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल) : महोदय वे संसदीय प्रणाली का मजाक बना रहे हैं। वे नहीं जानते कि प्रधानमंत्री का किस प्रकार चुना जाता है। वह दल जिसके सबसे अधिक सांसद होते है उसका अधिकार है कि वह किसी को भी प्रधानमंत्री चुन सकता है ...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष जी, अगर हमारी बात अच्छी नहीं लगती, तो ये लिखकर दे दें, हम वही पढ़ देते हैं। इस तरह बात खत्म हो जायेगी। हमने कोई गाली नहीं दी है, हमने कोई अनपार्लियामैंट्री लेंग्वेज नहीं बोली है। हम उनके व्यक्तित्व की बात कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री धर्मेन्द्र प्रधान (देवगढ़) **:** जो बात आप लोगों को अच्छी लगेगी, क्या हम वही कहेंगे?...*(व्यवधान)*

श्री प्रभुनाथ सिंह : उपाध्यक्ष जी, हमारी बात इनको बहुत अच्छी नहीं लग रही है। देश की परम्परा रही है कि जितने भी सरकारी दफ्तर होते हैं, उनमें प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति की तस्वीर लगायी जाती है। क्या प्रधान मंत्री जी की तस्वीर सरकारी दफ्तरों में लगायी गयी है?...*(व्यवधान)*

रात्रि 9.11 बजे

[**अध्यक्ष महोदय** *पीठासीन* हुए]

अध्यक्ष महोदय : आप लोग थोड़ा शांत हो जाइये। रेणुका जी, प्लीज शांत हो जाइये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री मधुसूदन मिस्त्री (साबरकंठा) **:** महोदय, वे उसके चरित्र के बारे में कैसे चर्चा कर सकते हैं?...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्रभुनाथ सिंह जी, आप थोड़ा सब्जैक्ट पर बोलिये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप लोग बैठिये। हम देखेंगे।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये, कृपया वाद-विवाद जारी रखने दें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री पवन कुमार बंसल : प्रधान मंत्री जी बार-बार कहते हैं कि उनकी तस्वीर अखबारों में नहीं देनी है। इसी चीज पर वे बार-बार जोर देते हैं और उन्होंने ही ये हिदायतें दी हैं। पोस्टर्स का आज जो जिक्र किया है, वह उस तरह से नहीं आया है। उससे पहले राज्य सभा में आ जाता है। प्रभुनाथ सिंह जी बोल रहे हैं कि ये लोकतांत्रिक परम्पराएं हैं। उनको मालूम नहीं है कि कैसे प्रधान मंत्री चुना जाता है और कौन सी पार्टी अपना चुनाव कैसे लड़ती है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री बंसल जी, आपके दल से अगले वक्ता है, श्री सिब्बल। मैं उनका नाम पुकारूंगा। और वे उस मुद्दे पर यदि कुछ कहना है तो कहेंगे।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आपका समय काफी खराब हो गया है।

(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष जी, आज का जो विषय है, हम उसी पर बोल रहे हैं। प्रधान मंत्री जी ने स्वयं कहा था।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप छोड़िये। आप लोग थोड़ा धीरज रखिये, कपिल सिब्बल जी यहां बैठे हैं।

(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : प्रधान मंत्री जी ने स्वयं चार वर्ष दो महीने के लेखा-जोखा पर चर्चा करने के लिए कहा था। आज करार पर कोई बहस नहीं हो रही है। लेखा-जोखा में प्रधान मंत्री जी के व्यक्तिगत की चर्चा है और यह होगी।...*(व्यवधान)* यह उनके व्यक्तित्व की चर्चा है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाएं। कृपया अपने व्यक्तिगत मुद्दे बीच में न लाएं। आखिरकार, सभी सभा में तथा संपूर्ण देश में सम्मान के हकदार हैं।

[हिन्दी]

ठीक है। आप सब्जैक्ट पर आइये।

(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, हम पूरा सम्मान करते हैं। हमने कोई आपत्तिजनक बात नहीं की है। वैसे भी परम्परा रही है। स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी एक बार प्रधान मंत्री और राज्य सभा की सदस्य थी, तो उन्होंने इस्तीफा देकर चुनाव लड़कर लोक सभा की सदस्यता प्राप्त की। आपको उनसे कुछ सीखना चाहिए। आप हल्ला कर रहे हैं।...*(व्यवधान)* आप उन नेताओं से कुछ सीखिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री प्रभुनाथ सिंह जी, कृपया एक मिनट रूकिये। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे सभा की कार्यवाही करने दें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री स्वाईं, यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप चाहे या न चाहें, जब तक यहां संविधान है, यह इस बात की अनुमति देता है कि किसी भी सभा का कोई सदस्य प्रधानमंत्री या कोई भी मंत्री बन सकता है। इसलिए, इसमें कुछ भी गलत नहीं है। आप मुद्दे पर आइये, और व्यक्तिगत मुद्दे बीच में मत लाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। आप सब्जैक्ट पर आइये। आपके इतने प्वाइंट्स हैं। इस तरह सब मुद्दे गड़बड़ हो जायेंगे।

(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, मैंने संविधान को कोई चुनौती नहीं दी है। मैं जानता हूं कि वे एक संवैधानिक पद पर हैं। मैं तो केवल उनके व्यक्तित्व की चर्चा कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : व्यक्तित्व की चर्चा करना ठीक नहीं है। आप लीडर है, आपको इतना अनुभव है। हम सभी लोग आपका सम्मान करते हैं। आप इश्यू पर बोलिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, पहले मेरी बात सुन लीजिए।

आज प्रधानमंत्री जी ने जब इस सदन में बहुमत मांगा है तो वह केवल अपने गठबंधन के लोगों से नहीं मांगा है। आज उन्होंने सदन से कैबिनेट और मंत्रिपरिषद के प्रति विश्वास मत मांगा है। उन्होंने कहा है कि हमारे चार वर्ष और दो महीने के कार्यकाल का लेखा-जोखा करके विश्वास मत दिया जाए। उन्होंने सदन से विश्वास मत मांगा है न कि अपने गठबंधन से। अगर उनके गठबंधन को बहुमत प्राप्त होता तो राष्ट्रपति के यहां संख्या लिखकर उन्होंने दिया होता। राष्ट्रपति के यहां उन्होंने जो संख्या दी है, उसके अनुसार वह अल्पमत में हैं। इसलिए उन्होंने सदन से विश्वास मत मांगा है और हम लोग इस सदन के सदस्य हैं। यदि हम विश्वास मत पर चर्चा कर रहे हैं तो उनके व्यक्तित्व पर, उनके कृतित्व पर, उनकी नीतियों पर और उनकी नीयत पर चर्चा करेंगे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है। आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री मधुसूदन मिस्त्री : महोदय, लोग माननीय सदस्य के चरित्र पर भी चर्चा करना चाहते हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप लोग ही हाउस चलाइए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, अब मैं उनके व्यक्तित्व की चर्चा नहीं करूंगा।

श्री कांतिलाल भूरिया : पहले आप अपने चरित्र को देखिए। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : भूरिया जी, आप बैठ जाइए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : मैं अब प्रधानमंत्री जी के व्यक्तित्व की चर्चा नहीं करूंगा।

अध्यक्ष महोदय : आप उनकी नीतियों की चर्चा कीजिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, मैं उनके व्यक्तित्व की चर्चा इसलिए नहीं करूंगा क्योंकि कांग्रेस के लोग इस पर आपत्ति कर रहे हैं क्योंकि इनको लगता है कि उनके व्यक्तित्व ठीक नहीं हैं। इसलिए मैं अब इस पर चर्चा नहीं करूंगा।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप मुद्दे पर आइए। पॉलिसी की बात कीजिए। पॉलिसी और परफार्मेंस की बात कीजिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, पॉलिसी यह है कि सदन में जो प्रधानमंत्री की कुर्सी पर होता है, वह न केवल एक दल का, इस सदन का बल्कि पूरे देश का नेता होता है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री मधुसूदन मिस्त्री : इसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित न करें ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, मैं हाउस को एडजर्न कर देता हूं।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या सभा स्थगित कर दी जानी चाहिए?

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : एक बार बैठ जाइए।

[अनुवाद]

पहले आप बैठ जाइये।

(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : इसमें क्या असंसदीय है?

[हिन्दी]

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री विलास मुत्तेमवार) : मल्होत्रा जी, इस तरह की बातें करने की इनको जरूरत ही क्या है?

अध्यक्ष महोदय : आप छोड़िए इसे। मेरी बात सुनिए। सभी लोग बैठ जाइए। सभी लोगों को बैठकर बात सुननी चाहिए।

[अनुवाद]

इसलिए सुबह मैंने एक विशिष्ट अपील की थी।

[हिन्दी]

आप सभी लोग बहुत सम्मानित सांसद हैं। मैं आप सभी लोगों से बोल रहा हूं।

यह नाटक करने की जगह नहीं है। हम सभी लोग नाटक कर रहे हैं, लेकिन यह नाटक भी अच्छा नहीं है। देश की पूरी जनता इसे देख रही है। यह बहुत अहम मुद्दा है, लेकिन कोई सुनने के लायक नहीं है, कोई बोलने के लायक नहीं है। यह क्या बात है?

[अनुवाद]

इसलिए, मैं आपसे पुनः अपील करता हूं कि आपको उचित स्तर पर चर्चा करनी चाहिए। मैं सभा में सभी राजनीतिक दलों से अपील कर रहा हूं। व्यवधान की कुछ सीमाएं होती हैं, कभी कभार यह अनुमेय होता है। दुर्भाग्यवश, आजकल, व्यवस्था का कोई प्रश्न ही नहीं है, कोई भी व्यक्ति अध्यक्ष की अनुमति नहीं लेता है "क्या आप अपना भाषण समाप्त करेंगे?" जैसा कि हमने पहले सीखा था। आडवाणी जी सहयोग करेंगे। पहले हम खड़े होकर कहते थे कि "क्या आप भाषण समाप्त करेंगे?"

[हिन्दी]

हम यह सब सिखाना चाहते हैं, लेकिन अभी तक कोई सीखने लायक नहीं है। जो मन में आता है, वह बोल जाते हैं और टिप्पणी करते रहते हैं। मंत्री भी नहीं छोड़ते। हम इसे पसंद नहीं करते हैं।

[अनुवाद]

इसलिए, मैं आप सब से अपील करता हूं कि कृपया वाद-विवाद को उचित स्तर पर रखें। प्रभुनाथ जी आप एक वरिष्ठ तथा सम्माननीय सदस्य हैं।

[हिन्दी]

हमें कुछ लोग यह कहते हैं कि आपके साथ हमारी सांठ-गांठ है, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि यह ठीक बात नहीं है। आप बोलिए और मुद्दे पर बोलिए। अभी ज्यादा समय नहीं है, साढे नौ बजने वाले हैं।

[अनुवाद]

मैं सभा के सभी भागों के सदस्यों से विनम्रतापूर्वक यह अपील करता हूं कि वे वाद-वाद कर उचित स्तर बनाए रखें। अभी अनेक अन्य वक्ताओं को बोलना है। अभी इसमें काफी योगदान दिया जाना है। अगर इस प्रकार समय व्यर्थ गंवाया गया तो हम सभी वक्ताओं को किस प्रकार अवसर दें पायेंगे?

[हिन्दी]

अब आप बोलें और पाइंट पर बोलें।

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष जी, आप प्रोसिडिंग देख लें, अगर हमारा कोई शब्द असंसदीय हो तो हम खेद व्यक्त करेंगे, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने तय कर लिया है कि वे लोग प्रभुनाथ सिंह को नहीं बोलने देंगे।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपको बोलने के लिए अलाऊ किया है, आप बोलिए। हम सब आपका प्वाइंट सुनना चाहते हैं इसलिए आप पाइंट पर बोलें।

श्री प्रभुनाथ सिंह : फिर सुनिए। जितना मैंने बोला है, उससे आगे बोल रहा हूं। मैं यह बताना चाहता हूं कि जो विश्वास और अविश्वास का दौर चल रहा है, लगता है कि उत्तर प्रदेश की जंग दिल्ली में आ गई है। उसका एक नज़ारा हमें उस समय देखने को मिला, जब राम गोपाल जी बोल रहे थे। लगता है कि यह सारा मुद्दा... *हो गया है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : वे दोनों सभा से बाहर हैं। उनके नाम का उल्लेख मत कीजिये। उनके नाम को कार्यवाही वृत्तान्त से हटा दिया जाएगा।

[हिन्दी]

दोनों यहां नहीं हैं।

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार) : दोनों ही इस सदन के सदस्य रह चुके हैं। हम नाम नहीं लेना चाहते। लगता है कि यह जंग हो रही है जीत और हार की। अगर सरकार बच गई तो... *इसमें मनमोहन सिंह जी का कोई श्रेय नहीं होगा।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : बहुत सारे म-म हो गए, मनमोहन हो गए, मुलायम हो गए, मायावती हो गईं। काफी चर्चा हो गई, अब आप दूसरे पाइंट पर आ जाएं।

श्री प्रभुनाथ सिंह : मैं उसी पर आ रहा हूं। इसी सदन में आपने कुछ माननीय सदस्यों को उनकी लोक सभा की सदस्यता से वंचित कर दिया था। उन पर यह आरोप था कि वे सांसद सदन में जो प्रश्न पूछते थे, मीडिया में दिखाया गया कि पैसा लेकर वे ऐसा करते थे। इसी सदन ने आपको इस विषय पर सर्वसम्मति से समर्थन दिया था और सरकार की तरफ से वह प्रस्ताव आया था। इधर जो मीडिया में चल रहा है, कई नेताओं के बयान आ रहे हैं कि 20 करोड़, 25 करोड़, 40 करोड़ रुपए, हम नहीं जानते हैं कि उसमें कितनी सच्चाई है। किसी को केबिनेट मंत्री, किसी को राज्य मंत्री तो किसी को मुख्य मंत्री बनाने की बात हो रही है, लेकिन सच्चाई क्या है, हम नहीं जानते। परंतु ऐसी चर्चा अगर मीडिया में आ रही है, सोलह आने न सही, अगर एक या दो आने भी सही है, तो इससे पता चलता है कि देश में सरकार को बचाने का व्यक्तित्व क्या है और हमारे राजनेता सरकार बचाने के लिए कैसे-कैसे कुकर्म कर सकते हैं। इसका एक नमूना यह है। ऐसी परिस्थिति की जांच कराई जानी चाहिए और जो लोग इस लेनदेन में शामिल हों, चाहे कितने भी बड़े क्यों न हों, उन पर कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : आपका सुझाव बहुत अच्छा है, सारा सदन राजी हो गया है।

श्री प्रभुनाथ सिंह : राजी तो हो गया, लेकिन कार्रवाई हो तब न। यह तो 22 तारीख के बाद पता चलेगा कि किसे मंत्री पद दिया गया। अगर ऐसा हुआ तो उस पर कार्रवाई होनी चाहिए। हमें इस पर आपका संरक्षण चाहिए। इस पर भी सदन सहमत होगा, शायद उधर के लोग नहीं होंगे।

अध्यक्ष महोदय : आप सब राजी हो गए हैं। अगर जरूरत होगी तो जांच होगी।

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष जी, करार पर चर्चा बहुत नेताओं ने की है। माननीय पटेल जी बोल रहे थे, हम एक बिन्दु सरकार से जानना चाहेंगे कि अमरीका का जो हाइड-एक्ट है वह अमरीका के कानून से प्रभावित होगा या भारत के कानून से प्रभावित होगा? अगर उस कानून में ऐसी व्यवस्था है कि जिस दिन अमरीका को यह संशय हो जाएगा कि वह परमाणु करार में जिन शर्तों को रखे हुए है, थोड़ा बहुत भी भारत इधर-उधर जा रहा है तो उस दिन से वह आपूर्ति बंद कर देगा। अगर ऐसा उस करार में है तो वैसी परिस्थिति में माननीय प्रधान मंत्री जी को यह बताना चाहिए कि यदि आप कुछ निवेश कर रहे हैं...*(व्यवधान)* जो परमाणु परीक्षण पर एक तरह से प्रतिबंध है, बम के निर्माण पर प्रतिबंध है, जो निरीक्षण साल में बीस बार होने की बात है, जबकि एक निरीक्षण पर दस करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च होने की बात है, उन सब चीजों पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा और यदि उस पर कुछ प्रभाव पड़ेगा तो यह अमरीका के सामने देश के स्वाभिमान को बंधक रखने के समान है या नहीं, यह बात माननीय प्रधान मंत्री जी को बतानी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : आप यह बात नोट कीजिए और प्रधान मंत्री जी को दे दीजिए कि इन्होंने यह बात बताई है।

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, अगर हमारी बात को मजाकिया लहजे में लिया जाएगा तो हम तो एकदम फ्री स्टाइल आदमी हैं।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, एकदम नहीं। आपने महत्वपूर्ण प्वाइंट रेज किया है, हमने कहा है कि इसका जवाब देना चाहिए। एकदम मजाक नहीं है। मैं मजाक में विश्वास नहीं करता। आपने बहुत अच्छा प्वाइंट उठाया है, हमने नोट करने के लिए कहा है।

श्री प्रभुनाथ सिंह : उस अमरीका से उम्मीद की जाती है कि वह हमारा दोस्त हो। एक तरफ कांग्रेस तरह-तरह के हथकंडे अपना रही है। जब शिक्षा का मामला या बजट का मामला आता है तो मुसलमानों को यह सुविधा दे रहे हैं, यानी चुनाव के दृष्टिकोण से मुस्लिम वर्ग को आकर्षित करने का बहुत पहले से ये काम कर रहे हैं। लेकिन उस अमरीका से दोस्ती का हाथ मजबूत करना चाहते हैं जिसने निर्दोष सद्दाम हुसैन को फांसी के फंदे पर लटकाया। जिन कारणों से फांसी पर लटकाया, उन कारणों को प्रमाण आज तक अमरीका नहीं दे सका है। अगर अमरीका के साथ दोस्ती का हाथ मजबूत है तो इन्हें देश और दुनिया के सामने प्रमाण रखवाना चाहिए ताकि लगे कि सद्दाम हुसैन कहीं न कहीं दोषी था, लेकिन आज तक प्रमाण अमरीका द्वारा दिखाया नहीं गया है। दादागिरी करने वाला जो देश है उस दादागिरी करने वाले देश को हम कभी भी अपना दोस्त नहीं मान सकते हैं क्योंकि हमारा देश वर्षों से आतंकवाद से पीड़ित रहा है और अमरीका गोपनीय ढंग से पाकिस्तान को मदद करता रहा है। अगर अमरीका में घटना नहीं घटती तो अमरीका आतंकवाद के खिलाफ

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री प्रभुनाथ सिंह]

जुबान भी नहीं खोलता और जुबान खोलता भी तो केवल आपको खुश करने के लिए खोलता। वैसी परिस्थिति में ऐसे दोस्त पर कितना भरोसा किया जाए और उससे दोस्ती करते हम देश को कहां ले जाना चाहते हैं यह माननीय प्रधान मंत्री जी को बताना होगा।

अध्यक्ष जी, देश और सदन कभी कभी विदेश नीति पर नहीं बंटा है। यदि विदेश नीति पर चर्चा हुई है और कुछ लोगों ने उस पर आपत्ति की है तो सरकार में रहने वाले लोग वापस लोगों को विश्वास में लेकर काम करें। लेकिन हमें लगता है कि देश के इतिहास में यह पहला मौका होगा कि सदन विदेश नीति पर बंटा हुआ है और स्थिति यह बनी हुई है कि सरकार बचेगी या जाएगी, विदेश नीति पर यह संशय बना हुआ है। हम माननीय प्रधान मंत्री जी और यहां बैठे हुए लोगों से आग्रह करेंगे कि विदेशी नीति पर न तो सदन को और न ही देश को बंटना चाहिए। आप जिद्द मत करिये, जिद्द करके देश को आप कहीं मत ले जाइये। इनकी जिद का ही कारण है कि इनका एक विश्वासपात्र साथी, जिनके कारण 4 साल 2 महीने तक इनकी सरकार चली, वह इनकी जिद के कारण छोड़ कर चला गया। ये जिद के कारण इस देश को गलत दिशा की तरफ न ले जाएं कि आने वाला समय इन्हें माफ न कर सके।

अध्यक्ष महोदय : आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, सदन में शोर के कारण मेरे बोलने का काफी समय निकल गया है।

अध्यक्ष महोदय : आपको बोलने के लिए 11 मिनट का समय दिया था।

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, मुझे बोलने के लिए कुछ और समय दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप अपनी बात जल्दी समाप्त कीजिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि विश्वास मत सदन से मांगा गया है और कोई कारण नहीं है कि मनमोहन सिंह जी की सरकार को विश्वास मत दिया जाए। इसका मैं एक कारण बताना चाहता हूं। एन.डी.ए. की बैठक विपक्ष के नेता के आवास पर हो रही थी। वहां जितने भी एन.डी.ए. के मुख्यमंत्री थे, चाहे बीजू जनता दल के नेता हों, चाहे हमारे दल के नेता हों, चाहे बी.जे.पी. दल के नेता हों या चाहे अकाली दल के नेता हों, सभी बैठे हुए थे। सभी मुख्यमंत्री एक स्वर से बोल रहे थे कि केंद्र की सरकार बदले की भावना से राज्यों की सरकार के साथ काम कर रही है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि प्रत्येक बात का तत्काल खण्डन कर दिया जाता है।

[हिन्दी]

ऐसे तो भाषण पूरा नहीं होगा। आप सुनिए और समय आने पर उत्तर दीजिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : सारे मुख्यमंत्री एक स्वर से बोल रहे थे। मैं बिहार का एक उदाहरण आपको देना चाहता हूं। बिहार में भयंकर बाढ़ आई थी। इस विपदा से निपटने के लिए बिहार ने अपने खजाने से खर्चा किया। उस खर्च का हिसाब बना कर बिहार सरकार ने एक प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा, जो कि बिहार सरकार का हक भी बनता था, लेकिन केंद्र की सरकार ने उसका भुगतान राज्य सरकार को नहीं किया और जान बूझ कर साजिश के तहत ऐसा किया गया है।

आप देख सकते हैं कि बिहार राज्य सरकार के अंतर्गत जो सड़कें हैं, वे बहुत अच्छी हालत में हैं। लेकिन राष्ट्रीय राजमार्गों में गड्ढे पड़े हुए हैं। बिहार में चर्चा है कि चुनाव के दृष्टिकोण से केंद्र सरकार बिहार के विकास में बाधक बनी हुई है। चूंकि अखबारों में, पत्रिकाओं में छप रहा है कि बिहार सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है, जान बूझ कर बिहार की इमेज को नुकसान करने के लिए, मुख्यमंत्री की इमेज को नुकसान करने के लिए ये लोग रोड़ा अटकाते हैं और बिहार राज्य सरकार को पैसा देना बंद कर चुके हैं। केंद्र से पैसा लेना बिहार का हक बनता है, वे कोई भीख नहीं मांगते हैं। इसी तरह बिहार के विकास के हर कार्य में केन्द्र सरकार अड़ंगा डाल कर विकास कार्यों को अवरुद्ध कर रही है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जब प्रधानमंत्री अपना उत्तर दें तो बताएं कि जिन राज्या में इनकी सरकार नहीं है, चाहे वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार हो, जनता दल यूनाइटिड की सरकार हो, चाहे उड़ीसा में बीजू जनता दल की सरकार हो, चाहे पंजाब में अकाली दल की सरकार हो, जानबूझ कर उन सरकारों से भेदभाव क्यों किया जाता है? इसके कारणों को बताना चाहिए और सदन में स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

महोदय, अब मैं महंगाई पर चर्चा करना चाहता हूं। जब प्रधानमंत्री एक अर्थशास्त्री बने, तो लोगों को लगा कि अर्थव्यवस्था में बहुत चुस्त-दुरुस्त काम होगा और देश के सबसे काबिल वित्त मंत्री उनके सहयोगी बने। अपनी काबिलियत का परिचय देते हुए, जो कांग्रेस का

नारा था कि कांग्रेस का हाथ, गरीबों के साथ, अब कांग्रेस का हाथ गरीबों की गर्दन दबाने के लिए हो गया है। आज देश में क्या हो रहा है?

चार बार पैट्रोलियम पदार्थों के दाम बढ़ाए गए। आम उपयोग की चीजों के आए दिन दाम बढ़ रहे हैं। आज कह रहे थे कि हम उस पर अंकुश लगाएंगे। चार बरस दो महीने में अंकुश लगाते रहे, क्या अब चार महीने में अंकुश लगा लेंगे? लोगों की दुर्गति बनाने चले हैं। जब जा रहे हैं तब अंकुश लगा रहे हैं। कल वोटिंग होगी तो वही होगी। हम कम्युनिस्ट के लोगों को धन्यवाद देते हैं। वे अच्छे मित्र साबित हुए हैं। अच्छा मित्र वह होता है जो अंतिम, अंतिम होता है श्मशान घाट, वहां तक जब पहुंचा देता है तो क्या उसी को दोस्ती कहते हैं।...*(व्यवधान)* आपने मित्रता का निर्वाह किया, आप बड़े अच्छे मित्र हैं लेकिन एक स्वार्थी मित्र भी हैं। अभी इन्होंने जो समर्थन वापस लिया है, देश की नजर में अभी नायक नहीं, खलनायक के रूप में हैं। इनको देश के लोग कह रहे हैं कि चार बरस दो महीने तक सरकार को एकदम चूसते रहे, जब चुनाव का समय आ गया तो डर गए और लोगों को बता रहे हैं कि हम इनके बहुत खिलाफ थे। इसका भी उदाहरण है। जितनी भी यूनवर्सिटीज में वाइस चांसलर्स हैं, कम्युनिस्ट समर्थक हैं, जितने भी बैंकों में बोर्ड ऑफ डायरैक्टर बने हैं उनमें सब कम्युनिस्ट समर्थक लोग हैं। इन्होंने इस बीच अपने सब इनफ्रास्ट्रक्चर ठीक कर लिए। चुनाव का समय आया तो बहुत लंबे-लंबे भाषण दे रहे हैं। यह दोहरी नीति नहीं चलने वाली है। अगर काम करना है तो साफ-सुथरा काम कीजिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री गुरूदास दासगुप्त : अध्यक्ष महोदय, यह सीधा आरोप है। हम इस आरोप को खारिज करते हैं।

[हिन्दी]

यह जानते नहीं है कि कितनी यूनिवर्सिटीज हैं, यह जानते नहीं कि कितने बैंक हैं, यह जानते नहीं कितने बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्स हैं?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप इसका विरोध कर चुके हैं।

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : अगर इन्होंने महंगाई पर समर्थन वापस लिया होता तो पता लगता कि देश के गरीबों के हित में आवाज उठा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आपकी बात हो गई है। हीरो को खलनायक बना दिया है इसलिए अब अपनी बात समाप्त करिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : इनका समर्थन महंगाई पर वापस नहीं लिया गया है। साल-डेढ़ साल से करार होगा या नहीं होगा, इसकी चर्चा चली। आपने एक साल पहले समर्थन क्यों वापस नहीं लिया? इसलिए कि लंबा समय था, हिसाब-किताब देखना था। खींचना था तब ठीक था लेकिन जब देखा की चुनाव आ गया तो बहुत ईमानदार बन गए और कांग्रेस को बेईमान कहने लगे। अगर कांग्रेस बेईमान है तो आप भी हैं। आप अपने आप को ईमानदारी नहीं कह सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदय : किस लिए धन्यवाद देते हैं?

श्री प्रभुनाथ सिंह : इसलिए धन्यवाद देते हैं कि लोग बड़ी लाल-लाल आंखें करके दिखा रहे थे।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह व्यवस्था से परे हैं। कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : मैं देवेन्द्र जी से एक बात कह कर अपनी बात समाप्त कर दूंगा।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इन्होंने मेरी बात की। मैं तो छोटा आदमी हूं लेकिन साइज में बड़ा हूं, पोजिशन छोटी है।

श्री प्रभुनाथ सिंह : देवेन्द्र जी, मैं आपको एक सलाह देता हूं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : अगर आपको सलाह देनी है तो बाहर जाकर बैठ कर सलाह दीजिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : उसकी सदन में चर्चा की इसलिए उनको यह बात कह रहा हूं। वह मेरे व्यक्तिगत मित्र भी हैं और बहुत नजदीकी मित्र हैं।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : होना चाहिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : पास में रहते हुए वह मेरे बड़े करीबी हैं। भारतीय जनता पार्टी का एजेंडा हो सकता है, धर्म स्थलों की चर्चा करना और उस पर अपना काम करना। इसमें कुछ अन्य भी दल हैं जो हिन्दू-मुस्लिम करके...*(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : नाम का उपयोग नहीं किया जाएगा।

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : बाबरी मस्जिद ढह गई, यह चर्चा करके उनको दुकान खोलनी पड़ती है लेकिन आपने कहा कि नहीं खोलते हैं। आडवाणी जी ने किसी मंदिर की चर्चा की, किसी धर्म स्थल की चर्चा की तो आप गोवर्धन पर्वत की चर्चा करके अपने आप को क्या बताना चाहते हैं?...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

[हिन्दी]

श्री प्रभुनाथ सिंह : चूंकि आप हमें बोलने ही नहीं देंगे, मैं धन्यवाद देते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : वह तो रिकॉर्ड में होगा कि बोलने दिया या नहीं?

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, अभी मैंने विश्वास मत का विरोध नहीं किया है।...*(व्यवधान)* मैं कहना चाहता हूं कि सरकार का कल के बदले आज वोट करा दीजिए और आज ही गिरावा दीजिए जिससे हमें ज्यादा प्रसन्नता होगी। यही कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कल के पंचांग में टाइम और डेट अच्छी है।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री खारबेल स्वाईं (बालासोर) : महोदय, मैं यहां पर माननीय प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह द्वारा रखे गए प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं जिसमें कहा गया है कि ''यह सभा मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।'' जिस तरीके से माननीय सदस्यों विशेषकर संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के माननीय मंत्रियों द्वारा इस बहस की शुरूआत की गई है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार एक ऐसी स्थिति उत्पन्न करना चाहती है जिसमें ऐसा लगे की परमाणु करार ही देश के लिए महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह हुआ कि वे परमाणु करार के मुद्दे पर जनमत संग्रह चाहते हैं।

महोदय, माननीय प्रधानमंत्री ने जो कुछ कहा है उसके बारे में मैं दो बातें कहना चाहता हूं। पहली बात तो प्रतिपक्ष के माननीय नेता बहस के आरंभ में कह चुके हैं कि लगभग एक वर्ष पूर्व कौलकाता से प्रकाशित होने वाले अखबार नामत: ''दि टेलीग्राफ'' को दिए गए अपने साक्षात्मकार में माननीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि यदि वाम दल समर्थन वापस लेना चाहते हैं तो वे समर्थन वापस ले सकते हैं। उन्होंने ऐसा ही कहा था। हम यह सोचते थे कि वह बहुत ही मजबूत और दृढ़निश्चयी व्यक्ति हैं। ऐसा महसूस किया गया था कि वाम दलों की समर्थन वापसी के बाद भी वे परमाणु करार अवश्य करेंगे। इसके कुछ महीनों के बाद जब वे फिक्की द्वारा आयोजित एक बैठक में भाग लेने गए तो उन्होंने वहां पर क्या कहा? उन्होंने कहा कि परमाणु करार ही सब कुछ नहीं है। परमाणु करार के अलावा भी कई चीजें हैं। उनका ऐसा कहने का क्या तात्पर्य था? उनके कहने का तात्पर्य यह था कि यदि वाम दल करार का विरोध करेंगे तो वे यह करार नहीं करेंगे और वे सरकार को बचाए रखना चाहते हैं। तब हमें समझ में आया कि ये कितने सशक्त व्यक्ति हैं। इस दौरान पूरा एक वर्ष बीत गया और उस दौरान सरकार तथा वाम दलों के बीच अनेक बैठकें हुई। मैं पूछना चाहता हूं कि चुनाव से कुछ समय पूर्व अचानक ऐसी बहादुरी दिखाए जाने की क्या आवश्यकता थी? इसके क्या कारण है? जैसाकि प्रतिपक्ष के माननीय नेता कह चुके हैं कि माननीय प्रधानमंत्री यह कार्य एक वर्ष पूर्व भी कर सकते थे। वे कह सकते थे ''हां, ऐसा ही होगा। मैं चुनाव कराऊंगा और कि मैं इस सभा को भंग करता हूं।'' वे उस समय भी समाजवादी पार्टी का समर्थन ले सकते थे। लेकिन ऐसा नहीं किया। इसके क्या कारण हैं? अब ऐसी बहादुरी क्यों दिखाई जा रही है? ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि इस अवधि के दौरान कांग्रेस पार्टी पंजाब, उत्तरांचल और हिमाचल प्रदेश में चुनाव हार गई थी और काफी प्रयत्न करने के बावजूद गुजरात में भी चुनाव हार गई है तथा गुजरात में किससे हारी? वे गुजरात चुनाव में सबसे साम्प्रदायिक मुख्यमंत्री, नरेन्द्र मोदी से हारे! और आखिर में वे कर्नाटक में भी हारे। परमाणु करार एक हताशा भरा कदम है। जिस व्यक्ति को कांग्रेस पार्टी प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करना चाहती थी उस आज्ञाकारी प्रधानमंत्री का आखिरी

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

क्षणों में अपना सम्मान बचाने के लिए किया गया प्रयास है। वे यह साबित करना चाहते हैं कि वे बहुत ही बहादुर व्यक्ति है। कांग्रेस पार्टी इस देश के मध्यवर्ग को इस बात का अहसास कराना चाहती हैं कि वे मध्यवर्ग के मसीहा है। वे देश के विकास के अग्रदूत, नेतृत्व करने वाले और पथप्रदर्शक है। वे संयुक्त राज्य अमरीका के साथ संबंध बनाना चाहते हैं। कांग्रेस पार्टी ने पिछले चार वर्षों के दौरान वाम दलों के डर से आर्थिक सुधारों की दिशा में एक भी निर्णय नहीं ले पाई और वे ये दिखाना चाहते हैं कि वे बहादुर हैं।

वे यह बात कहकर अपनी बहादुरी दिखा रहे हैं कि यदि उनको सत्ता से जाना भी पड़े तो भी इसे करेंगे। क्या कोई इस बात पर विश्वास कर सकता है? पहले हमने सोचा था कि माननीय प्रधानमंत्री एक बुद्धिजीवी हैं। लेकिन आज इन्होंने बहुत ही चालाकीभरा वक्तव्य दिया है। उन्होंने संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन और वाम एकता के संस्थापक के रूप में श्री ज्योतिबसु और श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत का नाम लिया। देखने में यह बहुत अच्छा लगता है कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं की प्रशंसा कर रहे हैं लेकिन इसका भावार्थ क्या है? इसका भावार्थ यह है कि श्री (...कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया) जिनके पास व्हिप हैं और उन पर दबाव डाल रहे हैं. ..*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वे सभा में उपस्थित नहीं हैं।

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, मैं उन पर कोई आरोप नहीं लगा रहा हूं मैं केवल इतना कह रहा हूं कि माननीय प्रधानमंत्री ने जो कुछ कहा है उसका भावार्थ यह हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : तब भी आपको नामों का उल्लेख नहीं करना चाहिए। आप पदनाम से उनका हवाला दे सकते हैं।

श्री खारबेल स्वाईं : ठीक है। वे सी.पी.आई. (एम) के वर्तमान महासचिव हैं। अब वे इस बात की ओर इशारा करना चाहते हैं कि श्री ज्योति बसु और श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत बहुत अच्छे हैं लेकिन सी.पी.आई. के वर्तमान महासचिव एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी वजह से वाम दल विभाजित हुए हैं। फिर वह क्या कर रहे हैं? यह बहुत ही चलाकी भरा वक्तव्य है अब वे गुरू गोविन्द सिंह जी के नाम का उल्लेख कर रहे हैं। इसका क्या मतलब है? पिछले चार वर्षों के दौरान इन्होंने कभी भी गुरू गोविन्द सिंह जी के नाम का उल्लेख नहीं किया। अब वे अकाली दल की ओर इस बात का निपुण इशारा कर रहे हैं वे सिख है और माननीय प्रधानमंत्री भी सिख है इसलिए कृपया उन्हें वोट दीजिए। गुरू गोविन्द सिंह जी के नाम का उल्लेख करने का भावार्थ यही है।

अध्यक्ष महोदय : गुरू गोविन्द सिंह जी केवल सिखों के नहीं है, अपितु वे सबके हैं।

श्री खारबेल स्वाईं : लेकिन हमने पिछले चार वर्षों के दौरान उनके मुंह से गुरू गोविन्द सिंह जी का नाम नहीं सुना...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं हैं। कृपया इस तरीके उनकी आलोचना मत कीजिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप पालिसी पर आइए।

[अनुवाद]

श्री खारबेल स्वाईं : हाल ही में डा. मनमोहन सिंह ने एक बहुत ही चतुर राजनीतिज्ञ के रूप में एक ... उभर कर सामने आए है. ..*(व्यवधान)*

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, ये क्या कह रहे हैं इन्हें इस बात की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा इस्पात मंत्री (श्री राम विलास पासवान) : अध्यक्ष महोदय, यह वर्ड उचित नहीं है, इसे एक्सपंज कर दीजिए।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपको ''समझदार राजनीतिज्ञ'' शब्द का उपयोग करना चाहिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में बोलिए. .. पर्सनल बोलने से क्या होगा। किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप लगाना ठीक नहीं हैं।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, यह किसी व्यक्ति विशेष पर आक्षेप नहीं हैं। उन्होंने जो कुछ कहा है मैं केवल उसका भावार्थ बता रहा हूं। मैं एक राजनीतिज्ञ हूं और वे भी एक राजनीतिज्ञ है। मैं केवल इसके प्रभावों के बारे में बता रहा हूं।

[श्री खारबेल स्वाईं]

अब, मैं विदेश मंत्री ने जो कहा है, उसकी बात करता हूं। चार बार उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान इस सरकार की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 9 प्रतिशत से ज्यादा रही थी। यह सही है। लेकिन मैं आपको केवल कुछ उदाहरण दूंगा। एक देश है — मुझे नहीं मालूम कि इसका नाम आपने सुना है या नहीं — बुर्किला फासो जिस की गत चार वर्षों के दौरान सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 12 प्रतिशत रही है।

अध्यक्ष महोदय : हमें उन्हें बधाई देना चाहिए यदि उन्होंने ऐसा किया है।

श्री खारवेल स्वाईं : गत चार वर्षों के दौरान पाकिस्तान की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7 प्रतिशत रही है।

श्री प्रणब मुखर्जी : क्या गत चार वर्षों के दौरान पाकिस्तान की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7 प्रतिशत रही है?

श्री खारवेल स्वाईं : हां, इसकी सकल घरेलू उत्पाद की वृद्ध दर 7 प्रतिशत है। बांग्लादेश की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर छह प्रतिशत है। आप गत चार वर्षों के दौरान विश्व के सभी निर्धन देशों के आंकड़ों को देखें।

श्री प्रणब मुखर्जी : छह प्रतिशत या सात प्रतिशत या नौ प्रतिशत लगभग बराबर ही हैं...*(व्यवधान)*

श्री खारबेल स्वाईं : वे देश जिनकी सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर एक प्रतिशत भी नहीं थी उनकी सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर अचानक छह प्रतिशत या सात प्रतिशत या आठ प्रतिशत या बारह प्रतिशत हो गई है? इसका क्या कारण हैं? यह इसलिए क्योंकि अमेरिका में अत्यधिक मांग थी।

ये सभी देश अमेरिका को निर्यात करने लगे। ऐसा क्यों हुआ? आप अमेरिका में हुए सब प्राइम संकट को देख सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि बिना किसी परिश्रम के अमेरिका में रीयल इस्टेट क्षेत्र को धन प्रदान किया गया। अब धन वापस नहीं आ रहा है। लेकिन उस समय, 9/11 के हमले के पश्चात् जब ब्याज दर गिरकर एक प्रतिशत हो गया था, अमेरिका में सभी लोग अत्यधिक खर्च करने लगे। इसलिए, न केवल भारत में बल्कि विश्व के कम देशों में उस समय सकल घरेलू उत्पाद की अत्यधिक वृद्धि दर दर्ज की गई।

अब, अमेरिका में मंदी का दौर है। अब क्या होने वाला है? सरकार को यह कहने दें कि वे इस वर्ष भी नौ प्रतिशत का वृद्धि दर प्राप्त करेंगे। वे स्वयं कहते हैं कि यह 8.5 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता है। रिजर्व बैंक कहता है कि यह आठ प्रतिशत से ज्यादा नहीं होगा। ऐसा होने वाला है। एक दिन हमने रिजर्व बैंक के गवर्नर से बात की। मुद्रास्फीति के संबंध में उनका दृष्टिकोण क्या था? उन्होंने कहा कि वृद्धि दर घटकर 8.5 प्रतिशत हो गई है तथा मूल्य ऊंची रहेगी। आगामी बारह महीनों तक मुद्रास्फीति की दर काफी ऊंची रहेगी, दो अंकों में। उन्होंने 'स्टैगफ्लेशन' शब्द का प्रयोग किया।

श्री मधुसूदन मिस्त्री : महोदय, वे वित्त संबंधी स्थायी समिति के सम्मुख रिजर्व बैंक के गवर्नर द्वारा दिए गए साक्ष्य का उल्लेख कर रहे हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मुझे दुख है। मैं उसे नहीं जानता था। आप स्थायी समिति में कही गई बातों को प्रकट नहीं कर सकते हैं।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, क्या मैंने यह कहा कि ऐसा स्थायी समिति में हुआ?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ऐसा कहा जा रहा है।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : उन्होंने यही कहा। मैंने ऐसा नहीं कहा।. ..*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : क्या यह सही है या गलत?

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : मैंने केवल इतना कहा कि हमने ऐसा रिजर्व बैंक के गवर्नर से पूछा...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री स्वाईं, आप समिति में कही गई बातों को प्रकट नहीं कर सकते।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : मैंने इतना नहीं कहा...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप वह नहीं कह सकते हैं। क्या यह समिति में कहा गया था?

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : यह प्रेस में भी आया...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यदि यह प्रेस में छप चुका है तो आप इसका उल्लेख कर सकते हैं।

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, मैं व्यवस्था के प्रश्न की बात कर रहा हूं। मामला आगे और बढ़ गया है। मुझे प्रसन्नता होती यदि माननीय सदस्य "हां" कहकर ही रूक जाते। लेकिन उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया उन्होंने उनसे पूछा तथा उन्होंने यह कहा है। अत: यह सभा को यह जानने का अधिकार है कि किस अवसर पर राज्यपाल ने उनसे इस विषय पर बात की। सीधा प्रश्न यह है: क्या वह समिति के समक्ष उनके साक्ष्य के बारे में कह रहे हैं जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा है?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने मुझे आश्वस्त किया है कि यह समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है। यह उन्हें मुझे देना ही होगा। मैं इसे देख लूंगा।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : हां, यह समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मुझे इसे देखने दें। मैं इस बारे में निर्णय करूंगा। यदि यह स्थायी समिति के सामने केवल साक्ष्य है तो रिपोर्ट सौंपे जाने तक ऐसा करना विशेषाधिकार का हनन माना जाएगा। अत: श्री स्वाईं आप मुझे संतुष्ट कीजिए अन्यथा इसे विशेषाधिकार का हनन माना जाएगा।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : मैं उसका उल्लेख नहीं कर रहा हूं। मैं मीडिया रिपोर्ट की बात कह रहा हूं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों उन्होंने मुझे सन्तुष्ट करने का आश्वासन दिया है। अन्यथा यह विशेषाधिकार का हनन होगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री स्वाईं ने कहा है कि यह समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों पर आधारित है।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, यह समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों पर आधारित है। मैंने चार बार कहा है कि यह समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों पर आधारित है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह विशेषाधिकार का हनन माना जाएगा। स्थाई समिति के महत्व को कम मत कीजिए।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, मैं मीडिया रिपोर्ट उद्धृत कर रहा हूं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैंने यही कहा हैं उन्होंने मुझे आश्वस्त किया है।

(व्यवधान)

श्री मधुसूदन मिस्त्री : महोदय, वे वित्त सम्बन्धी स्थाई समिति के सदस्य है। राज्यपाल समिति के समक्ष हाजिर हुए थे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैंने अपना विनिर्णय दे दिया है।

(व्यवधान)

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती रेनुका चौधरी) : यह बात कार्यवाही वृत्तांत में है जहां उन्होंने यह कहा है कि मैंने राज्यपाल से पूछा है। यह मामला और आगे बढ़ गया है। ...*(व्यवधान)* वे सभा को गुमराह कर रहे हैं। उनके विरुद्ध एक विशेषाधिकार प्रस्ताव होना चाहिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री त्रिपाठी, आप इसे छोड़िए। मैंने विनिर्णय दे दिया है। आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? हर कोई दूसरों के सलाहकार बन रहे हैं।

श्री खारबेल स्वाईं : मीडिया रिपोर्ट भी यह कहती है कि आने वाले महीनों में मुद्रास्फीति की दर और बढ़ेगी।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपको मुझे सन्तुष्ट करना होगा, अन्यथा इसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। यह विशेषाधिकार हनन का मामला है। मैंने उन्हें चेतावनी दे दी हैं। यह ठीक है। उन्होंने इसे स्वीकार किया है। तो मैं उन पर विश्वास क्यों न करूं?

श्री खारबेल स्वाईं : मीडिया रिपोर्ट कहती है कि ब्याज दरें और बढ़ेंगी तथा इसमें यह भी कहा गया है कि यदि मानसून अच्छा रहता है तो खाद्य वस्तुओं की कीमतें शायद न बढ़े लेकिन इनकी कीमतें कम भी नहीं होगी। इसमं यह भी कहा गया है कि यह आशंका सही है कि एक माह बाद यानी सितम्बर माह में सरकार पेट्रोल तथा डीजल की कीमतें 10 से 15 प्रतिशत बढ़ाने जा रही है।...*(व्यवधान)* यह सरकार पुन: बढ़ोत्तरी करने जा रही हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : उसे कल मेरे समक्ष प्रस्तुत करना होगा; अन्यथा कार्यवाही की जाएगी।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने ऐसा कहा था।

(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, मेरी आपत्तियां बुनियादी है। उन्होंने प्रारंभ में कहा था कि उन्होंने गर्वनर से पूछा था। कृपया इन शब्दों पर ध्यान दें।...*(व्यवधान)* महोदय, मैं इस बात का बुरा नहीं मानता कि क्या कहा जा रहा है।...*(व्यवधान)* यदि इस पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा तो मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य को रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, आपको जो सही लगे आप कीजिए. ..*(व्यवधान)* देश के लोग मेरी बात सुन चुके हैं। वे ही निर्णय लेंगे। आप मुझे अनुमति नहीं देंगे...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कि मैंने आपको नहीं रोका है; आप क्या कह रहे हैं?

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : वे इस प्रकार की बात पर आपत्ति कर रहे हैं। महोदय, आपने हमसे चर्चा का स्तर बढ़ाने को कहा। क्या मैं इसे नहीं बढ़ा रहा हूं?...*(व्यवधान)* क्या मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपने यह बात उठाई है। एक बार यदि आप यह कह देंगे कि यह मीडिया रिपोर्ट पर आधारित है तो मैं कहता हूं आप आगे जा सकते हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी सीट पर बैठिए मैंने केवल ये कहा कि यह सुस्थापित तथ्य है कि जब तक सभा पटल पर स्थायी समिति की रिपोर्ट न रखी जाए तक तक स्थायी समिति के समक्ष साक्ष्य देना विशेषाधिकार का हनन है। मुझे पूरा विश्वास है कि माननीय सदस्य इस तथ्य से भली भांति निवगत होंगे। मैं ऐसा क्यों मानूं कि वे विशेषाधिकारों का हनन कर रहे हैं? अतएवं, मैं मानता हूं कि वे कल तक उसे प्रस्तुत कर देंगे ताकि मैं इस संबंध में निर्णय ले सकूं और समुचित कार्यवाही कर सकूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हर व्यक्ति दूसरे का सलाह दे रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, बार्कले कैपिटल अन्तर्राष्ट्रीय निवेश बैंकर है। उसने अनुमान लगाया है कि सितम्बर तक मुद्रास्फीति की दर 17 प्रतिशत तक हो जाएगी। ऐसा होने जा रहा है। मई, 2009 तक इस सरकार के शासन काल समाप्त होने तक मुद्रास्फीति की दर दो अंकों में ही रहेगी और जैसा कि मैंने पहले ही बताया है कि बार्कले कैपिटल ने सितम्बर तक का अनुमान लगाया है। सरकार पेट्रोल और डीजल के दामों में 10 से 15 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी करेगी. ..*(व्यवधान)* बार्कले एक अन्तर्राष्ट्रीय निवेश बैंकर है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने केवल पूर्वानुमान लगाया है।

श्री खारबेल स्वाईं : अब, इस्पात उद्योग द्वारा इस्पात की कीमतों पर अधिस्थगन लगाया गया था। माननीय वित्त मंत्री ने कहा है कि सीमेंट कारखाना मालिकों ओर इस्पात कारखाना मालिकों ने गठजोड कर दिया है। इस गठजोड को तोड़ना विपक्ष का दायित्व है और सरकार को इसमें कुछ नहीं करना है? अब वे कहते हैं कि अधिस्थगन की यह अवधि जुलाई अंत तक समाप्त होने जा रही है इसलिए इस्पात की लागत पुनः 4,000 रुपये प्रतिटन तक बढ़ने जा रही है।

रात्रि 10.00 बजे

महोदय, अब हमारे पास केवल एक मुद्दा शेष है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : क्या आप उन्हें सहमति देंगे?

श्री खारबेल स्वाईं : हां, जी हां, महोदय, उन्हें बोलने दें।

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान : हम बोलना नहीं चाहते थे, लेकिन ये कहां से कहां मामले को ले जा रहे हैं। स्टील का दाम बढ़ा, कास्ट ऑफ प्रोडक्शन से लेकर रॉ-मेटिरियल तक का दाम बढ़ गया, कल हम अपने भाषण में बताएंगे, उसके बावजूद भी स्टील प्रड्यूसर्स ने जो चार हजार दाम बढ़ाया था, उसे उन्होंने घटा दिया। उन्होंने कहा कि हम तीन महीने तक नहीं बढ़ाएंगे, उन्होंने अभी तक नहीं बढाएंगे, उन्होंने अभी तक नहीं बढ़ाया। अब कल क्या होगा, इस मामले में हाउस का समय बर्बाद करने से क्या फायदा है?

[अनुवाद]

श्री खारबेल स्वाईं : मैं आपको बता रहा हूं कि यह अधिस्थगन समाप्त होने जा रहा है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह केवल स्पष्टीकरण है।

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, आप देख सकते हैं कि जब मुद्रास्फीति इतनी बढ़ गई है, तो औद्योगिक उत्पादन कम हो रहा है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया भाषण समापत कीजिए।

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, उन्होंने मुझे बोलने नहीं दिया।

अध्यक्ष महोदय : आपको एक बात के अलावा बोलने की अनुमति दी गई है। आप पहले ही 20 मिनट बोल चुके हैं।

श्री खारबेल स्वाईं : मैंने 40 मिनट नहीं लिए हैं।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप 20 मिनट बोले हैं।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : इसमें दस मिनट तो हल्ला करने में चले गए हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ये तो सब करते हैं, सब साइड से ही करते हैं।

(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाईं : ठीक है सर, इन्हें बोलने दीजिए।...*(व्यवधान)* आप इन्हें सपोर्ट कर रहे हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अपनी बात मुझसे मत कहलवाइए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हम देखेंगे। अपनी बात मुझसे मत कहलवाइए।

श्री खारबेल स्वाईं : मैं कह रहा हूं कि आप अच्छे भाषण और अच्छे व्यवहार को बढ़ावा देंगे।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : क्या?

श्री खारबेल स्वाईं : मैं आशा करता हूं कि आप इस सभा में अच्छे वाद-विवाद और उच्च गुणवत्तापूर्ण भाषणों की अनुमति देंगे।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको अनुमति दे रहा हूं।

श्री खारबेल स्वाईं : आप कहते हैं कि आप मुझे अनुमति दे रहे हैं लेकिन वो मेरे भाषण में व्यवधान डाल रहे हैं...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं उन्हें बोलने के लिए बढ़ावा नहीं दे रहा हूं। ऐसा करने का यह तरीका नहीं है। दोषारोपण मत कीजिए।

श्री खारबेल स्वाईं : महोदय, मई 2007 में औद्योगिक उत्पादन 11.3 प्रतिशत था। अब, एक वर्ष के पश्चात् औद्योगिक उत्पादन की दर कितनी है? यह केवल 3.8 प्रतिशत है। अप्रैल, 2008 में, इसका लक्ष्य 7 प्रतिशत था किंतु उपलब्धि 6.2 प्रतिशत थी। औद्योगिक उत्पादन ही है, जो गत छः वर्षों में सबसे न्यूनतम है। हर स्तर पर आशंका जताई जा रही है कि भारत की क्रेडिट रेटिंग कम हो जाएगी और भारत को आर्थिक मंदी झेलनी पड़ेगी। यह सब अर्थव्यवस्था के मामले में इस सरकार के कुप्रबंधन के कारण है। माननीय वित्त मंत्री हर समय कहते हैं कि हम मुद्रास्फीति आयात कर रहे हैं क्योंकि हम अनेक खाद्य सामग्रियों का आयात कर रहे हैं। हम तेल का आयात कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में, कीमतें बहुत अधिक हैं। हम इसका आयात कर रहे हैं। इसीलिए, हम मुद्रास्फीति का आयात कर रहे हैं। हम ईंधन का आयात कर रहे हैं। इसकी दर बहुत ज्यादा है। क्या मैं इस सरकार से पूछ सकता हूं कि सब्जियों के दाम क्यों बढ़ रहे हैं? क्या आप उनका आयात कर रहे हैं? आप यह कहते हुए काफी गर्व का अनुभव कर रहे हैं कि गेहूं का रिकार्ड उत्पादन हुआ है; चावल का रिकार्ड उत्पादन हुआ है। यदि इतना उत्पादन हुआ है, तो इनकी कीमतें इतनी ज्यादा क्यों हैं? क्या यह इस सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था के कुप्रबंधन के कारण नहीं है।

अब मैं, असैनिक परमाणु समझौते के मुद्दे पर आता हूं। यदि आप परमाणु समझौते का अध्ययन करें, तो आप पाएंगे कि इनमें कुछ भी भारत केन्द्रित नहीं है। खंड 23 के बाद से, यह आई.ए.ई.ए. माडल के मार्गनिर्देशों की एक प्रति है। भारत के लिए कोई पृथक मार्गनिर्देश नहीं हैं। ये मार्गनिर्देश केवल परमाणु हथियार रहित देशों के लिए लागू हैं। परमाणु हथियार रहित देशों के लिए लागू मार्गनिर्देश परमाणु हथियार संपन्न देशों की तुलना में अधिक कड़े हैं। विश्वभर में 400 परमाणु संस्थापनाएं हैं और आई.ए.ई.ए. द्वारा केवल पांच संस्थापनाओं के निरीक्षण की अनुमति दी गई। लेकिन भारत में 21 में से 14 संस्थापनाओं को उनके निरीक्षण के तहत लाया गया है। क्या हमें इसके लिए आपत्ति नहीं जतानी चाहिए।

महोदय, मैं यह अपील आपको दिखा रहा हूं। मैं इसे सभा पटल पर रख सकता हूं। मुझे आज ही यह प्राप्त हुई है। शीर्षक है; "संसद सदस्यों से अपील: भारत-अमरीकी असैनिक परमाणु सहयोग समझौता।" इसे किसने प्रकाशित किया है?

वे हैं, परमाणु ऊर्जा आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. पी.के. अयनगर, परमाणु ऊर्जा विनियामक बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. ए.पी. गोपालकृष्णन भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. ए.एम. प्रसाद उन्हें लिखने के लिए क्या मिला? क्या आई.ए.ई.ए. दिशानिर्देशों की विस्तृत तथा गहन जांच किए बिना ही देश को इस प्रकार के दीर्घकालीन बाध्यकारी व्यवस्था में साझेदार बनना चाहिए? क्या नाम मात्र के बहुमत

[श्री खारबेल स्वाईं]

वाली सरकार तथा विभक्त संसद को देश को इस प्रकार से प्रतिबद्ध करना चाहिए? इसलिए, हमारा यह दृढ़ मत है कि सरकार को आई.ए.ई.ए. बोर्ड की अनुमति प्राप्त करने के लिए तब तक आगे नहीं बढ़ना चाहिए जब तक कि इसके प्रभावों को लेकर किसी विशेषज्ञ समूह द्वारा पूर्ण रूप से बहस न पूरी कर ली जाए। हम आई.ए.ई.ए. परमाणु चर्चा में भाग लेने वाले पक्षकार नहीं हैं। इसलिए, केवल हमने ही नहीं बल्कि देश के परमाणु वैज्ञानिकों ने भी लोगों से अपील की है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वहां क्या हो रहा है?

श्री खारबेल स्वाईं : वे यह कह रहे हैं कि उन्होंने आम सहमति बनाई है। इस देश की आम राय क्या है, राजनीतिज्ञों के बारे में भूल जाइये; यहां तक कि वैज्ञानिक समुदाय के बीच भी कोई आम सहमति नहीं है। जब कोई आम राय नहीं है तो अगर आज इस संधि पर हस्ताक्षर नहीं होते हैं और इसकी पुष्टि नहीं हो पाती है। तो कोई आसमान नहीं गिर पड़ेगा। देश को कुछ और समय चाहिए। अंत में, मैं आपको बताऊंगा कि बहुमत हासिल करने के लिए यह सरकार किस प्रकार की गतिविधियों का सहारा ले रही है। यह अत्यंत गंभीर मामला है। कुछ समय पूर्व, वहां श्री महताब थे। पहले एक कांग्रेस एम.एल.ए. ने उनसे संपर्क साधा।

अध्यक्ष महोदय : मैं इसकी अनुमति नहीं दूंगा। कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

श्री खारबेल स्वाईं : पहले तो कृपया मेरी बात सुनिये। अगर आपको लगता है कि यह आपत्तिजनक है तो आप से कार्यवाही वृत्तान्त से निकाल सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : वे यह कह सकते थे। नहीं, मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता हूं।

श्री खारबेल स्वाईं : कृपया पहले मेरी बात सुनिये।

अध्यक्ष महोदय : कहिये। आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री खारबेल स्वाईं : अगर आपको लगता है कि मैं जो कह रहा हूं वह आपत्तिजनक है, आप इसे कार्यवाही वृत्तान्त से निकाल सकते हैं। आपको पूर्ण अधिकार है। उन्होंने समाचारपत्र में एक लेख लिखा है। मैं इसे उद्धृत कर रहा हूं।

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : वे पहले ही बोल चुके हैं। उन्होंने इसका सदर्भ नहीं दिया है।

श्री खारबेल स्वाईं : उन्होंने एक लेख लिखा है। मैं इसे आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आप इस लेख को प्रस्तुत नहीं कर सकते। आप कार्यवाहियों का दुरूपयोग नहीं कर सकते।

श्री खारबेल स्वाईं : इस बातचीत में वह कहते हैं कि एक मंत्री ने उनसे संपर्क साधा और बताया कि 22 जुलाई के बाद भी सरकार चलती रहेगी। आप श्री तापिर गाव के मोबाइल रिकार्ड की जांच कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : मुझे खेद है कि मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता हूं।

श्री खारबेल स्वाईं : यह लिखा हुआ है कि ऐसा अवसर जिन्दगी में कभी कभार ही आता है...*। आप इसे पढ़ सकते हैं। आप श्री तापिर गाव जी के मोबाइल रिकार्ड की जांच कीजिये।

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही वृत्तान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया भाषण समाप्त करें। इसे मूझे दीजिये। मैं इसे देखना चाहता हूं।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : इससे अधिक कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मुझे यह कहते हुए खेद है। आप सभा को भ्रमित कर रहे हैं। लोक सभा कल अर्थात् 22 जुलाई 2008, को ग्यारह बजे पुन: समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

रात्रि 10.10 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 22 जुलाई 2008/31 आषाढ़, 1930 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

इंटरनेट

लोक सभा की सत्रावधि के प्रत्येक दिन के वाद-विवाद का मूल संस्करण भारतीय संसद की निम्नलिखित वेबसाइट पर उपलब्ध है:

http://www.parliamentofindia.nic.in

लोक सभा की कार्यवाही का सीधा प्रसारण

लोक सभा की संपूर्ण कार्यवाही का लोक सभा टी.वी. चैनल पर सीधा प्रसारण किया जाता है। यह प्रसारण सत्रावधि में प्रतिदिन प्रात: 11.00 बजे लोक सभा की कार्यवाही शुरू होने से लेकर उस दिन की सभा समाप्त होने तक होता है।

लोक सभा वाद-विवाद बिक्री के लिए उपलब्ध

लोक सभा वाद-विवाद के मूल संस्करण, वाद-विवाद के हिन्दी संस्करण, वाद-विवाद के अंग्रेजी संस्करण तथा इनकी अनुक्रमणिकाएं, संसदीय समितियों के प्रतिवेदन एवं संसद के अन्य प्रकाशन तथा संसद के प्रतीक चिन्ह युक्त स्मारक मदें **विक्रय फलक, स्वागत कार्यालय, संसद भवन, नई दिल्ली-110001 (दूरभाष : 23034726, 23034495, 23034496)** पर बिक्री के लिए उपलब्ध है। इन प्रकाशनों की जानकारी उपर्युक्त वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

पी०एल०एस०-48/35/1/2008 (एन०)
215

© 2008 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और इंडियन प्रेस, नई दिल्ली-110033 द्वारा मुद्रित।